थामस जेफर्सन और अमरीकी प्रजातंत्र

(Thomas Jefferson and American Democracy)
By Max Beloff

मूल लेखक

मैक्स बेलोफ

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई १

मल्य : ७५ नये पैसे

प्रथम अंग्रेजी संस्करण ग्रेट ब्रिटेन में इंग्लिश युनिवर्सिटीज प्रेस लि०, लंदन, के लिए हेज़ेल, वाट्सन एंड विने लि०, ऐलसबरी और लंदन, द्वारा १९४८ में मुद्रित।

प्रथम हिन्दी संस्करण—१९६०

प्रकाशक : जी० एल० मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड,
२४९, डा० दादाभाई नवरोजी रोड,
बम्बई १.

मुद्रक : अनंत जे० शाह,
लिपिका प्रेस, कुर्ला रोड, अंधेरी।

प्रस्तावना

इस वर्ष के वसन्त में मेरी प्रथम अमरीकी यात्रा के पूर्व वर्तमान पुस्तक प्रूफ संशोधन की स्थिति में पहुँच गयी थी। मेरी इस यात्रा से मेरा पूर्व विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि अमरीकी इतिहास-लेखन-क्षेत्र में प्रवेश के लिए किसी गैर-अमरीकी का प्रयास करना एक प्रकार से धृष्ठता ही होगी। जहाँ तक जेफर्सन के अध्ययन का सम्बन्ध है, यह निस्सन्देह सत्य है, क्योंकि अमरीकी इतिहास का सम्भवतः ऐसा कोई युग नही है, जिसमें इससे अधिक पाण्डित्य दिखाया गया है अथवा इससे अधिक आशाजनक परिणाम निकले हैं। इस छोटी सी पुस्तक में पाठकों के लाभार्थ जेफर्सन के सिद्धान्तों एवं विचारधारा की स्थिति का कुछ आभास देने का प्रयास मात्र किया गया है। मैं तो केवल अमरीका के अपने उन मित्रों की कृपा की ही अपेक्षा कर सकता हूँ, जिनके हाथों में यह पुस्तक जा सकती है और आशा करता हूँ कि वे इसे अमरीका के अतीत में ब्रिटेन की बढ़ती हुई अभिरुचि का प्रतीक मात्र समझेंगे—ऐसी रुचि जिसे, दोनों देशों के बीच बढ़ती हुई पारस्परिकता में अपने सर्वोत्तम योगदान द्वारा प्रोत्साहन देने का प्रयास करना ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में इस क्षेत्र के क्रियाशील लोगों का अधिकार होगा। हमारे अमरीकी मित्रों के सहयोग पर ही हमारे प्रयासों की सफलता अवलम्बित है। मैं सप्रमाण कह सकता हूँ कि यह ऐसा सहयोग है, जिस पर ब्रिटिश विद्वान विश्वासपूर्वक भरोसा कर सकते हैं।

दी यूनिवर्सिटी आफ
मिन्नेसोटा,
मिन्नियापोलिस
जून-अगस्त—१९४८

मैक्स बेलोफ

विषय-सूची

—०—

अध्याय १

भूमिका

वर्तमान ग्रन्थ से सम्बद्ध एक दूसरी पुस्तक की समीक्षा में सर अर्नेस्ट बार्कर ने लिखा, "ऐसे महापुरुषों की संख्या नगण्य है, जिन्हें अपने युग के सार स्वरूप में गिना जा सकता है अथवा युग के साथ उनकी इतनी घनिष्ठता स्थापित हो गयी है कि उनकी चर्चा करते समय उनके युग का विश्लेषण भी करना पड़े।" निस्सन्देह इस दायरे में गिने-चुने लोग ही आते हैं, किन्तु यह कहना निश्चय ही आतिशयोक्ति होगी कि ऐसा एक भी ऐतिहासिक पुरुष इस कोटि में आता ही नहीं। थामस जेफर्सन का जीवन-चरित्र और अमरीकी विचारधारा को समझने में उसका महत्व, ऐसी धारणा के प्रतिकूल कम से कम एक विश्वसनीय उदाहरण है। यदि ऐसे ही एक दूसरे महापुरुष लिंकन के इस कथन को स्वीकार किया जाय कि अमरीकी राष्ट्र का जन्म स्वाधीनता के लिए हुआ और उसका उत्सर्ग इसी में निहित है कि सभी मनुष्य समान रचे गये हैं तो अमरीकी लोकशाही को समझने के लिए ऐसे महापुरुष की जीवनी से बढ़ कर और कौनसी भूमिका हो सकती है, जिसने स्वयं इस 'स्वाधीन राष्ट्र' के जन्म की घोषणा की और संविधान रचा। परन्तु केवल 'स्वाधीनता की घोषणा' के रचयिता के तौर पर ही थामस जेफर्सन को हम उसके युग के सार के रूप में ग्रहण नहीं कर सकते। उस दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये जाने के बाद भी जेफर्सन आगामी पचास वर्षों तक जीवित रहे जिनमें तीस से अधिक वर्ष उनके सक्रिय जनसेवा का काल रहा, जिसमें न तो उनकी राजनीतिक चेतना और न बौद्धिक प्रतिभा ही धूमिल हुई।

अभी हाल ही प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में प्रारम्भ किया गया उनके पत्रव्यवहार का अन्तिम संस्करण पूरा हो जायगा, तब सर्वप्रथम आधुनिक इतिहास के इस महान् निर्माणकारी युग पर सांगोपांग एक मात्र समकालीन विवेचना का प्राप्त होना संभव है। विचारधारा में अन्य विशेषताओं की तरह पृथकतावाद के जनक के अलावा जेफर्सन कुछ और भी थे। उनका यह पृथकतावाद इस कारण उत्पन्न नहीं हुआ था कि वे बाहरी विश्व से अपरिचित थे। राजनीतिक एवं बौद्धिक, दोनों ही पक्षों में जेफर्सन के क्रिया-कलापों ने कथित अतलान्तक इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योग दिया।

जो लोग स्वयं इतिहास के व्यावहारिक मूल्य में विश्वास रखते हैं, उनके लिए अतलान्तक इतिहास का अध्ययन मुख्य विषय है अथवा होना ही चाहिए।

स्वयं अमरीकी राष्ट्र के दृष्टिकोण से तथा समस्त पश्चिमी जगत् के दृष्टिकोण से भी जेफर्सन के दीर्घकालिक जीवन के अन्तर्गत उस युग का समावेश हो जाता है, जो महान परिवर्तनों की दृष्टि से वास्तव में एक असाधारण युग था। कुछ लोगों ने जेफर्सन की असंगतियों एवं विरोधाभासों की ओर संकेत कर उनकी सामाजिक एवं राजनीतिक विचारधाराओं के महत्व को कम आँकने का प्रयास किया है। किन्तु जिस व्यक्ति ने अमरीकी और फ्रांसीसी राज्य क्रान्तियों को देखा, जिसने नेपोलियन और 'पवित्र गठबन्धन' का युग देखा, जिसने पुरानी दुनिया में औद्योगिक क्रान्ति के प्रारम्भिक दिन तथा नये विश्व के आन्तरिक विस्तार का श्रीगणेश देखा, और फिर भी जो अपनी पूर्व धारणाओं में पूर्ण और असंदिग्ध विश्वास रखता रहा, उसने सीखने और भुला देने की अपनी असमर्थता में स्वयं 'बोरबनों' को भी मात कर दिया। जेफर्सन की सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा को, जो उनके प्रारम्भिक जीवन में ही दृढ़ हो गयी थी व्यावहारिकता की कसौटी पर कसा गया और जहाँ कहीं वह खरी नहीं उतरी उसमें संशोधन किया गया। बौद्धिक सतर्कता के साथ-साथ यह व्यावहारिक सद्भावना ही, जीवनी लेखकों के जेफर्सन के प्रति आकर्षित होने का वास्तविक रहस्य है और यही उनके जीवनवृत्तान्त को उनके युग की समस्याओं के मनन के लिए एक अनुपम और उपयुक्त भूमिका बना देती है।

चूंकि जीवनी-लेखक स्वयं अपने को तथा अपने पाठकों को इन परिवर्तनों की ओर दृष्टिपात से वंचित नहीं कर सकता है, इसीलिए जेफर्सन के जीवनकाल में घटित कुछ अन्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तनों पर विचार करना उपयुक्त ही होगा। थामस जेफर्सन का जन्म १७४३ में हुआ था। इसी वर्ष उनके बादशाह जार्ज द्वितीय ने मेरिया थेरेसा की ओर से फ्रांसीसी सेना के विरुद्ध युद्ध में कार्टरेट की प्रबल सेना का नेतृत्व किया था। इसमें इंगलिश, हनोवारियन और हेसियन सेनाएं सम्मिलित थीं। फ्रांसीसी सेना ने सम्राट चार्ल्स सप्तम का समर्थन किया था। ब्रिटिश इतिहास में यह युद्ध 'आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध' और अमरीकी इतिहास में 'बादशाह जार्ज का युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है, जैसे इस युद्ध का अमरीकी राष्ट्र के निर्माण से सम्बंध मात्र भी न हो। यह युद्ध अमरीका और यूरोप दोनों ही जगह हुआ क्योंकि जेफर्सन के जन्म के दिन अमरीकी महाद्वीप और आसपास के दूसरे द्वीप यूरोप के तीन प्रमुख साम्राज्य और दो या

तीन छोटे-छोटे राज्यों के अंग थे।

अमरीकी मुख्य भूमि पर इनसे पृथक तेरह ब्रिटिश उपनिवेश थे। इन्हीं में से एक उपनिवेश वर्जीनिया जेफर्सन की जन्मभूमि भी था। इन उपनिवेशों की कुल आबादी लगभग साढ़े बारह लाख थी। उन्हीं से लगा न्यू फ्रांस (कनाडा) का फ्रांसीसी उपनिवेश था, जिसकी आबादी लगभग ५४ हजार थी। इससे भी कम आबादी लुइसियाना के फ्रांसीसी उपनिवेश की थी, जो कनाडा और न्यू आर्लियन्स के बीच सम्बन्ध जोड़ता था और दक्षिण की ओर फ्लोरिडा के स्पेनिश उपनिवेश से सम्बन्ध स्थापित करता था। फ्लोरिडा उस साम्राज्य की चौकी के रूप में था, जो महाद्वीप के समूचे मध्य और दक्षिणी भागों में फैला हुआ था, बीच में केवल पुर्तगाली ब्राजील और एक-दो दूसरे छोटे-छोटे द्वीप पड़ते थे।

१८२६ में जेफर्सन का देहान्त हुआ। उस समय इंगलैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन जार्ज द्वितीय के प्रपौत्र के प्रति उनकी राजभक्ति समाप्त हो चुकी थी और न उस सप्तवर्षीया राजकुमारी विक्टोरिया के प्रति भी उस प्रदेश के लोगों की राजभक्ति रह गयी थी, जिसके शासनकाल में भूमण्डल में ब्रिटिश साम्राज्य का और भी विस्तार हुआ था। कनाडा अब उसी साम्राज्य का अंग था, किन्तु लुइसियाना और फ्लोरिडा अमरीकी गणतंत्र, संयुक्तराज्य अमरीका के अंग बन चुके थे। जबकि पहले इन तेरह उपनिवेशों को आपस में जोड़नेवाली कड़ी केवल मात्र दूरवर्ती साम्राज्य के प्रति उनकी समान राजभक्ति थी, परन्तु अब एक संघीय गणराज्य ऐसे चौबीस राज्यों को एक सूत्र में पिरोये हुए था। अब इस बस्ती की सीमा बढ़ते-बढ़ते उन पहाड़ों के पार तक चली गयी थी, जो अटलांटिक के समानान्तर फैले हुए थे और उधर मिस्सीसिपी तथा विशाल झीलों के आगे तक चली गयी थी। आबादी अब साढ़े बारह लाख से बढ़कर लगभग एक करोड़ दस लाख तक पहुँच गयी थी।

दक्षिण के राजनीतिक मानचित्र में भी भारी परिवर्तन हुए। स्पेन और पुर्तगाल के साम्राज्यों का पतन हो गया। उनके स्थान पर अनेक स्वतंत्र किन्तु अस्थिर प्रजातन्त्रों की तथा ब्राजील के नये साम्राज्य की स्थापना हुई। अपनी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व जेफर्सन ने उस गम्भीर मंत्रणा में भाग लिया था, जिसके परिणामस्वरूप मनरो-सिद्धान्त की घोषणा हुई और जिसके द्वारा अमरीका इस बात के लिए वचनबद्ध हुआ कि वह दक्षिणी अमरीका को अपने प्रभाव में लाने वाले किसी भी साम्राज्यवादी शक्ति के प्रयास का विरोध करेगा।

इसी के आधार पर रूस को भी चेतावनी दी गयी कि अलास्का उपनिवेश के दक्षिण की ओर और अधिक रूसी विस्तार को अमैत्रीपूर्ण कार्य समझा जायगा। अलास्का में रूस के अधिक विस्तार का अर्थ यह होता कि अमरीका का आबद्ध सागर वाले राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न अधूरा रह जाता। १६ वीं शताब्दी में अमरीकी इतिहास का जो स्वरूप था, वह इस तरह प्रकट हो गया।

जेफर्सन के जीवनकाल में यूरोप में जो परिवर्तन हुए वे इतने स्पष्ट परिलक्षित नहीं होते। नेपोलियन-युग के बाद बारबोन, हैब्सबर्ग, रोमनोव और होहेनजोलन राजघरानों की प्रतिद्वन्द्विताएँ यूरोप की राजनीतिक अस्थिरता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण साबित होने लगी थीं, परन्तु यह स्थिरता केवल ऊपरी दिखावा-मात्र थी। परन्तु फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति का भूत अभी दूर तक छाया हुआ था। इन राजघरानों के विवादों का उतना महत्त्व नहीं था, महत्व इन राजघरानों के उन गठबन्धनों का था जो लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और समाजवाद की विश्रृंखल शक्तियों के विरुद्ध राजवंशों में एकता स्थापित करते थे। निकोलस प्रथम और मेटरनिक के समय का यूरोप पन्द्रहवें लुई और मेरिया थेरेसा के यूरोप से भिन्न था। इंग्लैण्ड भी, जिसने क्रान्ति का प्रतिकार किया और अपनी पार्लियामेंट में सुधार भी नहीं किया, जार्ज द्वितीय के इंग्लैण्ड से भिन्न था। केनिंग की यह पाखण्डभरी घोषणा जो उसने जेफर्सन की मृत्यु के ६ महीने बाद की कि पुरानी दुनिया के सन्तुलन को ठीक रखने के लिए नयी दुनिया को स्वीकार किया गया, कार्टेरेट जैसी नहीं थी।

इन राजनीतिक परिवर्तनों के साथ साथ यांत्रिक प्रगति इतनी तेजी से हुई, जितनी मानव-इतिहास में पहले कभी नहीं हुई थी। सत्रहवीं शताब्दी में विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की घोषणा के बावजूद, जहाँ तक प्राकृत्तिक शक्तियों पर मनुष्य के नियंत्रण का विषय है, जेफर्सन का युग अधिक विकसित नहीं था। १७४३ में जब जेफर्सन का जन्म हुआ तब न्यूकोमेन का भाप-इंजिन ही औद्योगिक क्रांति एवं भाप-युग का श्रीगणेश मात्र था। उस समय जेम्स वाट की अवस्था सात वर्ष की थी और रिचार्ड आर्क राइट की दस वर्ष। बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अभी बिजली का प्रयोग आरम्भ भी नहीं किया था। जेफर्सन की मृत्यु के कुछ महीनों पहले ही जबकि अटलांटिक और विशाल झीलों को मिलाने वाली एरी नहर का औपचारिक रूप से उद्घाटन हुआ, अमरीका के आन्तरिक जलमार्गों पर भाप-चालित नौकाएं आमतौर पर चलती थीं और इसके सात वर्ष बाद अटलांटिक को पार करने-

वाले प्रथम प्रयोगात्मक जलपोत का निर्माण हुआ। १८२६ में ही अमरीका में पहली बार सफल रूप से रेल इंजिन का निर्माण हुआ। यद्यपि बिजली का उपयोग अभी आरम्भ नहीं हुआ था, तथापि गैस-बत्ती का प्रयोग आमतौर पर होने लगा था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि एली व्हिटने ने परस्पर बदलने योग्य पुर्जों द्वारा उत्पादन-प्रणाली का प्रदर्शन करके उच्च स्तरीय सामूहिक उत्पादन की सम्भावनाओं को प्रकट करके टेकनिकल प्रगति में अमरीका के अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान का श्रीगणेश किया था और जेफर्सन की लोकतंत्र सम्बंधी महत्वपूर्ण मान्यताओं को अत्यन्त प्रभावशाली चुनौती दी गयी। स्वयं जेफर्सन के दक्षिण में, जहां १८ वीं शताब्दि में तम्बाकू की ही प्रधानता थी, वहां रूई की प्रधानता हो गयी और इस तरह दक्षिणी बगान तथा लंकाशायर की सूती मिलों के बीच तथा निग्रो गुलाम और इंग्लिश सूती यंत्रचालक के बीच जो सम्बन्ध स्थापित हो गया था, उसीसे १९ वीं शताब्दि के सामाजिक इतिहास का स्वरूप विकसित हो चला था।

भौतिक विज्ञान में प्रगति के साथ-साथ अन्य विचारधाराओं में भी कम महत्वपूर्ण विकास नहीं हो रहे थे। जेफर्सन की युवावस्था में १८ वीं शताब्दि की फ्रांसीसी दार्शनिक एवं सामाजिक विचारधाराएँ चरमसीमा पर पहुंच चुकी थीं। जब जेफर्सन ५ वर्ष के थे, तब माण्टेस्क्यू ने 'एस्पिरिट डेस लायस' प्रकाशित किया, जब वे ७ वर्ष के थे, तो 'विश्वकोश' प्रकाशित हो चुका था, जब १५ वर्ष के थे तो क्रेसने का 'टैब्ले एकोनामिक', १९ वर्ष के थे तो 'एमिले' और 'कण्ट्राट सोशल', २१ वर्ष के थे तो वोल्टेयर का 'डिक्शनेअर फिलासाफिक' प्रकाशित हुआ। दर्शनशास्त्र में यह काल डेविड ह्यूम का युग था। यह तर्क और शंकाओं का युग था।

१८२६ में रोमाण्टिक एवं ऐतिहासिक प्रवृत्ति का युग आरम्भ हो गया था। दार्शनिक जगत में हिगल का प्रभुत्व था। जेफर्सन के युवाकाल में समाज का अध्ययन इकाई के रूप में होता था, जबकि अब उसके विभिन्न अंगोंका पृथक पृथक अध्ययन जारी हो चला था। एडम स्मिथ जे. बी. से, माल्थस और रिकार्डो ने आधुनिक अर्थतंत्र की नींव डाल दी थी। जेफर्सन ने इनके तर्कों को 'गंदला' बताया था। लियोपोल्ड वान रांक ने अपना प्रथम ग्रन्थ प्रकाशित किया था और वैज्ञानिक इतिहास के युग का सूत्रपात हो चुका था। नये युग में बौद्धिक समन्वय का जो प्रयास चल रहा था, वह १८ वीं शताब्दि के प्रयास से बिल्कुल भिन्न था। जेफर्सन की बौद्धिक प्रतिभा से प्रभावित होने

वाला अन्तिम व्यक्ति युवक अगस्ट कोम्ते था।

जिस समय जेफर्सन युवावस्था में पहुंचे थे, उस समय उत्तरी अमरीका के रेड इंडियनों से सदा सीमायुद्ध का भय बना रहता था। पोण्टियाक-विद्रोह के समय उनकी अवस्था २४ वर्ष की थी। यह रेड इंडियनों का अन्तिम स्वातंत्र्य युद्ध था। परन्तु वे उस काल तक जीवित रहे, जब रेड इंडियन (सुदूर पश्चिम को छोड़ कर) मनोरंजन के विषय बन चुके थे। जिस वर्ष जेफर्सन की मृत्यु हुई, फेनिनमोर कूपर ने 'दि लास्ट आफ दि मोहिकन्स' प्रकाशित किया। नयी दुनिया की राजनीतिक स्थिरता के साथ ही साहित्यिक मुक्ति का भी युग आरंभ हो गया।

यूरोप में जेफर्सन के मित्रों में केवल लफायत ही एक ऐसे थे—वे उससे चौदह वर्ष छोटे थे—जो इतनी लंबी अवधि के सार्वजनिक मामलों की गहरी जानकारी का दावा कर सकते थे। कुछ ऐसे वार्तालाप हैं, जिन्हें जानने का लोभ इतिहासकार कदाचित ही संवरण कर सके। १८२४ में जेफर्सन और लफायत के बीच के ये वार्ताप्रसंग भी ऐसे ही हैं। लफायत एक पखवाड़े तक जेफर्सन के यहाँ ठहरे थे। किन्तु लफायत जेफर्सन से कम रोचक था, और कोई भी विश्वास कर सकता है कि उम्र में बड़े जेफर्सन ने ही लफायत को अधिक जानकारी दी।

जेफर्सन की विभिन्न रुचियों और उनके असाधारण क्षेत्र को देखते हुए मूल विषय आँखों से ओझल नहीं हो जाना चाहिए। ऊपर दर्शाये गये राज-नीतिक व सामाजिक परिवर्तनों में किसी में भी जेफर्सन की अधिक रुचि नहीं थी। लफायत जैसे तलवार के धनी और जेफर्सन जैसे विचारसृष्टा ने पचास वर्ष पहले जिन प्रयोगात्मक संभावनाओं का श्रीगणेश किया था, उसे मूर्त रूप देने में ही जेफर्सन अधिक संलग्न था। जबकि महाद्वीप में आबादी बहुत कम थी और न इतना विशाल जनसमाज ही था, सीमाओं पर ईर्ष्यालु शत्रुओं का भय भी नहीं था, ऐसी सुविधाजनक स्थिति में भी क्या अमरीकियों के लिए एक ऐसे समाज का निर्माण करना सम्भव न था, जिसमें 'स्वतन्त्रता की घोषणा' के महान सिद्धान्तों को मूर्त रूप दिया जा सके। राजतन्त्र, गुरुडम तथा यूरोप की धार्मिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं से मुक्त होने के बाद क्या किसी मानवीय प्रतिभा का एकाकी प्रयास ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है, जिसमें इति-हास में पहले पहल जीवन, स्वतंत्रता तथा सुख-समृद्धि की बातें लोगों को बिना किसी उपहास के आकृष्ट कर सके ?

निग्रो-समस्या-सम्बन्धी अपनी पुस्तक 'एन अमेरिकन डिलेमा' में गुन्नार मीरडाल ने अमरीकी समाज के विकास को एक स्थायी लोकतांत्रिक आदर्श और कुछ तथ्यों (जिसमें अमरीकी निग्रो की स्थिति भी एक है) के बीच बार-बार होनेवाले संघर्ष के रूप में बताया है, जिसमें सामंजस्य की स्पष्टतः सम्भावना नहीं है। आदर्श और व्यवहार तथा सामाजिक सिद्धान्तों और सामाजिक तथ्यों के बीच इस तरह के विरोधाभासों का स्वरूप जेफर्सन की जीवनी और रचनाओं में सर्वत्र पाया जाता है। इससे जिस तनाव की भावना का आभास मिलता है, उससे जेफर्सन को अध्ययन करने वाला अनिवार्यतः यह महसूस करने लगता है कि १८ वीं शताब्दि का यह महापुरुष मानों इसी युग का समकालीन था, जबकि उस काल के दूसरे लोगों के बारे में वह यह महसूस नहीं करता है।

किन्तु यह तो चित्र का केवल एक पक्ष है। जेफर्सन के हृदय में एक दूसरा उद्देश्य था, जिसे वे लोकतांत्रिक प्रगति के साथ आबद्ध मानते थे। यह उद्देश्य शांति का उद्देश्य था। 'बादशाह जार्ज का युद्ध', जो उनके जन्म से जारी हुआ, उन युद्धों का केवल अंशमात्र ही था, जिन्होंने निरन्तर आधी सदी से अधिक दिनों तक यूरोप और अमरीका को शस्त्रसज्जित रखा।

'बादशाह जार्ज के युद्ध' के पूर्व रानी एनी का युद्ध हुआ था (स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध) और उसके पहले बादशाह विलियम का युद्ध (लीग आफ आग्सबर्ग का युद्ध)। यद्यपि १८ वीं शताब्दि युद्धों की शताब्दि थी, तथापि यह एक ऐसा युग था, जिसमें शान्ति की मृगतृष्णा भी बनी रही। १७१३ में प्रकाशित दि अबे डी सेटर पियरे की "प्रोजेट डि पेक्स परपिचुले" और १७९५ में प्रकाशित काण्ट के 'ज़ुम एविजेन-फ्रायडेन' से प्रकट होता है कि शांति की यह विचारधारा सारी शताब्दि भर मौजूद थी। इन सुदूरगामी योजनाओं के अतिरिक्त भी उन अंतरराष्ट्रीय वकीलों का निरन्तर प्रयास चल रहा था, जो युद्ध को तथ्य रूप में स्वीकार करते हुए युद्ध की स्वीकृत प्रणाली को अधिक उदार बना कर तथा तटस्थता के सिद्धान्त की व्याख्या करके उसे मूर्त रूप देकर युद्ध की विभीषिका को हल्का करना चाहते थे। जेफर्सन को अपनी प्रौढ़ावस्था प्राप्त होते ही यह विश्वास हो गया कि युद्ध वास्तव में यूरोप के राजाओं और अभिजाततंत्रों की बुद्धिहीन प्रतिस्पर्धाओं के कारण ही अधिकतर होते हैं। अमरीकी जनता, स्वभाग्य-निर्णायक होने के नाते तथा अपनी भौगोलिक सुरक्षा के कारण तटस्थता और पृथकता की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति अपना कर मानव जाति के इस भयङ्करतम'

अभिशाप से अपने को मुक्त रख सकती है और युद्ध के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही दुष्प्रभावों से बच सकती है अर्थात् युद्धकाल में शस्त्रीकरण पर अपार व्यय से तथा शान्ति-काल में विशाल स्थायी सेना के खर्च से बच सकती है। एक बार पुनः जेफर्सन का जीवन उसके युग के वास्तविक तथ्यों तथा इस स्वाभाविक वृत्ति कि उदार लोकशाही में युद्ध की आवश्यकता नही रहती है के बीच के द्वन्द्व को प्रकट करता है। क्योंकि एक राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ के रूप में जेफर्सन को जिन युद्धों का सामना करना पड़ा—ऐसे युद्ध जिनका आरम्भ क्रान्तिकारी फ्रांस द्वारा यूरोप के राजाओं को चुनौती देने पर हुआ,—वे, आधुनिक अर्थों में, उन युद्धों की अपेक्षा अधिक स्थायी, उग्र और पूर्ण थे, जो उनकी युवावस्था में निरंकुश राजाओं द्वारा सीमित आधार पर लड़े गये थे। मार्शल डिसैक्स से लेकर नैपोलियन तक, फ्रेडरिक द्वितीय से लेकर स्कार्नहार्स्ट और जीनेसेनू तक तथा फिजी सशस्त्र जलपोतों से लेकर महाद्वीपीय प्रणाली तथा 'आर्डर्स इन कौंसिल' तक संक्रमण की जो स्थिति रही, वह किसी भी शान्तिप्रिय व्यक्ति के लिए उत्साहवर्द्धक नहीं थी। फिर एक बार आदर्श और वास्तविकता—बाह्य जगत् तथा जेफर्सन के उद्विग्न एवं जिज्ञासु मन में ऐसा ही संघर्ष हुआ। यह ठीक उसी प्रकार का धर्मसंकट था, जैसा कि उनके दो उत्तराधिकारियों वुडरो विल्सन और फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के समक्ष उपस्थित हुआ था। ये दोनों ही व्यक्ति अमरीकी प्रेसीडेण्ट थे और उस दल के, जो जेफर्सन को संस्थापक और संरक्षक मानता है, नेता के रूप में उत्तराधिकारी थे। यह संयोग की ही बात है कि जेफर्सन जैसे पृथकतावादी व युद्ध से दूर रहने वाले व्यक्ति के उत्तराधिकारी और शिष्य जेम्स मेडिसन ने अंत में देश को युद्ध में झोंक दिया।

इस प्रकार जेफर्सन की असंगतियों का कारण केवल इतना ही नहीं था कि उन्होंने एक असाधारण परिवर्तन-काल में एक असाधारण एवं दीर्घकालिक सक्रिय जीवन व्यतीत किया था, बल्कि उसके कुछ और गम्भीर कारण भी थे। जिन असमंजसों के विरुद्ध उनकी बुद्धि जूझ रही थी वे स्थायी थे। अधिकांश मूलभूत राजनीतिक समस्याओं की भाँति उनका भी अस्थायी समाधान मिल ही जाता था और बाद में फिर ये समस्याएँ नये और उग्र रूप में उठ खड़ी होती थीं। हो सकता है कि इस अपूर्ण विश्व में इन्हें टालने के लिए यही व्यावहारिक हो, किन्तु अस्थायी समाधान के लिए भी सैद्धान्तिक जानकारी की आवश्यकता होती है। किसी राजनीतिक विचारधारा में कौन से तत्त्व अस्थायी हैं और कौन से स्थायी, इसका भेद जानना राजनीतिज्ञ का प्रमुख कार्य होता है

और उसके इस कार्य में इतिहासकार अच्छा सहायक सिद्ध हो सकता है। जब तक अमरीकी जनता जेफर्सन के सिद्धान्त को ठुकरा नहीं देती—और इस विचार-धारा का प्रभाव क्षीण होने का कोई लक्षण भी नहीं है—तब तक थामस जेफर्सन के अध्ययन को केवल कोरा शास्त्रीय अभ्यास ही नहीं माना जा सकता।

अध्याय २

प्रशिक्षण–काल

(१७४३–१७७३)

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चरित्र का गठन जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में होता है और अनुभव भी यही बताता है कि किसी मनुष्य के विश्वासों का आधार अधिकतर प्रौढ़ावस्था में पहुँचने के पहले के वर्षों में ही सुदृढ़ होता है। ये विश्वास प्रायः उसकी अचेतन मान्यताएं होती है, जिन पर उसकी विचार-धारा और क्रियाकलाप आधारित होते है। फिर भी, इतिहासकार जिन पुरुषों को ऐतिहासिक नायक मानकर चलता है, उनके जीवन की इस चारित्रिक रचनात्मक अवधि के बारे में बहुत कम जान सकता है; अपवादस्वरूप कुछ ऐसे लोगों को छोड़ा जा सकता है जो अपनी वंशानुगत परिस्थितियों के कारण ऐतिहासिक घटनाचक्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेते हैं। भले ही विश्व घटनाचक्र से सम्बंधित किसी महापुरुष के निधन के पश्चात् उसकी कीर्ति से आकर्षित हो उसके प्रारंभिक जीवन के बारे में खोज-बीन की भी आवश्यकता उत्पन्न हो, तो भी इस प्रकार उपलब्ध अधिकांश जानकारी पर उस महापुरुष की कीर्ति की छाया पड़ी रहेगी। प्रारंभिक जीवन की जानकारी मिल सकती है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उसे विश्वसनीय कहा जा सकता है? जब किसी राजनीतिक नेता के बारे में विचार किया जाता है, तो उसके वयस्क जीवन के प्रारम्भिक वर्षों के बारे में भी प्रायः प्रश्न उठता है। केवल एकमात्र अपवाद जेफर्सन के महान प्रतिद्वन्द्वी अलेक्जेण्डर हेमिल्टन जैसे असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्तियों के अतिरिक्त, यहाँ तक कि क्रान्ति के युग में भी राजनीतिक नेतृत्व शायद ही कभी किसी युवा पुरुष को प्राप्त हुआ है। किसी भी पर्यवेक्षक को ऐसे स्पष्ट कारण दृष्टिगत नहीं होंगे कि क्यों एक तरुण युवापुरुष को, जब कि उसका सामाजिक स्तर उचित है तो उसे इस उम्र के बाद यशप्राप्ति मिलनी चाहिए

अथवा नहीं (कहने का तात्पर्य यह है कि युवावस्था के इन क्रियाकलापों की ओर किसी का गंभीरता से ध्यान भी नहीं जाता है)। किसी भी जीवनी-लेखक के लिए प्रायः दो ही चारे हो सकते हैं; या तो वह अपनी कथावस्तु के नायक के प्रारम्भिक जीवन की शीघ्र छानबीन करे या प्रौढ़ावस्था के जीवन की प्रसिद्ध घटनाओं के आधार पर उसके साथ ऐसी किम्वदन्तियों को मिलाने का प्रयास करे, जो उसके जीवन-चरित्र के अनुकूल हों। जेफर्सन के जीवन-चरित्र-लेखक ख्यातिप्राप्त हेनरी एस. रण्डाल ने जेफर्सन की जीवनी सम्बन्धी अपनी दो हजार पृष्ठों की पुस्तक में केवल ७६ पन्नों में ही उनके जीवन के प्रथम तीस वर्षों पर प्रकाश डाला। यह पुस्तक तीन भागों में (१८५८ में) प्रकाशित हुई। इनके बाद के चरित्र-लेखकों ने दूसरे पहलू की उपेक्षा नहीं की है, क्योंकि जेफर्सन, जो अपने जीवन-काल में ही विवादास्पद व्यक्ति बन चुके थे, अपने निधन के बाद भी अनुमान और कल्पनाओं का विषय बनने से नहीं बच सकते थे।

रण्डाल द्वारा लिखी गयी जीवनी के बाद जेफर्सन और औपानिवेशिक वरजीनिया के इतिहास के अध्ययन में काफी वृद्धि हुई है। इतिहास और पुरातत्व के विद्वानों ने रण्डाल द्वारा प्रस्तुत जीवनचरित्र में तथा उनकी प्रारम्भिक पृष्ठ-भूमि की कुछ कमियों और त्रुटियों को धीरे धीरे दूर कर दिया है। १९४३ में श्रीमती मेरी किम्बाल ने अपनी पुस्तक 'जेफर्सन, दि रोड टू ग्लोरी—१७७४–१७७६' में जेफर्सन के प्रारम्भिक जीवन का तथा उनके राजनीतिक जीवन की प्रारम्भिक अवस्थाओं का पर्याप्त विवरण देने के लिए सर्वप्रथम नयी सामग्री का पूर्ण उपयोग किया है। उन्हीं के शब्दों में इस प्राप्त सामग्री के बारे में यह कहा जा सकता है, सामाजिक और शैक्षणिक प्रभाव, परिवार और मित्रों की पृष्ठभूमि तथा अन्य ऐसे ही वातावरण का जेफर्सन के जीवन पर प्रभाव पड़ा। एकान्तप्रिय एकाकी व्यक्ति जो पुरानी चप्पलें और सादे वस्त्र पहने उस लोकतंत्र को व्यावहारिक रूप देने में निमग्न था, जिसका वह उपदेश दिया करता था, परन्तु जेफर्सन के इस चित्र का दूसरा पहलू भा है कि युवावस्था में तरुण जेफर्सन चटकदार रंगीन कोट पहननेवाला सुन्दर तरुण, हार्दिक प्रेमी और विश्वासी पति तथा आदर्श युवक था, जो समय आने पर देश को जरूरत पड़ने पर एक महान दार्शनिक और उत्साही जनसेवक के रूप में प्रकट हुआ।

महान लोकप्रिय नेता जेफर्सन स्वयं जन्म, पालन-पोषण या रुचियों से सामान्य जनता के व्यक्तियों में से नहीं थे। वास्तव में उनका प्रारम्भिक जीवन,

जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, एक सामान्य व्यक्ति जैसा जीवन था, इस अर्थ में सामान्य कि वे भूस्वामियों और दास-स्वामियों के उस सम्पन्न बगान-मालिक वर्ग में पैदा हुए थे, जिसका औपनिवेशिक वरजीनिया के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन पर प्रभुत्व था। जेफर्सन निस्सन्देह स्थानीय अभिजातवर्ग वालों में से एक थे। भले ही यह वर्ग यूरोप के अभिजातवर्ग के ऐश्वर्य और संपत्ति की तुलना में नगण्य ही क्यों न हो, फिर भी स्थानीय समाज में इस वर्ग की जो स्थिति थी तथा पैतृक संपत्ति की जो सुरक्षा उन्हें प्राप्त थी, उस ओर उंगली नहीं उठाई जा सकती थी।

सच पूछा जाय तो समय को देखते हुए उनकी पैतृक सम्पत्ति अभी अधिक पुरानी भी नहीं थी और यद्यपि उनका परिवार कई पीढ़ियों से उपनिवेश में सम्मानपूर्वक स्थापित हो गया था, फिर भी उनके पिता ने (१७०८ में जन्म) १८ वीं शताब्दि के मध्य में भूमि मे अपनी पूंजी का बडी कुशलता से विनियोग कर प्रचुर सम्पत्ति अर्जित की। उनके पिता पीटर जेफर्सन ने एक 'सर्वेयर' के रूप में काफी ख्याति प्राप्त की। एक विशाल भूमिधर समाज में यह बड़ा ही महत्वपूर्ण व्यवसाय था। १८ वीं शताब्दी के मध्य में बगान-मालिक समुदाय के बुद्धिमान तथा परिश्रमी लोग प्रारम्भिक उपनिवेशों की अनुर्वर समुद्रतटवर्ती जमीनों को छोड़कर ब्लू रिज पर्वतमालाओं की ओर उर्वर भूमि में जाकर बसने का प्रयास कर रहे थे। पीटर जेफर्सन एक मैनेजर और पांच ओवरसियरों की सहायता से लगभग चार हजार एकड़ भूमि पर खेती करके तथा कुछ अन्य सम्पत्तियों को खरीद कर निश्चय ही सभी दृष्टियों से एक धनाढ्य पुरुष बन गये थे और उन्हें यदि औपचारिक शिक्षा नहीं के बराबर मिली थी, तो भी बौद्धिक रुचियों और व्यावहारिक गुणों का उनमें किसी भी तरह का अभाव नहीं था।

सन् १७३९ में जेन के साथ विवाह हो जाने के बाद पीटर जेफर्सन की स्थिति और भी दृढ़ हो गयी। जेन इशाम रनडोल्फ की पुत्री थीं, जिनका परिवार वर्जीनिया के अभिजातवर्ग में पहली श्रेणी का था और जिनको स्वयं जनता में भी काफी ख्याति प्राप्त थी। जेफर्सन परिवार की भाँति रनडोल्फ परिवार ने भी पश्चिम की ओर किये जाने वाले सामान्य अभियान में भाग लिया था। १७३७ में पीटर जेफर्सन ने टुकाहो के विलियम रनडोल्फ से अल्बे मार्ली काउण्टी में एक जमींदारी खरीदी, जिसका नाम शेडवेल रखा। यहीं पर वे बस गये और यहीं १३ अप्रेल, १७४७ को उनके तीसरे बच्चे और प्रथम पुत्र थामस का जन्म हुआ।

थामस जेफर्सन ने ७७ वर्ष की अवस्था में अपनी आत्मकथा में एक स्थल पर लिखा है कि उनके पिता देश के उस भाग में तीसरे या चौथे प्रवासी थे और स्वयं उनके जन्म के दो वर्ष बाद के अभिलेखों से पता चलता है कि उस काउण्टी में केवल १०६ गोरे निवासो, केवल १ रेड इंडियन १७७ निग्रो और रहते थे। यद्यपि अल्बेमार्ले काउण्टी ऐसा क्षेत्र था, जहां लोग अभी हाल ही में आकर छुटपुट बस गये थे, फिर भी इस को सीमाप्रदेश नही कह सकते। वास्तविक सीमा तो अभी भी पश्चिम की ओर एक सौ मील पर थी, जहाँ रेड इंडियनों के विरुद्ध स्थायी प्रतिरक्षा की व्यवस्था की गयी थी और यदि जेफर्सन का प्रारम्भिक जीवन महत्वपूर्ण रहा हो, तो भी इस प्रारम्भिक जीवन का वातावरण सीमाप्रदेश जैसा नही था। जमीदारों के परिवार आपसी घनिष्ठता और सम्बंधों द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध थे। यही जेफर्सन की सामाजिक पृष्ठभूमि थी। ये परिवार यथासम्भव शीघ्र ही उस सांस्कृतिक व सामाजिक स्तर को पाने के लिए प्रयत्नशील थे, जो पहले से व्यवस्थित बस्तियों में प्रचलित था। अभी हाल में की गयी खुदाई से पता चला है कि जेफर्सन का जन्मस्थान देश की सीमा पर नहीं था, बल्कि वह नियमित रूप से आयोजित एक विशेष ढग की संस्कृति का केन्द्र था।

अल्बेमार्ले काउण्टी की बिखरी आबादी वर्जीनिया के लिए कोई नयी बात नहीं थी, यद्यपि उस शताब्दी के मध्य के दशकों में उत्तर की ओर से बड़ी तेज़ी से प्रवासियों का निष्क्रमण हुआ था। कहा जाता है कि पीटर जेफर्सन के स्वर्गारोहण के पूर्व के वर्ष १७५६ में औपनिवेशिक वर्जीनिया की जनसख्या २ लाख ९२ हजार थी, जिसमें से १ लाख २० निग्रो थे। औपनिवेशिक वर्जीनिया के अन्तर्गत आज का केण्टकी और पश्चिमी वर्जीनिया भी आ जाता था। थामस जेफर्सन ने अपनी पुस्तिका 'नोट्स आन वर्जीनिया' में वर्जीनिया का क्षेत्रफल १२१५२५ वर्गमील बताया है, जो ब्रिटिश द्वीपसमूह के एक तिहाई के लगभग होता है। यदि हम अलेघनीज पर्वतश्रेणियों के पश्चिम के क्षेत्र को जेफर्सन के युवावस्थाकाल के औपनिवेशिक क्षेत्र से बाहर मानें तो यह क्षेत्र लगभग ४१ हजार वर्गमील रह जायगा। जनसंख्या की सघनता लगभग सात व्यक्ति प्रति वर्गमील थी, जो आज के इडाहो की जनसंख्या के लगभग थी। १७५६ में इंगलैंड और वेल्स की आबादी लगभग १२० व्यक्ति प्रति वर्ग मील के हिसाब से थी।

जेफर्सन के व्यक्तित्व और दृष्टिकोण के निर्माण में उनके प्रारम्भिक जीवन के ग्रामीण वातावरण का विशेष हाथ था। खुले मैदान के खेलों और घुड़सवारी

का सर्वोपरि शौक, प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति स्वाभाविक आकर्षण, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह भावना कि खुली और स्वच्छ जगह में ही सुखपूर्वक जीवन निर्वाह, कृषियोग्य भूमि पर अधिक लोगों का भार तथा शहरों में बढ़ती हुई भीड़ को यूरोप के लिए अधिक जटिल समस्याओं और तकलीफों का कारण मानना, ये जेफर्सन के उपरोक्त दृष्टिकोण को बनाने और उसके जीवन में इन बुनियादी तत्वों के अंकुर पैदा करने में बहुत कुछ ग्रामीण वातावरण का हाथ होना कहा जा सकता है।

परन्तु देहात को अपना घर मानने के पूर्व थामस जेफर्सन का दीर्घकाल तक समुद्रतट के प्रति आकर्षण रहा, क्योंकि १७४५ में जब पीटर जेफर्सन ने अकस्मात् विलियम रनडोल्फ के अनाथ पुत्र का अभिभावकत्व ग्रहण किया तो वे टुकाहो स्थित रनडोल्फ के मकान पर चले गये, जो शेडवेल से केवल ५० मील दूर था, किन्तु वहाँ पहुंचने में दो या तीन दिन लग जाते थे। यहीं पर जेफर्सन ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। १७५२ में जब उनका परिवार शेडवेल वापस चला आया तो थामस को अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए डोवर क्रीक स्थित पादरी डगलस के 'लेटिन स्कूल' में भेजा गया।

१७५७ में पीटर जेफर्सन का अचानक असामयिक निधन हो गया। उनका १४ वर्षीय पुत्र अब उस परिवार का मुखिया बन गया, जिसमें उसकी माता के अतिरिक्त, ६ बहनें और एक छोटा भाई था। चूंकि अब शेडवल और आसपास की जमीदारी की जिम्मेदारी थामस पर आ गयी, इसलिए उसके अभिभावकों की स्वाभाविक इच्छा उसे घर के निकट रखने की हुई और अब जेफर्सन को फ्रेडरिकविले में पादरी जेम्स मारी द्वारा संचालित स्कूल में भेजा गया जो जेफर्सन के घर से लगभग १२ मील दूर था। इसमें सन्देह नहीं कि मारी के पुस्तकालय में ही सर्वप्रथम जेफर्सन को पुस्तकों की दुनिया में प्रवेश करने का अवसर मिला और कदाचित् मारी ने ही जेफर्सन में वह वैज्ञानिक जिज्ञासा उत्पन्न की, जो जीवनपर्यन्त उनके साथ रही।

अध्ययन में जेफर्सन की इतनी पर्याप्त रुचि थी कि उपनिवेश में उपलब्ध शिक्षा-क्षेत्र से उन्होंने पूरापूरा लाभ उठाने की चेष्टा की, क्योंकि तत्कालीन लिखे गये उनके एक पत्र से हम कह सकते हैं कि उन्ही की खुद की इच्छा पर ही उन्हें विलियम्सबर्ग स्थित कालेज आफ विलियम एण्ड मेरी में पढ़ने के लिए भेजने का निर्णय किया गया।

कालेज आफ विलियम एण्ड मेरी की स्थापना १६९३ में हुई थी और

उच्चतर शिक्षा की अमरीकी संस्थाओं में हारवर्ड के बाद उसी का स्थान था। १८ वीं शताब्दि के वर्जीनिया में एक छोटे से समुदाय में उच्चतर शिक्षा पाना कोई साधारण बात नहीं थी। १७२७ से ही कालेज के अन्तर्गत चार पृथक् स्कूल थे, १५ वर्ष तक के बच्चों के लिए एक 'ग्रामर स्कूल', एक दर्शनशास्त्र का स्कूल, एक स्नातकोत्तर अध्यात्मवादी स्कूल जिसका मूल उद्देश्य आंग्लिकन धर्मप्रचार के लिए लोगों को प्रशिक्षित करना था और एक रेड इंडियन स्कूल भी था। दर्शनशास्त्र के स्कूल में बी. ए. की डिग्री के लिए चार वर्ष का कोर्स रखा गया था। किन्तु जेफर्सन ने १५ वर्ष के बजाय, जो कि वहाँ भर्ती होने की सामान्य उम्र थी—१७ वर्ष की अवस्था में वहाँ प्रवेश किया और दो ही वर्ष तक वहाँ रहे।

कालेज में दो वर्ष का समय जेफर्सन ने किस प्रकार व्यतीत किया, इस बारे में जानकारी कालेज-जीवन के एक सहपाठी तथा स्वयं जेफर्सन की अपनी आत्मकथा से मिलती है, जिसमें उन्होंने उस प्रसिद्ध व्यक्ति के महत्वपूर्ण प्रभाव का उल्लेख किया है, जिसने उनके अध्ययन का निर्देशन किया था :

"यह मेरा सौभाग्य था—और कदाचित् इसीने मेरे जीवन का भाग्य-निर्णय भी किया—कि स्काटलैण्ड के डा० विलियम स्माल गणित के तत्कालीन प्राध्यापक थे। वे विज्ञान की अधिकांश उपयोगी शाखाओं के उद्भट विद्वान, पत्रव्यवहार में प्रवीण, व्यवहारकुशल तथा व्यापक और उदार विचार के व्यक्ति थे। मेरा अहोभाग्य था कि वे मेरे प्रति शीघ्र ही आकर्षित हो गये और उन्होंने स्कूल के कामों से फुर्सत पाने के समय मुझे अपने सहवास में रखा। उनके साथ वार्तालाप करके मुझे पहली बार विज्ञान की व्यापकता तथा सृष्टि की क्रमबद्धता के बारे में जानकारी मिली। सौभाग्य से कालेज में मेरे पहुंचने के बाद ही दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक का स्थान रिक्त हुआ और उन्हें अस्थायी तौर पर वहाँ नियुक्त किया। उन्होंने पहली बार कालेज में नीतिशास्त्र, अलंकार शास्त्र और साहित्य पर नियमित व्याख्यान दिये।"

जिन लोगों को १७ वर्ष की वयमें ही एक उच्च कोटि के शिक्षक के प्रभाव में आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे शायद ही इस अपूर्व सम्मान को एक वृद्ध पुरुष का भावनात्मक प्रवाह समझेंगे और जेफर्सन भी भावुकतावादी नहीं थे। उनके शिष्यों की श्रद्धांजलियों के अतिरिक्त डा. स्माल के बारे में और कुछ भी ज्ञात नहीं है। वर्जीनिया के रंगमंच पर उनका अल्पकालिक दर्शन हुआ। १७५८ में वे प्रोफेसर नियुक्त हुए और १७६४ में उन्होंने पदत्याग कर दिया।

अपने जीवन के शेष दिन उन्होंने बर्मिंघम में बिताये और एरास्मस डार्विन तथा जेम्स वाट जैसे लोग उनके मित्रों में थे।

जैसा कि जेफर्सन ने कहा है, स्माल के द्वारा ही उनका अन्य व्यक्तियों से परिचय हुआ, जो इस छोटी-सी राजधानी के, जिस में लगभग दो सौ मकान थे और जिसकी कुल आबादी निग्रोसहित लगभग एक हजार थी, गौरवतुल्य थे।

इन दोनों व्यक्तियों में एक तो उपनिवेश के एक अत्यन्त ख्यातिप्राप्त विद्वान वकील जार्ज वाइथ थे, जिनकी अवस्था उस समय लगभग ३४ वर्ष की थी और दूसरे थे लार्ड फाकियर, जो १७५८ से ही शाही लेफ्टिनन्ट गवर्नर थे। वे बड़े ही योग्य और प्रगतिशील विचारों के थे और उस समय उनकी आयु लगभग ५० वर्ष की थी।

यदि चारों व्यक्ति, जैसा कि जेफर्सन ने कहा है, एक मित्रमंडली के अभिन्न अंग बन गये तो इससे यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि जेफर्सन, जो इस में सबसे छोटे थे, दम्भी थे और रात-दिन उन्हीं की संगति और बातचीत में लगे रहते थे। फाकियर ने उन्हें संगीतप्रेमी बनाया, यद्यपि अपने दूसरे शौक ताश के खेल की ओर उन्हें वे आकृष्ट नहीं कर सके। जेफर्सन वायालिन पर गाने-बजाने में अवश्य निपुण हो गये, किन्तु वे पढ़ाई-लिखाई के बाद अपना अधिकांश समय ऐसे ही मनोरंजनों में लगाते थे, जो एक सुन्दर, सुडौल और सम्पन्न युवक की प्रवृत्तियों के अनुकूल होते हैं, जैसे नाटक, नृत्य, घुडदौड़, मुर्गों की लड़ाई। इनमें उनका प्रथम असफल प्रणय भी शामिल है। अपनी स्वाभाविक लोकप्रियता और साहसिक भावनाओं के कारण जेफर्सन के जीवन-निर्माण-काल में कहीं भी कलंक या धूमिलता नहीं हैं, उन अवगुणों और दूषित प्रवृत्तियों का समावेश भी नहीं हो सका, जो प्रायः लोग महापुरुषों के प्रारम्भिक जीवन में अनिवार्य मान बैठते हैं। जेफर्सन निस्सन्देह एक अद्भुत निष्कलुष युवक थे और उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे तत्कालीन समाज के उत्कट प्रलोभनों के शिकार नहीं हुए अर्थात् वे न तो शराबी बने और न जुआड़ी।

लगभग आधी शताब्दि बाद उन्होंने अपने एक १६ वर्षीय पौत्र को लिखा था—"जब कभी कोई प्रलोभन उपस्थित होता तो मैं यह सोचकर आत्मसंयम का आश्रय लेता कि इन परिस्थितियों में डा. स्माल, वाईथ या उनके अभिभावक पेटोन रनडोल्फ क्या करते।" यह व्याख्या वास्तव में युवकों के लिए एक सीख के रूप में काम कर सकती है। जान पड़ता है कि जेफर्सन की बौद्धिक

शक्ति में इतनी गम्भीरता आ गयी थी कि वे यह अनुभव करने लगे कि मनोरंजन उतना ही अच्छा है, जितना स्वास्थ्य तथा सन्तुलित सामान्य जीवन के लिए आवश्यक हो। इससे अधिक मनोरंजन समय और बुद्धि का अपव्यय है। इसके अतिरिक्त, युवक की तरह अपने को प्रतिष्ठित स्थान पर पाकर तथा उसकी जिम्मेदारियों से कतराना सारहीन समझ कर उन्होंने अपने आपको अपनी योग्यता के अनुसार इनके अनुकूल बनाने का दृढ़ निर्णय किया।

कालेज छोडने के समय तक जेफर्सन की विचारधाराएं काफी स्पष्ट हो चुकी थी। एक तो वे अब शास्त्रीय विद्वान हो चुके थे, दूसरे उन्होंने यूनानी और लेटिन लेखकों का गहन अध्ययन किया था, जिसका प्रमाण उनकी पुस्तकों और साहित्य से मिलता है। डा एडरीने कोच ने अपनी हाल की पुस्तक जेफर्सन का दर्शनशास्त्र' में लिखा कि उनके नैतिक सिद्धान्तों का मूलाधार इपिक्यूरिन्स तथा स्टोइक विचारधाराओं के लेखकों से प्रभावित था। उनकी राजनीतिक विचारधारा और नैतिक दृष्टिकोण की नींव भी इसी पर आधारित थी।

आधुनिक दर्शनशास्त्र में उन पर अधिकतर लाक के महान व्यक्तित्व की छाया थी; कालेज छोड़ने के कुछ वर्षों बाद जेफर्सन को बोलिंगब्रोक की दार्शनिक कृतियों के अध्ययन का अवसर मिला और हो सकता है कि उसीसे उन्हें अपने छात्र-जीवन की आंग्लिकन रूढ़िवादिता से छुटकारा पाकर अपने समकालीन बुद्धिजीवियों की हेतुवादी आस्तिकता की ओर अग्रसर होने का प्रोत्साहन मिला; परन्तु नैतिकता को भी परिस्थिति के आधार पर कस कर तर्क के तराजू पर तौलने की यह प्रणाली उसके लिए कष्टकर व असुविधाजनक सिद्ध हुई जिसके लिए नैतिक सिद्धान्त बुनियादी तौर पर मार्गदर्शन के लिए महत्वपूर्ण थे। इसी के परिणामस्वरूप जेफर्सन ने बादमें १८ वीं शताब्दि के उन अंग्रेज और स्काटिश दार्शनिकों के अंतरात्मा से उत्प्रेरित नैतिक सिद्धान्तो के आधार पर अपने हेतुवादी दर्शन में संशोधन किया। १७८७ में जेफर्सन ने अपने भतीजे को लिखे पत्र में उद्घोषित किया, "मेरी राय में तो नैतिक दर्शन पर भाषण सुनना समय का अपव्यय करना है। जिसने हमारी सृष्टि की, यदि उसने हमारे नैतिक आचरण के नियमों को भी विज्ञान का विषय बनाया होता तो वह अधकचरा व उटपटांग स्रष्टा सिद्ध होता। आज एक वैज्ञानिक की दृष्टि में हजारों ऐसे हैं जो वैज्ञानिक नहीं हैं। एक हलवाहे और प्राध्यापक को नैतिकता का उपदेश दीजिए। हलवाहा यही निर्णय करेगा कि यह बात अच्छी और बहुत अच्छी

है, क्योंकि वह कृत्रिम नियमों की भूलभुलैया में नहीं पड़ा है।

यद्यपि दार्शनिक विचारधारा के विकास के साथ जेफर्सन का सम्पर्क सदा बना रहा, तथापि उनकी विशेष रुचि 'प्राकृतिक दर्शन' में अर्थात् भौतिक विज्ञान और विशेषकर प्राणी-विज्ञान में रही। उनकी रुचि भूगर्भशास्त्र, प्राणी-शास्त्र अथवा वनस्पति-शास्त्र में थी, जो प्रायः उनके व्यक्तिगत कथनों तथा उनके अध्ययन एवं पत्रव्यवहार में प्रकट होती थी, किन्तु यह रुचि विशुद्धतः सैद्धान्तिक नही थी। उनका विश्वास था कि मानव समाज के उचित अध्ययन का साधन मानव है और यह विश्वास उस शताब्दि के पूर्णतया अनुकूल ही था। अपने वैज्ञानिक अध्ययन के परिणामस्वरूप उन्होंने या तो मानव जीव-विज्ञान एवं मानव समाज पर विचा किया या उदाहरणार्थ, कृषि में व्यावहारिक उपयोग किया, जिससे मानव समृद्धिशाली होकर नैतिक स्तर में ऊपर उठ सके। जेफर्सन के विचारों में उपयोगितावाद अधिकांश मात्रा पाया में जाता है।

इसी प्रकार जेफर्सन की गणित में वास्तविक अभिरुचि थी और प्राक्कलन तथा भौगोलिक व प्राकृतिक उपयोगिताओं के कारण गणित का विशेष महत्व भी था।

यद्यपि जेफर्सन ने न केवल शास्त्रीय भाषाओं का, अपितु फ्रांसीसी, स्पेनिश तथा इटालियन और परिणामस्वरूप ऐंग्लो-सेक्सन भाषाओं का पढ़ना भी सीखा और यद्यपि वे उद्भट पाठक और पुस्तकों के अथक संग्रहकर्ता बने और रहे, फिर भी उनकी विशुद्ध साहित्य-सम्बंधी कृतियों में विशेष रुचि कभी नही रही और उपन्यास तो वे कदाचित् ही पढ़ते थे। दर्शनशास्त्र, इतिहास, कानून और राजनीति में उनकी स्थायी बौद्धिक रुचि बनी रही।

जेफर्सन जैसे नवयुवक के लिए उसकी शिक्षा की अन्तिम सीढ़ी कुछ कानूनी शिक्षा-प्राप्ति से ही थी। कानून की जानकारी की यह आवश्यकता औपनिवेशिक वर्जीनिया में वकालत करने के उत्साह के कारण नहीं थीं। जबकि कुछ ही लोग कानून के पण्डित हो सकते थे, तो भी अधिकांश लोगों को थोड़ी बहुत कानून की जानकारी होनी ही चाहिए; क्योकि सभी नवोदित विकासशील समाज में सम्पत्ति पर अधिकार-सम्बन्धी विवाद अधिकांशतः हुआ ही करते और वे अधिक पेचीदगीपूर्ण होते थे।

वर्जीनिया का कानून भी इतना सरल नहीं था कि कोई उसका पूर्ण विशेषज्ञ बन सके। इसमें सामान्य अंग्रेजी कानूनी प्रथाओं के साथ-साथ इंगलैंड के कानून और

स्थायी कानूनों का जटिल सम्मिश्रण था, जिनकी व्याख्या भी इंगलैंड और उपनिवेश के दोनों ही न्यायालयों ने की थी। यहाँ भी जेफर्सन बड़े भाग्यशाली थे, वे जार्ज वाइथ (George Wythe) के शिष्य बन गये, जो न केवल उस उपनिवेश के ख्यातिलब्ध वकील थे, अपितु अनेक अर्थों में अत्यन्त प्रसिद्ध एवं विद्वान नागरिक थे। वाइथ के निर्देशन में जेफर्सन को न केवल वकील की दैनिक कार्यप्रणाली का अनुभव हुआ, बल्कि अंग्रेजी कानून तथा अंग्रेजी सांविधानिक विचारधारा के मूल सिद्धान्तों का गम्भीर ज्ञान भी प्राप्त हुआ। उनके स्वाभाविक परामर्शदाता थे सर एडवर्ड कोक, जिनकी तुलना इंगलैंड के सर विलियम ब्लैक से की जा सकती है।

सामान्य कानूनी नियम-उपनियमों और रिपोर्टों के अतिरिक्त, जेफर्सन ने इस समय यूरोपीय लेखकों के बुनियादी कानून और अन्तरराष्ट्रीय कानून का भी अध्ययन किया। इन लेखकों का अमरीका की कानूनी और सांविधानिक विचारधारा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और इनकी छाप जेफर्सन पर भी अत्यन्त स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। बुनियादी कानून विशेषज्ञ का प्रभाव मानव समाज के नैतिक विधानों की सामान्य संहिता के अस्तित्व की उस कल्पना के अनुकूल है जो जेफर्सन को दार्शनिक अध्ययन से प्राप्त हुई थी। इस प्रकार जेफर्सन प्रकृतिदत्त अधिकारों की पुष्टि के लिए दुहरा संबल पा गये और यही विचारधारा बाद में उनके राजनीतिक सिद्धान्तों का आधार बनी। न्यूटन और लाक, कोक और वैटेल की इन कृतियों का सम्मिलित विचारधाराओं का प्रभाव विस्फोटक सिद्ध होता है, किन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि ढेरों पुस्तकें पढ़ने में लीन—जिनमें से कई उन्हीं के शब्दों में नीरस थीं—तथा उन्हें अपने पुस्तकालय में जमाने तथा उनमें से कुछ उपयोगी पुस्तकों को छाँटने में व्यस्त जेफर्सन को इस बात की रंचमात्र भी जानकारी नहीं थी।

जेफर्सन ने १७६७ के आरम्भ में वकालत शुरू की। तीन या चार वर्ष तक उन्होंने निस्सन्देह बड़ी तत्परता से सफल वकालत की, यद्यपि एक अच्छे वक्ता के रूप में वे कभी नहीं चमके। जब उन्होंने अपनी राजनीतिक गतिविधि आरम्भ की तो उत्तरोत्तर उनकी वकालत की उपेक्षा होती गयी और अन्त में उन्होंने १७७४ में अपनी वकालत अपने चचेरे भाई एडमन्ड रण्डोल्फ को सौंप दी।

अनेक दृष्टियों से वाइथ के शिष्य के रूप में और स्वतंत्र वकील के रूप में भी जेफर्सन का जीवन वैसा ही था, जैसा कि उनके कालेज के दिनों में था। सामाजिक आमोद-प्रमोद का वातावरण, उन परिवारों के युवकों की संगति,

जिनका आसपास के बगानों पर स्वामित्व था, १७६६ में वर्जीनिया के बाहर उनकी प्रथम यात्रा, जिसके फलस्वरूप वे अन्नापोलिए, फिलाडेल्फिया और न्यू-यार्क गये, उनके अध्ययनशील एवं क्रियाशील जीवन की यही मनोरंजक पृष्ठ-भूमि थी। न्यूयार्क-यात्रा से उनमें एक नयी रुचि उत्पन्न हुई और यह रुचि थी वास्तु-कला के प्रति आकर्षण। १७६७ में ही जेफर्सन ने अपने लिए एक मकान बनाने का संकल्प किया था जैसाकि तत्कालीन अन्य भूस्वामी भी यही कर रहे थे। स्थान के चयन में उन्होंने अत्यधिक मौलिकता का परिचय दिया। जेफर्सन ने अपना नया मकान एक उच्च पहाड़ी टीले पर बनाने का निर्णय किया, जहाँ से शेडवेल दिखायी पड़ता था। इसके अतिरिक्त, शायद ही कोई भूस्वामी था, जिसने जेफर्सन की भांति, पलाडियो और जेम्स गिब्स की कृतियों का गहन अध्ययन करके अपने मकान का नक्शा स्वयं तैयार किया हो। भवन का निर्माण १७६९ में आरम्भ हुआ। दूसरे ही वर्ष एक भीषण अग्निकाण्ड में शेडवेल के नष्ट हो जाने पर उसके निर्माण-कार्य को शीघ्र पूरा करने का निश्चय किया गया। यद्यपि १७७१ तक माण्टिसिलो का एक भाग निवासयोग्य बन गया था, तथापि भवन के पूर्ण रूप से तैयार होने में एक दूसरा दशक लग गया। जेफर्सन मकान और उद्यान दोनों ही के निर्माण में अन्त तक बड़ी लगन से जुटे रहे। उद्यान की योजना भी उन्होंने उतनी ही सावधानी से बनायी थी। यदि माण्टिसिलो के निर्माण से इस बात की पुष्टि होती है कि जेफर्सन अब अपनी जमींदारी में स्थायी रूप से बस जाने का विचार रखते थे, तो इसी समय उनके विवाह कर लेने से भी इस बात को और बल मिल जाता है। उन्होंने मर्था वेल्स स्केल्टन को अपनी पत्नी के रूप में चुना, जो १७६८ में एक १६ वर्षीया विधवा थी और जो एक धनी अंग्रेज वकील विलियम्सबर्ग की पुत्री थी। जेफर्सन का विवाह १ जनवरी १७७२ को हुआ। उनकी उम्र उस समय २६ वर्ष के लगभग थी। राजनीति को अलग रखा जाये तो उनका जीवन पूर्ण सुखी जीवन था, परन्तु राजनीति अधिक दिनों तक पीछा छोड़ने वाली नहीं थी।

१७६६ में वर्जीनिया प्रतिनिधि-सभा के लिए निर्वाचित हो जाने पर जेफर्सन का राजनीतिक प्रशिक्षण काल आरम्भ हुआ। उनके पिता ने भी उस प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया था। जेफर्सन का निर्वाचन भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा की मान्यता का ही परिचायक था। एडमण्ड रण्डोल्फ ने लिखा, "अभी तक थामस राजनीति में पारंगत नहीं हुआ है।" लगभग २५ वर्ष की अवस्था तक उन्होंने सामान्य विज्ञान का अध्ययन किया था। उसीके साथ ही उन्होंने बड़ी

ही लगन और रुचि से कानून का व्यवसाय अपनाया। किसी भी युवक वकील की भांति जेफर्सन ने विधानमण्डल के वादविवादों में और उसकी कार्रवाइयों में भाग लिया था, किन्तु इससे अधिक वे आगे नहीं बढ़े। फिर भी ये वर्ष वर्जीनिया के इतिहास में बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध हुए और भविष्य के लिए भी ये अत्यन्त महत्वपूर्ण थे।

वर्जीनिया में जिस प्रकार की शासन-प्रणाली थी, वैसी ही शासन-प्रणाली ब्रिटेन के अधिकांश अमरीकी उपनिवेशों में थी। कार्यकारी सत्ता शाही गवर्नर और उसकी परिषद के हाथ में थी, अर्थात् ब्रिटिश सम्राट के मनोनीत अधिकारियों के हाथ में थी, जो ह्वाइट हाउस के निर्देश पर कार्य करते थे। विधानमण्डल अर्थात् प्रतिनिधि-सभा सरकारी राजस्व का स्रोत मात्र थी। उसका चुनाव ब्रिटिश लोकसभा की तरह सीमित मताधिकार के आधार पर होता था, किन्तु प्रारम्भिक समुद्र तटवर्ती उपनिवेशों के भूस्वामियों को विशेष महत्व दिया जाता था। प्रतिनिधि सभा (House of Burgesses) की वैधानिक सत्ता तीन प्रकार से सीमित थी; गवर्नर और उनकी परिषद को एक प्रकार से लार्ड-सभा की तरह संशोधन और निषेधाधिकार के उपयोग का अधिकार था। बादशाह प्रिवी कौंसिल की एक समिति की सलाह पर उसकी कार्रवाइयों पर भी निषेधाधिकार का उपयोग कर सकता था। अंग्रेज़ी कानून के प्रतिकूल ठहरा कर उसके कार्यों को इंग्लैण्ड में अपील द्वारा चुनौती दी जा सकती थी। फिर भी, इन दशकों में इंग्लैण्ड के साथ वर्जीनिया के सम्बन्धों का इतिहास कभी दुखद नहीं रहा। तम्बाकू की महत्वपूर्ण फसल के लिए ग्रेट ब्रिटेन का बाजार सदा खुला रहता था और शाही पार्लमेण्ट के व्यापारिक विधि-विधानों का उसके अर्थतंत्र पर उतना बुरा प्रभाव नहीं पड़ा, जितना कि उसके उत्तर की ओर अन्य उपनिवेशों पर पड़ा। यह सत्य है कि एक विशेष फसल पर निर्भरता के फलस्वरूप बड़े बड़े खेत-स्वामी उन अंग्रेज व्यापारियों के साथ ऋण के बन्धनों से बुरी तरह बंध गये थे, जो उनकी फसल खरीद कर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे और इन भूस्वामियों को उन्होंने ऋण की सुविधाएं प्रदान करके इस ऋणग्रस्तता को और भी दृढ़ बना दिया। जीवन-निर्वाह और संस्कृति का स्तर अत्यन्त ऊँचा हो जाने के कारण बगान-मालिकों को अपने व्यय की पूर्ति के लिए ऋण लेना अनिवार्य हो गया था। फिर भी, सरकार और संपन्न प्रभुताशाली बगान-मालिक वर्ग सदा एक साथ रहे।

औपनिवेशिक वर्जीनिया में वास्तविक विभाजन स्वयं वहां के समाज के

अन्तर्गत पैदा हुए संघर्ष के कारण था और यह संघर्ष छिछने पानी वाले प्रदेश के बड़े बड़े बगान-मालिकों तथा ऊपरी क्षेत्र के उन किसानों के बीच था, जो प्रायः इन भूस्वामियों के ऋणी रहा करते थे। सच पूछा जाय तो यह विभाजन १७ वीं शताब्दि से ही और १७६७ में नाथानियल बेकन के असफल विद्रोह के के समय से ही था। धार्मिक मतभेदों से यह सामाजिक भेदभाव और भी दृढ़ हो गया; क्योंकि बड़े बड़े भूमिपति प्रचलित गिरजाघरों के प्रति आस्था रखते थे और अनेक नवागन्तुक, विशेषकर स्काटलैण्ड, अल्स्टर और यूरोपीय महाद्वीप से आये हुए लोग, प्रेसबीटिरयन, बैप्टिस्ट अथवा अन्य दूसरे मतों से सम्बन्ध रखते थे। यद्यपि बड़े-बड़े भूमिपतियों के साथ १६९९ से ही धार्मिक उदारता प्रदर्शित की गयी थी, फिर भी प्रचलित चर्च के विरोधियों से भी चर्च की सहायता के लिए कर वसूल किया जाता था जबकि उनके अनुयायियों की संख्या उत्तरोत्तर तेजी से घट रही थी।

१८ वीं शताब्दि के वर्जीनिया का इतिहास एक प्रकार से समुद्रतटवर्ती बड़े बड़े भूस्वामियों द्वारा अपना प्रभुत्व जमाने, सीमावर्ती लोगों तथा अनधिकृत प्रवासियों की उपेक्षा करने, उत्पादन और व्यापार पर नियन्त्रण स्थापित करने, अपने ही स्वार्थ के लिए नयी भूमि का वितरण करने तथा अधिकतम धार्मिक एकरूपता थोपने के प्रयास का इतिहास है। उदाहरणार्थ सभी वर्जीनियन यही चाहते थे कि अंग्रेज उनके विरुद्ध औपनिवेशिक न्यायालयों में ऋण के मुकदमें दाखिल करें और सभी राजा को दिये जाने वाले 'मुक्ति-लगान' (Quit Rent) से बचना चाहते थे। फिर भी इन दलों के बीच विभाजन की कोई अमिट रेखा नहीं थी और न वह सामान्य भौगोलिक विभाजन के अनुरूप ही थी। जेफर्सन-परिवार की कहानी से प्रकट होता है कि पिडमोण्ट में वस्तुतः तटवर्ती संस्कृति का ही प्रसार हुआ था, वास्तविक सीमाप्रदेश और भी आगे था।

जेफर्सन के राजनीति में प्रवेश के पूर्व के वर्षों में पेट्रिक हेनरी ने उन स्काटिश-आयरिश प्रवासियों के नेता के रूप में काफी ख्याति प्राप्त कर ली थी, जिनका पश्चिमी प्रवासियों में महत्वपूर्ण स्थान था। पेट्रिक हैनरी बहुत कम शिक्षित थे, किन्तु वे जबरदस्त वक्ता थे। २७ वर्ष की अवस्था में ही एक मामले में, जिसे पादरी का मुकदमा कहा जाता है, वे सब के सामने आ गये थे। वर्जीनिया असेम्बली ने स्थापित चर्चों के पादरियों को, जिनके वेतन का भुगतान अब तक तम्बाकू में होता था, अधिक मूल्यवृद्धि से लाभ उठाने से रोकने के लिए एक कानून पास किया। १७६० में सम्राट ने इस कानून को रद्द कर.

दिया। जेफर्सन के पुराने शिक्षक मौरी ने (चर्च के लिए) इस अतिरिक्त रकम की प्राप्ति का दावा कर दिया। हेनरी ने इस बात पर जोर दिया कि सम्राट को यह कानून रद्द करने का कोई अधिकार नही है और उसकी कार्रवाई से ग्रेट ब्रिटेन और उसके उपनिवेशों के बीच सन्धि भंग हुई है। हेनरी के इस दावे के फलस्वरूप स्थानीय न्यायालय ने पादरी को नाममात्र की क्षतिपूर्ति का निर्णय दिया और इस प्रकार स्थापित चर्च की सत्ता और ब्रिटेन से उसे प्राप्त समर्थन, दोनों ही को चुनौती दी गयी।

वर्जीनिया में नये राजनैतिक नेताओं का अभ्युदय ठीक उस समय हुआ, जब समस्त अमरीकी उपनिवेशों के मामलों में सुदूरगामी संकट उत्पन्न हो रहा था। इस प्रकार की कुछ घटनाओं का घटना कदाचित् अनिवार्य हो गया था क्योंकि उपनिवेशों की जनसंख्या और शक्ति बढ़ गयी थी और पृथक समुदायों के रूप में वे अपने हितों के प्रति अधिक सचेत हो गये थे। पृथक ब्रिटिश विभागों के द्वारा सम्राट का सत्ता-संचालन अधिकाधिक उत्पीड़क सिद्ध हो रहा था। किन्तु औपनिवेशिक शासन पर जो प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे, उनके पीछे दीर्घकालिक परम्परागत समर्थन था, जबकि शाही प्रतिनिधियों के लिए सम्पन्न उपनिवेशवादियों के साथ हाथ में हाथ मिलाकर कार्य करना प्रायः सम्भव था। कई मानों में ब्रिटेन ने स्वाययत्त शासन पर जो अंकुश लगाये, मसलन आंतरिक प्रदेश में जनसंख्या प्रसार को रोकना जिससे रेड इंडियन व 'फर' (लोमडी के चर्म-रोमों) व्यापार सुरक्षित रहे, कागजी मुद्रा के प्रचलन को रोक कर औपनिवेशिक साख को कायम रखना, अफ्रीका से गुलाम-व्यापार को सुरक्षित रखना आदि उद्देश्यों को औपनिवेशिक प्रभुतासंपन्न तत्वों ने स्वीकार किया यहाँ तक कि उन्होंने इनका स्वागत भी किया। किन्तु अधिकांश उपानिवेशों में औपनिवेशिक व्यापार को ब्रिटिश आयात्-निर्यात-कर और नौकानयन कानूनों के हितों की बलिवेदी पर चढ़ाने के कारण गम्भीर आपत्ति की गयी। इसका मुख्य कारण यह था कि इन कानूनों को अधिकाधिक कड़ा कर दिया गया साम्राज्यीय प्रणाली के अन्तर्गत उपनिवेशों के बाजारों को जो सुरक्षा प्राप्त थी, वह १७५० के बाद तम्बाकू से होनेवाले लाभ में कमी के कारण असंतुलित हो गयी। अन्त में उपानिवेशों में कतिपय उद्योगों का निषेध भी अधिकाधिक चिन्ता का कारण बन रहा था।

१७६० में, जब जेफर्सन विलियम और मेरी कालेज में भर्ती हुआ, यह प्रणाली काफी दृढ़ हो चुकी थी और अन्ततोगत्वा इसके भंग होने

के जो कारण थे, वे इतने अधिक उलझे हुए हैं कि इस प्रणाली को ठप्प करने वाली विभिन्न क्रियाशील शक्तियों के सापेक्ष महत्व के बारे में इतिहासकारों में मतैक्य नहीं हो पाया है। यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि उपनिवेशों के विकास के साथ ब्रिटिश शासन-प्रणाली में भी परिवर्तन हुए जिनसे साम्राज्यीय प्रणाली के पाखण्ड का नग्न रूप प्रकट हो गया और ऐसे संघर्षो का जन्म हुआ, जिनका समाधान स्पष्टत: सहकारी तौर पर स्वीकृत सिद्धान्त के आधार पर ही हो सकता था। अब यह मूल भावना काफी क्षीण हो चुकी थी कि उपनिवेशों के सभी निवासी अपने पूर्वजों की भांति ब्रिटिश सम्राट की प्रजा हैं, क्योंकि प्रारम्भिक उपानिवेशों की विशुद्ध आंग्ल जनसंख्या में अब मिश्रण हो रहा था। इस स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि ब्रिटिश प्रजा की भांति उपनिवेशों के निवासियों से भी यह अपेक्षा की जाती थी कि वे ब्रिटिश पार्लमेण्ट की सत्ता स्वीकार कर लें, जबकि पार्लमेण्ट में उनकी अपनी कोई आवाज नहीं थी। १७वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध की घटनाओं ने ब्रिटिश सविधान के रूप को निर्णायिक रूप में बदल दिया था और १८ वीं शताब्दि के मध्य तक पार्लमेण्ट की प्रभुता ब्रिटिश राजनीतिक विचारधारा की एक मृतप्राय रूढ़िगत भावना बन चुकी थी। जिन प्रवासियों ने शानदार क्रान्ति अथवा उसके कारण घटित घटनाओं में भाग नहीं लिया था और जो अपनी सरकारों को दौत्य-सम्बन्ध अथवा संधि द्वारा ब्रिटिश राजसत्ता के साथ मर्यादित समझते थे, वे इस परिवर्तन को बिना सन्देह के स्वीकार नहीं कर सकते थे और एक बार तो अत्यन्त गम्भीर मतभेद के मसले उत्पन्न हो गये थे। यह अनुमान कि ब्रिटिश संविधान दैवी आदेश का एक अंग है और चूंकि पार्लमेण्ट की नीति समस्त साम्राज्य को लाभ पहुंचाने की है, इसलिए सब कुछ ठीक है, इस तरह की मान्यता को अमरीका की अपेक्षा ब्रिटन में स्वीकार करना अधिक सरल था। एक दृष्टि से साम्राज्यवादी नीति पूर्णतया विफल हो चुकी थी। युद्धकाल में भी प्रवासी बस्तियाँ सम्पूर्ण साम्राज्य को दृष्टिगत रखकर अपने हितो पर विचार करना नहीं चाहती थीं। इतना ही नहीं, वे अपने-अपने उपनिवेश के संकीर्ण दायरे से अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने को भी तैयार नहो थे। यही क्रान्तिकारी आन्दोलन सफल होने वाला था, जबकि साम्राज्यवादी प्रशासन विफल हो चुका था।

वस्तुत: उपनिवेशों को पार्लमेण्ट के बहुमत के अधीन रखने तथा सैद्धान्तिक न हो तो भी व्यावहारिक रूप से उनकी सरकारों को अपनी मातहती में रखने के दो परिणाम निकले। पहली बात तो प्रवासी यह महसूस करने लगे

कि जहाँ तक नीति-निर्धारण का प्रश्न है, उनके हितों पर पार्लमेण्ट के कूटनीतिज्ञों व निहित स्वार्थों का व्यापक प्रभाव रहता है और सारी नीतियाँ वेस्टमिंस्टर के शक्तिशाली 'कूटनीतिज्ञों' के कपट-छल से संचालित होती हैं। दूसरी बात यह है कि उन दिनों राजनीति भी एक व्यवसाय की चीज बन गयी थी और दूहरे ब्रिटिश विभागों की स्थापना मानों अमरीका में अपने-अपने सम्बन्धियों या पिट्ठुओं के लिए आश्रय ढूँढने की सुखद भूमि बन गयी थी। साम्राज्य के साथ बंधे रहने के प्रति विक्षोभ का एक प्रमुख कारण यह भावना भी थी कि उपनिवेशों की सरकारों का उपयोग ब्रिटिश शासक वर्ग के निकम्मे और अयोग्य सदस्यों को भरने के लिए किया जा रहा है। १७५६ तक इस परिस्थिति में जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ सक्रिय थीं, वे इस कारण से दब गयीं कि युद्धकाल में उपनिवेशों को अपनी प्रतिरक्षा के लिए शाही सरकार पर ही अवलम्बित रहना पड़ता था, किन्तु उस वर्ष अंग्रेजों और फ्रासीसियों के बीच पुनः युद्ध हो जाने पर उत्तरी अमरीकी महाद्वीप की परिस्थितियों में शीघ्र परिवर्तन हुआ। १७५८ में लुइसबर्ग का किला अंग्रेजों के हाथों में चला गया। १७५९ में क्यूबेक पर भी अधिकार कर लिया गया। १९६३ में पेरिस की सन्धि के अनुसार फ्रांस ने कनाडा और केप ब्रेटन द्वीप को अंग्रेजों को और फ्लोरिडा को स्पेन को दे दिया। फ्लोरिडा की क्षतिपूर्ति के रूप में स्पेन को फ्रांस से मिस्सीसिपी के पश्चिम लुईसियाना का विशाल प्रदेश और उसके डेल्टा के पूर्व का एक भू-भाग प्राप्त हुआ। फ्रांसीसी घेरेबन्दी का खतरा समाप्त हो गया।

अब ब्रिटेन और उसके प्रारम्भिक उपनिवेशों के बीच सम्बन्ध इस बात पर निर्भर करता था कि वह अपने जीते हुए प्रदेशों का निबटारा किस प्रकार करता है और किस ढंग से व्यय पूरा करता है। इन दोनो ही समस्याओं का समाधान इस प्रकार किया गया कि अमरीका में व्यापक असंतोष फैल गया। उपनिवेश के वर्तमान सीमा-क्षेत्र और मिस्सीसिपी के बीच भूमि को निबटाने की समस्या विभिन्न उपनिवेशों के परस्पर-विरोधी दावों के कारण और जटिल हो गयी। प्राचीन मानचित्रों में अनिश्चित रेखांकन होने के कारण विरोधी दावे प्रस्तुत किये गये। स्वय वर्जीनिया ने मिस्सीसिपी तक फैली भूमि के लिए दावा पेश किया। जार्ज वाशिंगटन और लीज जैसे अनेक वर्जीनियावासी वहाँ बसने की योजना बना रहे थे। अन्य भूमि-कम्पनियाँ भी, जिनके अंग्रेज और अमरीकी सदस्य थे, इनके लिए अपने-अपने दावों पर जोर दे रही थीं। किन्तु ब्रिटिश मंत्रिगण और अधिक भीतर की ओर बस्तियाँ बसाने की नीति लाभ-

दायक नहीं समझते थे । वे नोवास्कोशिया और फ्लोरिडा में ब्रिटिश प्रवासियों को बसाना चाहते थे। उनको भय था कि पश्चिमी अमरीका के प्रवासी न तो लाभप्रद ग्राहक होंगे और न अनुशासित प्रजा । वे इसे अच्छा समझ रहे थे कि उसे रेड इंडियनों के अधिकार में छोड़ दिया जाय और ब्रिटेन की उस नवप्राप्त कनाडियन प्रजा से रोयेंदार चमड़े के व्यापार को प्रोत्साहन दिया जाय, जिससे उनका अर्थतंत्र उनकी घरेलू संस्थाओं की तरह ही ठोस और स्थिर बन रहे।

सन् १७६३ में पोण्टियाक के नेतृत्व में रेड इंडियन विद्रोह ने यह सिद्ध कर दिया कि साम्राज्य की सरकार ने रेड इंडियन खतरे की कल्पना भी नहीं की थी । उसका तात्कालिक परिणाम अक्तूबर, १७६३ की घोषणा थी, जिसके द्वारा पश्चिमी भूमि औपनिवेशिक गवर्नरों के नियंत्रण के बाहर चली गयी और जिसके द्वारा अलेघनी (Alleghany) जल-सीमारेखा के पश्चिम के क्षेत्र में बस्ती बसाने को निषिद्ध करार दे दिया गया । वास्तव में, यह एक अस्थायी व्यवस्था थी, ताकि इस बीच एक नयी नीति को कार्यान्वित किया जा सके । नयी नयी बस्तियाँ बसाने की योजनाएं थी, जिनसे बाद में ब्रिटिश सरकार को 'मुक्ति-लगान' (Quit Rent) के रूप में विशेष आय की आशा थी; किन्तु लन्दन में मंत्रिमंडल में परिवर्तन के कारण कुछ भी न हो सका और अस्थायी व्यवस्था स्थायी बन गयी । इस बीच भूमि कम्पनियां अभी भी इंग्लैण्ड का राजनीतिक समर्थन प्राप्त करने में अपनी सारी शक्ति लगा रही थी, यद्यपि वाशिंगटन ने यह विश्वास करके कि १७६३ का समझौता नही टिकेगा, अपने साथी वर्जीनियनों को सलाह दी कि वे अपने-अपने दावे पेश करते रहें । १७६८ में एक नयी रेड इडियन नीति अपनाने से इस भावना की पुष्टि हो गयी कि वर्जीनिया के पश्चिमी प्रदेश के हितों को मध्य उपनिवेशों और ब्रिटेन के व्यापारियों और सट्टेबाजों के लिए बलिदान किया जा रहा है । इस नयी नीति के द्वारा एक रेड इंडियन सीमा-रेखा की व्यवस्था की गयी, जो बहुत ही धीरे धीरे पश्चिम की ओर खिसक सकती थी । इसके अलावा सम्राट की सरकार के एजेण्टों के द्वारा ही रेड इंडियनों की भूमि खरीदी जा सकती थी । ब्रिटेन का इरादा यह जान पड़ता था कि तम्बाकू-उपनिवेशों के निवासियों के लिए वैकल्पिक विनियोग की सारी सम्भावनाओं का द्वार बन्द कर दिया जाय और ब्रिटिश महाजनों के लाभ के लिए उन्हें एक ही फसल के उत्पादन तक सीमित रखा जाय ।

आर्थिक मामले को लेकर लन्दन में महसूस किया गया कि युद्ध का भार

केवल इंग्लैण्ड के करदाताओं पर पड़ा है। पोण्टियाक के विद्रोह से उपनिवेशों में स्थायी सेना रखने की आवश्यकता प्रतीत होती थी और इसमें खर्च भी पड़ने वाला था। इसके लिए दो कानून बनाये गये। १७६४ के शक्कर कानून द्वारा औपनिवेशिक व्यापार पर नये कर लगाये गये और सीरा की चुँगी में कमी करके उसकी वसूली के लिए उचित व्यवस्था की गयी। सीरे की चुगी उपनिवेशों के आयात पर एक बहुत बडा भार था। १७६५ के स्टाम्प कानून द्वारा अनेक प्रकार के कानूनी और तिजारती दस्तावेजों पर तथा समाचार-पत्रों, जंत्रियों, परचों और ताशों पर भी कर लगा दिये गये। उपनिवेशों में यह महसूस किया गया कि व्यक्तिगत व्यापारियों पर आर्थिक भार के अतिरिक्त, इन कार्रवाइयों से उपनिवेशों में सिक्कों का निरन्तर अभाव और भी बढ़ जायगा और आयात की गयी वस्तुओं के लिए दाम का भुगतान करना असम्भव हो जायेगा, क्योंकि नये करों की आमदनी नकदी के रूप में ब्रिटेन भेज दी जायेगी और वहीं खर्च की जायगी। जबकि इन दोनों कानूनों का सभी उपनिवेशों पर प्रभाव पड़ा, वर्जीनिया को १७६४ के मुद्रा कानून के बारे में दूसरी ही शिकायत रही। इस कानून से उसके बीजक का व्यवहार बन्द कर दिया गया और युद्ध-काल में उसने जो बीजक जारी किये थे, उन्हें वापस लेने के लिए विवश होना पड़ा।

इस तरह की ब्रिटिश नीति ने वर्जीनिया के प्रतिभाशाली नेताओं को जो विधान सभा पर छा गये थे अवसर प्रदान किया : प्रतिनिधि-सभा के पुराने नेता स्टाम्प कानून के विरुद्ध आवेदनपत्र भेज कर सन्तोष के साथ बैठे हुए थे। किन्तु अधिवेशन के अन्त तक, मई सन् १७६५ में, जब सदन में उपस्थिति बहुत ही कम थी, पेट्रिक हैनरी ने अपने भाषण में जो अनेक प्रस्ताव पेश किये जिनमें स्पष्ट रूप से घोषणा की गयी थी कि ब्रिटिश संविधान का सिद्धान्त यही है कि चुने हुए प्रतिनिधियों के अतिरिक्त और कोई उन पर कर नहीं लगा सकता और वर्जीनियानिवासी केवल वही कर देंगे जो स्वयं उनकी असेम्बली द्वारा लगाये जायेंगे। यह भाषण एक प्रकार से देशद्रोहात्मक था। जान, पेटोन रण्डोल्फ और जार्ज वाइथ जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों ने उग्र भाषा के उपयोग का विरोध किया और अनुरोध किया कि वर्जीनिया ने पिछले वर्ष जो समझौतावादी आवेदन पत्र भेजा था उसके उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। किन्तु आर. एच. ली और मुख्यत: पीडमोण्ट के सदस्यों के समर्थन से हेनरी अपने सात प्रस्तावों में से पांच को पारित कराने में सफल हुए, यद्यपि इनमें से एक बाद में रद्द कर

दिया गया। उपनिवेश के समाचार-पत्रों में सातों प्रस्ताव प्रकाशित हुए, मानों वर्जीनिया असेम्बली ने उन्हें पारित कर दिया हो और इस प्रकार क्रान्तिकारी नेताओं की ख्याति उपनिवेशों में बढ़ गयी।

बाद की संकटकालीन घटनाओं में आकर्षण का केन्द्र बगान उपनिवेशों के बजाय न्यू इंग्लैण्ड हो गया और अक्तूबर, १७६५ में न्यूयार्क में जो स्टाम्प-कानून कांग्रेस (एक अन्तर-उपनिवेश-कान्फ्रेन्स) हुई, उसमें वर्जीनिया का कोई प्रतिनिधि नहीं था। उपनिवेश के प्रबल विरोध और अमरीकी व्यापार से सम्बन्धित लन्दन के व्यापारियों के दबाव के फलस्वरूप स्टाम्प कानून रद्द कर दिया गया। औपनिवेशिक बहिष्कार का उनके व्यापार पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा था। साथ ही साथ एक घोषणात्मक कानून पास हुआ, जिसमें स्पष्ट रूप से उन सिद्धांतों का खण्डन किया गया, जिनकी पेट्रिक हेनरी ने घोषणा की थी और सभी मामलों में चाहे वे कैसे भी हों उपनिवेशों को आबद्ध करने के पार्लमेण्ट के अधिकार पर बल दिया गया। अगले वर्ष पार्लमेण्ट के इरादों को और भी स्पष्ट कर दिया गया। उपनिवेशों के कुछ लेखकों ने बाह्य करों द्वारा व्यापार को नियमित करने के पार्लमेंट के अधिकार और उपनिवेशों में आन्तरिक कर लगाने के उसके गलत दावे के बीच जो भेद था उसको स्पष्ट किया था। चार्ल्स टाउनशेण्ड ने इस आधार पर नये आयात-शुल्क लागू किये और इसी आय में से औपनिवेशिक गवर्नरों और न्यायाधीशों का वेतन और औपनिवेशिक प्रतिरक्षा का व्यय देने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार औपनिवेशिक धारासभाओं के राजस्व को अपने हितों में खर्च करने के जो राजनीतिक अधिकार थे उन पर गंभीर प्रभाव पड़ा। एक बार फिर, उपनिवेशों में विरोध की लहर दौड़ गयी। इस बार मेसाचुसेट्स ने इस मामले में नेतृत्व किया। जनवरी, १७६८ में वहाँ की विधानसभा ने नये करों का विरोध करते हुए ब्रिटिश सरकार को एक आवेदन-पत्र भेजा। साथ-ही-साथ उसने अन्य उपनिवेशों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उन्हें एक परिपत्र भेजा। २१ मार्च को जब असेम्बली की बैठक हुई तो उसने उस परिपत्र का अनुकूल उत्तर दिया और मेसाचुसेट्स की अपील की पुष्टि करते हुए उसने भी एक परिपत्र भेजा। ब्रिटिश सरकार ने कड़ी कार्रवाई करने का निर्णय किया और मेसाचुसेट्स असेम्बली को अपना परिपत्र रद्द करने का आदेश दिया गया। जब उसने इन्कार कर दिया तो उसे भंग कर दिया गया। १७६७ में न्यूयार्क असेम्बली के वैधानिक अधिकारों को निलम्बित कर दिया गया, इसका कारण यह था कि उस उपनिवेश ने १७६५ के रसद कानून के अनुसार

सामानों की पूर्ति करने से इन्कार कर दिया। प्रवासियों ने इसे स्वशासन के परम्परागत अधिकार पर एक और कुठाराघात समझा। ब्रिटिश दृष्टिकोण यह था कि स्थानीय प्रतिनिधिमूलक समस्याओं के अस्तित्व से उपनिवेशों में पार्लमेंट के अधिकार किसी भी प्रकार प्रभावित नही होते। उसका यह अर्थ लगाया गया कि स्वायत्त सस्थाओं को स्वयं पार्लमेंट से सत्ता प्राप्त होती है और इस सत्ता को वह कभी भी वापस ले सकती है। नये अमरीकी चुगी-कमिश्नर-मंडल की नियुक्ति तथा जहाजी न्यायालयों के अधिकारों में वृद्धि से इस बात की और भी पुष्टि हो गयी कि ब्रिटिश नीति एक ऐसे साम्राज्य की रचना की दिशा में कार्य कर रही है जो एक ही केन्द्र से संचालित और प्रशासित हो, इसके लिए स्थानीय हितों एवं अधिकारो का कोई महत्व नही दिया जाय।

दूसरी ओर ब्रिटिश कार्रवाइयों के प्रतिरोध के आन्दोलन को सर्वत्र समर्थन नही मिल सका। विरोधपत्रो का ही कोई परिणाम नही निकला। अब आर्थिक बहिष्कार का ही एकमात्र स्पष्ट मार्ग रह गया, क्योंकि इसमे ब्रिटिश मंत्रिमण्डल इंग्लैण्ड में अत्यन्त संकट में पड़ सकता था। न्यू इंग्लैण्ड और मध्यवर्ती उपनिवेशों के क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञों ने इस उद्देश्य के लिए औपानिवेशिक व्यापारियों को संगठित करने का यथाशक्ति प्रयास किया और विशेषकर धनी व्यापारियों के कड़े विरोध के बावजूद भी बोस्टन, न्यूयार्क फिलाडेल्फिया तथा अन्य नगरों के व्यापारियों ने मार्च, १७६९ के बीच ब्रिटिश माल के आयात न करने का समझौता किया। अनेक क्रान्तिकारी प्रदर्शन हुए ब्रिटिश अधिकारियों के ही विरुद्ध नहीं, बल्कि औपनिवेशिक जनता के उन तत्वों के विरुद्ध भी, जो राष्ट्रीय हित के कार्यों में ढुलमुल से प्रतीत होते थे और मुख्यत: क्रान्तिकारी या देशभक्त पत्रों में इस बहिष्कार को राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में प्रस्तुत भी किया गया। वास्तव में, आयात-विरोधी समझौते के कुछ समर्थकों की स्पष्ट इच्छा यह थी कि बहिष्कार द्वारा स्थानीय उद्योगों का समर्थन किया जाय ताकि स्वयं उपनिवेश ब्रिटेन से आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जायें। यह इच्छा एक ही संयुक्त और आत्मभरित साम्राज्य की कल्पना के इतनी विपरीत थी कि निहित स्वार्थो पर इनका प्रतिकूल प्रभाव पड़े बिना न रहा। अन्त में जो निश्चय किया गया, उसका न केवल उपनिवेशों और मातृभूमि के भावी सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ा, अपितु उसने स्वयं उपनिवेशों के भावी आन्तरिक विकास में पर्याप्त योग दिया। अल्प स्वार्थपरता के आधार पर अनुदारवादियों ने आयात-विरोधी आन्दोलन का विरोध किया। आर्थिक

प्रतिबन्धों के परिणामस्वरूप अमरीकियों ने अन्त में इंग्लैण्ड के अपने अधिकांश मित्रों को खो दिया। इन प्रतिबन्धों का समर्थन विशेषतः यह कह करके किया गया कि इनसे औपनिवेशिक आत्मनिर्णयता को बल मिलेगा। इन परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार को कठोर कार्रवाई करने के लिए आवश्यक समर्थन भी प्राप्त हो गया। इसी प्रकार और भी कड़ी दमनकारी कार्रवाई के लिए ब्रिटिश सरकार को उत्तेजित करने के लिए प्रयास किये गये, उदाहरणार्थ चुंगी वसूली में हस्तक्षेप किया गया। इनके फलस्वरूप उपनिवेशों में उत्तेजन चरम सीमा तक पहुंच गया, किन्तु समझौते के संसदीय समर्थकों को निराशा हुई। जिन ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने उपयोगिता के आधार पर सरकारी कार्रवाइयों की अत्यन्त तीव्र आलोचना की थी, उन्होंने अपने आन्दोलन का औचित्य सिद्ध करने का प्रयास किया। प्रवासी जितना ही अधिक अपने अधिकारों पर बल देते थे, उनके वास्तविक अभाव-आयोगों की सुनवाई के लिए अवसर उतना ही कम होता जाता था।

वर्जीनिया और जेफर्सन के जीवन के इतिहास की वह महत्वपूर्ण घड़ी थी, जब कि मई १७६९ को प्रतिनिधि सभा के नये अधिवेशन के उद्घाटन में जेफर्सन ने भाग लिया। नये गवर्नर लार्ड बोटेटोर्ट के भाषण में उत्तर तैयार करने वाली समिति तथा विशेषाधिकार और निर्वाचन-समिति मे भी जेफर्सन को नियुक्त किया गया। जेफर्सन एक लेखक के रूप में भी प्रख्यात थे। उन्हें उन प्रस्तावों को तैयार करने का कार्य सौंप दिया गया, जिन्हें औपचारिक अभिनन्दन के रूप में पारित करने की प्रथा थी। जिन प्रस्तावों को सदन ने स्वीकार किया उनमें हाल की घटनाओं के बारे में केवल एकमात्र इसी आश्वासन का उल्लेख था कि यदि ग्रेट ब्रिटेन के हितों को प्रभावित करने वाला कोई मसला प्रस्तुत किया जाये, उस पर इसी आधार पर निर्णय किया जाये कि उनके और हमारे हित अविभाज्य हैं। किन्तु समिति ने जेफर्सन के अभिभाषण के प्रारूप को अस्वीकार कर दिया जिसका उन्हें हार्दिक आघात पहुँचा।

ये सभी बातें तो केवल भूमिका मात्र थीं। वास्तविक समस्या आयात-विरोधी समझौतों के प्रति अपनाया जाने वाला वर्जीनिया का रुख था। १६ मई को असेम्बली ने चार प्रस्ताव पारित किये जिनमें पुनः घोषणा की गयी कि वर्जीनिया के निवासियों पर कर लगानेका एकमात्र अधिकार, कानूनी और संविधानिक रूप में, प्रतिनिधि सभा में निहित है, अभाव-अभियोगों के निवारणार्थ

सम्राट को आवेदन पत्र भेजने और ऐसा करने में उपनिवेशों का साथ देने का हमारा असन्दिग्ध अधिकार है और देशद्रोह सम्बन्धी सभी मुकदमे उपनिवेश के अन्तर्गत ही चलाये जायँ ताकि ब्रिटिश न्यायालयों में, जैसा कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट के हाउस के मसविदे में रखा गया है उसमें यह भी सुझाव था कि हेनरी अष्टम के काल के उस कानून को जो लंबे समय से उपयोग मे नहीं था उसे फिर से जारी किया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि इनमें से अंतिम मुद्दे को एक आवेदन पत्र के रूप में जिसे सम्राट को भेजा जाय तथा सभी प्रस्तावों को अन्य उपनिवेशों की असम्बलियों में उनकी सहमति के लिए वितरित किया जाय। ब्रिटिश सरकार ने इस खुली चुनौती के परिणामस्वरूप प्रतिनिधि-सभा को ही भंग कर दिया जैसी कि पहले से आशंका की जाती थी।

विघटित प्रतिनिधि-सभा के अधिकांश सदस्यों की एक सभा खुली जगह में हुई, जिसमें एक आयात-विरोधी समझौता तैयार किया गया, जो वर्जीनिया असोसिएशन के नाम से प्रकाशित हुआ। इस समझौता-पत्र का प्रारूप जार्ज मेसन ने तैयार किया था, जिस पर जार्ज वाशिंगटन, पेट्रिक हेनरी, आर. एच. ली और स्वयं जेफर्सन के भी हस्ताक्षर थे। इससे तात्कालिक गर्मागर्मी का वातावरण ठंडा पड़ गया और सम्राट के प्रति वफादारी की शुभकामनाओं के साथ सभा की कारवाई समाप्त हुई। असोसिएशन का व्यापक रूप से समर्थन किया गया, किन्तु कुछ धनी भू-स्वामियों और व्यापारियों ने, जो अधिकतर ब्रिटिश फर्मों के एजेण्ट थे, इसका विरोध किया। दूसरी ओर आयात बन्द हो जाने से उन बड़े बड़े बागान-मालिकों को मितव्ययिता और छँटनी के लिए उपयुक्त अवसर मिला, जो भारी आर्थिक मन्दी के युग के बाद बहुत-कुछ ऋणग्रस्त हो चुके थे।

प्रतिनिधि-सभा के बाद के चुनाव-परिणामों ने उन सदस्यों के सार्वजनिक समर्थन की पुष्टि कर दी, जिन्होंने 'असोसिएशन' स्वीकार किया था और शीघ्र ही इस बात के प्रमाण मिले कि ब्रिटिश सरकार भी समझौते के मार्ग पर चलने को तैयार है। ७ नवम्बर, १७६९ को प्रतिनिधि सभा की बैठक फिर बुलायी गयी और गवर्नर ने सूचना दी कि ब्रिटिश मंत्रिमण्डल चाय को छोड़कर अन्य सभी चीजों पर से टाउनशेड-करों को हटाना चाहता है और राजस्व बढ़ाने के उद्देश्य से अमरीकियों पर और अधिक कर लगाने का इरादा न तो रहा है और न है।

विधान सभा का अधिवेशन २१ दिसम्बर तक चलता रहा और शेष अवधि

में केवल घरेलू समस्याओं पर विचार किया गया। इससे जेफर्सन को एक प्रस्ताव के समर्थक के तौर पर गुलामों को मुक्त करने सम्बन्धी कमेटी में काम करने का अवसर मिला। कमेटी गुलामों को मुक्त करने के सुझाव का तीव्र विरोध करनेवाली सिद्ध हुई और उसने तत्सम्बन्धी कानून को उदार बनाने के बजाय उसे और कठोर बनाने का निर्णय किया। निग्रो समस्या पर जेफर्सन को प्रचलित भावना का सामना करने में विचित्र कठिनाई का अनुभव हुआ।

आगामी तीन वर्ष अपेक्षाकृत शान्ति से बीते। मार्च, १७७० में बोस्टन में ब्रिटिश सेनाओं से जो संघर्ष हुआ और जिसे बोस्टन हत्याकांड के नाम से प्रचारित किया गया, उससे व्यापारियों को सर्वत्र विश्वास हो गया कि जनता की उत्तेजनात्मक शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और उनके उचित अभाव-अभियोगों का राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है। न्यूयार्क प्रथम उपनिवेश था, जिसने आयात-विरोधी समझौते की निन्दा की और उसे आमतौर पर लागू नही होने दिया गया। टाउनशेड करों को रद्द करने का वादा पूरा किया गया और चाय पर जो कर कायम रखा गया, उसे या तो चुपके-चुपके अदा किया गया या उसे शांतिपूर्वक टालने की कोशिश की गयी। १७७२ के बसन्त तक क्रान्तिकारी आन्दोलन मृतप्राय-सा प्रतीत होता था।

किन्तु यह ऊपरी शान्ति और उदारवादियों की विजय एक प्रकार से मायाजाल था। प्रवासियों और ब्रिटिश पार्लमेण्ट के बीच जो संघर्ष प्रारम्भ हो चुका था, वह आर्थिक अभाव अभियोगों से भी अधिक गम्भीर था। निर्णायक समस्या तो राजनीतिक थी अर्थात् उपनिवेशों में सार्वभौमिकता का क्या स्थान है ? जब तक इसका निर्णय नहीं हो जाता, तब तक स्थायी समझौता नहीं हो सकता था।

जेफर्सन के मन और मस्तिष्क में वे विचारधाराएं जोरों से काम कर रही थीं और उसका एक रोचक प्रमाण उनका राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन में अचानक जुट जाना था। सितम्बर १७६९ में लन्दन के एक पुस्तक-विक्रेता के यहाँ से १४ पुस्तकें मंगायी गयीं, जो सभी संसदीय इतिहास और प्रणाली तथा शासन और राजनीतिक इतिहास से सम्बन्धित थीं। इनमें जेफर्सन की राजनीतिक विचारधारा का अध्ययन करनेवाले के लिए इन पुस्तकों में तीन लेखकों की कृतियों का अधिक महत्व है। भौतिक विज्ञान के सम्बन्ध में बर्लामाकी लाक और माण्टेस्क्यू। इनमें से 'एस्पिरिट डेस लायस' नामक पुस्तक से जेफर्सन के विचारों को विशेष बल मिला। यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि

इस समय इन पुस्तकों के प्रति अमरीकियों में जो सामान्य उत्साह था, उसमें उनका हाथ नही था और फिर भी उन्होंने माण्टेस्क्यू के अनेक प्रमुख सिद्धान्तों के प्रति बाद मे आलोचनात्मक रुख अपनाया।

इस समय जेफर्सन घरेलू आराम और शान्तिपूर्ण अध्ययन का जो जीवन व्यतीत कर रहे थे, उसका राजनीतिक संघर्ष के पुनरारम्भ से शीघ्र ही अन्त हो गया। मेसाचुसेट्स के सैमुएल एडम्स की निर्बाध प्रचारात्मक एवं संगठनात्मक गतिविधियों से इसके लिए पृष्ठभूमि तैयार हो गयी थी। सैमुएल एडम्स की पत्रव्यवहार समितियों का उपयोग एक संगठित राजनीतिक दल के निर्माण के लिए किया जा रहा था। यह दल आनेवाले संघर्ष में औपनिवेशिक सरकार और ऐसे निहित स्वार्थी तत्वों से निपटने को तैयार था जो आन्दोलन में समुचित भाग नहीं ले रहे थे।

जून, १७७२ में रोड आइलैण्ड तट से परे एक चुंगी उगाहने वाले जलपोत के विनाश की प्रथम प्रत्यक्ष दुर्घटना घटी। इसके परिणामस्वरूप सन्दिग्ध व्यक्तियों का पता लगाने और उन पर मुकदमा चलाने के उद्देश्य से उन्हें इंग्लैण्ड स्थानान्तरित करने की व्यवस्था करने के लिए एक विशेष आयोग नियुक्त किया गया, किन्तु यह काम ऐसा था जिसे उपनिवेशों की जनता के तनावपूर्ण रुख के कारण पूरा नही किया जा सका।

१७७२ में जेफर्सन प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में सम्मिलित होने में असफल रहे, किन्तु ४ मार्च, १७७३ को जब उसका दूसरा अधिवेशन आरम्भ हुआ तब उन्होने अपना स्थान पुनः ग्रहण किया।

उन्होंने शीघ्र ही प्रतिनिधि सभा के उग्रवादी पक्ष के सक्रिय नेताओं में अपना स्थान बना लिया और इसीलिए १२ मार्च को जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, उसमें उनका भी हाथ था। इस प्रस्ताव में एक स्थायी पत्रव्यवहार और जाँच-समिति की नियुक्ति की व्यवस्था थी। समिति के ग्यारह सदस्यों की सूची में जेफर्सन का नाम अन्तिम था। इस समिति ने प्रतिनिधि-सभा के निर्देश पर कार्य किया। उसने अन्य उपनिवेशों की प्रतिनिधि सभाओं को पत्र भेज कर अपने परम्परागत कानूनी और सांविधानिक अधिकारों पर जो संकट पैदा होने वाला था उस ओर अपनी चिंताएं व्यक्त की और सुझाया कि अन्य प्रतिनिधि-सभाएं भी इसी प्रकार की समितियाँ नियुक्त करें। इस अवसर पर गवर्नर की प्रतिक्रिया उतनी उग्र नहीं रही और अधिवेशन ग्यारह दिनों तक और चलता रहा। फिर सदन की बैठक अनिश्चित कालके लिए स्थगित कर दी गयी और ५ मई

१७७४ के पूर्व पुनः नहीं बुलायी गयी।

इस समय तक अमरीकी राजनीतिक आकाश में संघर्ष के बादल छा गये थे। ब्रिटिश सरकारने चाय-कर को कार्यान्वित करने तथा शक्तिशाली ईस्ट इंडिया कम्पनी को उसके आर्थिक संकट से मुक्ति पाने में सहायता करने के प्रयास में एक नया कानून पास किया, जिसके द्वारा अमरीका को पुनर्निर्यातित चाय पर सारा चुंगी कर माफ कर दिया गया और स्वयं कम्पनी को प्रत्यक्ष व्यापार करने की अनुमति दी गयी। इससे अमरीकी व्यापारियों के लिए खतरा उत्पन्न हो गया और कर के बावजूद भी चाय के लिए खरीददार मिलने की सम्भावना तो थी ही। इसके फलस्वरूप डच तस्कर व्यापारियोंको अपनी चाय कौडियों के भाव बेचना पड़ता। फलस्वरूप तस्कर व्यापारी, व्यवसायी और उग्रवादी देशभक्त इस सामान्य दृढ़ निश्चय में एकसाथ जुट गये कि चाय के आयात को बोस्टन में बलात् रोकना चाहिए।

क्रान्तिकारियों (Radical) द्वारा गवर्नर थामस हचिन्सन का पत्रव्यवहार प्रकाशित कर दिये जाने से पहले ही से तीव्र असन्तोष फैला हुआ था। इस पत्रव्यवहार में कुछ ऐसी बातें थीं, जो अमरीकी स्वाधीनता के लिए ख़तरनाक थी। इसीलिए बोस्टन ने नेतृत्व की बागडोर अपने हाथ में ली। १६ दिसम्बर, १७७३ को रेड इंडियनों के भेष में देशभक्तों के एक दल ने बोस्टन बंदरगाह में तीन जहाजों से आयातित चाय को छीन कर पानी में फेंक दिया। 'बोस्टन टी पार्टी' का अनुकरण अन्य बन्दरगाहों में भी किया गया। ब्रिटिश सरकार की सत्ता के लिए यह घटना स्पष्टतः खुली चुनौती के रूप में थी। यह ऐसी चुनौती थी जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी और इंग्लैड के लोग भी चाहते थे कि सरकार इसकी उपेक्षा न करे। १५ मार्च, १७७४ को ब्रिटिश लोकसभा ने बिना मत विभाजन के एक विधेयक पारित किया, जिसके द्वारा बोस्टन बन्दरगाह तब तक के लिए सभी प्रकार के व्यापार के लिए बन्द कर दिया गया जब तक नागरिक—कम्पनी तथा सम्बन्धित चुंगी अफसरों को मुआवजा नहीं दे देते और अपने भावी शुभ-संकल्पों का पर्याप्त प्रमाण नहीं प्रस्तुत कर देते। ११ मई, १७७४ को बोस्टन बन्दरगाह कानून के लागू करने का समाचार बोस्टन पहुँचा और अमरीकी क्रान्ति का श्रीगणेश हो गया।

अध्याय–३

अमरीकी स्वतन्त्रता

(१७७४—१७७६)

'बोस्टन टी पार्टी' के साथ जिन नाटकीय घटनाओं का सिलसिला आरम्भ हुआ और जिनका अंत स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ हुआ, वे इतनी सामान्य थीं कि कोई अत्यन्त सतर्क इतिहासकार भी कल्पना नहीं कर सकता था कि १८ वीं शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश के आरम्भ में ही ये उपनिवेश ग्रेट ब्रिटेन से पूर्णतया अलग हो जायेंगे और एक नये अमरीकी राष्ट्र का जन्म होगा। क्रान्ति का जो स्वरूप समकालीनों की आँखों के सामने आया, उस समय इतना अस्वाभाविक और शंकास्पद था जितना बाद में उसका वृत्तान्त पढ़ने से वह इतना जटिल और शंकास्पद नहीं लगता है।

अमरीकी रंगमंच पर जिस प्रकार कई घटनाएं घटीं और घटनेवाली थी, अमरीकी क्रान्ति के सामने उनका कोई उदाहरण नहीं है। पहले भी अत्याचारियों के विरुद्ध जन-विद्रोह हो चुके थे और जान रशवर्थ ने जिन ग्रन्थों में चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध युद्ध के अभिलेख संग्रहीत किये थे, उनका अध्ययन उन लोगों ने बड़ी गम्भीरता से किया, जो सांविधानिक दृष्टान्तों की खोज में थे। प्रथम अमरीकी युद्धपोत का नाम ओलिवर क्रामवेल रखना भी कुछ अर्थ अवश्य रखता है। पहले की विद्रोहजनित हलचलें अभाव-अभियोगों को दूर कराने तथा एक राज्य के अन्तर्गत सुधरी हुई शासन-प्रणाली की स्थापना के लिए की गयी थी। जहां कहीं भी विद्रोह किसी विदेशी अत्याचारी के विरुद्ध हुआ था, जैसा कि स्पेन के फिलिप द्वितीय के विरुद्ध डच विद्रोह, वहां विद्रोही सदा ही नये सिरे से थोपी गयी दासता के विरुद्ध पुरानी स्वाधीनता और स्वशासन की भावना से प्रेरणा पाया करते थे।

किन्तु इस मामले में अमरीकी एक ऐसे मार्ग पर जा रहे थे जिसका मार्ग निर्धारण पहले कभी भी नहीं हुआ था। उनकी कोई राजनीतिक स्थिति नहीं थी और वे एक प्रबल और सफल साम्राज्य के अंतर्गत विशिष्ट समुदायों के सदस्य मात्र थे। जिन समुदायों से उनका सम्बन्ध था, उनकी मिल कर काम करने की कोई परम्परा नहीं थी और उस समय संचार-साधनों के अभाव में उनके परस्पर घनिष्ठ संपर्क में आने की सम्भावना भी नहीं थी। यह सत्य है कि उनकी

संख्या हाल ही में बहुत बढ़ गयी थी और जेफर्सन के जन्म के समय से कदाचित् दुगुनी हो गयी थी। १७७० में कुल जनसंख्या लगभग २२ लाख थी और एक दशक बाद लगभग २७ लाख ८० हजार हो गयी थी। इन दस वर्षों में वर्जीनिया की आबादी पांच लाख से अधिक हो चली थी और पेनसील्वानिया, मेसाचुसेट्स तथा उत्तरी कारोलिना की आबादी तीन लाख तक पहुँच गयी थी। किन्तु १७८० में भी मेरीलैण्ड की जनसंख्या मुश्किल से ढाई लाख के करीब रही होगी और न्यूयार्क तथा कनेक्टिकट की आबादी केवल दो लाख थी। इन समुदायों की वास्तविक शक्ति का अनुमान लगाते समय इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिये कि क्रान्ति के समय २५ लाख अमरीकियों में पांच लाख नीग्रो गुलाम थे और वर्जीनिया में तो कुल आबादी के चालीस प्रतिशत नीग्रो दास थे।

इन उपनिवेशों में ऐसे नगरों की संख्या बहुत ही कम थी, जिनसे सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए राजनीतिक चेतना तथा सक्रिय सहयोग की भावना को प्रोत्साहन मिल सके। १७७४ में केवल पांच ऐसे अमरीकी नगर थे जिनकी आबादी १२ हजार से अधिक थी, फिलाडेलफिया की आबादी ४० हजार थी और औपनिवेशिक अमरीका का वह बौद्धिक तथा व्यापारिक केन्द्र था, न्यूयार्क की जनसंख्या २५ हजार से ३० हजार तक थी, बोस्टन की २० हजार तथा चार्ल्सटन और न्यू पोर्ट में से हर एक की लगभग १२ हजार। दक्षिण के दूसरे सबसे बड़े नगर बाल्टीमोर की आबादी लगभग ६ हजार थी। न तो वर्जीनिया और न उत्तरी कारोलिना ही इतना बड़ा होने का दावा कर सकते थे। पांचों प्रमुख नगरों में शहरी और ग्रामीण समुदाय की मिलीजुली अद्भुत आबादी थी और चार्ल्सटन के अतिरिक्त सभी नगरों के अधिकांश निवासी अपनी जीविका के लिए ग्रेट ब्रिटेन के साथ व्यापार पर अवलम्बित थे। इस सम्बन्ध में बोस्टन पोर्ट विधेयक के रचयिताओं का अनुमान सही ही था।

इसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक समाज के आर्थिक ढांचे पर राजनीतिक अधीनता का बहुत ही कम प्रभाव पड़ा था, जैसा कि स्वतंत्रता के प्रारम्भिक वर्षों के आर्थिक इतिहास से प्रकट होता है। अमरीकी उपनिवेश स्वयं ग्रेट ब्रिटेन को कच्चा माल दिया करते थे और उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों के लिए खाद्यान्न तथा अन्य सामग्री की पूर्ति किया करते थे। इसका कारण यह था कि आबादी बहुत कम थी। पूंजी तथा उसको संग्रहित करने तथा संचालित करनेवाली संस्थाओं का नितांत अभाव था और आर्थिक मामलों में लोग पुराने ढर्रे पर ही चल रहे थे। अमरीकियों ने वास्तव में ग्रेट ब्रिटेन की उस महान प्रगति की

उपेक्षा ही की, जो उसने कृषि एवं औद्योगिक तंत्र में प्राप्त की थी। राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति मात्र से अमरीकी आर्थिक स्थिति की इन कमजोरियों को न दूर किया जा सकता था और न किया ही गया। सच पूछा जाय तो साम्राज्य से निकल जाने से उपनिवेशों की आर्थिक कठिनाईयाँ कुछ बातों में घटने के बजाय निश्चय ही बढ़ गयी। अन्य देशों के साथ मुक्त व्यापार से वंचित होने का एक मात्र कारण ब्रिटेन की व्यापारिक नीति नहीं थी, फ्रांस और स्पेन के प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यों में आर्थिक नीति और भी कठोर और प्रतिबन्धात्मक थी।

उपनिवेशों में ब्रिटिश सरकार ने अंतर्वर्ती प्रदेशों में बस्तियों के विस्तार पर जो रोक लगायी थी उसे उचित ही कहा जा सकता है क्योंकि रेड़ इडियनों का खतरा था और उनसे सामना करने के लिए इन प्रवासियों को सदा ही अपने सीमित साधनों व शस्त्रों पर निर्भर रहना पड़ता था और उपनिवेशों को इन पर काबू पाने में बड़ी कठिनाई होती थी।

यही कारण है कि क्रान्ति के कारणों का विश्लेषण करते समय कथित आर्थिक अभाव-अभियोगों को उसका आधार नहीं ठहराया जा सकता। अनेक समकालीन इतिहासज्ञों के अनुसार, समझौते के पक्ष में भी आर्थिक तर्क उतने ही प्रबल थे, जितने विरोध के पक्ष में। यह कहना कि, व्यापारियों ने अधिक बाजारों की प्राप्ति के लिए और बड़े बड़े भूस्वामियों ने अपने ऋण के भार से मुक्त होने के लिए बगावत की, स्थिति के महत्वपूर्ण पहलुओं तथा अन्य क्रान्तिकारी आन्दोलनों के अध्ययन से प्राप्त शिक्षा की अवहेलना करना है।

हममें से जिन लोगों ने यूरोप और बाहरी जगत के राष्ट्रीय आन्दोलनों के विकास और उनकी सफलताओं को अपनी आँखों देखा है, उन्हें यह स्मरण कराने की आवश्यकता नहीं कि राजनीतिक संगठन के बन्धन के रूप में आर्थिक अथवा राजनीतिक स्वार्थों के बन्धन कितने कमजोर होते हैं। जान पड़ता है कि प्रत्येक समाज के जीवन में ऐसा समय आता है जब उसमें इतनी पर्याप्त मनोवैज्ञानिक आत्मनिर्भरता की भावना पैदा हो जाती है कि पराधीनता की कल्पना ही असह्य हो उठती है, कम से कम एक सजग और सक्रिय अल्पसंख्यक समुदाय के लिए, और कार्रवाई के साधनों के रूप में युग के राजनीतिक सिद्धान्त नया अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। यदि ऐसे अल्पसंख्यक समुदाय को दृढ नेतृत्व प्राप्त हो जाय तो बहुमत के संकोच की उपेक्षा की जा सकती है और शारीरिक हिंसा की धमकी से सक्रिय विरोध को भी दबाया जा सकता है। इस प्रकार

का नेतृत्व इतना चतुर अवश्य होगा कि वह समाज के आन्तरिक क्षोभ से अपना लाभ उठाने के लिए अनुदारवाद की संज्ञा समाज में विशेषाधिकार प्राप्त तत्वों से देगा तथा विशेषाधिकारी तत्वों को प्रतिक्रियात्मक शक्ति ठहरायेगा और प्रतिक्रियात्मक तत्वों का अर्थ राष्ट्रीय हित के प्रति देशद्रोही समाज के रूप में प्रस्तुत करेगा।

इस राजनीतिक प्रवंचना के भाष्यकारों में अमरीकी क्रान्ति के नेता भी प्रथम कोटि में आते हैं। इनमें वर्जीनिया और मेस्साचुसेट्स पूर्णतया भिन्न दो समाजों के नेता थे, जिन्होंने आपस में मिलकर काम किया। उपनिवेशों की भौगोलिक बाधाओं के बावजूद उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन के गठन में जिस शीघ्रता से अपूर्व सफलता प्राप्त की वह आश्चर्यजनक है। उनकी इस सफलता का प्रमुख कारण यह है कि वे स्वयं उन समुदायों के सक्रिय सदस्य थे, जो अपने सीमित और संकीर्ण दायरे में आत्मनिर्भरता और स्वशासन के वास्तविक शिक्षालय थे। राजनीतिक कूटनीतिज्ञता और सुव्यवस्थित शासन-संचालन उनके लिए कोई अनोखी चीज नही थी। यद्यपि उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधियों पर दबाव डाले और ज्यादतियाँ भी कीं, तथापि अमरीकी क्रान्ति के इन नेताओं ने अपना अथवा अपने अनुयायियों का नियंत्रण कभी नहीं खोया। दूसरी बात उनकी सफलता के बारे में यह है कि उन्होने जिस राजनीतिक विचारधारा के अनुसार साम्राज्य के विरुद्ध हथियार उठाना तर्कसंगत ठहराया, उसके प्रति अधिकांश लोगों का आकर्षण था। जेफर्सन के प्रसिद्ध जीवन-चरित्र-लेखक फ्रांसिस डब्लू हर्स्ट जैसे कुछ तत्कालीन ब्रिटिश इतिहासकारों ने लिखा है कि ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध इस तरह की शत्रुता, जो उस युग के अमरीकी अभिलेखों से अभी भी प्रकट होती है, अनुचित थी, क्योंकि सभी बातों को देखते हुए समूची ब्रिटिश जनता अमरीकी हितों के विरुद्ध नहीं थी। इस प्रश्न पर जार्ज तृतीय और लार्ड नार्थ ने ब्रिटिश समाज के उन अधिकांश तत्वों का प्रतिनिधित्व किया था जो १५वीं शताब्दि की पार्लमेण्ट में छाये हुए थे। जसा कि हमने देखा है, एक बार सार्वभौमिकता की समस्या के उग्ररूप धारण कर लेने पर उसे स्वीकार करना प्रायः असम्भव हो जाता था। उग्र मत वाले, जिनकी अमरीकी क्रान्ति के प्रति सहानुभूति थी, अल्पसंख्यक थे, फिर भी उनका प्रभाव नगण्य न था। ब्रिटिश परंपराओं के भविष्य के लिए निश्चय ही यह बात महत्वपूर्ण है कि उनके अप्रतिनिधिमूलक रूप की आलोचनाएँ की गयीं, तार्किक आधार पर उनके अधिकारपत्रों की छानबीन की गयी और राजनीतिक उत्तरदायित्व

की दुहाई देकर उनके परम्पराधिकारों को ठुकरा दिया गया। जब हम टाम पेन की अपेक्षा बर्क का अध्ययन करते हैं तो उसका कारण ऐतिहासिक न होकर साहित्यिक होता है। समस्त यूरोपीय महाद्वीप पर और विशेषकर फ्रांस पर अमरीकी क्रान्ति का महत्वपूर्ण बौद्धिक प्रभाव पड़ा।

ब्रिटिश साम्राज्य के दूरवर्ती उपनिवेशों में इन घटनाओं की गहरी प्रतिक्रियाएं हुईं। इसका एक कारण तो यह था कि प्रवासियों ने अपने युद्ध का वह भाग जीत लिया, जिसे सही शब्दों में अमरीकी स्वातंत्र्य युद्ध कहा जा सकता है; दूसरा कारण यह था कि उन्होंने अपने मामले को विश्व के समक्ष बड़े ही सुन्दर ढंग से रखा। प्रथम तथ्य के लिए अर्थात् विजय के लिए वे जार्ज वाशिङ्गटन की सैनिक एवं राजनीतिक योग्यताओं के तथा फ्रांस के आकस्मिक समर्थन के ऋणी थे, और दूसरे तथ्य के लिए वे मुख्यतः एक दूसरे वर्जीनियन थामस जेफर्सन के ऋणी थे। मई, १७७४ में वर्जीनिया की प्रतिनिधि-सभा के अधिवेशन के साथ जेफर्सन के राजनीतिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण-काल का अन्त हो जाता है और आगामी दो वर्षों में उन्हें अपने राजनीतिक कार्य की क्षमता तथा अपनी प्रचारात्मक योग्यता का परिचय देने का पर्याप्त अवसर मिला।

प्रतिनिधि-सभा की प्रारम्भिक बैठकों में कोई विशेष बात देखने में नहीं आयी और सदन का साधारण काम-काज बड़ी शान्ति से सम्पन्न हुआ। बोस्टन बन्दरगाह कानून के समाचार ने मानों क्रान्ति आरम्भ करने की कार्रवाई के लिए संकेत कर दिया। पहले की तरह ही जेफर्सन, पेट्रिक हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली तथा कुछ अन्य लोगों के क्रान्तिकारी गुट ने इस बात पर जोर दिया कि वर्जीनिया को मेस्साचुसेट्स का साथ देना चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि वर्जीनिया के अधिकांश लोगों के लिए दूरवर्ती न्यू इग्लैंण्ड वालों के साथ सम्मिलित हित की बात किसी भी प्रकार समझ में नहीं आने वाली थी। उन्हें यह समझाना आवश्यक था कि बोस्टन के विरुद्ध जो दडनीय कार्रवाइयां की गयी हैं, वे अमरीकी स्वाधीनता के उन्मूलन के साधारण षड़यंत्र का अंगमात्र हैं। इसके लिए एक उपाय सोचा गया, जिसके लिए जेफर्सन भी कुछ न कुछ जिम्मेदार थे। प्रतिनिधि-सभा के मंच का प्रचार के साधन के रूप में उपयोग किया गया और एक दिन व्रत और प्रार्थना की घोषणा की गयी। प्रतिनिधि-सभा के एक अनुदारवादी सदस्य और धार्मिक समिति के अध्यक्ष राबर्ट निकोलस कार्टर को आवश्यक प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए समझाया

गया और प्रस्ताव तत्काल पारित हो गया। यद्यपि इस प्रस्ताव में किसी भी प्रकार का क्रान्तिकारी पुट नहीं था, फिर भी गवर्नर इस चुनौती की उपेक्षा नहीं कर सकता था और उसने २६ मई को प्रतिनिधि-सभा को भंग कर दिया।

१७६९ की प्रणाली पुनः अपनायी गयी। प्रतिनिधियों की एक बैठक रैले टैवर्न में हुई और ब्रिटेन के साथ व्यापार को सीमित करने के लिए एक नया प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। उन्होंने यह भी प्रस्ताव रखा कि सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की एक सामान्य सभा ५ सितम्बर को फिलाडेल्फिया में बुलायी जाय और भावी कार्रवाई पर विचार किया जाय। इस बीच वर्जीनिया में इस सभा के लिए अपना प्रतिनिधि चुनने और भावी कार्रवाई के सम्बन्ध में उन्हें निर्देश देने के लिए एक विशेष सम्मेलन बुलाया गया।

१ जून को प्रार्थना-दिवस मनाया गया और उसका अनुकूल प्रभाव पड़ा। नये सम्मेलन में पुरानी प्रतिनिधि सभा के सदस्य रखे गये जो अपनी अतीत की कार्रवाइयों के लिए जनता के समर्थन का दावा कर सकते थे और भविष्य के लिए समादेश प्राप्त कर सकते थे।

अल्बेमार्ले काउण्टी के लिए जेफर्सन स्वयं चुने गये। चुनाव के लिए निर्वाचकों ने कई प्रस्ताव स्वीकृत किये, इन प्रस्तावों की भाषा शैली और शब्दों के चयन को देखते हुए सन्देह नहीं रह जाता कि उनके रचयिता स्वयं जेफर्सन थे। वास्तव में राजनीतिक समस्याओं की पहुँच के बारे में जेफर्सन की यह विशेषता थी कि प्रस्तावों का आरम्भ सामान्य सिद्धान्तों के एक वक्तव्य से होता था जो वास्तविक विषय से भी अधिक दूरगामी होता था—"निश्चय किया कि ब्रिटिश अमरीका के कई राज्यों के निवासी उन कानूनों के अधीन हैं, जिन्हें उन्होंने अपने प्रथम प्रवास में अपनाया तथा उन कानूनों के भी अधीन हैं, जो उनकी स्वीकृति से स्थापित और मनोनीत उनकी प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा समय-समय पर बनाये गये। यह कि दूसरी किसी भी प्रतिनिधि-सभा को उन पर अपनी सत्ता जमाने का कोई अधिकार नहीं है और यह भी कि ये अधिकार उन्हें मानव जाति के सामान्य अधिकारों के रूप में प्राप्त हैं, जिनकी पुष्टि उन्हें प्राप्त राजनीतिक संविधानों द्वारा तथा सम्राट के कतिपय समझौता-पत्रों द्वारा भी हुई है।"

इसलिए, जेफर्सन के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वे अपने तर्क को औपनिवेशिक अधिकार-पत्रों तथा आदर्शों की कानूनी व्याख्या तक सीमित रखते। स्वशासन के लिए प्रवासियों के दावे का आधार अपनी स्वीकृति से

शासित होने के मानव के अधिकार में निहित है। अमरीकी उपनिवेशों, अथवा जेफर्सन के शब्दों में, अमरीकी प्रदेशों की स्वाशासित संस्थाओं के वैधानिक स्वरूप इन प्राकृतिक अधिकारों का समर्थन और पुष्टि करते हैं। तर्क का यह उच्च स्तर इस प्रकार था —

"निश्चय किया गया कि उनके इन प्राकृतिक एवं वैधानिक अधिकारों पर ग्रेट ब्रिटेन की पार्लमेंट ने आक्रमण किया है और मेसाचुसेट्स खाड़ी के प्रान्त में बोस्टन नगर के निवासियों के व्यापार को छीनने के लिए हाल ही में एक कानून पास करके उसने विशेष रूप से ऐसा किया है; यह कि इस प्रकार अवैधानिक सत्ता ग्रहण करना साधारणतया ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारों के लिए खतरनाक है और उसे उसके (साम्राज्य के) सम्मिलित हित के रूप में समझा जाना चाहिए, और यह कि जब, जहाँ और जिस किसी द्वारा भी इस प्रकार के उनके सांविधानिक अधिकारों पर आक्रमण होगा, हम उनके पुनस्सस्थान और आश्वासन के लिए ईश्वर-प्रदत्त अपने सभी अधिकारों के उपयोग में हम साम्राज्य के किसी भी भाग में अपने सहयोगी जनों का साथ देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।"

प्रस्तावों में इस बात का जोरदार समर्थन किया गया था कि यदि बोस्टन-बन्दरगाह कानून और उसके साथ ही अमरीकी व्यापार पर कर अथवा प्रतिबंध लगानेवाले तथा आन्तरिक उत्पादनों का निषेध अथवा नियंत्रण करनेवाले कानून रद्द नही कर दिये जाते तो ग्रेट ब्रिटेन के साथ पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाय।

अकस्मात् बीमार पड़ जाने से स्वयं जेफर्सन वर्जीनिया-सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके और न फिलाडेल्फिया में उपनिवेश का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त सात प्रतिनिधियों में उनका नाम ही रखा गया। किन्तु उनकी विचार-धारा के उपेक्षित होने का खतरा नही था, क्योंकि उन्होंने अपने वक्तव्य की दो प्रतियां भेजी थीं, जो उनकी इच्छा थी कि साधारण कांग्रेस के प्रतिनिधियों द्वारा निर्देश के रूप में स्वीकार किया जाय। यद्यपि इस प्रस्ताव की ओर सम्मेलन का ध्यान आकृष्ट नहीं किया गया, तथापि एक निजी बैठक में पेटोन रन्डोल्फ ने उसे पढ़ कर सुनाया।

अल्बेमार्ले-प्रस्तावों की भाँति, प्रस्तावित निर्देशों का रूप उससे भी कहीं अधिक उग्र हो गया, जिस रूप में वे वर्जीनिया अथवा अन्य उपनिवेशों में सामान्यतः स्वीकृत हुए थे, क्योंकि अधिकांश लोग अभी भी कर थोपने के अतिरिक्त

ाभी मामलों में पार्लमेंट की सत्ता स्वीकार करने को तथा साम्राज्य के हितार्थ ाधारण कानून के अंतर्गत उसके अधिकार को स्वीकार करने को तैयार थे। ाकृतिक अधिकारों का तर्क इतना साहसपूर्ण और राजनीतिक विचारविमर्श ะ सामान्य क्षेत्र से इतना दूर था कि उपनिवेश के दावों के आधार के रूप में ासे तुरन्त स्वीकार नहीं किया जा सकता था। फिर भी, यह दस्तावेज़ 'ब्रिटिश ामरीका के अधिकारों पर संक्षिप्त दृष्टिकोण' के नाम से मुद्रित हुआ। लेखक ा नाम नही दिया गया, किंतु उसे छिपाने का भी प्रयास नहीं किया गया और ाह कहा जा सकता है कि उसके प्रकाशन के दिन से जेफर्सन की राष्ट्रीय ख्याति ाढ़ गयी।

प्रकाशन के समय को देखते हुए 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' वास्तव में एक महत्व-ूर्ण दस्तावेज प्रतीत होता है। इससे सिद्ध होता है कि जेफर्सन का राजनीतिक ाशंन कितना दृढ़ हो चुका था और वे अपने राजनीतिक अध्ययन को किस रूप में ्रियान्वित करने जा रहे थे। राजतंत्र के रूप और मूल, उसकी समुचित मर्या-ाएं, शासनतंत्र के लिए आपसी नियमन और इस प्रकार पृथक होने और विद्रोह े अधिकारो को सिद्ध करने के प्रयास में प्राचीन, मध्ययुगीन और अर्वाचीन ़तिहास के व्यापक सिद्धान्तों को इनमें प्रस्तुत किया गया है।

किन्तु यह कल्पना करना कि जेफर्सन के दृष्टिकोणों का स्वरूप उनके अध्ययन के परिणामस्वरूप निर्धारित हुआ है और "संक्षिप्त दृष्टिकोण" लोक अथवा अलजेर्नान सिडनी के सिद्धान्तों के गम्भीर मनन का परिणाम था, राज-नीतिक विकास की प्रक्रिया को गलत समझना होगा। यथार्थ परिणाम के उद्देश्य से लिखे जाने वाले किसी लेख में सिद्धान्त का नहीं, अपितु निष्कर्ष का मूल्य होता है। राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करके जेफर्सन ने निष्कर्ष निकाले और उनका कार्य उन निष्कर्षों की पुष्टि के लिए उन्हें सैद्धान्तिक आधार प्रदान करना था तथा अपने को और अपने पाठकों को यह विश्वास दिलाना था कि साम्राज्यीय संविधान का सिद्धान्त पूर्णतया शानदार था और उनके अनुभव एवं सामान्य विचारधारा के अनुरूप था।

"सक्षिप्त दृष्टिकोण" के आरम्भ में सम्राट से अपील की गयी है कि वे अपनी अमरीकी प्रजा के आवेदनों पर ध्यान दें—

"हम आशा करते हैं कि सम्राट इनपर विचार करेंगे, क्योंकि हमारी मान्यता है कि वे जनता के प्रमुख अधिकारी से बढ़कर नहीं हैं। वे कानूनों द्वारा नियुक्त किये गये है और समय समय पर उन्हें निश्चित अधिकार भी प्रदान

किये हैं, जिससे प्रशासन के विशाल तंत्र को, जो जनता के उपयोग के लिए है, उन्हें सहायता मिल सके, फलस्वरूप उन पर जनता का निर्देशन भी है।

असाधारण रूक्षता से व्यक्त किये जाने पर भी सीमित राजतंत्र की यह भावना वास्तव में उन व्हिग-सिद्धान्तों से परे नही जाती, जो १६८८-८९ की क्रांति के समय से इंग्लैड मे प्रायः स्वीकार किये गये थे।

जब जेफर्सन उपनिवेशों के साथ इंगलैण्ड के सम्बन्धों पर विचार करते हैं तब उनकी शानदार स्थिति स्पष्ट हो जाती है; क्योंकि अमरीका में ब्रिटिश उपनिवेशों की स्थापना स्वतंत्र अंग्रेजों ने स्वदेश-त्याग एवं सार्वजनिक सुख-समृद्धि को प्रोत्साहित करनेवाले विधि-विधानों के अन्तर्गत नये समाज की स्थापना के अपने प्राकृतिक अधिकार का उपयोग करके की थी। 'सुख-समृद्धि ही सरकार का उद्देश्य है', यही एक नयी बात थी। इस उपनिवेशीकरण-अभियान की समरूपता जेफर्सन को ब्रिटेन की ऐंग्लो-सेक्सन विजय मे मिली। अमरीका के प्रवासी इंग्लैण्ड के निवासियों के प्रति राजनीतिक आस्था के लिए उसी प्रकार बाध्य नहीं थे, जिस प्रकार से इंगलैण्ड के निवासी ऐंग्लो-सेक्सनों के मूल देशों के शेष निवासियों के प्रति बाध्य नहीं थे। ब्रिटिश पार्लमेण्ट ने इन उपनिवेशों को विदेशी शत्रुओं से रक्षा करने में जो कुछ सहायता की थी, उसके कारण वह इनपर अपने राजनीतिक प्रभुत्व का दावा नहीं कर सकती थी। क्योंकि इसकी पूर्ति उन्होंने अधिकांश व्यापारिक विशेषाधिकार ग्रहण करके पूरी कर ली। जान एडम्स और जेम्स विल्सन की भाँति जेफर्सन का भी यही विचार था कि अमरीकी उपनिवेशों और ब्रिटेन के बीच वर्तमान संबन्ध अनुबन्धात्मक है न कि राजा-प्रजा का-सा।

"अमरीका के जंगलों मे इस प्रकार बस जाने के बाद प्रवासियों ने ऐसी विधि-प्रणाली अपनाना उचित समझा, जिसके अन्तर्गत वे अभी तक अपनी मातृभूमि में रह रहे थे और उन्होंने ब्रिटेन के साथ अपने सम्बन्धों को एक ही सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा कायम रखते हुए, जारी रखना उचित समझा, जो इस प्रकार बहुविस्तृत साम्राज्य के विभिन्न भागों को मिलाने में केन्द्र-बिन्दु का काम करता था।"

दूसरे शब्दों में, साम्राज्य के विभिन्न समुदाय राजनीतिक स्तर में समान थे और एक ही सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा द्वारा ही परस्पर सम्बन्धित थे। १५० वर्ष पूर्व लार्ड वेलफोर ने १७२६ के साम्राज्यीय सम्मेलन के लिए ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के स्वशासित उपनिवेशों के पद की प्रख्यात परिभाषा तैयार की

थी, जिसे बाद में वेस्टमिन्स्टर के नियमों में सम्मिलित कर लिया गया। जेफर्सन ने वस्तुतः उसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। राजनीति की प्रमुख समस्याओं के स्थायी स्वरूप तथा उनके समाधान के अपेक्षाकृत तंग दायरे का यह एक रोचक उदाहरण है।

इस दृष्टिकोण से यह सम्भव था कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट के कानूनों को, जिनके बारे में अमरीकियों को शिकायत थी कि ये अधिकारसम्बन्धी कानून उस मण्डल द्वारा जारी किये गये हैं, जो उनके संविधानों के अनुसार विदेशी हैं साथ ही सम्राट से यह आशा और की गयी कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक राज्यों के बीच अभी भी एकमात्र मध्यस्थ-शक्ति के तौर पर उन कानूनों को रद्द करे। जेफर्सन ने स्वीकार किया है कि राजा के हाथ में प्रत्येक राज्य के कानूनों की कार्यपालक शक्ति होती है, किन्तु ये कानून एक विशेष राज्य के कानून होते है, जिनका पालन उसी राज्य के अन्तर्गत होता है और एक राज्य का कानून दूसरे राज्य की सीमा के अन्तर्गत लागू नही हो सकता।

जिस भाषा का अमरीकी उपयोग कर रहे हैं, वह स्वतंत्र लोगों की वाणी है जो उन्हें प्रकृतिदत्त अधिकारों से प्राप्त हुई है न कि किसी सम्राट या चीफ मैजिस्ट्रेट से उपहाररूप में मिली है। जेफर्सन ने घोषणा की कि "राजा जनता के सेवक होते हैं न कि स्वामी। जार्ज तृतीय को स्वयं अमरीका के मामले में सोचना और कार्य करना पड़ेगा, क्योंकि उनके पास अमरीकी सलाहकार नही हैं, किन्तु इसमें कोई कठिनाई नही होनी चाहिए, क्योंकि शासन की पूर्ण कला उसकी ईमानदारी में निहित है। यह एक महत्वपूर्ण पद है जो उसे सौभाग्य से प्राप्त हुआ है और उसे एक महान और सुगठित साम्राज्य को संतुलित रखना है। न्यायपूर्ण व्यवहार से साम्राज्य भर में एकता और भाई-चारे की स्थापना होगी।"

'संक्षिप्त दृष्टिकोण' इस सम्बन्ध में विचारणीय है, क्योंकि उसमें बड़े ही स्पष्ट ढंग से साम्राज्य के सम्बन्ध में जेफर्सन की मान्यताओं और उनकी विचारधारा में प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त को प्रमुख स्थान दिया गया है। जेफर्सन ने जिन विशिष्ट अभाव-अभियोगों की शिकायत की है, वे प्रायः वही हैं जिनकी पिछले दस वर्षों के इतिहास से चर्चा की जाती रही थी। अफ्रीकी गुलाम व्यापार के अन्त के लिए औपनिवेशिक कानूनों को अपने विशेषाधिकार से लागू नहीं होने देने की प्रवृत्ति पर जेफर्सन ने जो दृढ रुख अपनाया, वह विशेष उल्लेखनीय है।

सम्राट की इस प्रवृत्ति ने स्पष्ट बता दिया कि उन्होंने स्थायी अमरीकी हितों की उपेक्षा करके समुद्री दस्युओं को तात्कालिक लाभ पहुँचाने के लिए इस कुख्यात प्रथा को जारी रखकर मानवीय अधिकारों पर गंभीर चोट पहुँचायी है। उनके अन्य दावों का आधार भी प्रकृति ही थी। इस प्रकार जेफर्सन के अनुसार, अमरीकी प्रवासियों को विश्व के सभी भागों के साथ प्राकृतिक अधिकार के रूप में स्वतंत्र व्यापार करने का अधिकार था।

न्यूयार्क प्रतिनिधि-सभा के स्थगन पर प्रकाश डालते हुए उन्होने घोषणा की कि यहां सम्राट की प्रजा के गले के नीचे यह बात उतारने के लिए कि उनका राजनीतिक अस्तित्व ब्रिटिश पार्लियामेंट की मर्जी पर निर्भर करता है, सामान्य समझदारी के सिद्धान्तों का ही नहीं, वरन मानवीय भावनाओंका भी गला घोंटना होगा।

५ सितम्बर, १७७४ को फिलाडेल्फिया में महाद्वीप की जो प्रथम कांग्रेस हुई, उसके लिए जेफर्सन को मनोनीत नहीं किया गया था। कॉंग्रेस का अधिवेशन २६ अक्तूबर तक चलता रहा। यहाँ अभी भी बहुमत साम्राज्य के अन्तर्गत रहकर अमरीकी अभाव-अभियोगों को दूर कराने के प्रयास के पक्ष में था और काँग्रेस में प्रमुख विचारणीय विषय था ब्रिटिश व्यापार के बहिष्कार को सुदृढ़ करने के लिए क्रियाशील-तंत्र की स्थापना और यह विश्वास किया गया कि अमरीकी दावों को स्वीकार कराने के उद्देश्य से साम्राज्यीय सरकार को बाध्य करने को यह तरीका ही एकमात्र साधन था। जेफर्सन को कुछ निराशा सी प्रतीत हुई थी कि काँग्रेस इससे आगे नहीं बढ़ी। उन्हें इस बात से और भी निराशा हुई कि कई उपनिवेश केवल उन्हीं निर्णयों से आबद्ध हुए, जिन्हें उनके प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया था।

दूसरी ओर, उनकी अनुपस्थिति में भी, काँग्रेस ने उस दृष्टिकोण को काफ़ी हद तक स्वीकार कर लिया, जिसका उन्होंने प्रतिपादन किया था। उसने एक नये साम्राज्यीय संविधान के लिए जोसेफ गैलोवे की योजना को ठुकरा दिया, जिसके अन्तर्गत अमरीकी उपनिवेश एक अधिनस्थ संघ बनाते और १४ अक्तूबर को स्वीकृत अधिकार-घोषणापत्र ने 'अटल प्राकृतिक विधान' रख दिये थे, जिन स्रोतों से उपनिवेशों को अपने अधिकार प्राप्त होते थे। उन्हें अटल प्राकृतिक विधान के रूप में स्वीकार कर लिया।

नये प्रस्तावों की विशेषता यह थी कि बहिष्कार को प्रत्येक देहात, नगर या कस्बों में लागू करने के लिए समितियों की स्थापना की योजना थी।

अल्बेमार्ले काउण्टी की सुरक्षा समिति के लिए स्वयं जेफर्सन को सबसे अधिक मत मिले और २० मार्च, १७७५ को होने वाले द्वितीय वर्जीनिया-सम्मेलन के लिए वे काउण्टी के प्रतिनिधि चुने गये। इस अवसर पर नरमवादियों और क्रान्तिकारियों के बीच भेद स्पष्ट हो गया। मुख्य समस्या थी देश की प्रतिरक्षा के लिए सशस्त्र सेना की स्थापना का प्रस्ताव, जिसे पेट्रिक हेनरी ने प्रस्तुत किया था। इसका अर्थ था, जिसे हेनरी ने स्वीकार भी किया था, समझौते की आशा का परित्याग और सशस्त्र सेना के लिए अपील करने के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नही था। जेफर्सन प्रस्ताव के समर्थकों में से थे, जो अन्त में ६० के विरुद्ध ६५ मतों से स्वीकृत हुआ और वे योजना क्रियान्वय समिति के सदस्य बनाये गये।

इस बीच उपनिवेश की घटनाएं संकट की सीमा तक पहुँच गयी थीं। इसके पूर्व पतझड़ में गवर्नर लार्ड डनमोर ने वर्जीनिया के विस्तारवादियों के पक्ष में केण्टकी में शानी इंडियनों के विरुद्ध युद्ध का संचालन तक किया था, किन्तु समुद्रतटवर्ती क्षेत्रमें रंचमात्र भी उनकी लोकप्रियता नहीं बढ़ी। सम्राट द्वारा जारी नये भूमि-नियमों में उस भूमि के बन्दोबस्त की मनाही कर दी गयी, जिसकी पैमाइश नहीं हुई थी और जिन क्षेत्रों का बन्दोबस्त करना था, उनके लिए क्रय–मूल्य और 'मुक्ति लगान' बढ़ा दिया गया था। वास्तव में इस अन्तिम भूमि–नीति का अर्थ था पश्चिमी प्रसार पर वास्तविक प्रतिबन्ध। अधिकाश वर्जीनियावासी इस के प्रति उदासीन थे और जून, १७७४ के क्वेबेक कानून, जिसके अंतर्गत कनाडा की दक्षिणी सीमा उस भू प्रदेश तक बढ़ा दी गयी, जिसमें वर्जीनियाके भू-स्वामियों का भी दावा था इसका विरोध इस आधार पर नहीं किया गया वरन् एक कैथोलिक और अस्वशासित उपनिवेश की वृद्धि के कारण जो धार्मिक और राजनीतिक दुष्परिणाम होते उनके आधार पर किया गया।

मार्च, १७७५ के सम्मेलन ने, जिसमें विस्तारवादी तत्वों का प्रभुत्व था, डनमोर को उनके इडियन युद्ध के लिए धन्यवाद दिया, किन्तु नयी भूमि-नीति की निन्दा की, और 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' के शब्दों में लगान बढाने के सम्राट के अधिकार का खण्डन किया। गर्वनर के साथ सम्बन्ध और भी बिगड़ गया, जब कि डनमोर ने एक घोषणापत्र जारी किया कि वे महाद्वीप की द्वितीय कांग्रेस के लिए अपना प्रतिनिधि भेजने से वर्जीनिया को रोकना चाहते है। यह कांग्रेस मई में बुलायी गयी थी। अप्रैल में विलियम्सबर्ग शस्त्रागार से बारूद

का ब्रिटिश युद्धपोत 'फोवे' को स्थानान्तरण और मेस्साचुसेट्स के अन्तर्गत लेक्सिंगटन में ब्रिटिश सेनाओं के साथ प्रवासियों के संघर्ष के समाचार ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया। डनमोर ने समझौते के लिए अन्तिम प्रयास के रूप में १ जून को प्रतिनिधि-सभा की एक बैठक बुलायी। एक सप्ताह बाद वे ब्रिटिश युद्धपोत 'फोवे' पर चले गये और वर्जीनिया में ब्रिटिश शासन का व्यावहारिक रूप से अन्त हो गया।

प्रतिनिधि-सभा ने जेफर्सन को उस समिति में नियुक्त किया, जो ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड नार्थ के समझौता-प्रस्ताव पर विचार करने के लिए नियुक्त की गयी थी और १२ जून को सदन में जो रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी, उसको तैयार करने वाले भी जेफर्सन ही थे। रिपोर्ट में लार्ड नार्थ के प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया, क्योंकि इसका अर्थ था कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट को स्थानीय प्रशासन तंत्र की सहायता से उपनिवेशों में हस्तक्षेप का अधिकार है, उसमें मेस्साचुसेट्स के विरुद्ध की गयी कार्रवाइयों को रद्द करने के लिए कुछ भी नहीं कहा गया था और अमरीकियों को शेष विश्व के साथ व्यापार के लिए मुक्त नहीं किया गया था। सबसे महत्वपूर्ण बात इस बारे में यह है कि इस बात पर अधिक जोर दिया गया है कि अब यह मसला अकेले वर्जीनिया का न होकर सभी उपनिवेशों का है और वर्जीनिया के लिए अकेले इस पर कार्यवाही करके अपने सम्मान की रक्षा करना सभव नहीं है, जब तक वह उस संगठन से नीचतापूर्ण तरीकों से अपने को अलग न कर ले, जिसकी सदस्यता उसने खुद स्वीकार की है। यद्यपि प्रस्ताव के अन्त में आशा व्यक्त की गयी थी कि अमरीकी अभी भी पुनः एक होकर स्वतंत्रता और समृद्धि तथा ग्रेट ब्रिटेन के साथ अत्यन्त स्थायी मित्रता प्राप्त कर सकेंगे। एक पृथक् अमरीकी राष्ट्र का जन्म सन्निकट था।

२० जून, १७७५ को जेफर्सन द्वितीय महाद्वीपी कांग्रेस में भाग लेने के लिए फिलाडेल्फिया पहुँचे। अधिवेशन पहले ही आरम्भ हो चुका था। न्यू इंग्लैण्ड की घटनाओं की प्रतिक्रिया अब समस्त उपनिवेशों में दिखायी पड़ रही रही थी, सर्वत्र समितियाँ अतिरिक्त कानूनी अधिकार ग्रहण कर रही थीं और सैनिक संगठन के लिए चर्चा चल रही थी। जान एडम्स की शान्तिपूर्ण कूटनीति के द्वारा मेस्साचुसेट्स और वर्जीनिया के क्रान्तिकारियों का संयुक्त राजनीतिक गठबन्धन हो रहा था और काग्रेस के कार्य का यही आधार था। इसका प्रथम परिणाम यह हुआ कि जार्ज वाशिङ्गटन महाद्वीप की सभी सेनाओं

के प्रधान सेनापति नियुक्त किये गये। जेफर्सन को वाशिङ्गटन के लिए एक घोषणापत्र तैयार करने का कार्य सौंपा गया। वाशिंगटन सेनापति-पद ग्रहण करने पर इस घोषणा को जारी करते। अन्त में शस्त्र-ग्रहण करने का घोषणापत्र मुख्यत: अधिक अनुदारवादी जान डिकिन्सन द्वारा लिखा गया और अन्तिम साढ़े चार परिच्छेद जेफर्सन ने पूरे किये।

डिकिन्सन ने ही सम्राट के नाम एक आवेदनपत्र तैयार किया, जिसपर ८ जुलाई को हस्ताक्षर किया गया। इसमें नरमवादियों की बचीखुची आशाओं की झलक मिलती थी। किन्तु जेफर्सन को लार्ड नार्थ के प्रस्तावों के लिए कांग्रेस का उत्तर तैयार करने का कार्य सौंपा गया और यह दस्तावेज वर्जीनिया प्रतिनिधि सभा के लिए तैयार किये गये प्रस्ताव के आधार पर ही लिखा गया था।

अगस्त, १७७५ में जेफर्सन एक बार फिर वर्जीनिया आये, किन्तु सितम्बर के अन्त तक पुन: फिलाडेल्फिया के लिए रवाना हो गये, जहाँ काँग्रेस एक सेना तैयार करने की विशाल योजना में व्यस्त थी। जान पड़ता है कि जेफर्सन ने इसी समय अपना यह दृष्टिकोण त्याग दिया कि प्रमुख समस्या केवल पार्लमेण्ट और उपनिवेशों के बीच है और सम्राट के प्रति एक समान निष्ठा के आधार पर पुन: समझौता सम्भव है, क्योंकि २९ नवम्बर को उन्होंने अपने सम्बन्धी जान रण्डोल्फ को एक पत्र लिख कर पहलेपहल जार्ज तृतीय की प्रत्यक्ष आलोचना की थी और उन्हें अमरीकियों का 'दुर्दान्त शत्रु' बताया था। उन्होंने घोषणा की, "हमें पृथक राष्ट्र की माँग और घोषणा के लिए न तो किसी लालच की आवश्यकता है और न शक्ति की। इसके लिए केवल संकल्प की आवश्यकता है, जो हमारे सम्राट की छत्र छाया में तेजी से पूरा हो रहा है।" जान रण्डोल्फ उन व्यक्तियों में थे, जिन्होंने समझौते से निराश होकर विद्रोह का समर्थन करने के बजाय इंगलैंड में शरण लेना अधिक उचित समझा।

२६ अक्तूबर को पार्लमेण्ट में बादशाह के दुराग्रहपूर्ण उद्घाटन-भाषण का समाचार ही सम्भवत: जेफर्सन के दृष्टिकोण में इस परिवर्तन का तात्कालिक कारण था। जनवरी, १७७६ में टाम पेन की पुस्तक 'कामनसन्स' ने स्वतंत्रता के लिए बढ़ती हुई भावना में और निखार पैदा कर दिया और एक समतावादी लोकतांत्रिक दृटिकोण की अपनी स्पष्ट व्याख्या में प्रचार का इतना शक्तिशाली अस्त्र प्रस्तुत किया जैसा कि किसी अमरीकी लेखक ने अभी तक प्रस्तुत नहीं किया था।

इसी तिथि से जेफर्सन पुन: अपने घर की ओर उन्मुख हुए। आगामी

चार महीनों तक घरेलू कार्यों तथा अस्वस्थता के कारण वे माण्टिसिलो में ही रहे, जहाँ अपनी कउण्टी की जन सेना के प्रधान सेनापति के रूप में भी वे काफी व्यस्त रहे। इन महीनों मे स्वतंत्रता आन्दोलन ने काफी जोर पकड़ लिया और इस दिशा में कारोलिनास में कार्रवाई की गयी। मई, १७७६ में एक नया वर्जीनिया सम्मेलन बुलाया गया और १५ मई को काँग्रेस के लिए चुने गये प्रतिनिधियों को निर्देश दिया गया कि वे प्रस्ताव रखें कि उपनिवेश अपने को स्वतंत्र घोषित करें, एक महासंघ में सम्मिलित हों और कोई भी वाँछनीय विदेशी सन्धि करें। पृथक उपनिवेशों के आन्तरिक मामलोंके लिए सरकार बनाने का अधिकार उनकी अपनी प्रतिनिधि सभाओं को दे दिया गया।

यद्यपि जेफर्सन भी प्रतिनिधि-सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे, तथापि उन्होंने फिलाडेल्फिया वापस जाने में विलम्ब नहीं किया और वहाँ १४ मई को अपना स्थान पुनः ग्रहण कर लिया। १५ मई को काँग्रेसने एक प्रस्ताव स्वीकृत कर सिफारिश की कि सभी उपनिवेश अपने-अपने लिए स्वेच्छानुसार नये ढंग की सरकारें स्थापित करें। ७ जून को रिचार्ड हेनरी ली ने दो प्रस्ताव प्रस्तुत किये और जान एडम्स ने उनका समर्थन किया। प्रथम प्रस्ताव में घोषणा कि गयी कि अमरीकी उपनिवेश स्वतंत्र और स्वाधीन राज्य हैं और उन्हें स्वतंत्र होनेका अधिकार है। दूसरे प्रस्ताव में सुझाया गया कि संघराज्य बनाने के लिए योजना प्रस्तुत कर काँग्रेस की स्वीकृत करायी जाय।

यह एक संकट की घड़ी थी। इसके पूर्व पतझड़ में कनाडा का आक्रमण उस उपनिवेश को अमरीकियों का साथ देने के लिए विवश करने में असफल रहा। अब यह समाचार मिला कि शान्तिपूर्ण साधनों से इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजे गये एक आयोग की भर्त्सना की गयी। कनाडा और अन्यत्र व्यापक पैमाने पर ब्रिटिश सैनिक कार्रवाई की तैयारी के भी समाचार मिले। अमरीकियों की आशा इंग्लैड के शत्रु फ्रांस और स्पेन से मिलने वाली सहायता में निहित प्रतीत होती थी। स्वतंत्रता की घोषणा के समर्थकों ने अधिकतर इस आधार पर इसका समर्थन किया था कि जब तक अमरीका व्यापारिक लाभों के लिए आश्वासन नहीं देता तब तक विदेशी राष्ट्रों के साथ सन्तोषजनक वार्ता सम्भव नही और एक स्वतंत्र राष्ट्र ही ये आश्वासन दे सकता है। किन्तु मध्य उपनिवेशों के अनुदार सदस्य इससे आश्वस्त नहीं हुए और मुख्य समस्या को १ जुलाई तक स्थगित कराने में वे सफल हुए। अन्ततोगत्वा स्वतंत्रता की

बात स्वीकार हो जाने पर स्वतंत्रता का घोषणापत्र तैयार करने के लिए ११ जून को एक समिति नियुक्त की गयी। समिति के सदस्यों में थामस जेफर्सन, जान एडम्स, बेंजामिन फ्रैंकलिन, राजर शरमन और राबर्ट आर. लिविंगस्टन थे। महीने के अन्त तक इस बात के प्रमाण तेजी से एकत्र होने लगे कि कम प्रगतिशील उपनिवेश भी अब आगे आ रहे थे। १ जुलाई को स्वतंत्रता के प्रश्न पर नियमित रूप से पुनः विचारविमर्श आरम्भ हो गया। २ जुलाई को स्वतंत्रता-प्रस्ताव निर्विरोध स्वीकृत हुआ, केवल न्यूयार्क के प्रतिनिधि ने मतदान में भाग नहीं लिया। अब प्रश्न यह रह गया कि किस प्रकार जनता का समर्थन और शेष विश्व की सहानुभूति प्राप्त की जाय।

स्वतंत्रता के घोषणापत्र का जितनी गम्भीरता से अध्ययन किया गया, उतना शायद ही किसी ऐतिहासिक दस्तावेज का अध्ययन किया गया होगा। कार्ल वेकर ने अपनी पुस्तक 'डिक्लेरेशन आफ इंडिपेन्डेन्स' में इसके विकास की पूर्ण समीक्षा की है। जूलियन पी. बायड द्वारा सम्पादित विभिन्न प्रारूपों की प्रतिलिपियों के हाल के प्रकाशन में भी इसकी समीक्षा की गयी है। फिर भी, घटनाओं के बाद समय-समय पर दिये गये जेफर्सन और एडम्स के विवरणों को समन्वित नहीं किया गया है और न हमें यह कारण ही समझ में आता है कि प्रारूप तैयार करने का कार्य मेस्साचुसेट्स के राजनीतिज्ञ को, जिसने स्वतंत्रता के हित में इतना कार्य किया था, सौंपने के बजाय जेफर्सन को क्यों सौंपा गया। यह तो निश्चित है कि २८ जून का प्रारूप जेफर्सन ने तैयार किया था, यद्यपि उसमें एडम्स और फ्रैंकलिन के परामर्श से संशोधन किये गये थे।

घोषणा-पत्र के प्रारूप पर २ जुलाई को वादविवाद आरम्भ हुआ और वह दो दिनों तक और जारी रहा। जेफर्सन ने स्वयं वादविवाद में भाग नहीं लिया और प्रारूप के समर्थन का कार्य एडम्स पर छोड़ दिया, जिन्होंने अनेक आलोचकों और विरोधियों को बड़ी योग्यता और दृढ़ता से उत्तर दिया। अनेक संशोधन किये गये, जो मौखिक और वास्तविक दोनों ही थे। जेफर्सन की तत्कालीन टिप्पणियों में इनमें से सब से महत्वपूर्ण संशोधनों पर उनका मत इस रूपमें व्यक्त किया गया है :—

"बहुत से लोगों में अभी भी भीरुता की यह भावना काम कर रही थी कि इंग्लैण्ड में ऐसे लोग हैं; जिनके साथ मित्रता रखी जा सकती है। इसी कारण उन परिच्छेदों को निकाल दिया गया, जिन में इंग्लैण्ड के लोगों की निन्दा की गयी थी, ताकि वे रुष्ट न हों। दक्षिणी कारोलिना और जार्जिया को

सन्तुष्ट करने के उद्देश्य से वह धारा भी निकाल दी गयी, जिसमें अफ्रीका के निवासियों को गुलाम बनाने के कार्य को अस्वीकार कर दिया गया था। दक्षिणी कारोलिना और जार्जिया ने गुलामों के आयात पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास कभी नहीं किया, बल्कि वे अभी भी उसको जारी रखना चाहते थे। मेरा विश्वास है कि हमारे उत्तरी सदस्य भी इन प्रतिबन्धों से सहमत नहीं होते थे, क्योंकि यद्यपि स्वयं उनके पास बहुत ही कम गुलाम थे, फिर भी उनमें बहुत से ऐसे लोग थे, जो दूसरों को गुलाम पहुँचाने का काम करते थे।"

मौखिक संशोधनों में सबसे रुचिकर संशोधन यह था कि जेफर्सन के मूल उल्लेख "निहित अविच्छेद्य अधिकार" को बदल कर "कतिपय अविच्छेद्य अधिकार" कर दिया गया। उपनिवेशों की सरकारों के निर्माण के समय एक ही राजा की उनकी ऐच्छिक स्वीकृति सम्बन्धी जेफर्सन के उल्लेख को भी कांग्रेस ने निकाल दिया और उसने अन्तिम वाक्य में 'दैवी शक्ति की छत्रछाया' का उल्लेख डाल दिया। चूंकि स्वयं जेफर्सन के प्रथम प्ररूप में कांग्रस को प्रस्तुत किये गये घोषणापत्र के "उनके स्रष्टा द्वारा प्रदत्त" के स्थान पर "उनकी समान सृष्टि से" शब्दावलि कायम है, इसलिए हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि केवल जेफर्सन को आद्योपान्त प्रमाणपत्र तैयार करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया होता तो 'ईश्वर' का उल्लेख केवल 'प्रकृति के भगवान' के रूप में किया गया होता।

स्पष्ट है कि जेफर्सन १७७६ तक अपने बचपन की धार्मिक कट्टरता से मुक्त हो गये थे और एक नास्तिक की अपेक्षा आस्तिक के रूप में, जैसा कि उनके विरोधियों ने उनके बाद के जीवन में देखा, वे नैतिक क्षेत्र की भाँति राजनीतिक क्षेत्र में भी केवल मानव बुद्धि की निर्बाध क्रियाशीलता में अपने विश्वासों के लिए समर्थन प्राप्त करना चाहते थे। इस प्रकार की उदार आस्तिकता वास्तव में जेफर्सन पीढ़ी के अनेक प्रमुख व्यक्तियों की विशेषता थी, यद्यपि शायद ही किसी में इतनी प्रबल पादरी-विरोधी भावना काम कर रही थी। किन्तु इस प्रकार का आस्तिकता का सिद्धान्त इतना अभिजातीय था कि एक व्यापक लोकतांत्रिक युग में उसका टिका रहना कठिन था और जेफर्सन के दल के लोगों ने बाद में देखा कि उनके अधिकांश अनुयायी उन लोगों की कोटि में चले गये जिनके लिए थोड़ा बहुत धार्मिक आचार-विचार धर्मभावना का आवश्यक आश्वासन होता है।

काग्रेस ने भी जब इस पर विचार किया तो स्वतंत्रता का घोषणा-पत्र पूर्ण-

तया जेफर्सन के विचारों पर आधारित था और वह दो वर्ष पूर्व लिखे गये उनके 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' से बहुत कुछ मिलता जुलता था। उसका सरल रूप पुनः इस प्रकार का है--राजनीतिक दर्शनशास्त्र का वक्तव्य, अमरीकी उपनिवेशों पर उनका उपयोग, उन कार्रवाइयों की गणना, जिनके द्वारा उनके अधिकारों पर प्रहार किया गया और अन्तिम परिणाम के रूप में अमरीकी राज्यों और ग्रेट ब्रिटेन के बीच राजनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद।

अमरीकी लोकतंत्र के छात्र के लिए प्रारंभिक परिच्छेद ही पर्याप्त हैं, क्योंकि जार्ज तृतीय की बलात् ग्रहण की कार्रवाइयाँ इतिहास में बीत चुकी थी। इन परिच्छेदों का अमरीकी राष्ट्र के मन पर प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त की छाप डालने में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। उनका अन्तिम रूप इस प्रकार है:—

"मानवीय घटनाओं के दौरान में जब यह आवश्यक हो जाता है कि एक राष्ट्र दूसरे से सम्बन्धित राजनीतिक दलों को भंग कर दे और विश्व की शक्तियो के बीच एक पृथक और समान स्थान ग्रहण करे, जिसके लिए उसे प्रकृति और विधि के विधान द्वारा अधिकार प्राप्त है, तब मानव समाज के जनमत के प्रति शिष्ट सम्मान का तकाजा होता है कि वे अपनी पृथक्ता के कारणों की घोषणा करें। हम इन तथ्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सभी मानवों की सृष्टि समानरूप से हुई है, उन्हें अपने स्रष्टा से कतिपय अविच्छेद्य अधिकार प्राप्त हैं, जिनमें जीवन, स्वाधीनता और सुख-समृद्धि का उपभोग सम्मिलित है। इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए मानव समुदायों में सरकारों की स्थापना होती है, जिन्हें शासितों की स्वीकृति से उचित अधिकार प्राप्त होते हैं। जब कभी किसी प्रकार की सरकार इन उद्देश्यों की विनाशक बन जाती है तब जनता को अधिकार है कि उसे बदल दे या समाप्त कर दे और एक नयी सरकार की स्थापना ऐसे सिद्धान्त के आधार पर करे तथा उसकी शक्तियों को इस प्रकार संगठित करे कि उससे उनकी सुरक्षा और सुख-समृद्धि अधिक सम्भव प्रतीत हो। वास्तव में इस दूरदर्शिता से काम लिया जायेगा कि दीर्घकाल से स्थापित सरकारें छोटे-छोटे अस्थायी कारणों से न बदली जाय। अनुभवों से सिद्ध है कि मानव समाज जिस प्रकार की सरकार का अभ्यस्त बन जाता है, उसको समाप्त कर अपने को सही रास्ते पर लाने के बजाय वह बुराइयों को सहन करने की ओर अधिक प्रवृत्त होता है, जब तक कि वे सह्य होती हैं। किन्तु जब अनिवार्यतः एक ही उद्देश्य के पीछे निरन्तर दुरुपयोगों और

अधिकारापहरणों से यह प्रकट हो जाय कि पूर्ण निरंकुशता के अन्तर्गत उसे स्वत्वहीन बना देने का कुचक्र चल रहा है तो उसका यह अधिकार और कर्त्तव्य है कि वह ऐसी सरकार को उलट दे और अपनी भावी सुरक्षा के लिए नये 'संरक्षकों' की व्यवस्था करे।"

स्वतन्त्रता-घोषणापत्र के पाठक को अब भी जेफर्सन की साहित्यिक शैली के प्रभावशाली गुणों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। जिन तथ्यों को उन्होंने स्वयसिद्ध बनाया है, वे न तो उनके समकालीनों के लिए और न उनकी भावी पीढ़ियों के लिए स्वयंसिद्ध रहे हैं। 'सभी मानव समानरूप से उत्पन्न हुए हैं', इस भावना को न तो उसी समय और न बाद में ही, सिद्धान्ततः या व्यवहारतः स्वीकार किया गया, क्योंकि "सभी मानव" ऐसा वाक्यांश है (जैसा कि राजभक्तों ने संकेत किया था) जो जाति और वर्ण का भेद नहीं जानता। इसी प्रकार जीवन, स्वाधीनता और सम्पत्ति के सिद्धान्त में 'सम्पत्ति' के स्थान पर 'सुख-समृद्धि के उपभोग' को रखकर उस स्पष्ट और प्रत्यक्ष दर्शन को चुनौती दी गयी जिसके आधार पर आजतक मानवसमाज का निर्माण हुआ था। स्वतन्त्रता-घोषणा-पत्र एक क्रांतिकारी अभिलेख था और उसका ऐतिहासिक महत्व वैसा ही है।

जेफर्सन ने अपने जीवन के अन्तिम भाग में ८ मई, १८२५ को हेनरी ली को एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि स्वतंत्रता-घोषणापत्र लिखने में मेरा उद्देश्य नये सिद्धांत ढूंढ़ना नही था और न ऐसे तर्क प्रस्तुत करना था जिनकी पहले कल्पना भी नहीं की गयी थी और न ऐसी बातें कहना था, जो पहले कभी कही नहीं गयी थीं, बल्कि मानव-समाज के समक्ष ऐसे सरल और दृढ़ शब्दों में विषय के सामान्य अर्थ को रखना था, जिससे उसकी स्वीकृति प्राप्त हो सके—उसका उद्देश्य न तो सिद्धान्त की मौलिकता ऐसी भावना थी और न किसी विशेष या पूर्वरचना का अनुकरण करना था, बल्कि अमरीकी विचार-धारा की अभिव्यक्ति थी।

किसी अर्थ में यह सत्य ही था, अन्यथा स्वतंत्रता-घोषणापत्र का वह प्रभाव न हुआ होता जो हुआ। १८ वीं शताब्दि के यूरोपीय दार्शनिकोने सुख की पूर्व धारणा के बावजूद अधिकार के रूप में कभी सुख की कल्पना नहीं की थी। यह पुरानी दुनिया से बहुत दूर की चीज थी; किन्तु नयी दुनिया में सुख का उपभोग कोई मौलिक चीज नहीं थी, यद्यपि इसे एक औपचारिक राजकीय अभिलेख में इतने विश्वास के साथ पहले कभी नहीं रखा गया था। पेन्सीलवानिया के राजनीतिज्ञ जेम्स

विलसन द्वारा १७७० में लिखित और १७७४ में प्रकाशित एक पुस्तिका में इस विचारधारा को स्थान दिया गया था। जेफर्सन का उनसे परिचय था। वर्जीनिया-अधिकार-विधेयक में निहित मानव के अधिकारों में "सुख और सुरक्षा का उपभोग और प्राप्ति भी" सम्मिलित था। यह विधेयक जार्ज मेसन ने तैयार किया था और यह १२ मई, १७७६ को वर्जीनिया प्रतिनिधि-सभा मे स्वीकृत हुआ था। फिर भी गिल्बर्ट चिनार्ड के शब्दों में जेफर्सन ने वास्तवमें इस ढंग से इस सिद्धान्त का प्रचार किया कि उसका न केवल अमरीकी जीवन पर, अपितु उसके निर्माण पर भी गम्भीर प्रभाव पड़ा। संकट की घड़ी में यह जेफर्सन की मौलिक योग्यता थी, जिसके कारण अमरीकी चेतना में प्रवाहित इन तत्वों को लिखित रूप में एक स्थायी रूप प्रदान किया गया, जो पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रहा।

अन्ततोगत्वा, अमरीका पर ही इस घोषणा-पत्र का प्रभाव नहीं पड़ा, यद्यपि एक अमरीकी ने ही उसे लिखा था। अमरीकी स्वतंत्रता के तथ्य ने उस सिद्धान्त को बल प्रदान किया जिसके आधार पर इसका समर्थन किया गया था। जैसा कि कार्ल बेकर ने लिखा है, "पूर्ण सफलता ने घोषणा-पत्र को ऐसा सम्मान और ख्याति प्रदान की, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी और इसने मानव अधिकार के उसके दर्शन की एक ठोस ऐतिहासिक उदाहरण के तौर पर पुष्टि की।"

अध्याय ४

वर्जीनिया का राजनीतिज्ञ

(१७७६—१७८४)

स्वतंत्रता की घोषणा महाद्वीपीय काँग्रेस के कार्य के अन्त की अपेक्षा उसके आरम्भ की सूचक थी। एक स्थायी ढग के संघराज्य की स्थापना करनी थी, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा-संगठन को स्थायी और सुदृढ़ बनाना था और विदेशी राष्ट्रों के साथ संपर्क साधना था। जेफर्सन की ख्याति काफी बढ़ चुकी थी और वे अधिकांश महत्वपूर्ण समितियों में निर्वाचित हो चुके थे। अब यह आशा की जाने लगी कि भावी कार्य में वे महत्वपूर्ण भाग लेंगे। यद्यपि उस वर्ष ग्रीष्म ऋतु में वे काँग्रेस के पुनः प्रतिनिधि चुने गये, फिर भी उन्होंने सेवा करने में असमर्थता व्यक्त की और संघराज्य के संविधान के प्रारम्भिक वादविवाद में

भाग लेने के बाद वे २ सितम्बर को फिलाडेल्फिया से घर के लिए रवाना हो गये। बाद में उसी महीने में काँग्रेस ने फ्रांस के साथ सन्धिवार्ता के लिए भेजे जानेवाले कमिश्नरों में उन्हें भी मनोनीत किया, किन्तु उन्होंने वर्जीनिया छोड़ने से पुनः इन्कार कर दिया।

यह तो स्पष्ट है कि जिन उद्देश्यों से जेफर्सन ने राष्ट्रीय रंगमंच का परित्याग किया, वे अधिकतर व्यक्तिगत और घरेलू थे। उनकी पत्नी का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगड़ता जा रहा था और वे उसे छोड़कर माण्टिसिलो से फिलाडेल्फिया तक लम्बी यात्रा पर जाना पसन्द नहीं करते थे। किन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उनकी यह उदासीनता उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन के अन्त की द्योतक थी। जीवनपर्यंत जेफर्सन ने वर्जीनिया में अपने कार्य को भी कम से कम उतना ही महत्वपूर्ण समझा, जितना उन्होंने एक राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ के रूप में किये गये अपने कार्य को समझा था। वास्तव में उनका राजनीतिक दर्शन तथा छोटी-छोटी इकाइयों के महत्व पर उसका बल, एक प्रबल शासन की अपेक्षा एक स्वस्थ समाज में उनका विश्वास, प्रशासन और कूटनीति के दैनिक भार की अपेक्षा विधानसभा कार्यों के सैद्धांतिक एवं दार्शनिक पक्षों को प्राथमिकता, अपनी सारी विवेकशीलता के बावजूद जेफर्सन में एक बुद्धिजीवी में पायी जानेवाली विशिष्टता एवं कमजोरियाँ आदि बातें काँग्रेस के बजाय उनकी राज्य-प्रतिनिधि-सभा में उनकी स्वाभाविक गतिविधि के रूप में परिलक्षित होती थीं। विलियम्सबर्ग में वर्जीनिया की प्रतिनिधि, सभा में उन्होंने ११ अक्तूबर, १७७६ को एक बार फिर स्थान ग्रहण किया।

वर्जीनिया की संस्थाओं का पुनर्गठन कोई सरल कार्य नहीं था। जेफर्सन के अनुसार लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना एक सही जनतांत्रिक समाज की स्थापना की दिशा में एक कदम मात्र था। यदि कानून वही बने रहे, जिनसे मुट्ठीभर लोगों के हाथ में सम्पत्ति का एकत्रीकरण होता रहे और राजनीतिक सत्ता उन्हीं सम्पत्ति-स्वामियों के हाथ में पड़ी रहे तो, शाही गवर्नर, उसकी परिषद और साम्राज्यीय निषेधाधिकार के हटा दिये जाने का कोई अर्थ नहीं था। स्वतंत्रता एक शब्द मात्र रह जाती यदि राज्य का बौद्धिक जीवन एक प्रचलित चर्च के प्रभुत्व के अन्तर्गत रहने दिया जाता और राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता का उपभोग अन्ततोगत्वा एक ऐसी लोकप्रिय शिक्षा-प्रणाली की स्थापना से ही किया जा सकता है, जिसका उद्देश्य जनता को जनतान्त्रिक संस्थाओ के अनुकूल बनाना हो। दूसरी ओर, उपनिवेश में ऐसे प्रबल तत्व थे,

जिनके लिए मातृभूमि से सम्बन्ध-विच्छेद क्रान्ति का प्रथम नहीं, अन्तिम चरण था।

राज्य के लिए संविधान बनाने के मामले में दलों का संघर्ष पहले ही से प्रकट हो गया था। १५ मई, १७७६ को काँग्रेस ने सिफारिश की थी कि राज्य औपनिवेशिक शासन के प्राचीन तंत्र के स्थान पर नयी शासन-प्रणाली की स्थापना के लिए कार्रवाई करे। दूसरे ही दिन जेफर्सन ने वर्जीनिया-सम्मेलन के अपने विश्वसनीय मित्र थामस नेल्सन को एक पत्र लिखकर सुझाव दिया कि यदि यह मंडल संविधान बनाने का कार्य आगे बढ़ाना चाहता है तो उसे फिलाडेल्फिया के अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलाना चाहिए, क्योंकि यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय देना चाहेगा। उनकी अनुपस्थिति में पता नहीं क्या होगा, इसकी उन्हें बड़ी चिन्ता थी, जिसका आभास उनकी इस आलोचना से मिल जाता है—"सच पूछा जाय तो सारा उद्देश्य मतभेदपूर्ण है, क्योंकि यदि भविष्य में कोई निकृष्ट शासन-तंत्र स्थापित हो, इससे तो अच्छा यही था कि संघर्ष का खतरा और खर्च उठाये बिना उस प्रथम निकृष्ट सरकार को ही स्वीकार कर लिया गया होता, जिसके लिए समुद्रपार से समझौते का प्रस्ताव आया था।"

किन्तु वर्जीनिया-सम्मेलन यह विचार करने को तैयार नहीं था कि किसी व्यक्ति विशेष की उपस्थिति अनिवार्य है। १५ मार्च को ही, जिस दिन उन्होंने स्वतंत्रता की मांग के लिए अपने प्रतिनिधियों को निर्देश दिये थे—सदस्यों ने शासन की एक योजना तथा अधिकार-विधेयक तैयार करने के लिए एक समिति की भी नियुक्ति की। जेफर्सन अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए कृत संकल्प थे और सम्मेलन के निर्णय का सन्देश मिलते ही वे एक विधेयक तैयार करने में जुट गये, जिसका उपयोग एक संविधान के रूप में किया जा सकता था। जब उनके मित्र जार्ज वाइथ, जून के मध्य में, फिलाडेल्फिया से विलियम्सबर्ग के लिए रवाना हुए, उस समय तक विधेयक का प्रारूप उनके लिए तैयार हो गया था।

जेफर्सन की योजना ने लोकतन्त्र की दिशा में बहुत दूर तक काम किया। उन सभी लोगों को मताधिकार प्रदान किया गया, जिनके पास नगरों मे एक चौथाई एकड़ निःशुल्क भूमि थी या देहातो में २५ एकड़ भूमि थी और जिन्होंने दो वर्ष तक अपने सभी कर चुका दिये हों। देहातों और कस्बों को उनकी आबादी के अनुपात के अनुसार प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। वैधानिक

प्रणाली से रेडइंडियनों से भूमि खरीदी जा सकती थी और इस प्रकार से खरीदी गयी भूमि बिना भुगतान के ५० एकड़ प्रति व्यक्ति के हिसाब से वितरित की जा सकती थी। वर्जीनिया ने पश्चिम में जिन जमीनों के लिए दावा किया था, उन्हें अन्त में एक स्वतंत्र और पृथक राज्य में परिवर्तित कर दिया गया। अन्य प्रस्तावों में पैतृक सम्पत्ति के समान विभाजन, धार्मिक सहिष्णुता और उदारता, प्रेस की स्वतन्त्रता और गुलामों के आयात के निषेध के पक्ष में जेफर्सन के विचारों को ही व्यक्त किया गया था।

जब तक सम्मेलन में यह प्रारूप प्रस्तुत किया गया, तब तक उसकी योजनाएं काफी आगे बढ़ चुकी थी। विगत महीनों की घटनाओं से वर्जीनिया में राजनीतिक दलों के गठबन्धन में परिवर्तन हो गया। अधिक अनुदारवादी तत्वों की इच्छा थी कि वर्जीनिया अकेले ही अपनी स्वतन्त्रता की स्थापना करे और अपने संस्थानों का निर्माण करे। लीज के नेतृत्व में क्रान्तिकारी तत्वों ने कांग्रेस की कार्रवाई द्वारा स्वतंत्रता का और कांग्रेस द्वारा ही राज्यों की सरकार के लिए एक ही योजना के निर्माण का समर्थन किया। इस प्रकार उन्होंने आशा की थी कि न्यू इंगलैण्ड के अधिक उग्रवादी लोग वर्जीनिया के मामलों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे, किन्तु जहाँ तक सविधान-निर्माण का प्रश्न था, उन्होंने जार्ज मेसन द्वारा निर्मित अपेक्षाकृत अनुदार प्रारूप को स्वीकार किया और जेफर्सन के मसविदे में से केवल उसकी भूमिका का उपयोग किया गया जिसे मेसन की कृति के आगे रख दिया गया।

जो भी हो, जेफर्सन की अधिकांश अभिलाषा साधारण विधान के रूप में पूरी हुई और जब उन्होंने नयी विधानसभा में स्थान ग्रहण किया तो उनकी इच्छा सुधारों के एक निश्चित कार्यक्रम को तैयार करने की थी। इस मामले में उन्हें वाइथ, मेसन और जेम्स मेडिसन जैसे व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त था, जबकि एडमण्ड, पेण्डल्टन और राबर्ट कार्टर निकोलस जैसे पुराने नेताओं ने उनका तीव्र विरोध किया।

वर्जीनिया जैसे कृषिप्रधान समाज में सबसे महत्वपूर्ण कानून भूमि के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में था। अभी तक वर्जीनिया में सामान्य अंग्रेजी परम्परा ही प्रचलित थी। ज्येष्ठ पुत्र ही सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता था और संपत्ति को बेचने का भी किसी को अधिकार नहीं था। इसलिए जमीन्दारियों को बेचना या विभाजित करना असम्भव था। जैसा कि जेफर्सन के जीवनी-लेखक हेनरी रण्डाल ने १९ वीं शताब्दि में, जबकि लोकतांत्रिक सरगर्मी थी,

लिखा था:—

"राज्य की सभी निम्नतर काउण्टियों में अधिकांश भूमि बडी-बड़ी जमीन्दारियों में विभाजित थी, जिनका उत्तराधिकारी पीढ़ी दर पीढ़ी ज्येष्ठ पुत्र होता था और उसके राजनीतिक एवं सामाजिक परिणाम वही होते थे, जो इंग्लैण्ड तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशों में आजकल दिखायी पडते हैं। राजनीतिक एवं सामाजिक ढांचा वस्तुत: अभिजातीय था, जिसके परिणाम स्वरूप विलासिता और वैभव तथा ऐश्वर्य की तड़क भड़क वाली संस्कृति का विकास हुआ तथा और परिस्थिति के अनुकूल बाह्य आडम्बर तथा कृत्रिम समृद्धि का वातावरण उत्पन्न हो गया था, जो प्राय: किसी बाहरी प्रेक्षक के लिए उच्चतम और सर्वोत्तम राष्ट्रीय विकास का आदर्श प्रतीत होता। किन्तु राजनीति में बहुमत पर इने गिने लोगों का नियंत्रण था, समाज में उन्हीं का दबदबा था, प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त से जो समान रूप से सबका था, उस पर उनका एकाधिकार था और अन्त में राज्य के इतने साधनस्रोतों पर उनका अधिकार था कि उनका वे पूर्ण उपयोग नहीं कर सकते थे और इस प्रकार राज्य के कुल साधनस्रोतों की उत्पादन-शक्ति क्षीण करते थे।

एक महीने के तीव्र वादविवाद के बाद, जिसमें प्रबल और कौशलपूर्ण विरोध का सामना करना पड़ा, जेफर्सन विधानसभा के दोनों सदनों में एक ऐसा विधेयक पारित कराने में सफल हुए, जिसका उद्देश्य सम्पत्ति को विलग न करने के अधिकार को समाप्त करना था। वास्तव में यह उस सामाजिक प्रणाली के आधार पर जबर्दस्त प्रहार था, जिसके वे स्वयं एक प्रमुख अंग थे।

साथ ही साथ जेफर्सन को वर्जीनिया की समूची कानून-संहिता में संशोधनार्थ एक समिति नियुक्त करने की अनुमति मिल गयी और २४ अक्तूबर, १७७६ को इसी उद्देश्य के लिए एक विधेयक पारित हुआ। इस समिति के पांच नियुक्त सदस्यों में पेण्डल्टन भी थे, जिन्होंने प्रस्ताव रखा कि एक पूर्णतया नवीन संहिता तैयार की जाय, किन्तु जेफर्सन ने उसे इस आधार पर ठुकरा दिया कि नयी संहिता से अनन्त काल तक मुकदमेबाजी का सिलसिला जारी रहेगा, जो तब तक बन्द नहीं होगा, जब तक न्यायालय उन कानूनों की अन्तिम व्याख्या नहीं कर देते। वे न्यायाधीशों के अधिकार को बढ़ाना नहीं चाहते थे। सामान्य कानूनी परम्परा तथा अंग्रेजी और औपनिवेशिक कानूनों की वर्तमान व्यवस्था में ही संशोधन करने के लिए समझौता हो गया। वास्तविक कार्य जेफर्सन, वाइथ और पेण्डल्टन के बीच विभाजित कर दिया गया। जेफर्सन

को उपनिवेश की स्थापना के पूर्व का सामान्य कानून और अंग्रेजी कानून सौंपा गया, जो उनके कानूनी एवं ऐतिहासिक पाण्डित्य को प्रमाणित करता है।

संशोधन-कार्य १७७६ के आरम्भ में हाथ में लिया गया और उसी वर्ष के जून में १२६ पृथक विधेयकों के रूप में समिति की रिपोर्ट विधानसभा को दी गयी। इनमें अत्यन्त महत्वपूर्ण संशोधन भी सम्मिलित थे। नये उत्तराधिकार-कानून ने अन्त में ज्येष्ठ पुत्र को ही उत्तराधिकार देने की प्रथा का अन्त कर दिया और वास्तविक जमीन्दारी पर व्यक्तिगत सम्पत्ति का कानून लागू किया गया, जिसके अनुसार सम्पत्ति अन्य भाइयों में समान रूप से वितरित की जानेवाली थी।

बेकारिया के सिद्धान्तों से अनुप्रेरित हो नयी दण्ड-विधि-संहिता तैयार की गयी, जिस के लिए जेफर्सन ही अधिकतर जिम्मेदार थे। इस में विशेषकर राजद्रोह और हत्या के मामलों में मृत्युदण्ड की मर्यादा में अधिकतर मानवीय दृष्टिकोण से विचार किया गया था, यद्यपि उसमें निहित प्रतिशोध का सिद्धान्त आधुनिक दृष्टि से उसे कुछ विकृत कर देता है। जब पहलेपहल यह प्रस्तुत किया गया तो अत्यन्त प्रगतिशील सिद्ध हुआ और मेडिसन के प्रयासों के बावजूद, १७७६ तक जेफर्सन के प्रस्तावों के आधार पर वर्जीनिया के दण्ड-विधान में संशोधन नहीं किया जा सका।

धर्म के प्रश्न पर तीव्रतम संघर्ष हुआ। विरोधियों की बढती हुई संख्या इस पक्ष में थी कि आंग्लिकन चर्च के एकाधिकार को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सम्बन्ध भंग कर दिया जाय। इस मांग को जेफर्सन की पूर्ण व्यक्तिगत और राजनीतिक सहानुभूति प्राप्त की। १७७६ के अक्तूबर और दिसम्बर के बीच विधानमण्डल में जो वादविवाद हुआ, उसमें जेफर्सन को कुछ सफलता मिली, जिसके अनुसार उन सभी कानूनों को रद्द कर दिया गया, जिन के अन्तर्गत किसी धार्मिक सिद्धान्त को मानना या न मानना दण्डनीय अपराध था; गैर-मतालंबियों को गिरजाघरों को दिये जाने वाले दशमांश कर से मुक्त कर दिया गया तथा गिरजाघरों के सदस्यों से भी कर-वसूली अस्थायी रूप से स्थगित कर दी गयी। दूसरी ओर यद्यपि उपनिवेश का बहुमत अभी तक विरोधी हो चुका था, जैसा कि सम्भव था, तो विधानमण्डल में आंग्लिकन विचारधारा के लोगों का अभी भी प्रभुत्व था, जो स्थापित चर्च के लिए कोई न कोई प्रावधान चाहते थे।

१३ जून, १७७६ को धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना सम्बन्धी जेफर्सन का

विधेयक प्रस्तुत किया गया। इस विधेयक में घोषणा की गयी कि धार्मिक स्वतन्त्रता मानवसमाज का प्राकृतिक अधिकार है और इसमें धार्मिक विश्वासों के कारण नागरिक अधिकारों में लोगों के बीच भेद-भाव का निषेध किया गया तथा धार्मिक संस्थानों का समर्थन पूर्णतया उनके अनुयायियों के ऐच्छिक कार्य पर छोड़ दिया। इतनी सुदूरगामी कार्रवाई का प्रचण्ड विरोध किया गया और अधिक से अधिक इतनी ही सफलता मिली कि चर्च की सहायता के लिए लिये जानेवाले करों को समाप्त कर दिया गया। चर्च के समर्थक अभी भी प्रबल थे और १७८४ में अनेक विरोधियों के समर्थन से उन्होंने एक नया अनिवार्य कर-प्रस्ताव प्रस्तुत किया, किन्तु उसमें यह शर्त थी कि कोई भी व्यक्ति यह चुन ले कि उसके नाम कितनी रकम निर्धारित की जाय। जेफर्सन उस समय यूरोप में थे, किन्तु इस प्रस्ताव पर अत्यन्त तीव्र संघर्ष चला और इसमें राज्य के अन्य प्रमुख व्यक्ति भी किसी न किसी पक्ष की ओर से सम्मिलित थे। प्रस्तावित कर के समर्थकों में जार्ज वाशिंगटन, पेट्रिक हेनरी और आर. एच. ली थे; उनके विरुद्ध थे जार्ज मेसन, जेम्स मेडिसन और जार्ज निकोलस। अन्त में मेडिसन ने इतना प्रबल आन्दोलन चलाया कि उस प्रस्ताव को वापस ले लिया गया और १७८६ में जेफर्सन का विधेयक साधारण संशोधन के साथ कानून बन गया।

धार्मिक स्वतन्त्रता के समान ही साधारण जनता की शिक्षा भी महत्वपूर्ण थी और जेफर्सन के अनुसार तो राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ शिक्षा का अटूट सम्बन्ध है। इसी उद्देश्य से, उन्होंने संशोधित संहिता के अंगस्वरूप तीन विधेयक तैयार किये; ज्ञान के अधिक और सामान्य प्रसार के लिए विधेयक; अपने ही कालेज विलियम और मेरी के संविधान में संशोधन के लिए विधेयक, ताकि उसकी धार्मिक पक्षपात की भावना को समाप्त किया जा सके, और पाठ्य-क्रम को आधुनिक आधार पर तैयार करने और एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना सम्बन्धी विधेयक।

इन तीनों विधेयकों में से पहला सब से अधिक महत्वपूर्ण था; क्योंकि इसमें गुलामों को छोड़कर सभी बालक-बालिकाओं के लिए पूर्ण निःशुल्क प्राथ-मिक शिक्षा-प्रणाली का प्रस्ताव था, उसके बाद ग्राम-स्कूलों की व्यवस्था थी, जिनमें प्राथमिक शालाओं के छात्र एक छात्रवृत्ति-प्रणाली के द्वारा भर्ती होने के अधिकारी थे और अन्त में इनमें से अत्यन्त होनहार छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था थी, ताकि वे कालेज में भर्ती हो सकें।

विधेयक की भाषा और उसके प्रावधानों के अध्ययन से प्रकट होता है कि यह आधुनिक नीति की इस भावना से बहुत दूर था कि शिक्षा एक ऐसा अधिकार है, जिसे प्रत्येक बच्चा अपनी प्राकृतिक बुद्धि के अनुसार प्राप्त करने का अधिकारी है। वास्तव में जेफर्सन सामूहिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, बल्कि चुने-चुनाये लोगों की शिक्षा के पक्ष में थे। उनका कहना था कि समाज निर्धन माता-पिता के प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। इसमें नागरिक और राजनीतिक भावना अवश्य है, किन्तु समतावादी भावना नहीं है।

जेफर्सन का सिद्धांत था कि अत्याचार से रक्षा का सर्वोत्तम मार्ग यह है कि यथासम्भव साधारण जनता के मन को ज्ञान-ज्योति से प्रकाशित किया जाय और विशेषकर उसे ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान कराया जाय। यह सिद्धांत स्वयं विधेयक की एक धारा में पूर्णरूप से निहित है, जिसमें उन्होंने लिखा है:—

"सार्वजनिक सुख-वृद्धि के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जिन्हें प्रकृति ने प्रतिभा और गुण प्रदान किये हैं, उन्हें उदार शिक्षा द्वारा इस योग्य बना दिया जाय कि वे अपने सह-नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं की पवित्र थाती की रक्षा कर सकें और उन्हें इस कार्य के लिए उनकी संपत्ति, प्रतिष्ठा या अन्य दैवी स्थिति या परिस्थिति का ध्यान दिये बिना बुलाना चाहिए; किन्तु बहुतों की दरिद्रता उन्हें अपने उन बच्चों को अपने खर्च से पढ़ाने में असमर्थ बना देती है, जिनकी रचना प्रकृति ने सुन्दर ढंग से की है और जो जनता के लिए उपयोगी साधन बन सकते हैं; सबका सुख निर्बल और धूर्त लोगों के हाथ में हो, इससे तो अच्छा यही होगा कि सबके व्यय पर उन बच्चों को ही शिक्षित करने का प्रयास किया जाय।

जेफर्सन और फ्रांसीसी दार्शनिक पियेरसैमुएल डुपोण्टडि नेमूर्स के बीच पत्र-व्यवहार के सम्पादन में प्रोफेसर चिनार्ड ने बताया है कि इसी प्रकार के विचार फ्रांस में "मेमायर्स सर लेस म्यूनिसिपैलिटीज़' नामक पुस्तक में १७७५ में व्यक्त किये गये थे, जिस पर, यद्यपि टरगोट के हस्ताक्षर थे, तथापि वह प्रायः पूर्णरूप से डुपोण्ट की कृति थी, किन्तु जेफर्सन के ये स्वतंत्र विचार थे और जब वे पेरिस में ठहरे थे, उस समय वहां इनका प्रचार हुआ था और चिनार्ड के सुझावों के अनुसार इन्हीं के आधारों पर फ्रांसीसी कार्रवाई को प्रोत्साहन मिला। उनके विधेयक का सारांश फ्रांसीसी शिक्षा-प्रणाली, १७९१ और १७९६ के बीच फ्रांसीसी विधानमण्डलों में प्रस्तुत किये गये प्रस्तावों में पाया गया। जिसका पूर्ण

विकास तृतीय गणतंत्र के अन्तर्गत हुआ, इस प्रकार जेफर्सन-सिद्धान्त के आधार का दावा कर सकती है। इसमें संस्थानों और छात्रवृत्तियों की क्रमबद्धता भी प्राय: उसी ढंग की है।

किन्तु जेफर्सन के शैक्षणिक विचारों के प्रति फ्रांसीसी जितने आकृष्ट थे, उतने स्वयं उनके वर्जीनियावासी नहीं थे। यह योजना इतनी व्ययसाध्य थी, कि जनता उसे स्वीकार नहीं कर सकती थी, क्योंकि उसीको इसका भार वहन करना था। १७९६ में जब एक प्राथमिक शिक्षा विधेयक स्वीकृत हुआ तो काउण्टियों को इसे कार्यान्वित करने या न करने का अधिकार दिया गया और अन्त में एक काउण्टी ने भी उसे कार्यान्वित नही किया। दो अन्य विधेयक पारित नहीं हुए। जेफर्सन की यह आशा कभी नहीं पूरी हुई कि शैक्षणिक क्षेत्र में वर्जीनिया सबका नेतृत्व करेगा और इस दिशा में कदम बढ़ाने का अवसर दूसरों को मिला। जेफर्सन के दूरदर्शी विचारों और कल्पनाशील सामाजिक प्रगतिशील सिद्धान्तों तथा वर्जीनिया के नागरिकों की रूढ़िप्रियता के बीच सामञ्जस्य का इतना भारी अभाव था कि निग्रो-समस्या के मूल प्रश्न संबंधी कानून को संशोधित कराने में भी वे असफल रहे। उनकी अपनी धारणा यह थी कि एक निश्चित तिथि के बाद पैदा होने वाले गुलामों को मुक्त कर देना चाहिए और मुक्त गुलामों को संयुक्तराज्य अमरीकी सीमा के बाहर कही बसा देना चाहिए, किन्तु इसमें उन्हें पर्याप्त समर्थन नहीं प्राप्त हुआ।

जेफर्सन की वैधानिक गतिविधि के इस विवरण में ऐसी समस्याओं को छोड़ दिया गया है, जो युद्ध के सम्बन्ध में निर्णय के लिए विधानसभा में प्रस्तुत की गयी; उदाहरणार्थ, ब्रिटिश प्रजा के ऋणों के भुगतान का प्रश्न था, जिस पर जेफर्सन ने एक उदार दृष्टिकोण अपनाया। सच पूछा जाय तो उनका रुख और बाद में मेडिसन, मेसन और लीज का भी रुख इस सुझाव का खण्डन करने का था कि वर्जीनिया के बड़े-बड़े किसानों ने ब्रिटिश व्यापारियों के ऋणों से अपने को मुक्त करने के लिए ही क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लिया। इस धारणा का अंतिम रूप से खंडन पेट्रिक हेनरी और उनके क्रान्तिकारी अनुयायियों के कारण हुआ।

जेफर्सन के जीवनचरित्र लेखकों की यह सोचने की प्रवृत्ति रही है कि वर्जीनिया में उनके घरेलू नेतृत्व की अवधि में उनके उच्च लोकतांत्रिक उद्देश्य निस्सन्देह प्रशंता के पात्र रहे। एस. के. पडोवर ने लिखा है कि "वर्जीनिया को एक जनतांत्रिक राज्य में बदलने के लिए ९ वर्ष तक संघर्ष करना पड़ा।.......... यह

एक रक्तहीन क्रान्ति थी, जिसे एक युवक दार्शनिक जमींदार ने, जिसकी दृष्टि में एक स्वतंत्र भूमि के स्वतंत्र निवासियों की कल्पना थी,-सावधानीसे इसे आयोजित किया और शान्तिपूर्वक कार्यान्वित किया।" किन्तु यह सन्देहपूर्वक कहा जा सकता है कि जेफर्सन के अंतिम दिनों का वर्जीनिया तथा उनकी मृत्युके बाद के दशकोंका वर्जीनिया उनकी कल्पना के लोकतांत्रिक कामनवेल्थ से बहुत दूर था और वहाँ जो कुछ भी परिवर्तन हुए उनका अधिकतर कारण यह था कि भूमि की उत्पादन-क्षमता बड़ी तेजी से घट रही थी और परिणाम स्वरूप जमीन्दार वर्ग दरिद्र होता जा रहा था। वास्तव में जेफर्सन बिना समुचित ज्ञान प्रसार के सत्ता-हस्तान्तरण की कभी सराहना भी नही करते। अमरीका के प्रथम पाँच राष्ट्राध्यक्षोंमें चार वर्जीनिया के थे, किन्तु मनरो के बाद, जो जेफर्सन वंश के उत्तराधिकार में अन्तिम थे, राष्ट्रीय मामलों में इस राज्य का प्रभाव बहुत ही घट गया।

वर्जीनिया सम्बधी जेफर्सन के कार्यों के संक्षिप्त विवरण का उल्लेख उनके अमरीकी प्रेसिडेण्ट-काल के इतिहास में निहित है जो उनके पूर्वाधिकारी के प्रतिभाशाली प्रपौत्र ने लिखा है। हेनरी एडम्स के मतानुसार जेफर्सन और मेडिसन का यह विश्वास कि जिस धार्मिक स्वतंत्रता के कारण पेन्सीलवानिया में इतने सफल कार्य हो सके, वह वर्जीनिया में भी इतनी ही सफल होगी, गलत था। राज्य के समर्थन से वंचित होते ही चर्च का सत्यानाश हो गया और उसके परिणामस्वरूप अधिक लाभ नहीं हुआ, क्योंकि जेफर्सन धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर आधारित एक वैकल्पिक संस्कृति के गुणों को अपने नागरिकों को स्वीकार करने और समझने के लिए तैयार नही कर सके। एडम्स ने लिखा, "जेफर्सन के सुधारों ने कुलीन वर्ग को पंगु और दरिद्र बना दिया, किन्तु उनसे जनता का शायद ही कुछ लाभ हुआ और गुलामों को तो कुछ भी लाभ नहीं हुआ।"

वर्जीनिया के भविष्य का प्रश्न वास्तव में पश्चिमी भूमि के निबटारे के प्रश्न से अलग नही किया जा सकता था और इस समस्या के प्रति जेफर्सन का रुख बिल्कुल सन्तोषजनक ढंग से कभी समझाया नहीं गया। जेफर्सन का अपने जीवन के प्रारम्भ से ही पश्चिमी विस्तारवाद से सम्बन्ध था, क्योंकि १७४६ में स्थापित लायल कम्पनी में उन्हें अपने पिता के शेयरों का उत्तराधिकार मिला था। सम्भवतः उससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके एक अभिभावक डा० थामस वाकर फ्रांसीसी और इंडियन युद्ध के बीच तथा क्रान्ति के अन्त में वर्जीनिया में भूमि-व्यापार-हितों के समस्त इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे।

यह सोचना निस्सन्देह भूल होगी कि जेफर्सन ने व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा से पश्चिमी भूमि में अभिरुचि प्रदर्शित की। उनका समूचा सामाजिक दर्शन एक सर्वदा खुली सीमा की कल्पना पर आधारित था। परिणाम स्वरूप इस समस्या के प्रति उनकी नीति, अन्य बड़े बड़े जमीन्दारों की अपेक्षा जिनका किसी न किसी भूमि-कम्पनी में व्यक्तिगत स्वार्थ था, अधिक राजनीतिक और अधिक दृढ़ थी। जैसा कि हमने देखा है, वर्जीनिया के लिए उनके प्रस्तावित विधान में एक विशेषता यह भी थी कि जिन जमीनों का बन्दोबस्त नहीं हुआ था, उन्हें छोटी छोटी इकाइयों में विभाजित करने की व्यवस्था थी। क्रान्तिकारी युद्ध से प्रवासियों को पश्चिम की ओर, विशेषकर केण्टकी की ओर बढ़ने से किसी प्रकार रोका नहीं जा सका और विभिन्न भूमि कम्पनियों के एजेण्ट इस बात के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील थे कि इन शक्तियों के प्रवाह को संघर्ष के मुख्य क्षेत्र से विमुख कर भीतर की ओर उन्मुख किया जाय जहाँ इन्डियनों को पीछे हटा कर नये क्षेत्र खोले जा सकते हैं। इन्ही परस्पर विरोधी स्वार्थों के कारण संघराज्य के संविधान की पुष्टि में काफी विलम्ब हुआ, क्योंकि जिन राज्यों का पश्चिमी भूमि पर कोई दावा नहीं था, वे चाहते थे कि सारी पश्चिमी भूमि को कांग्रेस में निहित कर दिया जाय। १७८१ तक इस संकट का निवारण नहीं हो सका।

एडम्स-ली गुट के अपने अन्य मित्रों की भाँति जेफर्सन ने १७७८ के पतझड़ में पिट्सबर्ग से काँग्रेस द्वारा भेजे गये साहसिक अभियानों का समर्थन नहीं किया, किन्तु उन्होंने वर्जीनिया से अधिकृत जार्ज राजर्स क्लार्क का अभियान-दल भेजने में मेसन और वाइथ के साथ पेट्रिक हेनरी का समर्थन किया—यद्यपि स्वयं वे विभिन्न प्रकार के भूमि-व्यापार में अनिश्चित रूप से व्यस्त रहे। इस दल ने ओहिओ और मिस्सूरी के बीच उत्तर-पश्चिम में प्राचीन कसकास्किआ और विन्सेनीस की ब्रिटिश चौकियों पर कब्जा कर लिया।

वर्जीनिया के क्रान्तिकारी स्वभावतः विस्तारवादी थे, यद्यपि सीमावासियों के प्रति उनकी प्रबल सहानुभूति नहीं थी। जून, १७७९ में जेफर्सन के गवर्नर चुने जाने पर राज्य के मामलों में उनकी विजय का डंका बज गया। गवर्नर की हैसियत से जेफर्सन ने पेट्रिक हेनरी की नीति जारी रखी और १७७९ के पतझड में ओहिओ के मुहाने पर एक चौकी स्थापित की गयी, जिसका नाम फोर्ट जेफर्सन रखा गया। राज्य के पश्चिमी क्षेत्रों में भूमि-बंदोबस्त के लिए पारित अन्तिम कानून अत्यन्त महत्वपूर्ण था। यद्यपि २२ जून, १७७९ का कानून,

जिसके अनुसार एक भूमि-कार्यालय स्थापित किया गया, जार्ज मेसन ने प्रस्तुत किया था, तथापि इसमें सन्देह नही कि उसके बनाने में जेफर्सन का हाथ था। किन्तु, इरादा चाहे जो रहा हो, इसके परिणामस्वरूप छोटे-छोटे भूस्वामियों की संख्या बढ़ाने में किसी भी प्रकार सुविधा नही हुई, जैसा कि तीन वर्ष पूर्व की उनकी योजना थी। इस प्रश्न पर प्रामाणिक व्यक्ति माने जानेवाले प्रोफेसर टी. पी. एबर्नेथी के शब्दों में, "१७७९ का भूमि-कार्यालय कानून एक भयकर भूल थी।...यह एक ऐतिहासिक विडम्बना थी कि जनतन्त्र के जनक जेफर्सन ने एक ऐसे कानून के बनाने में सहायता की, जिसके द्वारा वर्जीनिया में लोकतन्त्र की उसी क्षण हत्या हो गयी, जबकि उसका जन्म होनेवाला था। परिणामस्वरूप कुछ ही वर्षों में राबर्ट मारिस ने वर्जीनिया के पश्चिमी भाग में पन्द्रह लाख एकड़ भूमि पर और अलेक्जेण्डर वालकाट ने दस लाख एकड़ भूमि पर कब्जा कर लिया। शेष भूमि में से अधिकांश अन्य अनुपस्थित व्यापारियों के हाथ में चली गयी, जिन्होंने कुछ मामलों में प्रति सौ एकड़ पर लगभग ५० सेंट मूल्य चुकता किया और वह भी ऐसी मुद्रा में चुकता किया जिसका मूल्य घट चुका था। इस प्रकार काउण्टी का विकास अवरुद्ध हो गया, स्थानीय जनता उन लोगों की सम्पत्ति की रक्षा के लिए विवश हुई, जिन्होंने इसका समर्थन नहीं किया और अधिकांश जनता का शोषण मुट्ठीभर लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए करने लगे।"

जेफर्सन के जीवन-काल में उनकी इतनी भर्त्सना कभी नहीं हुई, जितनी वर्जीनिया की गवर्नरी के समय की गयी। यह सोचना कठिन है कि राज्य के इतिहास के उस विशिष्ट काल में कोई भी व्यक्ति जब तक उसमें असाधारण प्रशासनिक एवं सैनिक गुण न हो, उस पद पर सफल हो सकता था। जेफर्सन वाशिंगटन नहीं थे।

अमरीका की साधारण स्थिति संकटापन्न थी। युद्धकाल में अनेक क्षेत्रों में उसके उद्देश्य के प्रति उदासीनता ही थी। बहुत ही कम राज्य ऐसे थे जो अपनी सीमाओ के बाहर युद्ध के लिए जन-धन देने को तैयार थे, जिसकी युद्ध-संचालन और विजय प्राप्ति के लिए आवश्यकता थी। १७७६ के बसन्त में यदि बोस्टन में विजय हुई तो उसी वर्ष के अन्त में न्यूयार्क मे वाशिंगटन की पराजय हुई। १७७७ मे ब्रिटेन ने कनाडा से आगे बढ़ कर न्यूयार्क स्थित सेनाओं से सम्पर्क स्थापित करने और इस प्रकार उपनिवेशों को दो भागों में विभाजित करने का प्रयास किया, किन्तु बरगोयन की पराजय और सरटोगा के आत्मसमर्पण ने

उसके प्रयासों को विफल बना दिया; किन्तु जर्मनटाउन में वाशिंगटन की पराजय के बाद फिलाडेल्फिया का पतन हो गया और वैली फोर्ज में शस्त्र व साधनहीन महाद्वीपी सेना को जाड़े की भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सरटोगा की विजय नये गणतंत्र के लिए एक महान राजनीतिक विजय के रूप में काफी निर्णायक सिद्ध हुई क्योंकि ६ फरवरी, १७७८ को फ्रांस के साथ सन्धि हो गयी। इसी कारण इस संकटकाल में लार्ड नार्थ द्वारा प्रस्तुत समझौते का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। यह प्रस्ताव ऐसा था कि पूर्णरूप से कार्यान्वित होने पर साम्राज्य का उसी आधार पर सुधार संभव था, जिसका जेफर्सन ने अपने 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' में जोरदार समर्थन किया था। फिर भी, यद्यपि फ्रांस तत्काल युद्ध में सम्मिलित हो गया और स्पेन जून, १७७९ में सम्मिलित हुआ, तथापि इसका सैनिक लाभ बहुत धीरे धीरे प्राप्त हुआ। १७७८-७९ के जाड़े तक वाशिङ्गटन का उत्साह शिथिल हो चुका था, कांग्रेस को राज्यों से आवश्यक आर्थिक सहायता नहीं मिल रही थी और न उसे यह सहायता प्राप्त करने का अधिकार ही था। वह अपनी सेनाओं के पालनपोषण के लिए कागजी मुद्रा पर अवलम्बित थी, जिसका तेजी से मूल्य ह्रास हो रहा था। फ्रांसीसी सन्धि के कारण अमरीका के अन्तिम युद्धोद्देश्य के सम्बन्ध में एक नयी जटिलता उत्पन्न हो गयी—यह एक ऐसा प्रश्न था जिस पर स्वयं काँग्रेस में गहरा मतभेद था, विशेषकर अमरीका की भावी सीमाओं के सम्बन्ध में।

कनाडा को युद्ध का प्रमुख अड्डा बनाने की ब्रिटिश योजना विफल हो गयी। इसलिए अंग्रेजों ने युद्ध का भार दक्षिण की ओर कर दिया। उन्होंने जार्जिया पर कब्जा करने और उत्तर की ओर बढ़ने की योजना बनायी। १७७८ में उन्होंने सवन्नाह पर अधिकार कर लिया और १७७९ में वे जार्जिया के भीतरी भाग में और दक्षिणी कारोलिना की ओर बढ़े। जेफर्सन के गवर्नर चुने जाने के एक महीने पहले अंग्रेजों ने समुद्र की ओर से वर्जीनिया पर प्रथम विशाल आक्रमण किया और काफी क्षति पहुँचायी। जेफर्सन को राज्यका खजाना काँग्रेस की तरह ही खाली मिला। वाशिंगटन ने आग्रह किया कि उसके साधन-स्रोतों का उपयोग स्थानीय प्रतिरक्षा के बजाय मध्यवर्ती राज्यों और कारोलिना में संघर्षरत मुख्य सेनाओं की सहायता में किया जाय।

वाशिंगटन के साथ जेफर्सन के पत्रव्यवहार से प्रकट होता है कि वे वर्जीनिया के ही दायित्व को पूरा करने के लिए कठोर प्रयास कर रहे थे, यद्यपि एक ओर अंग्रेजों की विनाशकारी कारवाई चल रही थी, समुद्र में उनके

सशस्त्र निजी जलपोत तैनात थे और सीमा पर इंडियनों का खतरा बढ़ रहा था। नये राज्य की राजधानी रिचमोण्ड और अन्य राज्यों के बीच परिवहन के अभाव के परिणामस्वरूप प्रशासनिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गयी थी। पूर्णतया नौकानयन पर अवलम्बित राज्य में गाड़ियों के अभाव से भी कठिनाइयां उत्पन्न हो गयी थीं। वर्जीनिया ने अपने गवर्नर और काँग्रेस की माँग पर न तो जन-धन की सहायता की और न रसद आदि की पूर्ति की।

१७८० में अमरीकियों पर और भी विपत्ति आयी। मई में चार्ल्सटन पर ब्रिटेन ने अधिकार कर लिया और समूचे दक्षिणी कारोलिना को रौंद डाला। वर्ष के अन्तिम दिनों में चेसापीक खाड़ी में एक ब्रिटिश जहाजी बेड़ा पहुँच गया। ५ जनवरी, १७८१ को रिचमोण्ड पर कब्जा कर लिया गया। जेफर्सन को जान बचाकर शीघ्र ही भागना पड़ा। यद्यपि अंग्रेजों का अधिकार दो ही दिनों तक कायम रहा, किन्तु यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, जिससे जेफर्सन के राजनीतिक विरोधियों ने काफी लाभ उठाया। वसन्त ॠतु में, जब वाशिङ्गटन अभी भी न्यूयार्क पर पूरी विजय प्राप्त करने की फिराक में थे, वर्जीनिया पूर्ण आक्रमण की अग्निपरीक्षा में झोंक दिया गया। लफायट के नेतृत्व में कुछ संयुक्तराष्ट्र अमरीकी सैनिक टुकडियाँ भेजी गयीं। जेफर्सन की पहले पहल लफायट से मुलाकात हुई, किन्तु जेफर्सन को पुन: रिचमोण्ड छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और चारलोटेसविले वापस जाना पड़ा, जो सरकार का प्रधान कार्यालय बन गया था। जून में एक ब्रिटिश सैनिक दस्ता चारलोट्सविले तक पहुँच गया और मोण्टिसिलो में जेफर्सन पकड़े जाने से बाल-बाल बचे।

७ जून को विधानसभा की बैठक स्टाण्टन में हुई, यह और पीछे हटने के बाद नयी राजधानी बनी थी। इस बैठक में जेफर्सन के खर्चे की तीव्र आलोचना हुई। विरोधियों ने पुन: एक आयोजना रखी, जो १७७९ के अन्त में पहली बार सुझायी गयी थी। उसका उद्देश्य था पूर्ण सैनिक एवं असैनिक अधिकारों को किसी अधिनायक के सिपुर्द करना। पहले की भाँति इस बार भी स्पष्ट था कि वर्जीनियन जनतंत्र के लोकप्रिय नायक पेट्रिक हेनरी को अधिनायक बनाया जाय। जेफर्सन ने तीसरे वर्ष चुनाव न लड़ने का पहले ही से संकल्प कर लिया था, यद्यपि संविधान द्वारा वे चुनाव लड़ने के अधिकारी थे। विरोधियों को इसका पता नहीं था और उन्होंने जेफर्सन के व्यवहार के विरुद्ध अनेक औपचारिक आरोप लगाये, जिससे यह आशा की गयी थी कि उन्हें पदच्युत कर

दिया जायगा, किन्तु यह प्रमाण मिलने पर कि अधिनायकवाद की योजना का सामान्यतः विरोध किया जायगा, उसे त्याग दिया गया। इस पर जेफर्सन ने चुनाव से हट जाने की घोषणा की और उन्हीं की स्वीकृति से जनरल नेल्सन उनके स्थान पर चुने गये।

अब सैनिक पासा पलट चुका था; दक्षिण में अंग्रेज चार्ल्सटन और सवन्नाह से भगा दिये गये थे; और उत्तर की ओर वाशिङ्गटन और फ्रासीसी एडमिरल डिग्रास ने मिलकर ब्रिटिश सेनापति कार्नवालिस को अपनी रक्षा के लिए विवश किया और अन्त में १६ अक्तूबर, १७८१ को यार्कटाउन में उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा। फ्रांसीसी स्थल और जलसेना की सहायता तथा वाशिङ्गटन का कुशल सैन्य-संचालन निर्णायिक सिद्ध हुआ। इस बीच, सितम्बर में जेफर्सन ने वर्जीनिया विधान-सभा के लिए पुनः खड़ा होने का निर्णय किया ताकि वे गवर्नर की हैसियत से अपने आचरण के विरुद्ध लगाये गये आरोपों का उत्तर दे सकें; किन्तु विरोधियों ने इन पर जोर नहीं दिया और १९ दिसम्बर को विधानसभा ने औपचारिक रूप से जेफर्सन को आरोपमुक्त कर दिया और उनकी सार्वजनिक सेवाओं की पूर्ण सराहना की।

जेफर्सन के लिए यह पर्याप्त न था। वे बड़े ही भावुक पुरुष थे और उन में कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं थी। वे उन लोगों का मत प्राप्त करने का कभी प्रयास नहीं करते थे, जिन्होने उनके विचार से उनकी बिलकुल अनुचित आलोचना की। उन्होंने राज्य के प्रतिनिधि के रूप में फिलाडेल्फिया वापस जाने से इन्कार कर दिया और उस पंच सदस्यीय प्रतिनिधि-मण्डल में रखे जाने का प्रस्ताव ठुकरा दिया, जिसे कांग्रेस यूरोप में महत्वपूर्ण वार्ता का कार्य सौंपना चाहती थी, यह कार्य युद्ध का अन्त निकट होने से आवश्यक हो गया था।

एक बार अपनी सफाई दे देने के बाद जेफसन किसी प्राचीन रोमन की भाँति सार्वजनिक जीवन से अवकाश ग्रहण कर एक सामान्य नागरिक की तरह निजी जीवन व्यतीत करना चाहते थे। १६ सितम्बर को एडमण्ड रण्डोल्फ को उन्होंने लिखा, "उस प्रकार की हर चीज से मैंने अन्तिम छुटकारा प्राप्त कर लिया है। अब मैं अपने फार्म, अपने परिवार और अपनी पुस्तकों में पहुँच गया हूँ। मेरी मान्यता है कि इनसे कोई चीज मुझे कभी अलग नहीं कर सकती।"

जेफर्सन के राजनीतिक अवकाश ग्रहण का एक दूसरा कारण उनकी पत्नी की अस्वस्थता थी, जिसके कारण वे पुनः चिन्तित रहने लगे थे। ६ सितम्बर १७८२ को उनकी पत्नी का देहान्त भी हो गया। अपने पीछे वे दो लडकियाँ

छोड़ गयीं, एक दस वर्ष की और दूसरी चार वर्ष की। एक पुत्र भी था, जो केवल दो वर्ष तक जीवित रहा। कभी कभी जेफर्सन का स्वास्थ्य भी काफी बिगड़ जाता था, किन्तु मेडिसन और जेम्स मेनरो जैसे उनके घनिष्ठ सहयोगियों को उनके अवकाश-ग्रहण का कोई सार्वजनिक अथवा निजी कारण पर्याप्त नहीं प्रतीत होता था। आधुनिक जीवनी-लेखकों ने भी उन्हीं के निर्णय को प्रतिध्वनित किया है। तर्क यह दिया जाता है कि एक ३८ वर्षीय पुरुष को, जो राज्य के मामलों में पहले ही अपना स्थान ग्रहण कर चुका है, और सेवाओं का अवसर होते हुए उसे छोड़ने का कोई अधिकार नहीं था।

जेफर्सन ने २० मई, १७८२ को मनरो को एक लम्बा पत्र लिख कर अपनी निर्दोषिता प्रमाणित की थी, जिससे यह अर्थ लगाया गया है कि इन सब के पीछे उनका आहत अहंकार था। फिर भी, जेफर्सन का यह तर्क पूर्ण प्रासंगिक था कि राज्य अपने सभी सदस्यों से समान सेवा ले सकता है, किन्तु किसी से स्थायी सेवा नहीं ले सकता। "यदि हम किसी हद तक दूसरों के लिए बनाये गये हैं, तो हम उस से भी अधिक अपने लिए बनाये गये हैं। यह मान लेना भावना के प्रतिकूल है और सचमुच उपहासास्पद भी है कि मनुष्य का अपने में उतना अधिकार नहीं है, जितना अपने किसी पड़ोसी या सब पड़ोसियों में है।" "हम अपने लिए बनाये गये हैं।"—यह वास्तव में प्राकृतिक अधिकार की कल्पना का मूल भूत आधार है और इसीलिए जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्तों का भी यही आधार है। अपने ही कारोबार की व्यवस्था करना, परिवार का पालन-पोषण करना, बौद्धिक रुचियों के अनुकूल कार्य करना, ये सभी अपना समय व्यतीत करने के वैसे ही उत्कृष्ट मार्ग हैं, जैसा कि कोई सार्वजनिक कार्य। कोई व्यक्ति अनिवार्य नहीं है और न किसी को यह सोचना ही चाहिये कि वह अनिवार्य है। कम से कम इसमें जेफर्सन जीवन पर्यन्त दृढ़ रहे। यदि इसी विचार के और भी अधिक लोग हो जायं तो सार्वजनिक जीवन और भी स्वस्थ हो जायेगा। जेफर्सन को इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि सत्ता मनुष्य को भ्रष्ट बना देती है और वे कभी भी भ्रष्ट नहीं हुए।

जेफर्सन की सेवानिवृत्ति के आलोचकों को प्रायः इस विचार से आत्मसान्त्वना मिलती है कि इस अवकाश-काल में ही जेफर्सन को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'नोट्स आन वर्जीनिया' लिखने का अवसर मिला। अपने राज्य की स्थिति और साधन-स्रोतों के बारे में एक प्रश्नावली के उत्तर में यह पुस्तक तैयार की गयी। यह प्रश्नावली फिलाडेल्फिया स्थित फ्रांसीसी दूतावास के

सचिव एम. बार्बे डिमार्बोइस ने १७८१ की वसन्त ऋतु में भेजी थी। यह पुस्तक उसी वर्ष तैयार की गयी और १७८२–८३ के जाड़े में उस में संशोधन किया गया; १७८४ के पतझड़ में पेरिस में जेफर्सन के पहुंचने के बाद ही प्रथम बार यह निजी वितरण के लिए मुद्रित की गयी। १७८६ में उसका फ्रांसीसी अनुवाद हुआ, जो बहुत ही खराब था और जेफर्सन को विवश होकर मूल भाषा में ही उसे प्रकाशित कराना पड़ा और दूसरे ही वर्ष यह प्रकाशित हुई।

इस प्रकार 'नोट्स' प्रकाशन के लिए नहीं लिखे गये थे। गुलामी और वर्जीनिया का संविधान जैसे विवादास्पद विषयों का जितनी स्वतंत्रता से उन में उल्लेख किया गया था, उतनी स्वतंत्रता सम्भवत: एक प्रकाशित कृति में न दिखायी जाती। दूसरी ओर, पुस्तक का रूप फ्रांसीसी दूतावास के प्रश्नों के अनुसार है और सम्भवत: जेफर्सन ने अपने राज्य और उसकी समस्याओं को जिस ढंग से विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया होता, उस ढंग से इस में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

जिन परिस्थितियों में 'नोट्स आन वर्जीनिया' लिखा गया, उन पर पूर्ण ध्यान देने पर यह पुस्तक जेफर्सन–सिद्धान्त का प्रमुख स्रोत बन जाती है और हेनरी एडम्स के शब्दों में, यह 'वर्जीनिया के सब से कर्मठ और आशावादी व्यक्ति' की बहुमुखी प्रतिभा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसे पूर्ण रूप मे समझने के लिए किसी भी व्यक्ति को पुस्तक के वैज्ञानिक पक्ष पर अधिक ध्यान देना होगा और नयी दुनिया के पाशविक जीवन के पतन सम्बन्धी बफन तथा अन्य यूरोपीय प्रकृतिवादियों के सिद्धान्तों का जेफर्सन ने जिस बुद्धिमानी और व्यंग्यात्मक ढंग से खण्डन किया था, उस पर भी विचार करना होगा।

अमरीकी जनतंत्र का अध्ययन करने वाले के लिए महत्वपूर्ण परिच्छेद वे हैं, जिन में जेफर्सन ने अपने सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों को व्यक्त किये है। ये परिच्छेद विशेष रुचिकर हैं, क्योंकि उनकी यूरोप-यात्रा के पूर्व उनकी कृति समाप्त हो चुकी थी और उसे क्रान्तिकारी फ्रांस के पहले के बौद्धिक जगत् के साथ उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क का परिणाम नहीं माना जा सकता।

यह तो स्पष्ट है कि जिस समय जेफर्सन ने "नोट्स आन वर्जीनिया" लिखा, उस समय उनका दृढ विश्वास था कि उदार लोकतंत्र एक आदर्श है, जो भू-सम्पत्ति के व्यापक विस्तार पर आधारित समाज में प्राप्त किया जा सकता है और जिस में व्यापारिक अथवा औद्योगिक हितों की अपेक्षा कृषक हितों का ही

प्रभुत्व रहेगा। उदार लोकतंत्र में व्यक्तिगत अधिकारों को सरकारी दमन से कोई भय नहीं रहेगा और उस में निजी तथा सार्वजनिक नैतिकता के बीच समाञ्जस्य स्थापित होगा। उनके द्वारा अनुप्राणित वैधानिक कार्यों का परिणाम चाहे यह न रहा हो, परन्तु उद्देश्य यही था और उसका सैद्धान्तिक औचित्य एक प्रख्यात गद्यांश में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

"साधारणतया किसी भी राज्य में उसके कृषकों की तुलना में दूसरे पेशेवर नागरिकों का जो अनुपात है, वह राज्य के स्वस्थ अंगों तथा हानिकर अंगों का अनुपात है और वह एक ऐसा मापक यंत्र है, जिससे भ्रष्टाचार की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। जबकि हमारे पास परिश्रम करने के लिए भूमि है, तो हमारी इच्छा यह कभी नहीं होनी चाहिये कि हमारे नागरिक किसी कारखाने की बेंच पर बैठकर मशीन के पहिये घुमाते रहें। खेती-बारी में बढ़ई, राजगीर, लुहार आदि की आवश्यकता होती है; किन्तु उत्पादन के साधारण कारोबार के लिए हमारे कारखाने यूरोप में ही रहें तो अच्छा है। अच्छा तो यही होगा कि सामान और माल मजदूरों को अपनी जगह पर ही भेजा जाय; न कि उन्हें अपने माल और सामग्री के स्थानों पर बुलाया जाय जहाँ वे अपने साथ अपने रहन-सहन के तौर-तरीके भी लादते फिरें। अटलांटिक के पार यूरोप सामानों को भेजने से जो नुकसान होगा, उसकी पूर्ति सुख और सरकार के स्थायित्व से की जा सकेगी। बड़े-बड़े नगरों की भीड़ें पवित्र सरकार के लिए उतनी ही पीड़ाजनक हैं, जिस प्रकार मानव-शरीर पर फोड़ों के कारण पीड़ा होती है। किसी भी राष्ट्र का व्यवहार और आत्मशक्ति ही उसके प्रजातंत्र के बल का काम देती है। इनका पतनोन्मुख होना ऐसा रोग है, जो उसके कानून और विधान की मूल आत्मा को शीघ्र ही खा जाता है।"

इस प्रकार के समाज का विस्तारवादी होना अनिवार्य है और कोई कारण नहीं जान पड़ता कि विस्तार को क्यों रोका जाय। जेफर्सन ने अनुभव किया कि भूमि की अधिकता से अपव्यय और उत्पादन बढ़ नहीं पाता है। इसके लिए कुशल विदेशी मजदूरों को बुलाकर और उनसे यांत्रिक कौशल सीख कर इस दोष को दूर किया जा सकता है। किन्तु इसके अतिरिक्त भी जेफर्सन, जो अर्थ-शास्त्र की अपेक्षा राजनीति को अधिक महत्व देते थे, अमरीका में प्रचलित इस भावना को संदेह की दृष्टि से देखते थे कि यूरोप से लोग बड़ी ही तेजी के साथ अमरीका में जाकर बसें।

"नवजात समाज का मूल लक्ष्य नागरिक सरकार है। अतएव उसके प्रशासन

का संचालन सर्वसाधारण की सहमति से होना चाहिए। सभी प्रकार की सरकारों के अपने अपने विशिष्ट सिद्धांत होते हैं। हमारी सरकार कदाचित् विश्व की किसी भी सरकार से बिल्कुल भिन्न है। यह ब्रिटिश संविधान तथा प्राकृतिक अधिकार और प्राकृतिक बुद्धि पर आधारित अन्य संविधानों के मुक्त सिद्धांतों का समन्वय है। पूर्ण राजतंत्र के सिद्धांतों से बढ़कर इनका कोई विरोधी नहीं हो सकता। फिर भी, हम इन से अधिक से अधिक प्रवासियों के वहाँ बसने की आशा कर सकते हैं। वे अपने साथ अपनी सरकारों के सिद्धांत लायेंगे, जो उनमें उनकी युवावस्था में ही भर गये होंगे, यदि वे इन राजतंत्रों के सिद्धान्त उतार फेंकने में समर्थ भी हुए तो उसके बदले सामान्यतः अनियंत्रित राजनीतिक निरीहता फैल जायगी।"

यह देखने में आयगा कि जेफर्सन ने उन सिद्धान्तों में कोई रियायत नहीं की, जिनके आधार पर उनके देश का शासन-संचालन हुआ। शासकों के अत्याचार और लोकतांत्रिक शासन के भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकमात्र संरक्षण के रूप में लोकप्रिय शिक्षा के उनके समर्थन में तथा पूर्ण सहिष्णुता के उनके तर्क में भी इसी प्रकार की स्पष्टवादिता पायी जाती है। यहाँ उन्होंने अत्यंत सम्माननीय नागरिकों के दृढ़ विश्वासों को उत्तेजनात्मक ढंग से चुनौती दी; "सरकार के उचित अधिकार ऐसे कार्यों तक ही सीमित हैं, जो दूसरों के लिए हानिकारक होते हैं। किन्तु मेरा पड़ोसी यदि यह कहे कि २० देवता हैं अथवा ईश्वर है ही नहीं, तो मुझे कुछ नुकसान नहीं पहुँचेगा। वह न तो मेरी जेब काटता है और न मेरी टांग तोड़ता है।" इस आलोचना को इतनी आसानी से भुलाया या क्षमा नहीं किया जा सकता।

'नोट्स आन वर्जीनिया' में सर्वत्र आशावादिता की झलक दिखाई पड़ती है। केवल एक विषय पर जेफर्सन ने गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है "हम लोगों के बीच दासता का जो अस्तित्व है उसका लोगों के आचरण पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।" सर्वोपरि, उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि कैसे मानव श्रम का अधःपतन हुआ और श्रम की पूर्ति के लिए गुलामों का एक वर्ग खड़ा किया गया। ऐसी बुनियाद पर एक जनतांत्रिक समाज स्थायी रूप से कैसे टिका रह सकता है ? क्या किसी राष्ट्र की स्वाधीनताओं को सुरक्षित समझा जा सकता है जबकि वहाँ के लोगों के मन से यह दृढ़ धारणा ही मिटा दी जाय कि प्राणिमात्र की स्वाधीनता भगवान की देन है और केवल उसके शाप से ही वह नष्ट हो सकती है, दूसरा कोई इन्हें भंग नहीं कर सकता। "वास्तव में जब कभी मैं

यह विचार करता हूँ कि भगवान न्यायकर्त्ता है तो मैं अपने देशवासियों के लिए काँप उठता हूँ, भगवान का न्याय सदा सोया थोड़े ही रहेगा।"

किन्तु जेफर्सन स्वयं १५० गुलामों के मालिक थे, जबकि उनका विश्वास था कि मालिकों की स्वीकृति से या उनकी इच्छा के विरुद्ध और सम्भवतः उनका निष्क्रमण करके उन्हें पूर्णतया मुक्त कर देना चाहिये। वे इस समस्या को सरल कार्य नहीं समझते थे। इस बात की तो आशा नहीं थी कि सभी जातियाँ एक हो जायेंगी और एकमात्र आशा समुद्र पार उनके उपनिवेश बसाने की योजना से थी, जैसा कि उन्होंने वर्जीनिया-संहिता में संशोधन के समय निरर्थक प्रयास किया था और इस प्रकार का विचार अमरीका में एक पीढ़ी से अधिक समय तक लोगों के मन में चलता रहा।

यदि दासता जेफर्सन के लोकतान्त्रिक आदर्श के लिए प्रमुख दीर्घकालिक खतरे के रूप में थी, तो विदेशी युद्ध की सम्भावना सबसे महत्वपूर्ण खतरे के रूपमें थी। "किसी भी विषय पर इतने झूठे मापदण्ड का उपयोग कभी नहीं किया गया, जितना राष्ट्रों को यह समझाने में किया गया कि युद्ध करना उनके हित में है।" युद्ध के लिए अवसर उत्पन्न हो, इसके पूर्व जेफर्सन इस बात के लिए तैयार थे कि अमरीका समुद्री व्यापार बिल्कुल त्याग दे और कृषि पर ही अपनी पूरी शक्ति केन्द्रित करे, किन्तु उन्होंने महसूस किया कि यह किसी प्रकार सम्भव नहीं है। अमरीकी पहले ही से व्यापार की ओर खिंच चुके थे और उन्हें उससे विमुख नहीं किया जा सकता था। इसलिए युद्ध होकर रहेंगे और एकमात्र मार्ग यही था कि उनके लिए यथासम्भव तैयारी की जाय। यह तैयारी स्थल सेना के रूप में नहीं, नौसेना के रूप में होनी चाहिये। किन्तु उनका तर्क यह भी था कि इतनी विशाल नौ सेना की आवश्यकता नहीं है कि उसका भार देश पर भारी करों के रूप में पड़े जैसा कि यूरोपीय राष्ट्रों में हुआ था, क्योंकि पुरानी दुनिया की प्रबल नौ सैनिक शक्तियाँ—ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और स्पेन—इस स्थिति में थीं कि उनके औपनिवेशिक व्यापार पर अमरीकी मुख्य भूमि से आक्रमण हो सकते थे, जब कि वे अपने प्रतिद्वन्द्वियों के भय से उसके संरक्षण के लिए अपने जहाजी बेड़ों के एक भाग को ही खतरे में डालते थे। जेफर्सन का ख्याल था कि अमरीकी नौ सेना केवल इतनी बड़ी होनी चाहिए कि वह दूसरों को खटकती रहे और परिणामस्वरूप बड़ी शक्तियाँ अमरीकियों के लिए युद्ध-काल में स्वतंत्र समुद्री व्यापार का अधिकार स्वीकार करके उनको तटस्थ रखने का प्रयास करेगी।

तब तो जेफर्सन को शान्तिवादी समझना एक भूल होगी, यद्यपि बहुत ही कम महान राजनीतिज्ञ स्वभावतः इतने प्रसिद्ध शान्तिवादी हुए होंगे। एक सीमित दायित्व के युद्ध के सिद्धान्त में उनका विश्वास था और इस सिद्धान्त की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए परिस्थितियों ने उन्हें पर्याप्त अवसर प्रदान किया।

उनकी पत्नी की मृत्यु ने सार्वजनिक कार्यों से जेफर्सन के अलग रहने के एक प्रमुख कारण को दूर कर दिया और उन्हें माण्टिसिलो छोड़ने के लिए प्रोत्साहन मिला। नवम्बर, १७८२ में शान्तिवार्ता में सम्मिलित होने के लिए उन्हें यूरोप जाने को कहा गया; जाड़े के मौसम के कारण उनके प्रस्थान में विलम्ब हुआ और जहाज द्वारा उनके प्रस्थान के पहले ही एक अस्थायी सन्धि होने का समाचार अमरीका पहुंच गया। अतः उन्हें पुनः अपने राज्य की सेवा करने का अवसर मिला। वर्जीनिया-धारासभा ने एक बार और उन्हें कांग्रेस के लिए अपना प्रतिनिधि चुना।

नवम्बर, १७८३ में जेफर्सन ने कांग्रेस में अपना स्थान ग्रहण किया और उन्होंने बड़ी तत्परता से छमाही कार्य आरम्भ कर दिया। उन्हें शान्ति-सन्धि की पुष्टि पर विचार करने वाली समिति का अध्यक्ष चुना गया और मुद्रा सम्बन्धी रिपोर्ट तैयार करने का कार्य सौंपा गया, जिसके परिणामस्वरूप डालर को बुनियादी अमरीकी मुद्रा इकाई के रूप में स्वीकार किया गया। इसी प्रकार उन्हें अन्य कार्य भी सौंपे गये। जब कि, अमरीका एक स्वीकृत सार्वभौमिक शक्ति के रूप में प्रकट हो रहा था, तब जेफर्सन उसकी प्रमुख समस्याओं तथा साधन स्रोतों का स्पष्ट चित्र प्राप्त करने की स्थिति में थे।

१ मार्च, १७८४ को वर्जीनिया ने ओहियो के उत्तर और पश्चिम भाग में अपने दावों को अमरीका को अन्तिम रूप से सौंप दिया। इस सम्बन्ध में जेफर्सन ने महत्वपूर्ण सेवा की। अमरीका के पश्चिमी प्रदेशों के भावी शासन के प्रश्न पर विचार करने वाली एक समिति के अध्यक्ष जेफर्सन पहले ही से नियुक्त हो चुके थे और इसकी रिपोर्ट उसी दिन प्रकाशित हुई जिस दिन अधिकार-समपर्ण का कार्य सम्पन्न हुआ। कांग्रेस में यह बात साधारणतया पहले ही से स्वीकार कर ली गयी थी कि उस क्षेत्र को नये राज्यों में परिवर्तित कर दिया जाय और जनसंख्या अनुकूल हो जाने पर उन्हें संघराज्य में मिला दिया जाय। जेफर्सन की रिपोर्ट ने इन योजनाओं को ठोस रूप प्रदान किया और वस्तुतः दस नये राज्यों के लिए इसमे व्यवस्था की गयी। इन रिपोर्टों में जेफर्सन की विशिष्टता

इस तरह प्रकट हुई कि उसमें इस बात की व्यवस्था थी कि नये राज्यों की सरकारें प्रजातात्रिक होंगी, उनके कोई परम्परागत अधिकार नहीं होंगे और सन् १८०० के बाद वहाँ दास प्रथा का अन्त कर दिया जायगा। किन्तु कांग्रेस में विचारविमर्श के दौरान में दोनों ही बातें और दस राज्यों के निर्माण की बात उड़ा दी गयी। १७८४ के अध्यादेश को कभी कार्यान्वित नहीं किया गया, किन्तु वह १७८७ के अध्यादेश का आधार रहा। इस अध्यादेश ने, जो अपनी अनुप्रेरणा में पूर्व अध्यादेश से कम लोकतात्रिक था, उस क्षेत्र की भावी सरकार को न केवल नियमित बनाया, जिस पर वह लागू किया गया, बल्कि अमरीका के सभी अतिरिक्त भावी प्रदेशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। १७८७ के अध्यादेश में दासता-विरोधी प्रावधान पुनः प्रकट हुआ।

पश्चिमी समस्या का आर्थिक तथा राजनीतिक स्वरूप भी था। जेफर्सन उस समिति के अध्यक्ष थे, जिसने भूमि के सर्वेक्षण और बंटवारे की प्रणाली पर रिपोर्ट दी और महाद्वीपी सेना के सैनिकों के लिए अनुदानों की व्यवस्था की। किन्तु अनेक सम्बन्धित जटिल समस्याओं के लिए जो समाधान प्रस्तुत किये गये, उन्हें स्वीकार नही किया गया और एक वर्ष के बाद कांग्रेस ने प्रथम भूमि अध्यादेश स्वीकार किया।

जबकि जेफर्सन का अधिकांश समय युद्धोत्तर पुनर्निर्माण तथा नयी संस्थाओं की रचना में व्यतीत हुआ, अमरीका के विदेशी सम्बन्धों से उत्पन्न मामलों में भी वे काफी व्यस्त रहे। उन्हें तीन सदस्यों की एक समिति का अध्यक्ष बनाया गया, जिसने मार्च, १७८४ में, रिपोर्ट दी कि उन देशों के साथ, जिनके साथ अमरीका का औपचारिक संबध नही है, मित्रता और व्यापारिक सन्धि की बातचीत के लिए यूरोप एक दल भेजा जाय। पुरानी दुनिया में अमरीका के पहले ही से दो प्रतिनिधि थे—बेंजामिन फ्रैंकलिन, जो दिसम्बर, १७७६ से ही पेरिस में मंत्री थे और जान एडम्स, जो दिसम्बर, १७७९ से ही कूटनीतिक कार्यवश यूरोप में रखे गये थे और अब हेग में मंत्री थे। मध्य राज्यों (Middle States) का एक प्रतिनिधि था और एक दूसरा न्यू इंगलैण्ड का था, इसलिए यह सम्भव था, कि ऐसे दल का तीसरा सदस्य दक्षिण से ही लिया जाय और ७ मई, १७८४ को जेफर्सन को इस रिक्त स्थान पर मनोनीत कर दिया गया।

अध्याय–५

राजदूत

(१७८४–१७८९)

जेफर्सन ने अपने जीवन के जो पाँच वर्ष यूरोप में व्यतीत किये, वे किसी भी ऐतिहासिक प्रवृत्ति के लिए, उनके जीवन के दूसरे महत्वपूर्ण काल की अपेक्षा अध्ययन का अधिक आकर्षक विषय सिद्ध होंगे। नयी दुनिया का दार्शनिक अब पुरानी दुनिया के सामने था, जो अपने चरमोत्कर्ष के संध्याकाल में पहुँच चुकी थी। वह एक उच्च आर्य जातीय और आडम्बरयुक्त समाज का सदस्य होते हुए भी प्रजातन्त्रीय सरलता का स्पष्ट समर्थक था; वह विभिन्न राष्ट्र-परिवारों के नवीनतम नौमिखिए राष्ट्र का प्रतिनिधि था और जिसे पहले ही से अपने राष्ट्र के भव्य भविष्य का कुछ-कुछ आभास मिल चुका था; वह यूरोप के प्राचीन-तम और गर्वोन्नत राजतंत्रों के मंत्रियों के समक्ष इस नये राष्ट्र के हितों का समर्थन कर रहा था। औपनिवेशिक विलियम्सबर्ग की राजधानी में प्रस्फुटित राजनीतिक दर्शनशास्त्र और माण्टिसिलो जैसे कस्बे में किया गया अध्ययन बोर्बोन्स फ्रांस के सुसंस्कृत और परम्पराबद्ध समाज के सामने किस तरह ठहर सकता था? जिसने बड़े-बड़े नगरों की बुराइयों के बारे में इतने विश्वास के साथ लिखा और जिसने आज के बेडफोर्ड (इंगलैण्ड) के आकार के बराबर फिलाडेल्फिया से बड़ा कोई नगर कभी देखा नही था, वह पेरिस को देखकर, जिसकी आबादी पाँच या छः लाख थी, अथवा लन्दन को देखकर, जिसकी आबादी लगभग ७॥ लाख थी, कितना आश्चर्यचकित हुआ होगा?

अपने सुयोग्य और भावी उत्तराधिकारी गौर्नियर मारिस की भाँति जेफर्सन ने काफी डायरी नहीं रखी; वे अपनी यात्रा के तथ्यों पर नोट जरूर लिखते थे। उनकी यूरोपीय यात्रा का पूर्ण चित्र अमरीका के साथ उनके अनेक सर-कारी और गैर-सरकारी पत्रव्यवहारों से तथा उस समय और बाद मे उनके फ्रांसीसी मित्रों को लिखे गये पत्रों से प्राप्त किया जा सकता है, जिनकी खोज और व्याख्या का अधिकतर श्रेय प्रोफेसर चिनार्ड के अनुसधान को है। प्रोफेसर चिनार्ड उन इने गिने इतिहासकारों में से हैं, जिनकी कृतियों से यह तथ्य प्रकट होता है कि सस्कृतियों के बीच व्यक्तिगत और बौद्धिक सम्पर्क उनकी रचनात्मक गतिविधियों के लिए उतनी ही आवश्यक है जितना वस्तुओं के आदानप्रदान के

लिए यातायात और यह कूटनीतिज्ञों की कूटनीति की अपेक्षा कहीं अधिक निकट-तम होता है। १८ वीं शताब्दि में, जिससे जेफर्सन का अनिवार्य सम्बन्ध था, उन बातों की विशेष सराहना की जाती थी, जिनका समाज से अधिक संबंध रहता था और बीसवी शताब्दी के राजनीति से उन्मत्त विश्व में सराहना की इस भावना का बड़ी तेजी से लोप होता जा रहा है।

सच पूछा जाय तो जेफर्सन ने यूरोप में जो कार्य किया, वह कांग्रेस की कल्पना से भिन्न था, क्योंकि त्रिसदस्यीय दल, जिसने अमरीका और पुरानी दुनिया के बीच नये व्यापारिक सम्बन्ध का ढांचा तैयार करने के लिए १७८४ के ग्रीष्मकाल में पेरिस में अपना कार्य आरम्भ किया, अधिक समय तक कायम न रहा। मई, १७८५ में एडम्स लन्दन में राजदूत नियुक्त किये गये और जुलाई में फ्रेंकलिन के सेवानिवृत्त हो जाने पर उनके स्थान पर जेफर्सन फ्रांस में राजदूत नियुक्त किये गये। पेरिस में अपने प्रथम वर्ष में जेफर्सन ने अपने साथियों की वरिष्ठता और अधिक अनुभव का सम्मान करते हुए अपने को बिल्कुल पीछे रखा। अब वे अपने पैरों पर खड़े हुए और उत्तरदायित्व बढ़ जाने से उनका विश्वास भी बढ़ता गया। उनकी घर की चिन्ता और उदासीनता की प्रवृत्ति का अन्त हो गया। इस उदासीनता के कारण उनकी इस यात्रा का प्रारम्भिक भाग उत्साहहीन-सा रहा।

जेफर्सन ने ६ वर्ष बाद लिखा, "फ्रांस के दरबार में डा० फ्रैंकलिन से उत्तराधिकार-ग्रहण का दृश्य आत्मा को कचोटने वाला था। अमरीका के राजदूत के रूप में किसी के सम्मुख प्रस्तुत किये जाने पर ऐसे मामलों में साधारण प्रश्न यह हुआ करता; श्रीमान् क्या आप डा० फ्रैंकलिन का स्थान ग्रहण करते हैं?" मैंने साधारणतया उत्तर दिया, "श्रीमान्! उनका स्थान कोई नहीं ग्रहण कर सकता, मैं तो उनका उत्तराधिकारी मात्र हूँ।" रण्डाल ने जेफर्सन के इस सुखद वृत्तान्त को एक सुन्दर रचना का रूप प्रदान किया और उसे विशेष आवरण प्रदान करते हुए जेफर्सन का यह उत्तर वर्जेनीस के प्रति बना दिया। वर्जेनीस फ्रांस के विदेश-मत्री थे और उस सन्धि के रचयिता थे, जिसके अंतर्गत ब्रिटेन ने विनम्रतापूर्वक अमरीका को मुक्त किया। बाद के जीवनी-लेखकों ने वस्तुतः रण्डाल का ही अनुसरण किया है, यद्यपि उनकी आसु रचनाएँ, जो फ्रासीसी भाषा में थी, शायद ही जेफर्सन की परिधि के अन्तर्गत थीं। वास्तव में इस उपाख्यान की मूल बात सही है। फ्रैंकलिन ने पेरिस के रंगमंच पर जिस पूर्णता के साथ हृदयग्राही, किन्तु निपुण, कूटनीतिज्ञ, संकीर्ण

किन्तु साहसिक, विद्वत्तापूर्ण समाजप्रिय दार्शनिक और मित्र की जो भूमिका अदा की वैसी शायद ही कभी दुहरायी गयी हो। यदि जेफर्सन ने प्रयत्न करने की मूर्खता की होती तो भी उनमें कुछ ऐसे गुणों का अभाव था, जिससे इस प्रकार का कार्य संभव नहीं हो सकता था।

चिनार्ड ने लिखा है, "वे एक अच्छे श्रोता थे और फ्रेंकलिन की अपेक्षा अधिक गम्भीर थे। वे सम्भलकर फ्रेंच बोलते या लिखते थे। डाक्टर फ्रेंकलिन जितनी ही बुरी फ्रेंच लिखते थे उतनी ही बुरी बोलते भी थे। उनकी बातचीत में असाधारण अनर्गल बातें होती थीं; परन्तु जेफर्सन इतने संवेदनशील और सतर्क थे कि जिन लोगों से घनिष्ठ परिचय नहीं होता उनसे वे अधिक वार्तालाप या विवाद में उतरने के पहले अपने को तोलते थे। हम कह सकते हैं कि विशुद्ध फ्रांसीसी क्षेत्र में जेफर्सन ने वास्तव में कभी आत्मीयता का अनुभव नहीं किया। उनकी प्रारम्भिक फ्रांसीसी मित्रताएँ अधिकतर फ्रेंकलिन के कारण हुई और उन्हीं के द्वारा उन्होंने टर्गोट के दार्शनिक अनुयायियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया, जिसका परिणाम बाद में डुपोण्ट डि नेमूर्स और डेस्टट डिट्रेसी के साथ रोचक पत्रव्यवहार में निकला। लफायट के साथ उनके परिचय से वे राजदरबार के विरोधी अन्य तथा बौद्धिक राजनीतिक तत्वों के सम्पर्क में आये। लफायट से उनकी बाद में भेंट ऐसी परिस्थिति में हुई थी, जो रिचमोण्ड की घेराबन्दी से बिल्कुल भिन्न थी।

व्यापार-मंडल की सदस्यता के दौरान में जेफर्सन को फ्रांस में अमरीका और अमरीकियों के प्रति उत्साह की लहर से सहायता मिली और कभी कभी उलझन भी पैदा हुई। यह लहर फ्रांस के उदार और बुद्धिजीवी क्षेत्रों में स्वातंत्र्य युद्ध के अन्त और फ्रांसीसी क्रान्ति के आरम्भ के बीच के दिनों में व्यापक थी। अमरीकी राज्य-क्रान्ति में लड़ने वाले फ्रांसीसी अफसरों के लेखों से भी इस लहर को बल मिला। अपने अमरीकी साथियों के प्रति बाद में भी उनके हृदय में जो संवेदनाशील भाव रहे, वैसे ऐतिहासिक गठबंधनों में कदाचित ही मिलते हैं। अमरीका में रूसो के अनुयायिओं को उस आदर्श समाज का नमूना देखने को मिला, जिसकी उन्होंने कल्पना की थी और उसे उन्होंने अपने देश में स्थापित करने का विचार किया। चेस्टलक्स क्रेवकूर तथा अन्य लोगों ने, जो कम प्रतिभाशाली और चिरविस्मृत थे, लोकतांत्रिक सरलता, शुद्ध नैतिकता और प्राकृतिक पवित्रता के— प्यूरिटन और पायनियर के मिश्रित गुण— सजीव चित्रण में योग दिया था, जिसका फ्रांसीसी विचारधारा पर काफी प्रभाव पड़ा और

जिसके प्रभाव से पचास वर्ष बाद प्रतिभाशाली तोकविले भी पूर्णरूप से नहीं बच सके। अमरीका गये हुए सैनिकों या अफसरों के लेखों ने मैबली और रायनाल जैसे बुद्धिजीवियों को. जो अमरीका नहीं गये थे, काफी प्रेरणा प्रदान की और जेफर्सन ऐसी रहस्यपूर्ण गाथाओं तथा किम्वदन्तियों को सुधारने में व्यस्त रहे और कभी कभी वे उन फ्रांसीसियों पर झुंझला पड़ते, जो पत्रों में अमरीकियों को यह सालह देने के लिए उत्सुक थे कि उन्हें अपने कारोबार की व्यवस्था किस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि वे यह तर्क देते थे कि अमरीका मानव समाज की आशा है, इसलिए यह हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

जेफर्सन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि इन वर्षों के दौरान में उन्होंने अपने कूटनीतिक भार को हल्का कर दिया था। इन वर्षों को हम सक्रिय कार्यशीलता की अपेक्षा उनके द्वितीय प्रशिक्षण-काल-पर्यवेक्षण और अनुकरण का वर्ष मानने का लोभ संवरण नहीं कर सकते। उनकी यात्राओं के अभिलेखों तथा इन यात्राओं से जो टेक्निकल तथा सामाजिक ज्ञानवर्द्धन हुआ तथा समय-समय पर उनके स्थापत्य सौन्दर्य और प्राचीन संग्रहालयों में लीन हो जाने की ओर हमें ध्यान देना चाहिए। जो कार्य उन्हें सौंपा गया था, उस ओर वे ध्यान नही दे पाये। जेफर्सन ने किन चीजों को महत्त्वपूर्ण माना, इसकी जानकारी १७८८ में उन्होंने अपने दो स्वदेशवासियों के पथप्रदर्शन के लिए जो निर्देश लिखे थे, उन सारगर्भित पत्रों से मिल सकती है। उन्होंने सुझाया कि प्रत्येक देश के शिल्प, कृषि तथा सामान्य उत्पादन की मशीनी प्रक्रिया को सफलता सूचीबद्ध करना चाहिये, जिनकी अमरीका को जरूरत है। आज की यांत्रिक कलाओं और उत्पादन के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा:—"इनमें से कुछ पर बाह्य दृष्टिक्षेप ही उचित होगा, क्योंकि मौजूदा परिस्थितियों में शायद ही इस पीढ़ी में अमरीका का मशीनीकरण संभव है। अतएव इन पर गंभीरता से ध्यान देना निरर्थक है।

राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं तथा इनसे भी बढ़कर राजदरबारों को भी उसने इसी रूप में देखा जैसा कि कोई लंदन में टावर, या वर्सलीज में चिड़ियाघर जहाँ कोई शेर, चीते, भेड़िये और दूसरे शिकार किये जाने वाले जानवरों को एक साथ रहते देखेगा। राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं पर राजदरबार के सर्वोपरि प्रभाव का उसने उल्लेख किया है, परन्तु केवल एक चेतावनी के रूप में।

कभी कभी सुसंस्कृत और मानवगुण सम्पन्न जेफर्सन भी सर्वोच्च गुण की उस प्यूरिटन भावना से नहीं बच सकते थे, जिसका प्रभाव एक सफल क्रान्ति में भाग लेनेवाली प्रत्येक पीढ़ी पर पड़ता प्रतीत होता है।

उनके यात्रा-नोट उनके फार्मूला के बहुत निकट जान पड़ते हैं। उनके इन नोटों में १७८७ के मार्च से जून तक उनकी दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी इटली की यात्रा का तथा १७८८ के मार्च से अप्रैल तक का पेरिस से एम्सटडम, और स्ट्रासबर्ग तक और फिर लोदेन होकर वापसी दौरे का उल्लेख है। सर्वत्र जेफर्सन को इसी बात का ध्यान रहता था कि अमरीकी कृषि को कैसे लाभ पहुँचाया जा सकता है। जहाँ यह स्वार्थ आता था, वहां वे जरा भी संकोच नहीं करते थे। १६ अप्रैल, १७८७ को उहोंने वर्सेली में लिखा कि "खच्चर हाँकने-वाला पोग्गिओ चोरी चोरी मेरे लिए एक बोरा मोटा चावल जेनेवा लायगा, ऐसे चावलों को बाहर भेजने का अर्थ होता है मृत्युदंड—पोग्गिओ के लिए मौत, जेफर्सन के लिए नही।" चावल सफाई करने वाली मशीनें और चावल के सम्बन्ध में अपनी छानबीन के बारे में विदेश-सचिव जान जे को लिखते हुए जेफर्सन ने तस्कर व्यापार शब्द का उपयोग नहीं किया और कुछ मात्रा में वांछित अन्न की प्राप्ति संबंधी कार्यवाइयों का उन्होंने कूटनीतिक ढंग से उल्लेख किया। उन्हें प्रयोग के तौर पर दक्षिणी कारोलिना और जार्जिया के बड़े-बड़े किसानों के पास भेजा गया। जेफर्सन ने जे को समझाया, "आज की शान्ति-कालीन स्थिति में हमारे देश की साधारण जनता की रुचि कृषि में है, और मैं आशा करता हूँ कि मेरी इस मान्यता में भूल नहीं है। इसलिए, उन्हें अपना माल बाजार के अनुकूल बनाना, उनके लिए विदेशी बाजार तैयार कराना और उस माल को वहाँ उचित मूल्य में स्वागत किया जाये, इसमें सहायता करना मेरा कर्त्तव्य है।"

जेफर्सन की कर्तव्यसंबंधी नीति के और अधिक परम्परागत पक्षों को केवल संक्षिप्त बनाया जा सकता है; इसी क्षेत्र में जिन समस्याओं का उन्हें समाधान करना पड़ा, वे अधिकतर वही थीं, जो उनके सामने पुन: आयी, जबकि अम-रीका वापस आने के बाद उन्हें विदेश-मंत्री के रूप में व्यापक क्षेत्र में कार्य करना पड़ा। उनके महत्व को समझने के लिए यह स्मरण रखना आवश्यक है कि युद्ध की समाप्ति के बाद नये अमरीकी प्रजातंत्र को कितनी विकट स्थिति में से गुजरना पड़ा।

स्वतंत्र अमरीका, जिसका जन्म १७८३ की सन्धि से हो चुका था, प्रादेशिक

एवं व्यापारिक चिन्ताओं से मुक्त नहीं हो पाया था। यद्यपि कनाडा की सीमाएं पुनः १७१४ के पूर्व की स्थिति में पहुंच गयी थीं और मिस्सिसीपी तथा ओहियो नदियों के बीच के प्रदेश को छोड़ दिया गया था, तथापि इस पश्चिमी प्रदेश में जो सैनिक चौकियाँ थीं, वे अभी भी इंडियन विद्रोह को रोकने के नाम पर अंग्रेजों के हाथ मे थीं। सन्धि के अन्य प्रावधानों के साथ इसकी उपेक्षा का वास्तविक कारण यह बताया गया कि अमरीका ने ब्रिटिश साहूकारों के ऋणों के भुगतान की व्यवस्था नहीं की थी। इस दिशा में वर्जीनिया द्वारा अनुकूल कार्रवाई करने के जेफर्सन और उनके राजनीतिक साथियों के प्रयास पेट्रिक हेनरी के नेतृत्व में आयोजित विरोध के कारण विफल हो गये। कांग्रेस राज्य के मामलों में कार्रवाई करने में असमर्थ थी। यह एक ऐसा बहाना था, जिसे अंग्रेज स्वीकार नहीं कर सकते थे; किन्तु इस मतभेद के पीछे अमरीकियों को गम्भीर सन्देह था कि अंग्रेज उत्तर-पश्चिम में अपना प्रभुत्व कायम रखना चाहते है और इसके साथ ही लोमड़ी की रोयेंदार खाल के व्यापार को भी जारी रखना चाहते थे, जिस पर कनाडा की व्यापारिक समृद्धि अवलम्बित है। नयी राजनीतिक स्थितियों के अंतर्गत हडसन और सेण्ट लारेन्स के बीच पुरानी प्रति-द्वन्द्विता पुनः उभड़ गयी। अमरीका के भावी प्रवासियों और उनके राजनीतिक अनुयायियों ने उस नीति को अत्यन्त अनैतिक समझा, जिसके द्वारा अंग्रेज अपने और अमरीकी विस्तारवादियों के बीच के क्षेत्र में इंडियनों को कायम रखना चाहते थे। और भी दक्षिण की ओर, जहाँ वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना के पश्चिमी क्षेत्र—केण्टकी और टेनेसी के भावी राज्य—तेजी से भरते जा रहे थे, बिलकुल भिन्न समस्या थी। क्योंकि लुइसियाना और न्यू आर्लियन्स पर स्पेन का अधिकार कायम रहने और फ्लोरिडा को भी (पश्चिमी फ्लोरिडा सहित—आधुनिक अल्बामा और मिस्सिसीपी के तटवर्ती क्षेत्र) ले लिये जाने का अर्थ था मिस्सिसीपी के मुहाने पर स्पेन का और भी अधिक दृढ़ नियंत्रण। यहाँ ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका, दोनों का समान हित था, क्योंकि उन्होने मिस्सि-सीपी में संयुक्त नौकानयन के लिए समझौता कर लिया था। लोगों का गलत अनुमान था कि मिस्सिसीपी का उद्गम कनाडा में था। इस समझौते से ब्रिटेन को दोहरा लाभ था। वह लुइसियाना पर, जहाँ स्पेन का दृढ़ नियंत्रण नहीं था, कब्जा करके अपने स्वार्थों को बढ़ाने का लोभ संवरण नहीं कर सकता था। इस पर भी नये पश्चिमी उपनिवेशों की समृद्धि की जीवन-रेखा जो खुली हुई थी, स्पेनिश आदेश से किसी भी समय बन्द की जा सकती थी और उनका भविष्य

स्पेनिश नीति के उतार-चढ़ाव पर अवलम्बित रह सकता था। यद्यपि जेफर्सन को, वाशिङ्गटन तथा वर्जीनिया के अन्य नेताओं की भाँति धीरे धीरे ज्ञात हुआ, तथापि उन्होने पोटोमाक को पश्चिम का एक निर्गम स्थान समझा—और उनके बाद की विचारधारा और कूटनीतिक गतिविधियों में उसका महत्वपूर्ण योग रहा। तात्कालिक प्रसंग की बात यह थी कि पश्चिमी फ्लोरिडा की उत्तरी सीमा सम्बन्धी विवाद से स्पेनवासियों को दक्षिण-पश्चिम के इंडियनों में वही भूमिका अदा करने का मौका मिला, जो उत्तर-पश्चिम में अंग्रेज अदा कर रहे थे; एण्ड्र्यू जेक्सन के प्रेसिडेण्ट-काल में वह दिन अभी दूर था, जब 'क्रीको' और 'चेराकियों' को पीछा किये जाने पर मजबूर होकर मिस्सिसीपी पार करके ओकला होमा में जाना पड़ा।

यदि अमरीकी अभी भी अपने को चारों ओर से प्रादेशिक रूप से घिरा हुआ समझते थे, तो उन्हें इससे भी अधिक डर इस बात का था कि आर्थिक दृष्टि से वे बहुत ही निर्बल थे। उन्होंने जो यह आशा की थी कि ब्रिटेन जो पहले तक उन्हें तैयार माल देता रहा और उनके माल का भी प्रमुख खरीददार रहा वह अमरीका के पक्ष में अपने जहाजी व्यापार की नीति में जो अंकुश लगाये हैं उन्हें शिथिल कर देगा—केवल छलना सिद्ध हुई। २ जुलाई, १७८३ को मंत्रिमंडल के निर्णय द्वारा ब्रिटिश वेस्ट इंडिज से अमरीकी नौकानयन को वंचित कर दिया गया और चाहे ब्रिटिश जहाजों में ही लाद कर क्यों न लाया जाये, अमरीकी खाद्यपदार्थों पर रोक लगा दी गयी। यह सच है कि कनाडा और समुद्रतटीय प्रदेशों में कमी की पूर्ति के लिए ब्रिटिश उपनिवेशों में तस्कर व्यापार को प्रोत्साहन मिला और अन्य राष्ट्रों के उपनिवेशों के साथ भी व्यापार सम्भव हो गया, जिससे आर्थिक स्थिति उतनी भयंकर नही हो पायी, जैसी कि स्थिति की औपचारिक विवेचना में व्यक्त की गयी थी। फिर भी, अमरीकी व्यापार के लिए कोई स्थिर आधार प्राप्त करने के लिए अधिक दबाव डाला जा रहा था, उन अमरीकी निर्यात माल के उत्पादकों और व्यापारियों की ओर से जिन्होंने युद्धकालीन परिस्थितियों से लाभ उठाकर अपने व्यवसाय का क्षेत्र और विस्तृत कर दिया था।

विदेशी शक्तियों के साथ अपने पूर्व व्यवहारों में अमरीकियों ने समुद्री व्यापार के अधिकारों के प्रति सर्वदा बहुत ही उदार दृष्टिकोण बनाये रखा और ब्रिटेन ने एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में तटस्थ व्यापारिक निषेध के सम्बन्ध में जो कठोर नीति अपनायी थी; उसको जारी नहीं रखा। फ़्रांस के साथ

व्यापारिक संधि जो १७७८ में उनके गठबंधन के साथ साथ समाहित हुई उसमें तथा डचों के साथ १७८२ में की गयी संधि और स्वीडन के साथ १७८३ में की गयी सन्धि में इसी दृष्टिकोण का समावेश है।

१७८४ में पेरिस में तीनों अमरीकी कमिश्नरों का मुख्य कार्य अमीरका और अधिकांश यूरोपीय राष्ट्रों के सम्बन्धों को सर्वप्रथम एक स्थायी आधार पर बनाये रखना था। व्यापारिक नियम बनाने के लिए कांग्रेस में क्षमता के प्रभाव और 'सबसे प्रिय राष्ट्र' के सिद्धान्त के साथ चिपके रहने की अमरीकी प्रवृत्ति व्यापारिक विशेषाधिकारों की प्राप्ति के लिए अधिक लाभ की सौदेबाजी की अमरीकी योग्यता को निर्बल बना दिया। किन्तु अमरीकी व्यापार को उन्नतिशील बनाने के लिए बहुमुखी व्यापार अत्यंत आवश्यक था, क्योंकि, उदाहरणार्थ, युद्ध के बाद ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुनः स्थापित अमरीकी व्यापार का जो बेमेल सन्तुलन था, उसकी पूर्ति किसी हद तक फ़ांस के साथ अधिक व्यापार के द्वारा की गयी। अन्त में अमरीकी राज्यों के भविष्य और उनकी सरकारों के स्वरूप के बारे में साधारण अनिश्चितता थी। संघराज्य युद्ध के दिनों में फ़ांस और हालैण्ड का बुरी तरह कर्जदार था और यह दायित्व बताता है कि अमरीका में वित्तीय स्रोतों का व्यापक अभाव था। यद्यपि युद्धोत्तर आर्थिक मन्दी १७८५ में निम्नतम स्तर तक पहुँच गयी थी, जबकि यूरोप में जेफर्सन के कार्य-काल के बाद के वर्ष स्वदेश में आर्थिक पुनरुद्धार के वर्ष थे, फिर भी संविधानिक सुधार-सम्बन्धी आन्दोलन से उत्पन्न राजनीतिक तनाव के कारण यह बात प्रकाश में नहीं आ पायी और यह तनाव १७८७ के फिलाडेल्फिया-सम्मेलन में चरमसीमा तक पहुंच गया था।

१७८४ के काँग्रेस-निर्णय के परिणामस्वरूप यूरोपीय राज्यों के साथ जिन सन्धियों की आशा की गयी थी, वे अन्ततोगत्वा १७८५ में प्रशा के साथ सन्धि और १७८७ में मोरक्को के साथ संधिके रूप में क्रियान्वित हुई। प्रशा द्वारा अमरीकी समुद्री व्यापार-सिद्धांत स्वीकार किये जाने से नाम मात्र का ही लाभ हुआ, क्योंकि प्रशा का समुद्री व्यापार नाममात्र का था।

इस प्रकार एक राजदूत के रूप में जेफर्सन की कूटनीति अपेक्षाकृत कतिपय सीमित उद्देश्यों से सम्बन्धित थी। वे अल्जेराइन समुद्री डाकुओं की लूटमार और यूरोप की नौ सैनिक शक्तियों द्वारा उन्हें कर दिये जाने की प्रथा का अन्त करने के उद्दश्य से एक समझौता कराने के प्रयास में विफल रहे और न कांग्रेस ही यह

स्वीकार करती कि अमरीकी बन्दियों को छुडाने के लिए आवश्यक धन दिया जाय। जेफर्सन के विचार से यह एक ऐसा अवसर था जब युद्ध छेड़ना काफी उचित होता। उन्होंने उन आन्तरिक एकाधिकारों को भंग करने का प्रयास किया, जिनके द्वारा फ्रांस और पुर्तगाल ने अमरीकी व्यापार के लिए स्वीकृत अधिकारों को सीमित कर दिया था और अन्त में वे उस एकाधिकार-स्थिति को समाप्त करने में सफल हुए, जो अमरीका में राबर्ट मारिस को तम्बाकू-व्यापार में प्राप्त था। फ्रांस के साथ वाणिज्य-दूतावास की स्थापना में भी वे सफल हुए। किन्तु महाद्वीपी शक्तियों के वेस्ट इंडियन उपनिवेशों में व्यापारिक अधिकार प्राप्त करने की समस्या का, जिसे वे व्यक्तिगतरूप से सब से अधिक महत्व देते थे, समाधान निकालने में वे सर्वथा असमर्थ रहे। फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल और ग्रेट ब्रिटेन की नीतियों पर अभी भी जहाजी व्यापार (देश विशेष के जहाजों में ही समान का लदान) हावी था।

फ़ांसीसी राजदरबार के साथ जेफर्सन की व्यापारिक वार्ता में लफ़ायट ने एक उपयोगी मध्यस्थ के रूप में कार्य किया; जेफर्सन, जिन्होंने विशिष्ट अमरीकी स्वार्थों की अपेक्षा सर्वदा व्यापक दृष्टिकोण अपनाया, उनके साथ इसी तर्क का उपयोग किया कि अच्छे व्यापारिक सम्बन्धों से दोनों देशों के बीच राजनीतिक सम्बन्ध और दृढ़ होंगे तथा अमरीकियों द्वारा अनुकूल व्यापार-सन्तुलन की स्थापना से ही अमरीकी फ्रांस का ऋण चुकता कर सकेंगे, किन्तु लफायट को कतिपय निहित स्वार्थों के तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। फ़्रांस में राजनीतिक संकट ने अत्यन्त उग्ररूप धारण कर लिया था और चूंकि लफायट रिपब्लिकन थे, अतएव उनके समर्थन का महत्व जाता रहा।

लफायट के साथ इसी सम्बन्ध के फलस्वरूप जेफर्सन का उन लोगों से प्रत्यक्ष सम्पर्क हुआ, जो यह समझते थे कि राज्य में क्रान्तिकारी सुधारों के अलावा फ्रांसीसी राजतंत्र के समक्ष उपस्थित कठिनाइयों से निकालने का दूसरा कोई मार्ग नही है। सोलहवें लुई के यहाँ एक राष्ट्र के अधिकृत राजदूत होने के कारण जेफर्सन दुविधा मे पड़ गये थे, किन्तु वे सलाह देने से अपने को न रोक सके। सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि गणतंत्रीय एवं जनतंत्रीय सिद्धांत की अपनी तार्किक दृढ़ता के बावजूद तथा यूरोप में जो कुछ देखा उससे लोकतांत्रिक शासन के लाभों में और भी विश्वास हो जाने के बावजूद भी, जेफर्सन को इस बात पर कभी विश्वास नहीं हुआ कि फ्रासीसी केवल अमरीकी संस्थानों का अनुकरण करके, जिसकी वे हृदय से सराहना करते हैं, लोकतंत्र की स्थापना में

सफल होंगे। लोकतंत्र एक सांविधानिक सिद्धान्त मात्र नहीं हैं। यह तो एक जीवन प्रणाली है और इस ढाँचे में ढलने में फ्रांसीसियों को अधिक समय लग सकता है। यह उल्लेखनीय है कि असेंबली ऑफ नोटेबल्स के समय फरवरी सन् १७८७ में उसने लफायट को एक पत्र में यह सुसलाह दी कि अच्छा होगा कि इंगलैण्ड को आदर्श मानकर वैधानिक शासन की स्थापना के लिए कार्य किया जाय, इस तरह असेंबली को सम्राट के कर्ज़ को चुकाने की स्वीकृति देने न देने का जो अधिकार मिल जाता है, उसका दबाव डालकर वह अपनी नीतियों को उससे स्वीकृत करा सकती है। जेफर्सन अपने इस विचार पर सदा दृढ़ रहे कि इंगलैण्ड को आदर्श मानकर फ्रांस प्रगति कर सकता है।

फ्रांस में १७८९ ने स्टेट्स-जनरल (कुलीन, पादरी और नगरीय प्रतिनिधियों की सभा) की बैठक आमन्त्रित करने के बाद भी जेफर्सन ने लफायट को पुनः एक योजना प्रस्तुत की, जिसके द्वारा फ्रांसीसी सम्राट को ब्रिटेन से मिलता-जुलता एक संविधान स्वीकार करना चाहिए, किन्तु साथ ही साथ व्यक्तिगत अधिकारों का औपचारिक आश्वासन मिलना चाहिये और सम्राट में निहित इन अधिकारों के त्याग की पूर्ति उसे आर्थिक मुआवजे के रूप में मिलनी चाहिये। इस बात का प्रमाण है कि इससे पहले जेफर्सन फ्रांसीसी अधिकार-विधेयक के रूप पर विचार कर रहे थे और लफायट के प्रारूप में उन्होंने संशोधन करने का प्रयास किया था। इस प्रारूप की टिप्पणियों में जेफर्सन की राजनीतिक विचारधारा से सम्बद्ध तीन बातें हैं। प्रथम, उन्होंने अधिकारों के पृथक्करण के सिद्धान्त के उचित पालन के महत्व पर विशेष जोर दिया। वर्जीनिया-संविधान के विरुद्ध उनकी एक प्रमुख शिकायत यह थी कि उसमें ऐसा नहीं किया गया। दूसरा उन्होंने मानव के प्राकृतिक अधिकारों में सम्पत्ति को भी रखे जाने पर सन्देह व्यक्त किया। जेफर्सन के लिए सम्पत्ति प्राकृतिक अधिकार के बजाय सामाजिक अधिकार था। तीसरा उन्होने सुझाव दिया कि संविधान में समय-समय पर संशोधन होना चाहिये। उन्होंने पहले-पहल इस सिद्धान्त को प्रकट किया कि एक पीढ़ी को अपने भावी उत्तराधिकारियों को बांधने का कोई अधिकार नहीं है और बाद में इस सिद्धान्त को उन्होंने विशेष महत्व दिया।

फ्रासीसी पार्लमेण्ट ने फ्रांस का संविधान तैयार करने के लिए एक समिति नियुक्त की थी, जिसकी बैठकों में सम्मिलित होने के लिए जेफर्सन को भी आमंत्रित किया गया था, किन्तु उन्होंने उसमें सम्मिलत होने से इनकार कर दिया। उन्होंनें अपने मकान में एक बैठक के लिए अनुमति दी, जिसमें विशेषाधिकार

की विकट समस्या को हल किया गया—यह शिष्टाचार का उल्लंघन था, जिस पर स्पष्टीकरण करने के लिए उन्हें फ्रांसीसी विदेश-मंत्री माण्टमोरिन के समक्ष पहुंचना पड़ा। इस घटना के बाद ही अक्तूबर, १७८९ के आरम्भ में जेफर्सन ने कुछ महीनों की छुट्टी पर फ्रांस से प्रस्थान किया। उन्हें अपनी पुत्री को घर लाना था और अपनी दस हजार एकड़ भूमि तथा दो सौ गुलामों की देखरेख करनी थी।

वास्तव में जेफर्सन फिर कभी यूरोप नहीं आये, किन्तु यहाँ उनकी जो धारणाएँ बनीं, वे स्थायी रूप से उनके साथ रहीं। फ्रांस के प्रति उनका स्नेह बना रहा और १७८६ की वसन्त ऋतु में उन्होंने इंगलैण्ड की जो सात सप्ताह की यात्रा की थी, उससे भी उनके उपरोक्त दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं पड़ा। फ्रांसीसी क्रान्ति ने, जैसा कि उन्हें भय था, उग्रवादियों को सत्ताधारी बना दिया और उन्होंने पूर्ण लोकतंत्र के द्वारा आतंक और अत्याचार का मार्ग अपनाया। किन्तु इस राजनीतिक निराशा के बावजूद भी उनकी फ्रांसीसी मित्रता पर कोई प्रभाव नही पड़ा। जेफर्सन जीवन पर्यन्त १८ वी शताब्दि की दो महान क्रान्तियों की बौद्धिक व्याख्या के साकार रूप बने रहे।

अध्याय–६

विदेश–मंत्री

(१७९०–१७९३)

जेफर्सन की चैन और शांति प्राप्त करने की आशाएं पूरी न हुईं। अमरीका के नये संविधान की १७८८ में पुष्टि हुई और ३० अप्रैल, १७८९ को वाशिंगटन ने अमरीकन प्रेसिडेण्ट का पद ग्रहण किया। काँग्रेस ने तीन शासन-विभागों का गठन किया। विदेश-विभाग (स्वदेशी और विदेशी मामलों सहित) युद्ध-विभाग और कोष-विभाग। राबर्ट मारिस ने वित्त-मंत्री के लिए अलेक्जेण्डर हेमिल्टन के नाम का सुझाव दिया। राबर्ट मारिस ने ही १७८४ तक संघराज्य के वित्त-विभाग को संभाला था, किन्तु वे अब आर्थिक सट्टेबाजी में इतने व्यस्त हो गये थे कि अन्त में उन्हें एक कर्जदार के रूपमें जेल में जाना पड़ा। युद्ध-विभाग हेनरी नोक्स को सौंपा गया, जो कभी वाशिङ्गटन के तोपखाने के प्रधान थे। विदेश-मंत्री-पद के लिए स्पष्टतः ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जिसे कूटनीति

का अनुभव हो। वयोवृद्ध फ्रैंकलिन के अंतिम दिन निकट आगये थे और एडम्स वाइस-प्रेसिडेण्ट के महत्वहीन पद पर आसीन थे। १७८४ से विदेश-विभाग संभालने वाले जान जे मुख्य न्यायाधीश के पद को अधिक पसन्द करते थे। इसलिए जेफर्सन का मनोनयन निश्चित था। वे काफी हिचकिचा रहे थे और उसके लिए कारण भी था—उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति बड़ी जटिल हो गयी थी, किन्तु फरवरी, १७६० के मध्य तक उन्होंने आखिर वह पद स्वीकार कर लिया और नयी अस्थायी राजधानी न्यूयार्क में अपने साथियों से मिलने के लिए वे रवाना हो गये।

५८ वर्षीय वाशिङ्गटन ने जिस मंत्रिमण्डल का गठन किया, उस में जेफर्सन वरिष्ठ सदस्य थे; अब वे ४७ वर्ष के हो चुके थे, एटार्नी जनरल एडमण्ड रण्डोल्फ ४३ वर्ष, बाक्स ४० वर्ष और प्रतिभाशाली हेमिल्टन, जिनके पीछे सार्वजनिक सेवा का एक लम्बा इतिहास था, ३३ वर्ष (या सम्भवत: ३५ वर्ष) के थे। समकालीनों के चित्रों और वर्णनों से उसके शारीरिक स्वरूप का चित्रण करने में सहायता मिलती है। ६ फुट ढाई इंच ऊंचाई, एकहरा बदन, सुर्ख चेहरा और लाल बाल, जो कुछ-कुछ भूरे हो गये थे; देखने में वे उतने ही देहाती प्रतीत होते थे, जितने रुचियों में। अपने लजीले स्वभाव के कारण वे शान्त प्रतीत होते थे और उनका व्यक्ति व उतना भव्य और आकर्षक नहीं था, जितना किसी सहज नेता का होता है, जैसाकि उनके प्रतिद्वन्द्वी हेमल्टन का था।

पेन्सील्वानिया के सिनेटर विलियम मैक्ले ने अपनी पैनी लेखनी से जेफर्सन का वर्णन किया है। सिनेट कमेटी के सामने, जिसके जेफर्सन अध्यक्ष थे, उनके उपस्थित होने पर विलियम मैक्ले ने लिखा:—

"जेफर्सन एक क्षीणकाय पुरुष हैं, उनके व्यवहार में कठोरता दिखाई पड़ती है, उनके कपड़े उन्हें छोटे प्रतीत होते हैं, वे प्राय: एक ओर झुक कर बैठते है और उनका एक कन्धा प्राय: दूसरे से काफी ऊँचा उठा रहता है, उनका चेहरा ताम्रवर्णी है और उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व शिथिल सा प्रतीत होता है। उनके चेहरे से अस्थिरता और रिक्तता टपकती है। उनमें ऐसा दृढ़ और शान्त आचार-विचार नही था, जो एक मत्री की उपस्थिति के लिए शोभनीय समझा जाता है। मैने उनमें गम्भीरता देखने का प्रयास किया, किन्तु उनके व्यवहार में चपलता का ही बोलबाला दिखाई पड़ा। वे प्राय: धाराप्रवाह बोलते थे और उनका सम्भाषण भी उनके व्यक्तिगत चरित्र का ही अंग बन गया था। उनकी

बातें असम्बद्ध और अव्यवस्थित होती थीं। फिर भी, वे जहाँ-कहीं भी जाते, अपनी बातें सुनाते-जाते और कभी-कभी तो उनमें शानदार भावनाओं के दर्शन होते।

इस प्रकार के व्यक्ति को अब अमरीका का विदेश-विभाग सौंपा गया। उन्होंने मंत्रिमण्डल के अंतर्गत ही अमरीका के एक नये माने हुए नेता के रूप में अपने लिए एक अद्वितीय स्थान बना लिया। उस लोकतन्त्र और स्वयं जेफर्सन के बीच विभाजन-रेखा खींचना बड़ा कठिन है।

गत १५ वर्ष की घटनाओं ने अमरीकी पार्टियों के निर्माण और गठन को तथा स्वयं अमरीका के बाह्य रूप को भी बदल दिया। बस्तियों का क्षेत्र विस्तृत हो गया था और उत्तर तथा पश्चिम की ओर वह बढ़ता ही जा रहा था। जनसंख्या भी अब लगभग ४० लाख तक पहुंच चुकी थी, जिनमें लगभग ७ लाख गुलाम थे। यह आबादी फ्रांस के क्षेत्रफल से भी कुछ बड़े क्षेत्र में फैली हुई थी, जबकि आबादी फ्रांस की उस समय २ करोड़ ६० लाख से ऊपर थी। क्रांति के पहले अमरीका की आबादी में देहाती तत्वों का ही प्रभुत्व था, उस समय उनका प्रभाव ऐसा ही था, किन्तु नगरों की स्थिति ऐसी नहीं थी; न्यूयार्क जिसकी आबादी १७९० के बाद के दस वर्षों में प्राय: दूनी हो गयी, व्यापारिक प्रभुत्व में अद्भुत प्रगति कर रहा था।

सम्पत्ति के वितरण में कुछ परिवर्तन हुआ था। अंशतः इसके कतिपय कारण ऐसे थे जिन पर राजनीतिज्ञों का असर नहीं था। दक्षिण के बड़े-बड़े बगान-मालिक, जिनमें स्वयं जेफर्सन भी थे, अपनी भूमि पर तम्बाकू के बजाय खाद्यान्न उत्पन्न करने को विवश हो रहे थे और इस प्रक्रिया से उन्हें अनेक मामलों में हानि उठानी पड़ रही थी। किन्तु दक्षिण की इस हानि से सारे राष्ट्र की जो क्षति हो रही थी, उसकी पूर्ति १७९० के बाद लम्बे रेशे के रूई के विशाल उत्पादन से की गयी। १७९० में अमरीका ने जबकि कुल १ लाख ३८ हजार पौंड रूई का निर्यात किया और १८०० में ३ करोड़ ५० लाख पौंड रूई का निर्यात किया, रुई की खेती के लिए नयी भूमि की खरीद और अधिक गुलामों की खरीद बड़ी तेजी से बढ़ रही थी। ब्रिटिश वस्त्रोंद्योग में भाप के उपयोग और काटन-जिन के आविष्कार ने वर्जीनिया के बजाय दक्षिणी कारोलिना को दक्षिण का प्रमुख राज्य बना दिया और यह परिवर्तन जेफर्सनवादी लोकतन्त्र के लिए बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा। किन्तु यह बात भविष्य में होने वाली थी। सम्प्रति, दक्षिण के हित उतने स्पष्ट नहीं थे और

हाल ही में हुए संघीय सम्मेलन ने दक्षिण में एक वर्ग के रूप में साधारण-सी भूमिका ही अदा की, उसने केवल संघीय सरकार में अपने प्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक जनसंख्या में अपने गुलामों को सम्मिलित कराने में सफलता प्राप्त की। केवल दक्षिणी कारोलिना और जार्जिया ने अफ्रीकी गुलाम व्यापार की, जिससे जेफर्सन को घृणा थी, समाप्ति को स्थगित करने की इच्छा व्यक्त की थी—राष्ट्रीय भावना में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण इसे १८०८ में समाप्त हो जाना बदा था।

सामाजिक श्रेणियों और वर्गों में जो परिवर्तन हुए, उन पर युद्ध और युद्ध-जनित मुद्रा-प्रसार का विशेष प्रभाव पड़ा। प्रायः सभी उपनिवेशों में पहले जो धनाढ्य वर्ग था, उसका बोलबाला अस्त हो चुका था। ऊपरी कनाडा (ओण्टेरिओ) की ओर अधिक विस्तार के कारण अमरीका और कनाडा की पुरानी प्रतिद्वंद्विताओं को नया बल मिला। किन्तु ब्रिटिश सम्राट की राजभक्त जन-संख्या ने अपने अधीन सेंट लारेंस क्षेत्र में फर-व्यापार के स्थान पर कृषि-तंत्र स्थापित करके इस विवाद के शांतिपूर्ण समाधान का रास्ता खोल दिया था। तथापि क्रांति के कारण उपनिवेशों के धनीवर्ग का सर्वनाश नहीं हुआ। इसमें वे नये लोग भी शामिल हो गये, जिन्होंने युद्ध की सरगर्मी में अच्छी पूँजी जमा कर ली थी। कुछ अर्थों में मुद्रा-प्रसार ने भी आर्थिक प्रगति को प्रोत्साहन दिया था। अमरीकी आर्थिक शृंखला में सबसे कमजोर कड़ी उद्योग-धंधे में भी विकास के लक्षण दिखायी पड़ने लगे। १७८६ में मन्दी का अन्त हो गया। इसके फल-स्वरूप बहुतसे लोग मिलकर पूँजी का उपयोग करने लगे और बाल्टिक प्रदेशों तथा सुदूरपूर्व एशिया-जैसे दूरवर्ती क्षेत्रों तक अमरीकी व्यापार के पहुंच जाने से इस प्रवृत्ति को और भी प्रोत्साहन मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि पूँजी-वादी व्यवसाय की बढ़ती हुई वित्तीय मांगों की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत साहू-कारी एवं उधार की प्रक्रिया अपर्याप्त सिद्ध हुई और संयुक्त विनियोग की प्रणाली का विकास हुआ। प्रथम अमरीकी बैंक इसी अवधि में स्थापित किये गये।

भूमि-बिक्री-सम्बन्धी नियमों के मामले में केवल वर्जीनिया ने ही नहीं, अन्य राज्यों ने भी कानून बनाये, जिनसे सट्टेबाजी के व्यवसाय का मार्ग खुल गया। यद्यपि इससे सदा सट्टेबाजों की जेबें गर्म नहीं हुईं (राबर्ट मारिस ने इस तरह का मत प्रकट किया) और न इससे नयी बस्तियों के बसने के कार्य में गम्भीर बाधा ही उपस्थित हुई।

संविधान-निर्माण के प्रश्न पर वर्जीनिया में जिस प्रकार अनुदारवादियों

और उग्रवादियों के बीच संघर्ष हुआ, वैसा अन्य राज्यों में भी हुआ और सर्वोपरि अनुदारवादी शक्तियों की विजय हुई। इससे इन गुटों को व्यापार के अनुकूल व्यापारिक और वित्तीय नियम बनाने में सहायता मिली। मुख्य संघर्ष राज्यीय एवं राष्ट्रीय ऋणों के प्रश्न पर हुआ। ये अधिकतर धनियों के हाथ में गये थे, जो इस तथ्य के बावजूद भी अपना पूरा-पूरा कर्ज चुकाने को तैयार थे, जबकि उनके ऋणपत्रों में दर्ज रकम की कीमत काफी नीचे गिर चुकी थी अर्थात् कागजी मूल रकम से भी बहुत थोड़ी चुका करके सर्टिफिकेट पा चुके थे। इसके अतिरिक्त कर्जदारों और महाजनों के बीच पुराने औपनिवेशिक विवाद ने नया और उग्ररूप धारण कर लिया, क्योंकि शान्ति के बाद मुद्राह्रास की अवधि में कृषि-पदार्थों के भाव गिर गये, जिससे कृषिबन्धक-ऋणों का वास्तविक भार और भी बढ़ गया। १७८६ में मेसाचुसेट्स के कृषक-कर्जदारों का असफल विद्रोह, जो 'शेज-विद्रोह' (Shays' rebellion) के नाम से प्रसिद्ध है, प्रत्यक्षतः इसी का परिणाम था और दो राज्यों—रोड आइलैण्ड और न्यू जर्सी—में क्रांतिकारियों ने सरकार को इतना नियंत्रण में कर लिया कि उन्होंने कर्जदारों की सहायता हो, ऐसी आर्थिक नीति अपनाने के लिए उसे विवश कर दिया।

संघीय संविधान समस्या की यही पृष्ठभूमि थी। इतिहासकारों ने सम्बन्धित समस्याओं को अत्यन्त ही सरल रूप में रखने का प्रयास किया है। दीर्घकाल तक उस युग के इतिहास-लेखन पर फेडरेलिस्ट या हैमिल्टन-परम्परावादियों का ही प्रभुत्व रहा और संघराज्य की इस अवधि को अराजकता, निर्बलता तथा आर्थिक पतन के युग के रूप में चित्रित किया गया है और बताया गया कि नये संविधान को स्वीकार करके ही अमरीका ने अपने को इस स्थिति से बचाया। यह संविधान १७८७ में फिलाडेल्फिया-अधिवेशन द्वारा तैयार किया गया था। बाद में इस दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई है। संघराज्य के इस संविधान को समष्टि के रूप में सफल माना गया। विशेषरूप से उन उग्रवादियों के दृष्टिकोण की यह विजय थी, जो राज्यों के स्वायत्त शासन के कट्टर पक्ष में थे। संविधान की स्वीकृति के लिए चलाया गया आन्दोलन एक प्रकार से एक सफल प्रति-क्रांति का रूप समझा गया, जिसे पैसेवालों ने और विशेषकर उन लोगों ने, जिन्होंने सार्वजनिक ऋण लिये थे, उभाड़ा था। कहा जाता है कि इन लोगों ने आशा की थी कि एक प्रबल संघ-सरकार राज्यों में क्रांतिकारी और मुद्रास्फीतिजनक प्रवृत्तियों को दबा देगी और एक समान व्यापारिक संहिता को अपना कर व्यापारिक व्यवसाय के लिए नया मार्ग प्रशस्त करेगी। आन्दोलन में प्रबल

सैनिक तत्व भी थे, जो सिनसिन्नाटी के समाज में मिल गये थे तथा क्रांतिकारी सेना के वे अफसर भी थे, जिन्होंने एक दृढ सरकार के सेवक के रूप में नये अवसरों की आशा की थी। आन्दोलन के प्रचार में देश की आर्थिक कठिनाइयों पर जोर दिया गया था। साथ ही साथ विदेशी आक्रमण के खतरों पर और फूट से संघराज्य के विघटित हो जाने के खतरों पर भी बल दिया गया था। उग्रवादी लोकतान्त्रिक तत्वों की सम्भाव्य विजय और उसके सम्भावित परिणामों का भयानक चित्र प्रस्तुत करते हुए इन गुटों ने अपने मार्ग पर चलने और एक ऐसी नयी शासन-प्रणाली अपनाने के लिए देश को समझाने में सफलता प्राप्त की, जिसके अधीन देश और भी उन्नति कर सकता था। कहा जाता है कि हेमिल्टन, मेडिसन और जे द्वारा प्रस्तुत 'फेडरलिस्ट' का यह प्रचार मुक्तरूप से स्वीकार किया गया और उसे समय के अनुकूल समझा गया।

यह निश्चित रूप से सत्य है कि संघराज्य के सविधान में संशोधन के पक्ष में मतैक्य की भावना नहीं थी। किन्तु न तो संशोधन के समर्थकों ने और न विरोधियों ने ही एक ठोस गुट बनाया। समर्थकों में कुछ ऐसे लोग थे, जो लोकतंत्र से निराश थे, इनमें मुख्यतः अधिकतर सैनिक तत्व थे, जो युद्धकाल में तथा उसके बाद कांग्रेस के व्यवहार से असन्तुष्ट थे; किन्तु राजतंत्रवादी आन्दोलन की शक्ति १७८९ तक समाप्त हो चुकी थी और जेफर्सन के इस चिर-विश्वास का कोई उचित कारण नही था कि उनके राजनीतिक विरोधी एक अमरीकी सम्राट की स्थापना की बात सोच रहे हैं। दूसरी ओर, निस्सन्देह एक दूसरी स्थिति थी। हेमिल्टन ने अधिवेशन में सविधान के प्रारूप के रूप में जो झलक प्रस्तुत की, उसके अनुसार यदि संविधान में कुछ मनोनीत या प्रतिष्ठित वर्गों को स्थान दिया जाता तो संविधान का निश्चय ही स्वागत होता। जबकि जेफर्सन ने फ्रांस के लिए आदर्श के रूप में इंगलैण्ड की तात्कालिक प्रणाली प्रस्तुत की, हेमिल्टन भी अमरीका के लिए ऐसी प्रणाली का समर्थन करने के लिए तैयार था।

फिलाडेल्फिया के अधिवेशन के विचार-विमर्शों का परिणाम उतना दूरगामी नहीं हुआ; वहाँ मेडिसन ही सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। जो परिवर्तन किये गये उनकी महत्ता पर अत्यधिक बल देना स्वाभाविक ही है। वाशिङ्गटन जैसे व्यक्तियों का इन पर विशेष प्रभाव पड़ा, जो अमरीकी स्थिति की अन्तरराष्ट्रीय निर्बलता से प्रभावित थे। मुख्य परिवर्तनों में एक स्वतंत्र कार्यपालिका का निर्माण तथा कांग्रेस के एक ही सदन में जनसंख्या के अनसार प्रतिनिधित्व

के सिद्धान्त की स्वीकृति थी, जिसके परिणामस्वरूप प्राचीन पद्धति के अन्तर्गत असन्तुष्ट लोगों के एक छोटे से गुट को प्राप्त निषेधाधिकार की शक्ति निर्बल हो गयी। व्यापार-नियमन का एक मात्र अधिकार केन्द्रीय सरकार को दिया गया, जो उस प्राप्त प्रत्यक्ष कराधन और विधान के सीमित अधिकारों से अधिक महत्वपूर्ण था। इसका अर्थ है कि उसे अन्त में स्वतंत्र राजस्व का अधिकार प्राप्त हो गया।

नये संविधान की पुष्टि का विभिन्न प्रकार से विरोध किया गया। पुरानी राजनीतिक दलबंदी के आधार पर किसी हद तक यह संघर्ष चल रहा था, तटवर्ती क्षेत्रों ने संविधान का समर्थन किया और नये प्रदेशों ने इसका विरोध किया। बहुत से ऐसे लोग भी थे, जो अपने आर्थिक सम्बन्धों अथवा सामाजिक स्वार्थों की परवाह न करके, अनमने इस बात से प्रभावित थे कि संघीय सरकार का राज्यों के सम्बन्ध में अधिकतर वही स्थान होगा, जो शाही सरकार का उपनिवेशों के सम्बन्ध में था। ये लोग नये सविधान के विरोध में प्रायः उन्हीं कारणों से थे, जिन कारणों से प्राचीन प्रणाली भंग हुई थी। सविधान पर सबसे लम्बा वादविवाद वर्जीनिया में हुआ और यहीं पर अभिजात और लोकतंत्र-वादी वर्ग के बीच तथा पूँजीवादी और भूस्वामी वर्ग के बीच द्वन्द्व आरम्भ हो जाता है। एक ओर थे मेडिसन, भावी विदेशमंत्री जान मार्शल, एडमण्ड पेण्डल्टन और जार्ज वाइथ; दूसरी ओर थे पेट्रिक हेनरी, जार्ज मेसन, जेफर्सन के घनिष्ठ मित्र और प्रशंसक जेम्स मनरो और रिचर्ड हेनरी ली। संविधान के समर्थकों को मुख्यतः तटवर्ती क्षेत्रों से समर्थन मिला, जबकि पीडमोण्ट में हेनरी का प्रभाव कायम रहा। इन समर्थकों ने किसी प्रकार एडमण्ड रण्डोल्फ को भी अपने पक्ष में कर लिया, एडमण्ड रण्डोल्फ फिलाडेल्फिया के उन प्रतिनिधियों में थे, जिन्होंने संविधान पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। दूसरी ओर, शेनानडोह घाटी के सीमावर्ती लोगों ने तटवर्ती बड़े-बड़े भूस्वामियों का साथ दिया और संविधान की पुष्टि का समर्थन किया, जिससे अन्तरराज्यीय व्यापार उन्मुक्त हो जाय और शान्ति-सन्धि के कार्यान्वय में सहायता मिले।

यह तो स्पष्ट है कि जेफर्सन की सहानुभूति किस ओर है, इसका पहले सफलतापूर्वक अनुमान नहीं लगाया जा सका। यद्यपि उन्होंने प्राकृतिक अधि-कार-दर्शन के लोकतांत्रिक स्वरूप का प्रतिपादन किया और कभी कभी स्पष्ट शब्दों में कहा भी कि सच्चे प्रजातंत्र का आधार बहुमत का शासन है, जिसे उनके लेखों से उद्धृत किया जा सकता है, तथापि उन्होंने कभी भी यह विश्वास

नहीं किया कि बहुमत के क्षणिक मानसिक आवेग सर्वदा ईश्वर द्वारा अनुप्राणित होते हैं। उन्होंने वर्जीनिया-संविधान की आलोचना अधिकतर इसीलिए की कि उसमें अधिकारों के पृथक्करण का सम्मान करने के लिए उचित व्यवस्था नहीं की गयी। उन्होंने इस बात की भी प्रतिकूल आलोचना की कि उसकी विधानसभा के दोनों सदनों का निर्माण प्रायः एक ही ढंग से हुआ है।

"कुछ अमरीकी राज्यों में प्रतिनिधियों और सिनेटरों का चुनाव इस प्रकार होता है, मानों पहला सदन जनसख्या का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा सदन राज्य की सम्पत्ति का; किन्तु हमारी स्थिति भिन्न है, दोनों सदनों में प्रवेश के लिए सम्पत्ति और बुद्धि को समान अवसर हैं। इसलिए, हमें विधानसभा के दो सदनों के विभाजन से वे लाभ नहीं मिलते, जो सिद्धान्तों के समुचित समन्वय से उत्पन्न हो सकते हैं और वे लाभ भी नहीं मिलते, जो उनके पृथक्करण से उत्पन्न दोषों के लिए क्षतिपूर्ति कर सकते हैं।

'नोट्स आन वर्जीनिया' में अभिव्यक्त इस प्रकार की भावनाओं से आभास मिल सकता है कि नयी संघीय प्रणाली के प्रमुख सिद्धान्तों का तत्काल स्वागत किया जायगा और विशेषकर इसलिए भी कि जेफर्सन को संघराज्य के संविधान की कमजोरियों का विदेशी शक्तियों से बातचीत करते समय काफी आभास मिल चुका था। दूसरी ओर, उन्होंने इस कथन को ब्रिटिश प्रचारमात्र बताया कि देश में आराजकता फैलती जा रही है। शेज का विद्रोह, जिसका सम्मेलन पर प्रभाव पड़ा, संघ प्रणाली के विरोध का प्रमाण नहीं था। उसके पीछे प्रपंच नहीं, अज्ञान था, इस विश्वास के साथ कि शासकों ने जो किया उसके कारण जनता का विद्रोह करना उचित था। अन्यथा यदि वे सोये रहते तो स्वाधीनता की ही हत्या हो जाती......क्या कोई देश अपनी स्वाधीनता की रक्षा कर सकता है, यदि उसके शासकों को समय पर यह चेतावनी न दीजाय कि उनकी जनता में प्रतिरोध की भावना सुरक्षित है?......यदि एक दो शताब्दि में कुछ बलिदान हो भी जाय तो उसका क्या? स्वतंत्रता के पौधे को समय-समय पर देशभक्तों और अत्याचारियों के खून से सींचते रहना चाहिए? यही उसकी स्वाभाविक खाद है"।

एक निजी पत्र में लिखी गयी यह बात बहुत ही कटु है और यदि जेफर्सन की बातचीत में प्रायः ऐसी तीखी चीजें पिलती है तो उससे उनकी क्रान्तिकारी ख्याति को और भी आसानी से समझा जा सकता है। जब उन्हें फ्रांस में संविधान की मूल प्रति उपलब्ध हुई तो उन्होंने स्वीकार किया कि उसके

विरुद्ध कुछ तर्क निराधार नहीं है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि वर्जीनिया इसे ठुकरा देगा और पुन: उसका संशोधित रूप प्रस्तुत करेगा ।

मेडिसन और दूसरे लोगों को लिखे गये पत्रों में उन्होंने इस बारे में अपनी आलोचनाएं प्रकट की हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, जिसकी अन्त में पूर्ति भी की गयी, एक औपचारिक मानवीय अधिकार की धारा को छोड देना था, जिसमें स्पष्ट रूप से और बिना किसी छलकपट के धर्म की स्वतन्त्रता, प्रेस की स्वतंत्रता स्थायी सेनाओं के विरुद्ध संरक्षण, एकाधिकारों के विरुद्ध प्रतिबन्ध, बन्दी-उपस्थापन कानूनों की स्थायी और निर्बाध शक्ति तथा जूरी द्वारा मुकदमों के फैसले की व्यवस्था थी...। जेम्स विल्सन ने जो तर्क प्रस्तुत किया और जिसको 'फेडरलिस्ट' ने प्रतिध्वनित किया, वह यह था कि प्रतिनिधिमूलक सरकार को उसके अधिकारों को सीमित करने के लिए 'अधिकार-विधेयक' की आवश्यकता नहीं है। इसका जेफर्सन पर कोई प्रभाव नही पड़ा। "अधिकार-विधेयक एक ऐसी चीज है, जिसे विश्व की किसी भी सामान्य या विशिष्ट सरकार के विरुद्ध जनता को पाने का अधिकार है और जिसे कोई भी न्यायप्रिय सरकार इनकार नहीं कर सकती और न निष्कर्षों के भरोसे रह सकती है।" दूसरे एक ही व्यक्ति के दुबारा प्रेसिडेण्ट चुने जाने के अधिकार पर आपत्ति की; उन्होंने यह महसूस किया कि इससे कभी इनकार नहीं किया जा सकता; यह पद जीवन भर के लिए बन जायेगा, जिसके फलस्वरूप विदेशी शक्तियाँ देश के निर्णय को प्रभावित करने का प्रयास करेंगी। एक मामूली आपत्ति यह थी कि प्रेसिडेण्ट के निषेधाधिकार के उपयोग में न्यायाधिकारी-वर्ग उसके साथ सम्बद्ध नहीं है और न उस क्षेत्र को ऐसा ही और पृथक अधिकार दिया गया है। शायद यह उनके इस विश्वास के कारण था, जिसका उनके बाद के लेखों से पता चलता है, कि अमरीकी अपने कानूनों की अस्थिरता के कारण परेशान हैं और एक विधेयक के प्रस्तुत किये जाने और उसे कानून के रूप में पारित होने के बीच कम से कम बारह महीने का समय होना ही चाहिए ।

यह देखते हुए कि जेफर्सन के बाद के राजनीतिक जीवन का अधिकांश भाग सर्वोच्च न्यायालय से संघर्ष में बीता, यह आश्चर्य की बात है कि इस स्थिति में भी न्यायाधिकारी वर्ग में उनका विश्वास बना हुआ था। उन्होंने मेडिसन को लिखा—"अधिकार-पत्र के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करते हुए आप एक बात छोड़ देते हैं, जिसका मेरे लिए बहुत बड़ा महत्व है और वह है कानूनी अवरोध, जो न्यायाधिकारियों को ऐसी शक्ति प्रदान करता है। यह ऐसा विभाग है कि उसे

यदि पूर्ण स्वतंत्र कर दिया जाय और उसे अपने ही तक सीमित कर दिया जाय तो वह अपनी विद्वत्ता और ईमानदारी के कारण जनता का विश्वासभाजन बन सकता है। एक वर्ष पूर्व उन्होंने राज्य-न्यायालयों से संघीय न्यायालय को पुनरावेदन की प्रणाली का समर्थन किया था। न्यायिक पुर्नविचार की कल्पना से जेफर्सन उतने ही परिचित थे, जितने इस प्रणाली के संस्थापक पितृगण, यद्यपि आम तौर पर यह विचित्र विश्वास व्याप्त था कि जान मार्शल के अप्रत्यक्ष प्रयास से ही इसे अमरीकी सांविधानिक प्रणाली में स्थान दिया गया। हो सकता है कि जेफर्सन ने लिखित संविधान के अन्तर्गत न्यायिक सत्ता के सम्भाव्य विस्तारों को पूर्णरूप से न समझा हो।

वास्तव में यदि अरस्तू की भावना के अनुसार बहुमत अथवा गरीबों के शासन के रूप में लोकतंत्र का अर्थ लगाया जाये तो जेफर्सन ने संविधान की जिस तरह आलोचना की है, उसमें ऐसी कोई चीज नहीं है, जो यह सिद्ध करे कि उस समय वे प्रजातंत्रवादी थे। उन्होंने अपनी पार्टी का नाम जो 'रिपब्लिकन' रखा था, वह 'डेमोक्रेट' की अपेक्षा अधिक उपयुक्त था। रिपब्लिकन दल ने ही अपने विरोधियों को डेमोक्रेट का नाम दिया। अन्त में ह्विग और टोरी की भाँति उन्होंने ही इसे सम्मान के प्रतीक के रूप में अपना लिया, भले ही वे इसे पहले निन्दात्मक समझते थे।

मेडिसन की भाँति जेफर्सन को भी अनियंत्रित बहुमत शासन का सबसे अधिक भय था। उन्होंने घोषणा की, "हमारे शासन में कार्य पालिका की निरंकुशता ही मेरी ईर्ष्या का एकमात्र विषय नहीं है और न मुख्य विषय है। विधानमण्डलों की निरंकुशता सम्प्रति सबसे भयानक खतरा है, जो वर्षों तक रहेगा। कार्यपालिका की निरंकुशता का खतरा तो एक लम्बी अवधि के बाद आयेगा।" एक सच्चे जेफर्सनवादी के लिए सारी सरकारें सन्देहास्पद होंगी—"मैं दावा करता हूँ कि मैं किसी प्रबल सरकार का मित्र नहीं हूँ। वह सर्वदा दमनात्मक होती है।"

अन्त में अधिकार-विधेयक को स्वीकार करके संविधान के बारे में जेफर्सन के जो मुख्य सन्देह थे, उनको दूर कर दिया गया। जब वे अमरीका वापस आये, तो वे अपने देश के राजनीतिक भविष्य के बारे में विश्वस्त थे। यह सोचना भूल होगी कि वाशिंगटन ने अपने मंत्रिमण्डल में एक निश्चित पार्टी-सन्तुलन तैयार करने के लिए जेफर्सन को उसमें सम्मिलित किया। १७६० में नये संविधान के समर्थकों और विरोधियों के बीच, संघवादियों और संघ-

विरोधियों के बीच मतभेद था। इसमें जेफर्सन की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी। १३ मार्च, १७८९ को पेरिस से उन्होंने लिखा :

"मैं संघवादी नहीं हूँ, क्योंकि जहाँ कहीं मैं स्वयं विचार करने की क्षमता रखता हूँ, वहाँ मैं अपनी समस्त विचार-पद्धति को किसी भी पार्टी के सिद्धान्त के सामने, चाहे वह पार्टी धार्मिक हो, दार्शनिक हो, राजनीतिक हो अथवा अन्य कुछ हो, कभी समर्पित नहीं करता। इस प्रकार की आदत किसी स्वतंत्र और नैतिक अभिकर्ता का अन्तिम अपमान है। यदि मैं बिना अपनी पार्टी के स्वर्ग में नहीं जा सकता, तो मैं वहां कदापि ही नहीं जाऊँगा। इसलिए मैं आपकी इस बात का विरोध करता हूँ कि मैं संघवादी दल का हूँ, बल्कि मैं संघ-विरोधियों के दल से भी बहुत आगे हूँ।......मैं किसी पार्टी का नही हूँ और न मैं पार्टियों के बीच कांट-छांट करनेवाला हूँ"। इसलिए हाल की घटनाओं में ऐसी कोई चीज नहीं थी, जो जेफर्सन के लिए नये प्रशासनके पथप्रदर्शक के रूप में हेमिल्टन के साथ मिलकर काम करना असम्भव बना देती। जेफर्सन के पदग्रहण के बाद जो घटनाएं घटीं, उनके परिणामस्वरूप उनमें मनमुटाव और संघर्ष उत्पन्न हुआ और १७९०-९३ के वर्षो के राजनीतिक इतिहास के ये ही मूल तत्व थे। अपनी आत्मकथा के कुछ अंशों में, जो 'अनास' (Anas) के नाम से प्रसिद्ध है, जेफर्सन ने बताया हेमिल्टन का विरोध उस समय से आरम्भ हुआ, जब "न्यूयार्क पहुँचने के बाद प्रशासनिक क्षेत्रों में व्याप्त प्रबल रिपब्लिकन-विरोधी प्रवृत्ति का मुझे पता चला," किन्तु सम्भव यही प्रतीत होता है, जैसा कि इस विवरण से प्रकट होता है, कि मतभेद धीरे-धीरे उत्पन्न हुए होंगे।

जेफर्सन और हेमिल्टन के बीच राजनीतिक मतभेद उन व्यावहारिक समस्याओं के सम्बन्ध में उत्पन्न हुए, जो वाशिंगटन-मन्त्रिमण्डल के सामने उनके प्रथम प्रशासन-काल में उपस्थित हुई थीं। आन्तरिक एवं वैदेशिक, दोनों तरह की समस्याएँ थीं, किन्तु दोनों का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध था। हेमिल्टन का उद्देश्य नवनिर्मित सरकार को सुदृढ़ बनाना और उसके भाग्यसूत्र को व्यापारिक वर्गों के साथ सम्बद्ध करना था। पर्याप्त राजस्व की उपलब्धि हा इसका आधार था। सीमा-शुल्क से काफी धन प्राप्त कर इसकी पूर्ति की जा सकती थी और इसके लिए पहले ही से अधिक मात्रा में विदेशी व्यापार की कल्पना की गयी थी। वर्तमान परिस्थियों में, इस दिशा में एकमात्र द्रुतगामी मार्ग यथासम्भव शीघ्र ब्रिटेन के साथ अमरीका का पुनः व्यापारिक

सम्बन्ध स्थापित करना था। इसका अर्थ था उचित अमरीकी हितों को भी दाव पर लगाकर ग्रेट ब्रिटेन के साथ अच्छा राजनीतिक सम्बन्ध कायम करना। इस प्रकार हेमिल्टन ने वित्त-मन्त्री के रूप में जो नीति अपनायी, उससे उन्होंने अपने सहयोगी के विभाग के कार्य को प्रभावित करने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, उन्होंने ब्रिटिश प्रतिनिधियों से गुप्त सम्बन्ध स्थापित कर उसमें सक्रिय हस्तक्षेप करने का भी प्रयत्न किया। फ्रांसीसी क्रांति ने एक नयी सैद्धांतिक गुत्थी उत्पन्न कर दी, क्योंकि जेफर्सन के अनुसार हेमिल्टन की ब्रिटिश-समर्थक नीति का कारण उनका ब्रिटिश शासन-प्रणाली से प्रेम था और फ्रासीसी सन्धि को कायम रखने की जेफर्सन की इच्छा का कारण क्रांतिकारी सिद्धातों के प्रति उनकी आन्तरिक सहानुभूति बतायी जाती है।

सैद्धान्तिक समस्या ने ही जेफर्सन को पहलेपहल अपने पुराने सहयोगी जान एडम्स से पृथक कर दिया। जान एडम्स ने नये संविधान की इस दृष्टि से आलोचना की कि उसके अन्तर्गत कार्यपालिका की शक्ति निर्बल हो जाती है। एक उच्च शास्त्रीय राजनीतिक निबन्ध संस्था के उपाध्यक्ष के रूप में 'डिस्कोर्सेज आन डेविला' का प्रकाशन कर उन्होंने अपने को छद्म राजतंत्र के समर्थक के रूप में आलोचना का पात्र बना दिया। १७९१ में पेन के 'राइट्स आफ मैन' के प्रकाशन तथा अन्य सैद्धान्तिक वादविवादों ने फ्रांस की घटनाओं के समर्थकों और विरोधियों के बीच की खाई और चौड़ी कर दी। इस समय तक जेफर्सन पर, जो हेमिल्टन की भाँति, पत्रों को प्रभावित करने का खतरनाक खेल खेल रहे थे, एडम्स का प्रमुख निन्दक होने का खुला आरोप लगाया जा रहा था। दूसरी ओर, हेमिल्टन भी, चाहे उनके निजी विचार कुछ भी रहे हों, एडम्स से सन्तुष्ट नही थे, क्योंकि वे विरोधियों को उनके प्रशासन की प्रवृत्तियों पर प्रहार करने का आधार प्रदान कर रहे थे। इस प्रकार फेडरलिस्ट पार्टी अपनी व्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता के कारण शीघ्र ही छिन्नभिन्न हो गयी। दूसरी ओर, जेफर्सन ने शीघ्र ही जेम्स मेडिसन का समर्थन प्राप्त कर लिया, जो संविधान के वास्तविक जनक थे और फेडरलिस्ट पार्टी में हेमिल्टन के सहयोगी थे। वे प्रतिनिधि-सभा के एक प्रमुख सदस्य थे। प्रतिनिधि-सभा पर अभी सिनेट की छाया नही थी, जैसी कि बाद में हुई। इस प्रकार, कुछ ही वर्षों में, फेडरलिस्ट पार्टी का एक अंग वर्जीनिया पृथक हो गया और अमरीकी क्रान्ति के राष्ट्रीय गठबन्धन का अन्त हो गया। दूसरी ओर, जेफर्सन और मेडिसन को अब संघवादियों के पुराने विरोधियों का समर्थन प्राप्त हुआ, जिन्होंने नये संविधान का विरोध किया

था, किन्तु जो अब उसके नाम पर हेमिल्टन द्वारा किये गये परिवर्तनों के विरोधी थे। कुछ तो दक्षिण के किसान राज्यों के अधिकार के नाम पर हेमिल्टन द्वारा धनिकों के पक्षपात का विरोध कर रहे थे, कुछ सीमावर्ती लोग पश्चिम की ओर व्यापारिक अधिकार सम्बन्धी उनकी समस्याओं की उपेक्षा पर आपत्ति कर रहे थे और कुछ मध्य-राज्यों में हेमिल्टन के प्रतिद्वन्द्वी न्यूयार्क के जार्ज क्लिण्टन के अनुयायी विरोध कर रहे थे।

इस दृष्टिकोण से अमरीका में १८ वीं शताब्दि के अन्तिम दस वर्ष द्विदलीय पद्धति के निर्माण के वर्ष थे। अभी तक सांविधानिक प्रणाली में पार्टियों का नाम नहीं था और उसका उद्देश्य किसी हद तक उन्हें निरुत्साहित करना ही था। किन्तु संघराज्य-काल के खतरों के बाद यह राष्ट्रीय मुक्ति का भी युग था। आन्तरिक और बाह्य, दोनों ही दृष्टियों से सरकार का कार्य ध्यान देने योग्य है।

वाशिंगटन-प्रशासन की गृह-नीतियाँ हेमिल्टन की नीतियाँ थीं। जेफर्सन का कार्य मुख्यतः एक आलोचक और आक्षेपकर्त्ता का कार्य था। जब तक जेफर्सन ने पदग्रहण किया, तब तक हेमिल्टन ने राष्ट्रीय अर्थतंत्र को पुनः स्थापित करने तथा अपने आन्तरिक एवं विदेशी ऋण को चुकता करने के कार्य में पहले ही से काफी प्रगति कर ली थी। अभी भी मुख्य विवादास्पद समस्या राज्य के ऋणों की थी। हेमिल्टन चाहते थे कि इन ऋणों को संघीय सरकार अपने हाथ में ले ले, जिसका राजनीतिक कारण अधिकांशतः यह था कि धन-विनियोग की समृद्धि का शासन की स्थिरता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता। इस प्रस्ताव का उन लोगों ने तीव्र विरोध किया, जिनका यह कहना था कि समानता के आधार पर इन ऋणों के भुगतान का अर्थ होगा उन लोगों के हाथ में अधिक लाभ सौंपना, जिन्होंने मूल महाजनों से कम सूद पर लिया था। यह भी एक तथ्य था कि कुछ राज्यों पर और विशेषकर वर्जीनिया पर, जिसने अपना अधिकांश ऋण चुकता कर दिया था, इस कार्रवाई से कर का अधिक भार पड़ जाता और उसका लाभ संविधान की कम परवाह करने वाले राज्य उठाते।

दोनों मन्त्रियों के बीच राजनीतिक सौदेबाजी से अन्त में इस मामले का समाधान हो गया। जेफर्सन और कांग्रेस में उनके समर्थकों ने 'अधिकार-विधेयक' को स्वीकार कर लिया, बशर्ते संघ की राजधानी पोटोमक के तट पर दक्षिणी प्रदेश में स्थापित की जाय। बाद में जेफर्सन ने इस रियायत पर खेद

प्रकट किया, जिसने दो करोड़ लोगों को महाजनों के शिकंजे में डाल दिया और वित्तमंत्री के भक्तों की संख्या में वृद्धि कर दी। 'अनास' में उन्होंने इस कारोबार में अपनी भूमिका को कम महत्व देने का प्रयास किया।

जेफर्सन की मूल स्थिति के और भी प्रतिकूल हेमिल्टन का यह प्रस्ताव था कि कांग्रेस को एक नेशनल बैंक के नोट जारी करने तथा संघीय सरकार को ऋण देने का अधिकार देना चाहिए। जेफर्सन ने वित्तीय योजनाओं, प्राक्कलनों तथा बजटों में अपने को नौसिखिया बताया, किन्तु विशुद्ध आर्थिक मामलों में यदि उनका कोई मत था तो अपनी ही परिस्थिति के अन्य लोगों की भाँति उन्होंने पहले से कुछ उग्र धारणाएं बना रखी थीं और इनमें से एक धारणा किसी भी प्रकार के कागजी मुद्रा के प्रचलन के विरोध में थी। ब्रिटिश आर्थिक प्रणाली की उन्होंने आलोचना की थी "कागजी मुद्रा गरीबी है...वह स्वयं मुद्रा नहीं, मुद्रा की छाया है।" जेफर्सन ने 'कठोर मुद्रा' के अपने इस रुख को सर्वथा कायम रखा और अमरीका के प्रस्तावित द्वितीय बैंक के प्रस्ताव पर १८१६ में उन्होंने पुनः अपनी इसी आलोचना को दुहराया। एण्ड्रू जैक्सन की भाँति जेफर्सन को अपने ही दल के एक गुट का सामना करना पड़ा, जो अपनी अत्यंत ऋणग्रस्तता की स्थिति के कारण कागजी मुद्रा और क्रमिक मुद्रा-स्फिति के पक्ष में हो गया था, किन्तु जैक्सन की भाँति उनकी प्रवृत्ति सर्वदा विपक्ष में ही रही।

इसके अतिरिक्त, यह भय था कि प्रस्ताविक बैंक से हेमिल्टन पार्टी की शक्ति और बढ़ेगी और कांग्रेस में उनके ऐसे स्वार्थी अनुयायियों की संख्या बढ़ेगी, जो कोष और उसकी प्रणाली के साथ अपने स्वार्थों से आबद्ध होंगे। हेमिल्टन की एक दूसरी प्रस्तावित कार्रवाई—अन्तः शुल्क विधेयक की भाँति, जो १७९१ में कानून के रूप में पारित हुआ—बैंक की स्थापना से भी यह भय था कि इससे उसके व्यावसायिक समर्थकों को नये अवसर प्राप्त होंगे। अधिकांश लोगों का अपनी जीविका के लिए पूर्णतः या आंशिक रूप से संघीय सरकार अथवा नेशनल बैंक से जुड़ी हुई किसी संस्था पर आश्रित होना, जेफर्सन के विचार से जनतांत्रिक-शासन का विरोधाभास था।

हेमिल्टन के कार्यक्रमों का जेफर्सन द्वारा विरोध का मूल कारण आर्थिक के बजाय राजनीतिक था। सितम्बर १७९२ में जेफर्सन ने वाशिंगटन के नाम एक पत्र में अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखा, "हेमिल्टन की पद्धति स्वतंत्रता के विपरीत सिद्धान्तों से निःसृत है और उसका उद्देश्य विधानमण्डल के सदस्यों

पर अपने विभाग का प्रभाव जमा कर जनतंत्र को नष्ट-भ्रष्ट कर देना है।" इसके अतिरिक्त हेमिल्टन की कम से कम दो कार्रवाइयाँ, बैंक-विधेयक और संरक्षात्मक आयात-निर्यात-कर के लिए असफल प्रस्ताव, जेफर्सन को नये संविधान के सिद्धान्तों के प्रतिकूल जान पड़ती थीं।

स्वयं वाशिंगटन को बैंक-विधेयक पर हस्ताक्षर करने के बारे में सांविधानिक अड़चनें प्रतीत हुईं और अन्तिम निर्णय के पूर्व उन्होंने विधेयक की अवैधानिकता के प्रश्न पर हेमिल्टन और जेफर्सन से लिखित मत माँगे थे। हेमिल्टन के विचार से, यह स्पष्ट है कि उन्होंने संघीय सरकार को केवल कतिपय अधिकारों से ही सम्पन्न माना था, किन्तु ये अधिकार भी सर्वोच्च थे; क्योंकि उन्होंने कहा, "यह सामान्य सिद्धान्त सरकार की व्याख्या में ही सन्निहित है और अमरीका की प्रगति के प्रत्येक चरण के लिए आवश्यक है अर्थात् शासन में निहित प्रत्येक अधिकार सार्वभौमिक है, जिसके अन्तर्गत इस तरह के अधिकारों के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक और अत्यन्त उपयोगी सभी साधनों के प्रयोग का अधिकार भी आ जाता है, जो संविधान में निहित प्रतिबन्धों और अपवादों से सीमित नहीं है, न यह अनैतिक ही है और न राजनीतिक समाज के महत्वपूर्ण उद्देश्यों के प्रतिकूल है।"

इस प्रकार के तर्क और संविधान की 'सामान्य कल्याण' धारा की सहायता से एक बैंक को अधिकारसम्पन्न बनाने का अर्थ सामान्य कर लगाने के सांविधानिक अधिकार से प्राप्त किया गया।

जो भी हो, जेफर्सन के लिए 'सामान्य कल्याण' धारा का अर्थ इतना विस्तृत अधिकार नहीं था। कांग्रेस 'सामान्य कल्याण' के नाम पर मनमानी कुछ भी नहीं कर सकती थी, वह इस उद्देश्य के लिए केवल कर लगा सकती थी। बैंक को अधिकारसम्पन्न बनाने का अर्थ कर लगाने के अधिकार जैसा नहीं था। अन्यथा, उन्होंने कहा कि संघीय सरकार के अधिकारों की व्याख्या का सारा उद्देश्य ही नष्ट हो जायगा। संविधान का सारांश केवल यही रह जायगा, "जो कुछ भी अमरीका के हित में होगा, उसे करने के अधिकार के साथ कांग्रेस की स्थापना और चूंकि वही भलाई या बुराई की एक मात्र निर्णायक होगी, इसलिए इच्छानुसार कैसी भी बुरी बात करने का भी अधिकार होगा।"

संविधान का उपयोग कर कांग्रेस को और अधिक अधिकारसम्पन्न बनाने का एक दूसरा तरीका यह था कि संघीय सत्ता में निहित निश्चित अधिकारों के

कार्यान्वय के लिए सभी आवश्यक और उचित कानूनों के बनाने के उसके अधिकार की व्यापक व्याख्या की जाय। जेफर्सन का तर्क यह था कि इस प्रसंग में 'आवश्यक' का अर्थ केवल सुविधाजनक नहीं था, बल्कि 'अनिवार्य' था। जब तक अतिरिक्त अधिकार की माँग के बिना एक विशिष्ट अधिकार कार्यान्वित नहीं किया जाता तब तक उसके लिए कोई सांविधानिक सत्ता नहीं है और स्पष्ट है कि कर लगाने के अधिकार के संचालनार्थ नेशनल बैंक 'अनिवार्य आवश्यकता' नहीं है। जेफर्सन की दृष्टि से बैंक विधेयक और भी निन्दनीय था, क्योंकि उसके अधिकार अनेक राज्यों के कतिपय अत्यन्त प्राचीन एवं मूलभूत अधिकारों को भी दबा देते थे।

इस मतभेद से जो समस्याएँ उत्पन्न हुईं, वे बैंक की तात्कालिक समस्या से भी आगे बढ गयी और विधेयक पर वाशिंगटन के हस्ताक्षर के बाद भी आन्दोलन का कारण बनी रहीं; क्योंकि इनसे प्रगट हुआ कि नये संविधान की जिस प्रकार व्याख्या की जाती है, उसमे बिल्कुल भिन्न रूप प्रस्तुत करने की उसमें क्षमता है। इस पर स्वयं 'फेडरलिस्ट' के समर्थकों में मतभेद था। हेमिल्टन और जे उन व्यक्तियों में थे, जिनकी धारणा यह थी कि फिलाडेल्फिया में जो कुछ स्वरूप गढा गया वही वस्तुतः एक राष्ट्रीय सरकार थी, जिसे सार्वभौमिक सत्ता के अन्तर्निहित अधिकार प्राप्त हैं, और जो सार्वजनिक हित के लिए उनका पूर्ण उपयोग करने के लिए उत्तरदायी है। वे केवल अपने संघीय स्वरूप की विशिष्ट मर्यादाओं से ही परिसीमित हैं। मेडिसन ने नये संविधान की व्याख्या संघराज्य के परम्परागत विधान के रूप में की और कहा कि नया सविधान उन सार्वभौमिक राज्यों के बीच सौदेबाजी का साधनमात्र है, जिन्होंने अपने ऐसे अधिकारों को एक केन्द्रीय सत्ता को सौंप दिया है, जिनका संचालन सामूहिक रूप से हो सकता है, किन्तु जो अपने व्यक्तित्व को अथवा अपने नागरिकों के प्रति अपने प्राथमिक उत्तरदायित्व को समर्पित करने का इरादा नहीं रखते। जेफर्सन का भी ऐसा ही मत था। अधिकार और अनुबन्ध की भावनाएँ, जो राजनीतिक दायित्व के उनके सिद्धांत की आधार थीं, अब व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश कर चुकी थीं। व्यक्तियों के बीच सामाजिक अनुबन्ध के बजाय अब समुदायों के बीच अनुबन्ध स्थापित हो चुका था और सम्बन्धित समुदायों—राज्यों ने उसी प्रकार अपने अधिकारों को सघ को समर्पित कर दिया था, जिस प्रकार मनुष्यों ने समाज में प्रवेश के बाद अपने प्राकृतिक अधिकारों को समाज को समर्पित कर दिया था। विभाजित सार्वभौमिकता के इस रूप से अधिवेशन के

समय इस मूलभूत मतभेद को दूर करने में सहायता मिली, किन्तु ज्यों-ज्यों विभिन्न स्वार्थों ने दलों का रूप धारण करना आरम्भ किया, पुनः धर्म-संकट उत्पन्न हो गया जो जेफर्सन के जीवन-काल में तथा बाद में वर्षों तक कायम रहा।

मंत्रिमण्डल के अन्तर्गत बढ़ते हुए संघर्ष की इस पृष्ठ भूमि में ही हमें विदेश-विभाग में जेफर्सन के कार्य पर विचार करना है। जैसा कि देखा गया है, नयी सरकार को पुरानी कांग्रेस से उत्तराधिकार के रूप में अनेक ऐसी उलझनपूर्ण समस्याएं मिली, जिनका मुख्यतः ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के साथ सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता था। पदग्रहण के पूर्व स्वयं जेफर्सन इस विचार के थे कि ऐसा कोई कार्य न किया जाय, जिससे संकट उत्पन्न हो। यूरोप उनके लिए एक विशाल बारूद-खाना-सा प्रतीत होता था, जहां किसी भी कारण से विस्फोट हो सकता था और बड़ी शक्तियाँ एक बार फिर आपस में भिड़ सकती थीं। ऐसी परिस्थितियों में अमरीका, ग्रेट-ब्रिटेन और स्पेन के बीच सौदेबाजी कर सकता था और अपनी अनुकूल तटस्थता का उपयोग अपने हितों की स्वीकृति के बदले शक्ति-सन्तुलन में कर सकता था (युद्ध की बात केवल धमकाने के लिए थी)।

१७९० में ब्रिटिश और स्पेनिश विस्तार की सीमा-रेखाएँ उत्तरी अमरीका के प्रशान्त तट पर नूटका साउण्ड के पास टकरा गयीं। एक बार तो युद्ध प्रायः निश्चित-सा प्रतीत होने लगा। जेफर्सन का मत था कि इस अवसर से लाभ उठाकर अमरीका को स्पेन से मिस्सिसिपी में नौकानयन की स्वतन्त्रता और इसके साथ ही साथ वस्तुओं के यातायात के लिए एक बन्दरगाह भी प्राप्त करना चाहिए, जिसके बिना नौकानयन का अधिकार निरर्थक होगा। स्पेन ने इसको स्वीकार कर लिया था। किन्तु जेफर्सन इस समय अमरीका में स्पेन के नाम-मात्र के प्रदेशों पर उसके अधिकार को खतरे में डालना नहीं चाहते थे। १७८६ में ही उन्होने गृह-विभाग को लिखा था, "हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं हम उस महाद्वीप के स्वार्थ का ख्याल कर स्पेनवासियों पर बहुत जल्द दबाव न डाल बैठें। वे प्रदेश अच्छे हाथों में नहीं रह सकते। मुझे भय है कि वे उन पर अधिकार कायम रखने के लिए बहुत ही कमजोर हैं और जब हमारी जनसंख्या बढ़ेगी, हम धीरे-धीरे एक-एक करके उन पर कब्जा कर सकते हैं। मिस्सिसिपी में नौकानयन का अधिकार हमें प्राप्त करना चाहिए। अभी हमें इतना ही प्राप्त करने के लिए तैयार रहना है।"

यह आशंका वास्तव में उस समय सही सिद्ध हुई, जब यह संभावना पैदा

हुई कि युद्ध की स्थिति में ब्रिटेन लुइसियाना और फ्लोरिडा पर अधिकार जमाने का प्रयास कर सकता है और अमरीकी प्रदेश से होकर ब्रिटिश सेनाओं को गुजरने देने की प्रार्थना कर सकता है। वाशिंगटन ने अपने मंत्रिमण्डल के समक्ष यह सम्भावित प्रश्न रखा, किन्तु इस पर कोई निश्चित सलाह नहीं मिली, यद्यपि हेमिल्टन ने न्यू आर्लियन्स के विरुद्ध अमरीकी अभियान का तथा उत्तरी किलों के मामले में ब्रिटेन के विरुद्ध अमरीकी दावों का परित्याग कर ब्रिटेन के साथ मित्रता का समर्थन किया। जेफर्सन ने यह सुझाव दिया कि यथाशक्ति भरसक इसे आगे के लिए टाला जाय और आवश्यक हो तो जो कुछ हो चुका है, उसे स्वीकार कर लिया जाय। उन्होंने परामर्श दिया कि अमरीका को स्पष्टरूप से घोषणा कर देनी चाहिए कि संघराज्य अमरीकी सीमाओं पर एक शक्ति द्वारा दूसरी शक्ति के अधिकार-अपहरण के प्रयास को गम्भीरतापूर्वक देखेगा, क्योंकि हमारे पड़ोसियों के बीच उचित संतुलन में ही स्वयं अमरीका की सुरक्षा निहित है। जेफर्सन ने कदाचित् पहलेपहल यह विचार व्यक्त किया कि अमरीकी महाद्वीप में शक्ति-स्थापन में सभी प्रकार के परिवर्तनों का अमरीका से सम्बन्ध है—यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसे मनरो-सिद्धान्त का मूल समझा जा सकता है।

आंग्ल-स्पेनिश संकट बिना युद्ध के टल गया और अमरीकी पुनः अपना साधारण कूटनीतिक मार्ग अपनाने को विवश हुए। जेफर्सन अब मिस्सीसिपी-नौकानयन के प्रश्न के समाधान के जबर्दस्त समर्थक बन गये थे। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अब यह अधिकाधिक स्पष्ट था कि इस प्रकार का कोई समाधान ही अलगेनीज के नवराज्य केण्टकी (१७९२) और टेनेसी (१७९६) को संघ के अंतर्गत स्थायी रूप में रख सकता था। इसके अतिरिक्त, यदि यह मत मान लिया जाय कि जेफर्सन ने अब तक प्रभावशाली हेमिल्टनवादी फेडरलिस्टों के विरुद्ध एक प्रतिद्वंद्वी दल का निश्चित रूप से निर्माण कर लिया था, तो इस समस्या की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उत्तरी राज्यों को हेमिल्टन की आर्थिक और व्यापारिक नीति के पक्ष में कर लिया गया था। दक्षिण और पश्चिम को संघराज्य के प्रति निष्ठावान बनाने के लिए पेट्रिक हेनरी को मात करना आवश्यक था। जेफर्सन ने अमरीकी मामले में जो तर्क प्रस्तुत किये वे जो अनसुने ही रहे—अंतरराष्ट्रीय समस्याओं पर उनकी विचारधारा अद्भुत ढंग से परंपरागत, ऐतिहासिक एवं धर्माधर्म के सिद्धान्त के साथ वैधानिक तर्कों तथा प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्तों से मिलीजुली थी और यह स्वयं उन्हीं को अटपटी-सी प्रतीत होती थी।

स्पेन स्थित अपने एक राजदूत विलियम शार्ट को उन्होंने जो निर्देश दिये और जो १८ मार्च, १७९२ को तैयार किये गये थे, उनमें इस विचारधारा का स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। इनमें उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ यह दलील दी थी कि नदी तटवर्ती राज्यों को अपनी सीमाओं से परे भी नदियों में नौका-नयन का सार्वभौमिक अधिकार है। प्रकृतिदत्त अधिकारों और राष्ट्रों के विलम्ब संबंधी जेफर्सन की विचारधारा में इन दोनों की स्पष्ट व पृथक व्याख्या नहीं मिलती जो मनुष्य के हृदय में अंकित है। इन भावनाओं से गहरी और क्या भावनाएँ होंगी कि समुद्र सभी प्राणियों के लिए और नदियाँ सभी निवासियों के उपभोग के लिए हैं। सौभाग्य से इस अलंकारिक प्रश्न ने विद्यमान प्रथा की उपेक्षा की। इस तर्क में भी कोई अधिक बल नहीं था कि नौकानयन का अधिकार इस सिद्धान्त के आधार पर तट पर सुविधाओं का अधिकार प्रदान करता है कि 'साधन साध्य का अनुसरण करता है'।

प्राकृतिक अधिकारों के आधार भी विदेश-व्यापार-संहिता में संशोधन कराने के जेफर्सन के उद्देश्य में उतने ही असफल सिद्ध हुए। १७८८ में सम्भाव्य भावी युद्ध का कारण देखते हुए उन्होंने वाशिंगटन से पूछा था, "उन राष्ट्रों के अत्याचार से कौन बचा सकता है, जो हमें अपने पड़ोसियों के साथ व्यापार के प्राकृतिक अधिकारों से वंचित करते हैं?" अमरीकी तम्बाकू के आयात पर फ्रांसीसी प्रतिबन्धों के सम्बन्ध में उन्होंने १७९१ में एक पत्र में घोषणा की, "पड़ोसी राष्ट्रों के बीच बचत और घाटे का आदान-प्रदान नैतिक विधान के अनुसार अधिकार और कर्त्तव्य दोनों है और इसके पालन में अधिकार के विरुद्ध कार्यवाइयों का शमन करना चाहिए।" ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस में से कोई भी जेफर्सन द्वारा की गयी नैतिक विधान की यह व्याख्या स्वीकार करने को तैयार न था, किन्तु जेफर्सन ने इस दृढ़ विश्वास के साथ पद ग्रहण किया था कि फ्रांस अमरीका का विशेष कृपापात्र बन गया है। दूसरी ओर, ब्रिटेन वह देश था, जिसने युद्ध में अमरीकियों के सर्वनाश के लिए कुछ भी नहीं उठा रखा, 'अपनी सभी शान्ति-परिषदों में' उन्हें अपमानित किया, अमरीकी हितों क प्रत्येक स्थान का द्वार उनके लिए बन्द रखा, विदेशों में उन्हें बदनाम किया और अमरीकियों की 'अत्यन्त मूल्यवान वस्तुओं' की विदेशों में बिक्री को गिराने की बदनियती से विषाक्त प्रचार किया। कृतज्ञता राष्ट्रीय नीति के लिए उचित आधार नहीं है, यह एक ऐसी कल्पना थी जिसे हत्या, विष, मिथ्यावादिता आदि को वैधानिक रूप देनेवाले अपने सजातीय सिद्धान्तों के साथ शताब्दियों के लिए दफना दिया गया था।

ग्रेट ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्धों के पक्ष में इतने सबल तर्क थे कि उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी किन्तु अमरीकी शर्तों पर ब्रिटिश मित्रता प्राप्त करने की अधिक सम्भावना नहीं थी। नूटका साउंड-संकट के समय अंग्रेज अमरीकी प्रभाव के प्रति अधिक सतर्क रहे, किन्तु इससे वे वरमोण्ट की स्वतंत्रता की मान्यता के लिए लेवी एलन के प्रस्ताव पर विचार करने से नहीं रुके। कांग्रेस ने आयात-निर्यात-कर और नौकानयन कानूनों को पारित करने के लिए नये संविधान के अन्तर्गत अपने अधिकारों का शीघ्र ही उपयोग किया; किन्तु ब्रिटिश आयातित वस्तुओं के विरुद्ध भेद-भाव करने के अवसर का उपयोग करने का मेडिसन का प्रयास कांग्रेस में हेमिल्टन के प्रभाव से विफल कर दिया गया। दूसरी ओर, १७८९ और १७९० के कानूनों में निहित विनम्र प्राथमिकताओं ने अमरीकी जहाजरानी में कुछ सहायता की और इस बात में सुधार किया कि अमरीका में बने जहाज, ब्रिटिश स्वामित्व में रहते हुए भी विदेशी समझे जाने लगे। पहले अधिकांश ब्रिटिश व्यापारिक जलपोत अमरीका के ही बने होते थे। इन कानूनों के अस्तित्व ने ग्रेट ब्रिटेन के लिए यह आवश्यक भी बना दिया कि वह फिलाडेल्फिया में अपना प्रतिनिधि न रखने की अपनी पूर्व नीति में परिवर्तन करे। उसके प्रथम (अनधिकृत) दूत बेकविथ और उसके उत्तराधिकारी जार्ज हेमण्ड ने, जो नवम्बर, १७९१ में, प्रथम ब्रिटिश राजदूत के रूप में अमरीका पहुँचे, हेमिल्टन के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित किया और आंग्ल-अमरीकी व्यापार की बाधाओं को दूर करने में उनके साथ सहयोग किया।

जेफर्सन के साथ अपने पत्रव्यवहार में हेमण्ड ने यह प्रमाणित ब्रिटिश दृष्टिकोण रखा कि उत्तरी किलों पर अभी भी ब्रिटिश अधिकार है तथा अन्य विवादग्रस्त मामलों का कारण अमरीका द्वारा शान्ति-संधि का उल्लंघन है। २९ मई, १७९२ को जेफर्सन ने लगभग १७ हजार शब्दों में जो उत्तर भेजा उसे एक अमरीकी विद्वान प्रोफेसर एस एफ. बेमिस ने "उनका महानतम कूटनीतिक पत्र" बताया है और वास्तव में वह अमरीकी कूटनीति के इतिहास का अत्यन्त निपुण तर्क है.. मानव की कार्यक्षमता, असीम वेदना और उसकी कानूनी प्रतिभा का चिरस्मारक है।" बेमिस ने उसकी व्यावहारिक प्रभावहीनता तथा जेफर्सन के विदेश-मन्त्रित्व-काल में ब्रिटिश वार्ता में कुछ भी प्रगति न होने के लिए हेमिल्टन के हस्तक्षेप को दोषी ठहराया है। उत्तर-पश्चिम में अंग्रेज़ों ने अपनी स्थिति सुदृढ़ बना रखी थी और कनाडा के समर्थन से रेड इंडियन सीमावर्ती राज्य का खतरा अमरीकियों को अभी भी सता रहा था, यद्यपि

अगस्त, १७९२ में ही ब्रिटिश सरकार ने उसका परित्याग कर दिया था। इंडियनों की जटिल समस्या और अधिक प्रवास के प्रति उनका विरोध तथा उसके परिणामस्वरूप अमरीकियों का सन्देह, ये समस्याएँ वास्तव में विशेषरूप से पहले ही से जेफर्सन के मन में घर बनाये हुए थीं। इंडियनों को सम्भाव्य ब्रिटिश सहायता के अतिरिक्त, उनके विरुद्ध सैनिक कार्रवाइयाँ कठिन और व्ययसाध्य थीं। अप्रैल, १७९१ में मनरो को उन्होंने लिखा—

"मैं आशा करता हूँ कि हम इसी ग्रीष्म ऋतु में इंडियनों को मार भगायेंगे और अपनी योजना युद्ध से हटाकर उन्हें भेंट देकर मुँह बन्द करने की रहेगी। हमें स्पेनवासियों और अंग्रेजों की तरह काम करना पड़ेगा और उदार तथा स्थायी उपहारों द्वारा उन्हें शान्त रखना होगा। वे इसे सबसे सस्ती योजना मानते हैं और हम भी ऐसा ही मानेंगे...इस प्रकार कुछ समय के लिए युद्ध स्थगित हो जायगा और हमारी सीमाओं पर इन दिनों जो घृणा व्याप्त है, उसका स्थान वास्तविक प्रेम ग्रहण कर लेगा। एक दूसरा सबल उद्देश्य यह है कि इस प्रकार हमारे लिए सेना बढ़ाने या भारी सेना कायम रखने का कोई बहाना नहीं रह जायगा। अन्यथा, इंडियन लूटपाट का एक-एक टुकड़ा भी उन लोगों के लिए सैनिक संगठन बनाये रखने का कारण बना रहेगा, जो स्थायी सेना और सार्वजनिक ऋण को अमरीका की सुख-समृद्धि के लिए आवश्यक समझते हैं और हम कभी भी उनसे छुटकारा नहीं पा सकेंगे।

जब फ्रांसीसी क्रांति ने अमरीका की आन्तरिक राजनीति तथा अन्तरराष्ट्रीय गठबन्धनों पर भी अपना शक्तिशाली प्रभाव दिखाना आरम्भ किया, तब १७८३ की सन्धि का सर्वप्रथम किसने उल्लंघन किया, यह प्रश्न तथा आंग्ल-अमरीकी मतभेदों के इसी प्रकार के अन्य विषय गौण बन गये। जहाँ तक क्रान्तिकारी फ्रांस द्वारा संचालित युद्ध का सम्बन्ध केवल स्थल शक्तियों (ब्रिटिश साम्राज्य और प्रशा) से था, अमरीकी स्वार्थों पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। लुई १६ वें की फांसी के बाद नये प्रजातन्त्र ने नौसैनिक राष्ट्रों ग्रेट ब्रिटेन, हालेण्ड और स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जब अप्रैल, १७९३ के आरम्भ में यह समाचार अमरीका सरकार तक पहुँचा तो इससे चिन्ता उत्पन्न हो गयी, यद्यपि यह अनपेक्षित नहीं था। जेफर्सन की पूर्व नीति का सारा आधार ही नष्ट हो गया। कहाँ तो यह आशा थी कि ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन आपस में लड़ जायंगे और अमरीकियों को कूटनीतिक खेल खेलने की स्वतंत्रता मिलेगी, कहाँ वे दोनों ही एक होकर एक तृतीय शक्ति से लड़ने लगे और शीघ्र ही उनमें औपचारिक गठबन्धन

स्थापित हो गया। दूसरे, एक यह भी प्रश्न था कि कहां तक अमरीका स्वयं फ्रांस के साथ मित्रता की अपनी पुरानी सन्धि से बँधा हुआ है।

वाशिंगटन पूर्ण तटस्थता के प्रबल समर्थक थे, किन्तु उन्होंने पुनः अपनी भावी नीति के सम्बन्ध में अपने मंत्रिमण्डल से परामर्श किया और विशेषकर इस बात पर मंत्रणा की कि तटस्थता की घोषणा जारी की जाय या नहीं, और फ्रांसीसी प्रजातन्त्र के मंत्री का स्वागत किया जाय या नहीं और इस प्रकार नये शासन को पूर्ण मान्यता प्रदान की जाय या नहीं। हेमिल्टन ने यह दलील पेश की कि शासन-परिवर्तन के साथ सन्धि का अर्थ भी बदल गया, क्योंकि यह सन्धि फ्रांसीसी राजतंत्र से हुई थी, अन्यथा अमरीका को पुनस्संस्थापन रोकने में सहायता करने के लिए विवश किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रतिरक्षात्मक मित्रता के रूप में यह सन्धि की गयी थी और चूंकि फ्रांस ने ही ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की है, इसलिए वह उसके लाभ के लिए दावा करने का अधिकारी नहीं रह गया है। दूसरी ओर, उन्होंने अमरीका ने फ्रांस से जो ऋण लिया था, उसे स्वीकार किया। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि नये फ्रांसीसी मंत्री की नियुक्ति का स्वागत तो किया जाय, किन्तु साथ ही साथ इस सम्बन्ध में एक घोषणा जारी करके १७७८ की सन्धि के क्रियान्वय को स्थगित कर दिया जाय। ऐसा न होने पर यदि ब्रिटेन अमरीका को अपना शत्रु समझे तो अनुचित न होगा।

जेफर्सन के विचार वस्तुतः बिलकुल भिन्न थे, यद्यपि उन्होंने फ्रांस के प्रति अनुकूल तटस्थता से अधिक की सिफारिश नहीं की। उन्होंने पहले ही से स्पष्ट कर दिया था कि मान्यता के लिए फ्रांसीसी प्रजातन्त्र के अधिकार पर सन्देह नहीं किया जा सकता। इच्छानुसार शासन-प्रणाली को बदलना प्रत्येक राष्ट्र का मौलिक अधिकार है। वास्तव में उन्होंने कम से कम एक अवसर पर किसी भी पीढ़ी के अपने उत्तराधिकारियों को आबद्ध करने के अधिकार पर सन्देह व्यक्त किया था—ऐसा सन्देह जो लिखित संविधानों और अधिकार-विधेयकों के पक्ष में उनके समर्थन से मेल नहीं खाता।

दिसम्बर, १७९२ में उन्होंने फ्रांसस्थित अमरीकी राजदूत गवर्नियर मारिस को लिखा—

"हम निश्चय ही किसी भी राष्ट्र का वह अधिकार अस्वीकार नहीं कर सकते, जिस पर स्वयं हमारी सरकार आधारित है; कोई भी राष्ट्र इच्छानुसार शासन-प्रणाली अपना सकता है और इच्छानुसार उसे बदल भी सकता है और

वह विदेशी सम्राट, परम्परा, विधानसभा, समिति, राष्ट्रपति अथवा किसी भी अन्य माध्यम से, जिसे वह उचित समझता है, व्यवहार कर सकता है। राष्ट्र की इच्छा ही एकमात्र ध्यान देने योग्य आवश्यक वस्तु है।"

जेफर्सन के विचार से सम्प्रति सन्धियों को भंग करने की आवश्यकता नहीं थी। जिस धारा के अनुसार फ्रांसीसी जहाजों और निजी सशस्त्र जलपोतों को अमरीकी बन्दरगाहों का उपयोग करने की अनुमति दी गयी थी, उससे कोई संकट उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं थी। अमरीका फ्रांस को अमरीकी बन्दरगाहों में निजी सशस्त्र जलपोतों को ठहराने का अधिकार देने के लिए बाध्य नहीं था, यद्यपि उसने स्पष्ट रूप से फ्रांस के शत्रुओं से ऐसी अनुमति वापस लेने का वचन दिया था। यह निश्चित नहीं था कि फ्रांस वेस्ट इंडीज में उनके हस्तक्षेप के लिए आग्रह करेगा। अमरीका ने भी उत्तर-पश्चिम में स्थापित ब्रिटिश चौकियों के प्रश्न पर फ्रांस से हस्तक्षेप करने के लिए नहीं कहा। उनकी अंतिम संभावना ही सही थी। फ्रांस केवल उदार तटस्थता चाहता था। वेस्ट इंडीज और स्वदेश में अमरीकी पूर्ति उस सहायता से अधिक उपयोगी हो सकती थी, जो अमरीका के सीमित स्रोतों से मिल सकती थी। जेफर्सन का यह तर्क काफी सबल था कि अमरीका को तत्काल सन्धि भंग करने की आवश्यकता नहीं है; दूसरी ओर, यदि शक्ति-परीक्षा की नौबत आयी तो हेमिल्टन की भाँति जेफर्सन भी ग्रेट ब्रिटेन के बजाय फ्रांस के साथ युद्ध का खतरा मोल लेने को तत्पर थे।

वाशिंगटन को २२ अप्रैल, १७९३ की कथित तटस्थता-घोषणा के—जो अमरीकी विदेश-नीति की एक मौलिक प्रमाणपत्र मानी जाती है—दो महत्वपूर्ण विवरणों में जेफर्सन का प्रभाव परिलक्षित है। प्रथम, मूल प्रस्ताव में 'तटस्थता' शब्द को जानबूझ कर छोड़ दिया गया और उसमें केवल युद्धरत राष्ट्रों के प्रति 'मैत्रीपूर्ण और निष्पक्ष' व्यवहार का उल्लेख था। द्वितीय, युद्धरत राष्ट्रों के साथ व्यापार में संलग्न अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार न होने की जो घोषणा अमरीका ने की थी, वह उन्हीं व्यापारियों तक सीमित थी, जो राष्ट्रों के 'आधुनिक व्यवहार' द्वारा निषिद्ध वस्तुओं का व्यापार करते थे। इससे प्रकट होता है कि अमरीकी इस विचार पर दृढ़ रहते कि खाद्यपदार्थ निषिद्ध नहीं हैं, जबकि ग्रेट ब्रिटेन इसे मानने को तैयार नहीं था। फरवरी, १७९३ में फ्रांस ने अपने बन्दरगाहों को, चाहे स्वदेश में हों या उपनिवेशों में, अमरीकी जहाजरानी के लिए खोल दिया और मई में ग्रेट ब्रिटेन के साथ

तटस्थ व्यापार के विरुद्ध फ्रांसीसी कार्रवाइयों से अमरीका को मुक्त कर दिया। इससे उसकी स्थिति का महत्व और भी बढ़ गया। जून, १७९३ में ब्रिटिश प्रिवी कौंसिल की सलाह से जारी एक राजकीय आदेश द्वारा खाद्यपदार्थों से लदे सभी तटस्थ जहाजों को रोक लेने और ब्रिटिश बन्दरगाहों में उन्हें बेच देने का अधिकार दिया गया और आगामी नवम्बर में और भी कठोर कार्रवाइयां की गयी। जनवरी, १७९४ में इनमें संशोधन किया गया, ताकि अमरीका अपने उन व्यापारों को जारी रख सके, जो वह शान्ति-काल में करता रहा अर्थात् १७५६ का कथित नियम लागू किया गया।

१७९३ के ब्रिटिश आदेश के साथ अमरीका के उस दीर्घकालिक संघर्ष का युग आरम्भ हुआ, जिसमें उसने तटस्थ जहाजरानी के अधिकार सम्बन्धी अपने व्यापक विचारों को युद्धरत विदेशी राष्ट्रों द्वारा युद्ध-काल में स्वीकार कराने का प्रयास किया। १८१५ में आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध-चक्र की समाप्ति के बाद भी इस समस्या का समाधान नहीं हो सका और १९१४ में आंग्ल-जर्मन युद्ध आरम्भ होने पर यह समस्या आश्चर्यजनक ढंग से पुनः उठ खड़ी हुई। १७८९ के बाद ही अमरीकी जहाजरानी की अपार वृद्धि हुई, उसका प्रभाव भी इस समस्या पर पड़ा। इस वृद्धि ने न्यू इंगलैण्ड के आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण को विशेष रूप से प्रभावित किया। १७९० में अमरीका और ब्रिटेन के बीच लगभग आधा व्यापार अमरीकी जहाजों द्वारा होता था और १८९० में लगभग ९५ प्रतिशत। अमरीकी व्यापारिक जहाजों का पंजीकृत वजन १७८९ में १२४००० टन, १७९३ में ३६५००० टन, और १८०० में पाँच लाख टन से अधिक हो गया और यदि बढ़ती हुई तटवर्ती जहाजरानी तथा मछली मारनेवाले जहाजों को भी ले लिया जाय तो साढ़े सात लाख टन से भी अधिक था।

राष्ट्रपति की घोषणा की एक दूसरी महत्वपूर्ण बात जेफर्सन की स्थिति के दृष्टिकोण से मनोरंजक है। यह थी युद्धरत राष्ट्रों की सूची में स्पेन को स्थान न देना। जान पड़ता है कि स्पेन के साम्राज्य के विघटन के सम्भाव्य परिणामों के बारे में जेफर्सन का संकोच मिट चुका था और वे अमरीका के लिए फ्लोरिडा के मिल जाने पर एक फ्रांस-समर्थित विद्रोह का समर्थन करने के लिए तैयार थे। वाशिंगटन को यह आशंका थी कि ग्रेट ब्रिटेन स्पेन की सहायता के लिए आयेगा और फ्रांसिसी कुचक्र से अमरीका ग्रेट ब्रिटेन के साथ युद्ध में फँस जायेगा, जिससे बचना ही उनकी नीति का मुख्य उद्देश्य था। इसीलिए अमरीका इन योजनाओं में और अधिक नहीं उलझ सका।

घोषणा की हिचकिचाहट के बारे में जेफर्सन ने स्वयं लिखा, किन्तु नीति के कार्यान्वय में उनकी कठिनाइयाँ तथा नये फ्रांसीसी मंत्री सिटिजेन एडमण्ड जेनेट के आचरण ने सावधानी के लिए प्रेरित किया। जबकि फ्रांसीसी और अमरीकी प्रजातंत्रों के बीच अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध के लिए नयी संधि-वार्ता की अन्तत: अपेक्षा की जाती थी, जेनेट के प्राप्त निर्देशों में भी यह स्पष्ट था कि उन्हें इस दिशा में कार्रवाई करने के लिए अधिकार प्रदान किया गया था। उन्होंने स्पेनिश लुइसियाना में विद्रोह करने के लिए केण्टकी के असन्तुष्ट तत्वों के साथ मिलकर षड्यत्र किया और स्थल की ओर से न्यू आर्लियन्स पर आक्रमण का नेतृत्व करने के लिए योजनाएं तैयार कीं। यह आक्रमण नौसैनिक आक्रमण के साथ-साथ होनेवाला था। उन्होंने लुइसियाना, कनाडा और नोवा स्कोटिया के निवासियों के नाम घोषणाएं जारी कीं, निजी सशस्त्र जलपोत भेजे और इस युद्ध में पकड़े जानेवाले सामान और जहाजों को बाँट देने के निमित्त प्राइजकोर्ट सैनिक न्यायालय की स्थापना की। मई, १७९२ में अमरीका में पहुंचने पर कुछ फ्रांस-समर्थक तत्वों ने उनका जिस उत्साह के साथ स्वागत किया उसका सरकारी क्षेत्रों में कहीं दृष्टान्त नहीं मिलता। उनकी गतिविधियों का ब्रिटेन में जो विरोध हुआ, उससे प्रशासन को आसन्न संकट की चेतावनी मिली और जेफर्सन को जेनेट को कड़े शब्दों में अमरीका की तटस्थ स्थिति की सूचना देनी पड़ी। इस फ्रांसीसी के प्रति जेफर्सन की प्रारम्भिक हार्दिकता का स्थान घृणा ने ले लिया, जबकि राजदूत उन्हें ही कर्त्तव्य का उपदेश देने लगा और स्वयं वाशिंगटन के साथ भी उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार प्रदर्शित किया। अगस्त में जेफर्सन ने जेनेट को वापस बुलाने के लिए फ्रांसीसी सरकार से औपचारिक प्रार्थना की। इस समय तक जेनेट की पार्टी गिरोंडीन्स को फ्रांस में सत्ताच्युत कर दिया गया था और उसके नेताओं को मौत के घाट (गुलोटिन) उतार दिया गया था। उनके जेकोबिन उत्तराधिकारियों ने जेनेट को वापस बुलाने में कोई आपत्ति नहीं की और उनकी गिरफ्तारी के लिए नये राजदूत के साथ एक आदेश भेजा। फ्रांस लौटने का अर्थ था शिरच्छेद और अब जेनेट दुखियारी गाय बन गये। इसलिए फ्रांसीसी शासकों की रक्तपिपासा को शान्त करने का कोई अर्थ नहीं था। इस बीच जेनेट ने न्यूयार्क के प्रभावशाली राजनीतिज्ञ जार्ज क्लिण्टन की पुत्री के साथ विवाह कर लिया था। वे अब अपने क्रान्तिकारी अतीत को विस्मृत कर अमरीका के सम्माननीय नागरिक बन गये और कृषि तथा विज्ञान में विशेष रुचि प्रदर्शित करने लगे।

१७६३ में जेफर्सन का ध्यान दो ओर बँटा हुआ था। एक ओर जेनेट का इस बात के लिए रोकना था कि ग्रेट ब्रिटेन को अमरीकी आचरण के विरुद्ध शिकायत करने का कोई सबल कारण न मिल सके और दूसरी ओर ब्रिटेन की समुद्री नीति में अमरीकी हितों और दृष्टिकोणों की उपेक्षा के लिए उससे विरोध करना था। जेफर्सन के दूसरे कार्य में बाधा पड़ी, जिसका एक कारण हेमण्ड के साथ हेमिल्टन का सम्पर्क था जिससे ब्रिटेन को यह विश्वास हो गया था कि जेफर्सन की औपचारिक आपत्तियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता नहीं है। उससे भी बड़ा कारण यह धारणा थी कि नौसैनिक दृष्टि से अमरीका जैसा निर्बल राष्ट्र इस स्थिति में नहीं है कि वह ब्रिटेन को उसके प्रमुख कड़ी नीति में कुछ उदार बना सके। लगभग पच्चीस वर्ष तक ब्रिटेन की नौसैनिक शक्ति पहले क्रान्तिकारी फ्रांस और फिर नेपोलियन के समय के फ्रांस की महत्वाकांक्षाओं के लिए विशेषरूप से बाधक सिद्ध हुई। यह एक ऐसी बाधा थी जिस पर राष्ट्र और प्राकृतिक अधिकारों सम्बन्धी तृतीय पक्ष की अपील का प्रभाव पड़ने की आशा नहीं की जा सकती थी।

यद्यपि जेफर्सन ने १७६२ में वाशिंगटन से पुनः राष्ट्रपति-पद के लिए खड़ा होने के लिए अनुरोध करने में विशेष रूप से भाग लिया था, तथापि मंत्रिमण्डल में अपनी अल्पसंख्यक स्थिति के प्रति उनकी घृणा और अपने विभाग के अधिकार क्षेत्र के बाहर के मामलों में भी हेमिल्टन के हस्तक्षेप पर उनका क्षोभ उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। हेमिल्टन और जेफर्सन की ओर से दो समाचारपत्र-सम्पादकों ने एक-दूसरे के विरुद्ध खुली तू-तू मैं-मैं चलायी। वे थे क्रमशः 'गजट आफ दी यूनाइटेड स्टेटस' के फेन्नो और 'नेशनल गजट' के फ्रेनोय, जो उनसे आर्थिक सहायता पाते थे। इस विवाद के लिए दोनों में से एक की भी सराहना नहीं हुई। जेफर्सन इतने भावुक थे कि वे आलोचना की प्रतिद्वन्द्विता में नहीं आना चाहते थे। जब वे पेरिस में ही थे तभी उन्होंने एक पत्र में अपने पद के प्रति किन बातों से लाभ है, उसकी गणना की थी और उसमें यह भी बताया था कि इसके साथ प्रचार का कम सम्बन्ध है। उन्होंने लिखा, "मेरी उत्कट अभिलाषा यही है कि मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कठोरता, किन्तु मौनपूर्वक करूं, ध्यान आकृष्ट करने से बचूं और समाचार-पत्रों में अपना नाम न आने दूँ, क्योंकि मुझे निराधार होने पर भी थोड़ी सी निन्दा की पीड़ा अधिक प्रशंसा के आनन्द की अपेक्षा अधिक प्रतीत होती है जबकि इस तरह की निन्दा का कोई आधार ही न हो। जब वाशिंगटन ने उनके दो सचिवों के वाद-विवाद को कुछ शान्त करने का

प्रयास किया, तब जेफर्सन ने एक लम्बे और कड़े पत्र में (सितम्बर, १७९२ में) उत्तर दिया, जिसके अन्त में उन्होंने आगामी मार्च में वाशिंगटन की प्रथम पदावधि समाप्ति होने पर सेवा-निवृत्ति होने का इरादा प्रकट किया था। वाशिंगटन और मेडिसन ने उन्हें विचार-परिवर्त्तन के लिए समझाया। १७९३ में राष्ट्रपति ने उनके पदत्याग की प्रार्थनाओं को अस्वीकार कर दिया, किन्तु वर्ष के अन्तिम दिन उन्होंने अपने इच्छा पूरी की और पदत्याग कर दिया। उनके साथी एटर्नी-जनरल एडमण्ड रण्डोल्फ ने उनका स्थान ग्रहण किया। १६ जनवरी, १७९४ को जेफर्सन पुनः एक निजी नागरिक के रूप में मण्टिसिलो वापस गये। यद्यपि उनकी अवस्था अभी ५० वर्ष की ही थी, तथापि वे दीर्घकालिक सार्वजनिक सेवा से क्लान्त हो गये थे और अपने जीवन के शेष वर्ष सेवानिवृत्त होकर अपनी जमीन्दारी, पुस्तकालय और परिवार में ही बिताना चाहते थे। उनकी दो पुत्रियों, जिन्हें वे पेरिस से लौटने के बाद बहुत कम देख पाये, में से ज्येष्ठ पुत्री मेरथा का विवाह थामस मान रण्डोल्फ से हो गया, जो उनकी जमीन्दारी की देखभाल करता था। मेरथा ने एक पुत्र थामस जेफर्सन रण्डोल्फ को जन्म दिया, जो जेफर्सन की वृद्धावस्था का प्रिय पौत्र था। उनकी छोटी लड़की मेरिया की उम्र अभी १६ वर्ष की थी और १७९७ तक, जब तक कि उसका विवाह जान वैलेस एप्स से नहीं हो गया, वह घर पर ही रही। १७९४ और १७९५ में जेफर्सन ने बहुत ही कम पत्रव्यवहार किये, जिससे सिद्ध होता है कि उन्होंने अपने परिवार और वर्जीनिया के अपने मित्रों तक ही अपने को सीमित रखा। यहाँ तक कि उन्होंने फिलाडेल्फिया के के समाचार पत्रों को भी लिखना बन्द कर दिया। फिर भी कांग्रेस में हेमिल्टन-विरोधी पार्टी के नेता जेम्स मेडिसन और डब्लू बी. गाइल्स के पत्रों से सर्वथा सामयिक ज्ञान रहता था।

अध्याय ७

विरोधी पक्ष में

(१७९४-१८००)

१७९४-९६ के वर्ष जेफर्सन के देश तथा पश्चिमी जगत के इतिहास में अत्यन्त महत्व के वर्ष थे। इस अवधि में वे माण्टिसिलो से सात मील अधिक दूरी पर कभी नहीं गये। वे अपने बाल-बच्चों में ही पुराने ढंग के कुलपति की भाँति रहते और खेतीबारी के कारोबार में लीन रहते। उन्होंने एक कील का कारखाना खोलकर पुनः समृद्धशाली बनने का प्रयास किया। इस कारखाने में दस वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक के लगभग एक दर्जन बालक काम कर रहे थे। साथ ही साथ उन्होंने एक नये ढंग के हल का प्रयोग किया। इस बीच फ्रांसीसी क्रांति अपनी चरमसीमा तक पहुंच गयी। १७९३ में ही राब्सपियेर सत्तारूढ़ हुए। उन्होंने ही उस वर्ष के नवम्बर में क्रान्तिकारी फ्रांस को इंगलैण्ड के साथ पूर्ण युद्ध में झोंक दिया और इस आशा से ऐसा किया कि उस देश में भी वैसी ही क्रांति फैल जायगी, किन्तु साथ ही साथ उन्होंने इस नीति का सहारा लिया कि 'महाद्वीप में पूर्ण युद्ध और एक प्रबल संरक्षणात्मक आर्थिक नीति', जो नेपोलियनवादी 'महाद्वीपीय प्रणाली' की पूर्वसूचक थी। जुलाई, १७९४ में राब्सपियेर का पतन हो गया। प्रतिक्रांति का सूत्रपात हुआ और उसकी शक्ति बढ़ने लगी। १७९५ की वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में प्रशा, स्पेन और कुछ और छोटे-मोटे राष्ट्र मित्रता की संधि से अलग हो गये। अब उसमें मुख्यतः केवल इंगलैण्ड और आस्ट्रिया रह गये। परम्परा के आधार पर एक संविधान बनाया गया, जिसके अन्तर्गत फ्रान्स चार वर्ष तक १९वीं शताब्दि के मध्यमवर्गीय संविधानवाद का उपभोग करता रहा। किन्तु फ्रांसीसी प्रजातंत्र सरकार अनेक फ्रांसीसियों के लिए जो 'सामान्य स्थिति' लाना चाहती थी, वह यूरोप में नहीं आयी। प्रजातन्त्र सरकार द्वारा सामान्य सन्तोषजनक स्थिति पैदा करने का प्रयास निष्फल सिद्ध हुआ। १७९६-९७ में नेपोलियन बोनापार्ट के इटली-अभियान ने आस्ट्रिया को अपनी पराजय स्वीकार करने के लिए विवश किया। जब अप्रैल, १७९७ में बोनापार्ट ने लोयबेन की प्रारम्भिक सन्धि की, जिसके बाद केवल इंगलैण्ड (और पुर्तगाल) युद्ध में रह गया, उस समय तक जेफर्सन

फ्रांसीसी क्रांति अभी तक 'मुक्तिदायक' शक्ति के रूप में थी, किन्तु अब वह स्वयं राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिए खतरनाक बन गयी। इसकी जेफर्सन पर जो प्रतिक्रिया हुई, वह अध्ययन करने योग्य है। अपने पत्रों में उन्होंने यूरोपीय घटनाओं की जो आलोचनाएँ की हैं, उनसे प्रकट होता है कि अन्ततः उन्हें अपने देश मे होनेवाली प्रतिक्रियाओं की ही चिन्ता रहती थी। जिस चीज को वे नापसन्द करते थे, उसकी सम्भवतः खुली निन्दा नहीं कर सकते थे, क्योंकि फ्रांसीसी लोकप्रियता में किसी प्रकार के ह्रास से हेमिल्टन तथा अन्य 'अंग्रेज-भक्तों' की ही ख्याति बढ़ती।

फ्रांस में रहते समय उन्होंने बड़ी सावधानी बरती थी और इस तात्कालिक मान्यता के विरुद्ध चेतावनी दी थी कि फ्रांस लोकतन्त्र के लिए सन्नद्ध है। फिर भी, यह तो स्वीकार ही करना पड़ेगा कि अटलांटिक के दूसरे छोर पर उनके वापस आ जाने पर क्रांति में कुछ और चमत्कार आ गया था। बर्क की पुस्तक 'फ्रांसीसी क्रांति पर आक्षेप' से उत्तेजित होकर उन्होंने जोर देकर कहा, "यह हार्दिक ग्लानि की बात है कि 'उनके दिमाग की इस सड़ान्ध' को देखकर यह कहने को बाध्य होना पड़ता है कि इसके पीछे कुत्सित उद्देश्य हैं जिन पर सेवा, सद्उद्देश्यों एवं देशभक्ति की छाप थी।"

जनवरी, १७९३ में विलियम शार्ट ने हालैण्ड से भेजे गये अपने खरीतों में जेकोबिनों की शिकायत की थी। जेफर्सन ने एक पत्र लिखकर इस कार्य का प्रतिवाद किया। उनकी विजय के लिए संघर्ष में क्या बातें जरूरी हैं इसकी चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा, "अनेक अपराधी व्यक्ति बिना मुकदमा चलाये ही मौत के घाट उतार दिये गये और उनके साथ कुछ निरपराध व्यक्ति भी पिस गये। इस पर मुझे उतना ही खेद है जितना किसी भी व्यक्ति को हो सकता है और उनमें से कुछ के लिए तो मुझे जीवन-पर्यन्त दुःख रहेगा। किन्तु उन पर मुझे तब भी दुःख होता जबकि उनकी मृत्यु किसी रण-क्षेत्र में हुई होती। जन-शक्ति का उपयोग आवश्यक था—यह एक ऐसी शक्ति थी, जो गोलों और बमों की भाँति अन्धी तो नहीं थी, किन्तु किसी हद तक अन्धी अवश्य थी।......इस उद्देश्य के लिए शहीद कुछ व्यक्तियों के कारण मेरी भावनाओं पर गम्भीर आघात पहुँचा है, किन्तु उसके विफल हो जाने की अपेक्षा मैं आधे विश्व को वीरान देखना अधिक पसन्द करूंगा। यदि प्रत्येक देश में आदम और हौवा ही रह जाये 'और वे भी स्वतन्त्र रहें' तो आज जो स्थिति है, उससे तो कम-से-कम वह स्थिति अच्छी ही रहती।"

रक्तपिपासा की ऐसी असाधारण भावना का कारण स्पष्टतः दलगत भावना में पाया जा सकता है। जेफर्सन का सम्बन्ध उस अमरीकी पार्टी की पराजय से था, जिसे उन्होंने 'राजतंत्रवादी' समझ रखा था। "फ्रांस में प्रजातंत्र की सफलताओं ने उनकी सम्भावनाओं और सम्भवतः उनकी योजनाओं पर अन्तिम और निर्णायक प्रहार कर दिया।"

कुछ ही दिनों बाद अपने दामाद के नाम एक पत्र में उन्होंने इसी विषय को इस प्रकार रखा :—

"फ्रांस से हमें अनेक शुभ समाचार मिल रहे हैं और उनके मिलते ही रहने की आशा है। वहाँ क्रान्ति की घटना पर सन्देह नहीं किया जा सकता और यहाँ तक कि उसके दुश्मन भी सन्देह नहीं कर सकते (अर्थात् सितम्बर, १७६५ में राजतंत्र का अन्त)। इससे यहाँ जो सनसनी पैदा हुई है और सार्वजनिक समाचारपत्रों में उनके जो संकेत मिले हैं, उससे सिद्ध हो गया है कि स्वयं हमारी शासन-प्रणाली का रूप फ्रांस की घटनाओं पर इतना अधिक अवलम्बित है, जितनी पहले किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। हमारी भूतपूर्व शिथिल सरकार के बाद राजतंत्र की जो लहर प्रचण्ड रूप धारण कर विपरीत दिशा में जा रही थी और जो राजतंत्र की सजधज के साथ चारों ओर प्रत्येक चीज पर हावी हो जाना चाहती थी, वह हमारी आशा के अनुकूल अब पीछे हटकर एक मध्यम वैधानिक सरकार का रूप धारण कर रही है, जो जनता की निर्बलता की नहीं, उसकी बुद्धि के अनुकूल होगी।

मई, १७६३ में जेफर्सन ने इस बात पर जोर दिया कि विशेषकर उत्तर-पश्चिम और दक्षिण में इंडियनों के सम्बन्ध में संकटापन्न स्थिति को देखते हुए अमरीका का 'यूरोपीय युद्धाग्नि' से बिल्कुल अलग रहना ही उचित है। प्रश्न था—क्या युद्धरत शक्तियाँ अमरीका को अलग रहने देंगी?

"फ्रांस के सफल होने पर सम्भवतः वे ऐसा करेंगे, किन्तु यदि विजयश्री राजाओं के हाथ लगी, तो सम्भव है कि वे कम से कम हमारी शासन-प्रणाली में परिवर्तन के लिए हमें विवश करके अपना कार्य पूर्णतया समाप्त करने का निर्णय करें—यह एक ऐसा परिवर्तन होगा, जो एक दल विशेष के प्रति, जो बहुसंख्यक नहीं, किन्तु प्रभावशाली है, कृतज्ञ होगा।...यह ग्रीष्म ऋतु समस्त विश्व के मानव-समाज की भावी स्थिति के लिए अत्यन्त महत्व की है और हमारे लिए तो है ही। क्योंकि हमारे संविधान में प्रत्यक्ष परिवर्तन की समस्या नहीं है, फिर भी वह उसके प्रशासन की प्रवृत्ति और सिद्धान्तों को प्रभावित

करेगा, जिसके परिणामस्वरूप एक घटना में उसका रूप दूसरी घटना से भिन्न होगा।"

जून तक फ्रांसीसियों का व्यवहार जेफर्सन को भयभीत करने लगा। उन्होंने रण्डोल्फ को फिर लिखा—

"फ्रांसीसियों ने अन्य राष्ट्रों के प्रति अपने व्यवहार में भयंकर भूलें की हैं। उन्होंने न केवल व्यर्थ ही में सभी बादशाहों का अपमान किया है, बल्कि वे अपने पड़ोसियों पर भी अपने ढंग की स्वतंत्रता लादने का प्रयास कर रहे हैं।" किन्तु जेफर्सन को इस बात से सान्त्वना मिली कि वे पड़ोसियों के संबंधों के मामले में अपना सुधार कर रहे हैं और जेनेट के विनाशकारी मार्ग ने भी उनके फ्रांस-समर्थकों के रुख में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं किया।"

अपने सेवा-निवृत्ति-काल में भी जेफर्सन के हृदय पर फ्रांसीसियों की समृद्धि की बात अंकित रही और अपनी इस उमंग में वे सावधानी बरतना भूल गये।

उन्होंने लिखा, "मेरा विश्वास है कि विदेशी शक्तियों पर उतनी पूर्ण विजय होगी और मैं यह आशा किये बिना नहीं रह सकता कि यह विजय तथा इसके परिणामस्वरूप आक्रमणकारी अत्याचारियों का अपमान, अन्तोगत्वा उन लोगों के विरुद्ध यूरोपीय जनता के क्रोध और रोष को प्रज्ज्वलित करेगा, जिन्होंने उन्हें इस दुष्टता के जाल में फँसाने का साहस किया और अन्त में राजा, सामन्त और पुरोहित फांसी के उन्हीं तख्तों पर चढ़ाये जायंगे, जिन्हें इतने दिनों तक वे मानव-रक्त से रंजित करते रहे हैं।"

अप्रैल, १७९५ में जब फ्रांस और महाद्वीप के उसके शत्रुओं के बीच सन्धि की सम्भावना प्रकट हुई, तब जेफर्सन ने लिखा कि यदि ऐसा हुआ तो मुझे सन्देह नहीं कि आगामी पतझड़ तक लन्दन में पिचेग्रू के साथ दावत खाने का मौका मिलेगा, क्योंकि मेरा विश्वास है कि उस स्थिति में थोड़े समय के लिए अपने सुख-वैभव का परित्याग कर वहाँ जाने और उस द्वीप में स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के प्रभात का स्वागत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता। हालैण्ड की क्रान्ति तथा हालैण्ड और फ्रांस के घनिष्ट सम्बन्ध से जेफर्सन के मन में नवीन उत्साह हुआ। १ जून, १७९५ को उन्होंने एक पत्र में लिखा, "मेरा हार्दिक विश्वास है कि स्वतंत्रता का पवित्र चक्र इतना गतिशील है कि वह समस्त विश्व की परिक्रमा करेगा। यह बात तो है ही कि उसके अंग, स्वाधीनता और ज्ञान की ज्योति, एक साथ गतिशील हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि इस चक्र को सर्वप्रथम हमने गतिशील बनाया और हमें प्रसन्नता है कि सबसे

आगे होने के कारण हमें किसी निकृष्ट दृष्टान्त का अनुसरण नहीं करना पड़ा। रोब्सपियरे के अत्याचार स्वाधीनता के भारी प्रयासों में विकटरूप से बाधक सिद्ध होंगे।" जेफर्सन को इस बात में कहीं सन्देह करने का कारण न मिला कि फ्रांस का उद्देश्य अभी भी स्वाधीनता का उद्देश्य नही है। फ्रांस सम्बन्धी अपने विचारों में जेफर्सन निस्सन्देह उस रिपब्लिकन पार्टी के बहुमत का प्रतिनिधित्व करते थे, जिसने १७९२ और १७९४ के चुनावों में कांग्रेस में काफी प्रगति की थी। वास्तव में, जेफर्सन प्रतिनिधि सदन में रिपब्लिकन-विरोधियों को केवल निर्बल अल्पसंख्यक के रूप में मानते थे, यद्यपि वे यह स्वीकार करते थे कि सिनेट के निर्माण में परिवर्तन की धीमी गति ने जनमत के अनुकूल कार्य करन से उसे रोका है। अब तक राजनीतिक दलों के प्रति जेफर्सन की उस घृणा का लोप हो चुका था, जो उन्होंने प्रारम्भ में व्यक्त किया था।

"जहां पार्टिया केवल पदलोलुपता के कारण विभाजित होती हैं, जैसा कि इंगलैण्ड में होता है, वहाँ उनमें से किसी में भाग लेना किसी भी बुद्धिमान या नैतिक व्यक्ति के लिए अशोभनीय होगा, किन्तु जहाँ सैद्धान्तिक मतभेद अत्यन्त आवश्यक और प्रबल हों, जितना हमारे देश के प्रजातंत्रवादियों और एकतंत्रवादियों के बीच हैं, वहां मैं दृढ और निश्चित भाग लेना सम्माननीय समझता हूँ और बीच का मार्ग अपनाना उतना ही अनैतिक समझता हूं, जितना 'ईमानदार आदमियों' और 'दुष्टों' की पार्टियों के बीच, जिनमें प्रत्येक देश विभाजित है, किसी का भी साथ देना अनैतिक समझता हूँ।"

आबकारी के खिलाफ पेन्सीलवानिया के दंगों के विरुद्ध, जो 'ह्विस्की विद्रोह' के नाम से प्रसिद्ध है, सैनिक शक्ति का उपयोग जेफर्सन को अपनी सरकार को सुदृढ बनाने तथा सार्वजनिक ऋण को बढ़ाने के हेमिल्टन के कुचक्र का एक और प्रमाण प्रतीत हुआ। फ्रांसीसी क्रांति समर्थक 'लोकतान्त्रिक संस्थानों' के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई के सुझाव से पिट के भोंडे बहुरूपिये (हेमिल्टन) की और भी निन्दा हुई और उसने ३१ जनवरी, १७९५ को इस्तीफा दे दिया, किन्तु प्रेसिडेण्ट और उसकी पार्टी पर उसका प्रभाव कम नहीं हुआ।

किन्तु आन्तरिक राजनीति में मतभेद के लिए कम गुंजाइश होने के कारण विदेशी मामलों पर ही वादविवाद के लिए मुख्य सामग्री मिल जाती थी और यह तो रिपब्लिकनों का दुर्भाग्य था कि फ्रांसीसी रिपब्लिकन सरकार, जिसे रोब्सपियरे के व्यापारिक युद्ध का उत्तराधिकार प्राप्त था,

वास्तविकता यह थी कि समुद्री युद्ध के दोनों ही पक्ष अपने लाभ के अतिरिक्त अन्य किसी चीज के प्रति समानरूप से उदासीन थे। प्रोफेसर बेमिस ने लिखा है, "वास्तव में अमरीकी सरकार ने फ़ांसीसी लूट के प्रति (जो सन्धि के प्रतिकूल थी) ब्रिटिश लूट की अपेक्षा (जो सन्धि के अनुकूल थी) अधिक उदारता की नीति अपनायी।"

अमरीकी जनमत के दृष्टिकोण से फ़ांसीसियों को इस बात से लाभ था कि वे स्पष्ट कारणों से ब्रिटिश नौसेना के वास्तविक या कथित भगोड़ों की खोज के लिए अमरीकी जहाजों की तलाशी लेने की ब्रिटिश प्रथा का अनुसरण नहीं कर सकते थे। १७९७ के ब्रिटिश नौसैनिक विद्रोह ने संकटग्रस्त लोगों की स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया। जेफर्सन से लेकर बाद के सभी विदेश-मंत्रियों ने समस्या के समाधान का असफल प्रयास किया और नागरिकता के सम्बन्ध में विरोधी धारणाओं तथा स्वदेश निस्सारण के अधिकार सम्बंधी विरोधी विचारों ने इसे और भी कठिन बना दिया।

दिसम्बर, १७९३ में मेडिसन ने ब्रिटिश व्यापार के विरुद्ध भेदभाव करते हुए १७९१ के प्रस्तावित नियमों को कांग्रेस में पुनः प्रस्तुत किया और बताया कि ग्रेट ब्रिटेन के साथ अमरीका का व्यापार कुल व्यापार का अस्सी प्रतिशत है, जबकि ग्रेट ब्रिटेन के लिए यह उसके कुल व्यापार का चौदह प्रतिशत ही है। फरवरी में गवर्नियर मारिस ने एक जहाजी बेड़े को सुसज्जित करने के उद्देश्य से ऋण के लिए फ़्रांस से प्रार्थना की, किन्तु उसका नकारात्मक उत्तर मिला। कैरीबियन सागर में व्यापक पैमाने पर अंग्रेजों द्वारा अमरीकी जहाजों के पकड़े जाने के समाचार ने जनमत को इतना विक्षुब्ध कर दिया कि हेमिल्टन भी उसी लहर में बह गये और सैनिक तैयारियों के लिए जोर दिया, किन्तु संघ-वादियों का उद्देश्य अमरीकी सौदेबाजी की स्थिति में सुधारमात्र करना था, ताकि एक साधारण समाधान के लिए दूसरे प्रयास का मार्ग प्रशस्त हो जाय। अमरीकी बन्दरगाहो से सभी जहाजो के प्रस्थान पर अस्थायी प्रतिबन्ध लगा दिया गया, किन्तु इसके साथ-साथ मुख्य न्यायाधीश जे को लन्दन के लिए एक विशेष दूत मनोनीत किया गया। सिनेट में समझौता-वार्ता न करने सम्बन्धी एक विधेयक प्रस्तुत किया गया, जो एडम्स के निर्णायक मत से गिर गया और जे को वर्तमान स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से यथाशक्ति प्रयास करने के लिए स्वतन्त्र कर दिया गया।

फिर, अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन के बीच सम्बन्धों को सुधारने के प्रयास में

नौसैनिक मामलों पर ही विचार करना था। जेफर्सन की सेवानिवृत्ति के वर्ष यूरोप में घटनापूर्ण तो थे ही लेकिन सुदूर अमरीकी पश्चिम में वे इतने महत्वपूर्ण नहीं थे, फिर भी उनके परिणामों का मानव-समाज के भविष्य पर कम महत्व-पूर्ण प्रभाव नहीं पड़ने वाला था। १७९० के दशक में केवल फ्रांसीसी क्रांति ही नहीं हुई, बल्कि इसी अवधि में अमरीकी मिडिलवेस्ट का भी जन्म हुआ। फ्रांसीसी क्रांति से राजनीतिक और सामाजिक विचार निःसृत हुए और मिडिलवेस्ट के रूप में आधुनिक जगत के एकमात्र विशालतम आर्थिक शक्ति-केंद्र का आदर्श प्रकट हुआ और उनकी अन्तर-प्रतिक्रिया निश्चय ही समकालीन इतिहास का मुख्य विषय बन गयी है।

प्रोफेसर जे. बी. ब्रेबनर ने अपनी पुस्तक 'उत्तरी अटलांटिक त्रिकोण' में लिखा है, "जबकि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका समुद्री व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में किसी समझौते के लिए प्रयत्नशील थे, जार्जिया से कनाडा तक, उत्तरी अमरीका के काफी लोग इसकी उपेक्षा कर रहे थे।" जन्मजात उद्विग्नता, कठिनाइयों के प्रति अधीरता, यूरोपीय देशान्तरवास के दबाव और स्वयं अपनी जनसंख्या की वृद्धि के कारण उनका पश्चिम की ओर बढ़ना रुक नहीं सका। नये प्रवासी राजनीति के प्रति उदासीन थे और वे दक्षिण में स्पेनिश झंडे के नीचे या उत्तर में ब्रिटिश झंडे के नीचे अपना भाग्य आजमाना चाहते थे। ओण्टेरेरियो के मूल 'राजभक्तों' के साथ बहुत से नये अमरीकी निष्क्रमणार्थी आकर मिल गये थे और वे भी अपने को 'राजभक्त' बताते थे। उसका कारण यही था कि वे ऐसा कह कर विशेष भूमि-अनुदान के अधिकारी बनना चाहते थे। १८१२ तक उत्तरी कनाडा (ओण्टेटेरियो) के ८० प्रतिशत निवासी अमरीकी या उनके वंशज थे और उनमें से केवल एक-चौथाई सच्चे 'राजभक्त' (अमरीकी युद्ध में ब्रिटिश सेना का साथ देनेवाले) थे। न्यू इंगलैंड और न्यूयार्क से झुण्ड के झुण्ड अमरीकी निष्क्रम-णार्थियों ने माण्ट्रियल के दक्षिण और पूर्व की जमीनों में प्रवेश किया।

किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण घटना ओहियो घाटी में अमरीकी प्रवासियों की बाढ़ थी। अंग्रेजों ने इस प्रदेश में अपनी चौकियाँ स्थापित कर अपना प्रभुत्व जमा लिया था और उचित या अनुचित, वे रेड इंडियनों के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहते थे। अब यदि ये इंडियनों को रखना चाहते और प्रवासियों को निरन्तर भीषण सीमा-संघर्ष के खतरे में रखने का प्रयास करते तो उनका शासन असह्य हो जाता था। स्वयं इंडियन आँग्ल-अमरीकी कूटनीति के परिणाम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं प्रतीत होते थे। इस कूटनीति में उनके

स्वार्थों को सौदेबाजी का आधार बनाया जा सकता था। १७६१ में सिनसिनाटी नगर से दूर एक स्थान पर जनरल सेंट क्लेयर की सेनाओं पर उनकी विजय ने अपनी सैनिक शक्ति के प्रति उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न कर दिया। १७६३ में शान्तिपूर्ण समाधान के लिए वार्ता का प्रयास विफल हो गया, जिसका कारण ब्रिटिश कुचक्र नहीं था, जैसा कि व्यापक रूप से समझा जाता था, बल्कि उपनिवेश के सीमा-निर्धारण के प्रश्न पर उभय पक्ष का कठोर रुख था। इस विफलता ने पश्चिमी इंडियन-कबीलों को इरोकोइस से पृथक कर दिया, क्योंकि इरोकोइस अमरीकियों से समझौता करना चाहते थे। अब इंडियन युद्ध करने के लिए अकेले पड़ गये। एक बार ऐसा हो जाने पर उन्हें किलों में पड़ी बची-खुची ब्रिटिश सेनाओं पर भरोसा करने के लिए विवश होना पड़ा तथा अंत में अंग्रेजों को भी यह निर्णय करना पड़ा कि वे लड़ें या पीछे हटें।

संकट बड़ी तेजी से आया। १७६३ के पतझड़ में स्वातंत्र्य-युद्ध के नायक एन्थोनी वेने ने एक छोटी सैनिक टुकड़ी के साथ इंडियन प्रदेश में प्रवेश किया और एक किलेबन्द चौकी में अपने को स्थापित कर दिया। फरवरी, १७६५ में निम्नवर्त्ती कनाडा के गवर्नर लार्ड डोस्वेस्टर ने फ्रांसीसी कनाडियनों में विद्रोह फैलाने के जेनेट के प्रयासों से क्षुब्ध होकर अत्यन्त उत्तेजनात्मक भाषण किया, जिसका यही अर्थ लगाया जा सकता था कि ग्रेट ब्रिटेन युद्ध करेगा। उन्होंने मामी में एक ब्रिटिश चौकी की स्थापना का आदेश दिया ताकि डिट्रायट की महत्वपूर्ण चौकी से भी सम्पर्क बनाये रखा जाय। वसन्त ऋतु में वेने ने एक नये स्थान तक प्रगति की और इंडियनों ने पुनः सन्धि की शर्तों को ठुकरा दिया। अनिवार्य विलम्ब के कारण फिलाडेल्फिया और लन्दन की कटु कूटनीति में सीमा-सम्बन्धी तनाव परिलक्षित हुआ; किन्तु डोरचेस्टर को युद्ध छेड़ने का समादेश नहीं प्राप्त था। २० अगस्त, १७६४ में 'फालेन टिम्बर्स' के युद्ध में, जो मामी के ब्रिटिश दुर्ग के निकट ही हुआ था, वेने ने इंडियनों को बुरी तरह पराजित किया। इस युद्ध में ब्रिटेन की मुख्य सेनाएं सम्मिलित नहीं थीं, यद्यपि ६० कनाडियन योद्धाओं ने इसमें भाग लिया था। अमरीकियों ने अंग्रेजों को हटाने का प्रयास नहीं किया और मामले को कूटनीतिक वार्ता पर छोड़ दिया गया।

अन्त में अंग्रेजों ने उस क्षेत्र में अमरीकी प्रभुत्व स्वीकार कर लिया और अपनी चौकियों का परित्याग कर दिया। इससे इंडियनों के पुनः प्रतिरोध की आशा नहीं रही। प्रवास के मार्ग में कोई बाधा नहीं रह गयी। १७६६ के एक

नये कानून द्वारा भूमि-सम्बन्धी नीति और सुदृढ़ बना दी गयी। इसके प्रारम्भिक निर्माण में जेफर्सन का विशेष हाथ था और महाद्वीपी कांग्रेस में सेवा करते समय उन्होंने इसमें योग दिया था। पिट्सबर्ग और सिनसिनाटी में भूमि-कार्यालय खोले गये। सन् १८०० तक ओहियो प्रदेश की जन-संख्या ४५ हजार थी; १८०३ में इसे राज्य के रूप में संघ में मान्यता दी गयी, १८१० में इसकी आबादी २ लाख ३० हजार थी। रोग, मद्यसार और बन्दूकों ने कबीलों का सफाया कर दिया। विस्तारशील साम्राज्य के स्वप्न अब साकार हो रहे थे।

इस प्रकार, जे की लन्दन-यात्रा ने अपने देश की बाह्य और आन्तरिक राजनीति के अनेक सूत्रों को परस्पर सम्बद्ध करने का कार्य किया। कतिपय अमरीकी इतिहासकारों ने उस सन्धि द्वारा किये गये अमरीकी बलिदानों पर विशेष बल दिया है, जिस पर उसके राजदूत ने अन्ततः १४ नवम्बर, १७९४ को हस्ताक्षर किये। कहा जाता है कि जे इससे अच्छी शर्तों पर सन्धि करने में इसलिए असफल हुए कि हेमिल्टन ने अंग्रेजों को आश्वासन दिया था कि १७८० की 'सशस्त्र तटस्थता' के नमूने के आधार पर अमरीका और अन्य तटस्थ राज्यों के बीच कोई सन्धि नहीं होगी; दूसरे वेस्ट इंडीज के व्यापार में हिस्सा प्राप्त करने के उद्देश्य से जे को सभी मामलों में रियायत करने का अधिकार दिया गया था। अन्य लोगों का कहना है कि तटस्थ अधिकार और अनिवार्य सेवा के सम्बन्ध में अमरीका की स्थिति कायम नहीं रही, यद्यपि ब्रिटेन ने युद्ध समाप्त होने के बाद निषिद्ध सामग्री और "स्वतंत्र जहाज, स्वतंत्र सामग्री" के सिद्धान्तों के प्रश्न पर विचारविमर्श करना स्वीकार कर लिया। साथ ही साथ उसने खाद्य-पदार्थों तथा अन्य सामग्रियो को, जो अमरीका के लिए निषिद्ध कर दिये गये थे, जब्त करने के बजाय खरीदने का अधिकार देना स्वीकार किया। किन्तु अन्त में दोनों देशों के बीच समानता के आधार पर व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। अमरीकी जहाजों को ब्रिटिश ईस्ट इंडीज जाने की और कतिपय प्रतिबन्धों के अन्तर्गत ब्रिटिश वेस्ट इंडीज जाने की अनुमति दी गयी। स्वातंत्र्य-युद्ध और नौसैनिक लूट से उत्पन्न प्रमुख आर्थिक दावों की समस्या का समाधान संयुक्त आयोगों के द्वारा करने का निर्णय किया गया।

सन्धि का अधिक महत्वपूर्ण और अधिक स्थायी प्रभाव पश्चिमी अमरीका पर पड़ा। अमरीका के पश्चिमोत्तर सीमा-निर्धारण सम्बन्धी दीर्घकालिक और जटिल विवाद का अन्तिम समाधान प्रायः उक्त क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए एक संयुक्त आयोग की नियुक्ति द्वारा किया गया। मतभेद का कारण यह था कि

१७८३ की शान्ति-सन्धि के रचयिताओं को पर्याप्त भौगोलिक ज्ञान नहीं था और उन्होंने अन्य भूलों के साथ एक भूल यह भी की कि मिस्सीसिपी के उद्गम को उत्तर में बहुत दूर कनाडियन प्रदेश में बताया। सन्धि में मिस्सीसिपी के संयुक्त नौकानयन की व्यवस्था की गयी थी और जब भूल का पता चल गया तो अंग्रेजों ने सीमा को और दक्षिण की ओर बढ़ाने का समर्थन किया ताकि नदी की धारा का कम से कम एक भाग उसके अन्तर्गत आ जाय। यद्यपि जे की सन्धि में मिस्सीसिपी के संयुक्त नौकानयन की पूर्ति की पुनरावृत्ति की गयी थी, तथापि उन्होंने यह मानने से इन्कार कर दिया कि इसका प्रादेशिक समस्या पर प्रभाव पड़ता है। मामले का अन्तिम समाधान बहुत बाद में हुआ, किन्तु अन्त में, मिडिलवेस्ट का एक महत्वपूर्ण भाग, जिसके अन्तर्गत मिन्नेसाटा का वह लौह भंडार भी आ जाता है, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दिया, कनाडा के बजाय अमरीकी प्रभुत्व में आ गया। प्रशान्त सागर के साथ अन्तिम सीमा उस स्थान के उत्तर में निर्धारित की गयी, जहाँ ब्रिटिश प्रस्तावों के स्वीकार किये जाने पर निर्धारित की जाती। अन्त में, अन्य समस्याओं के समाधान के फलस्वरूप ब्रिटेन ने १७९६ तक उत्तरी चौकियों को खाली करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, वेने की विजय के फलस्वरूप अमरीकियों को प्राप्त भाग अत्यन्त सुदृढ़ हो गया।

इन घटनाओं पर हाल के इतिहासकार प्रोफेसर ए. एल. बर्ट ने युद्ध-निवारण के प्राथमिक उद्देश्य में सफलता का तथा व्यावहारिक लाभों का पूर्ण श्रेय जे को प्रदान किया है और अन्त में यह निष्कर्ष निकाला—"पके हुए अन्तरराष्ट्रीय फोड़ों के उपचारार्थ संयुक्त अयोग-प्रणाली को स्वीकार करने के लिए ग्रेनाविले को समझा करके जे ने तत्कालीन विकट समस्या के समाधान से बढ़कर कार्य किया। उन्होंने कूटनीति के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया। उनकी सन्धि ने अन्तरराष्ट्रीय मामलों में न्यायिक पद्धति के आधुनिक उपयोग का उद्घाटन किया।"

जे की सन्धि और स्पेन के साथ पिंकने की सन्धि के बीच वास्तविक सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है। पिंकने की सन्धि २७ अक्तूबर, १७९५ को हुई और यह संघवादी कूटनीति की दूसरी प्रमुख सफलता थी; किन्तु यह तो स्पष्ट है कि यूरोप में स्पेन की समस्याओं के साथ-साथ इस आंग्ल-अमरीकी समझौते की सम्भावना थी, जिसके कारण स्पेनवासियों ने एक समझौता स्वीकार किया, जिसमें अनेक अर्थों में अमरीकी इच्छाओं के पूर्ति हुई। जे की सन्धि की मिस्सीसिपी सम्बन्धी धारा

में आंग्ल-अमरीकी समझौते पर विशेष बल दिया गया था। सीमा वहीं तक निश्चित की गयी, जिसके लिए उनका दावा था। प्रत्येक पक्ष ने इसके विरुद्ध इंडियनों के साथ साजिश न करने का वादा किया और अन्त में स्पेनवासियों और अमरीकियों ने मिस्सीसिपी के पूर्ण नौकानयन में संयुक्तरूप से भाग लेने का निर्णय किया, जबकि अमरीकियों को अपने सामानों के यातायात के लिए उसके निचले भाग में एक स्वतंत्र बन्दरगाह दिया गया और वह प्रथम तीन वर्षों के लिए न्यू आर्लियन्स में निश्चित किया गया।

पिंकने की सन्धि ने केण्टकी के संघराज्य से पृथकता की सम्पूर्ण कल्पना की ही हत्या कर दी और समूचे पश्चिमी अमरीका को उसके साधारण यातायात में संयुक्त हितों के महत्व से परिचित करा दिया। सिनेट ने सर्वसम्मति से इस सन्धि की पुष्टि की, यद्यपि जेफर्सन ने दलगत भावना से मेडिसन से शिकायत की कि इसमें शान्ति और मित्रता की अपेक्षा कुछ अवांछनीय तत्व तथा धोखाधड़ी और निरन्तर संघर्ष के बीज निहित हैं।

किंतु रिपब्लिकन शत्रुता का सारा विष जे की सन्धि के लिए सुरक्षित था। उसकी शर्तों के प्रकाशित होने पर जेफर्सन ने लिखा, "किसी भी सन्धि के विरुद्ध इतना व्यापक असंतोष पहले कभी भी नहीं प्रकट हुआ। जो लोग इसकी विशिष्ट धाराओं को समझते हैं, इनकी निन्दा ही करते हैं। जो लोग इन्हें नहीं समझते, वे इसके फ्रांस-विरोधी होने के कारण ही सामान्यतः निन्दा करते हैं।" उन्होंने जोर देकर कहा, "यह एक कुख्यात कानून है, जिसका वास्तव में अमरीका की जनता और विधानसभा के विरुद्ध इंग्लैंड और इस देश के अंग्रेजभक्तों के बीच मित्रता की सन्धि से अधिक महत्व नहीं है।"

सन्धिओं की पुष्टि के लिए अमरीकी संविधान द्वारा निर्धारित जटिल पद्धति की इस बार पूर्ण परीक्षा हुई। सीनेट में इस सन्धि की पुष्टि अधिकतर इस कारण हुई कि संघवादियों ने उसके मूल रूप को किसी प्रकार गुप्त रखा और वादविवाद को भी गुप्त रखा गया। अल्पमत के एक सदस्य द्वारा उसके प्रकाशित कर दिये जाने से एक तूफान खड़ा हो गया। वाशिंगटन ने अन्त में उस पर हस्ताक्षर किये और सन्धि की पुष्टि का आदान-प्रदान हुआ, यद्यपि वेस्ट-इंडीज सम्बन्धी धाराओं को छोड़ दिया गया, क्योंकि सीनेट ने सुविधा पर प्रतिबन्धों को स्वीकार करने के बजाय उसे ठुकरा दिया (वास्तव में अंग्रेजों ने अपने ही उपनिवेशों के लिए एकांगी कार्रवाई द्वारा अमरीकियों को वही अधिकार प्रदान किये)। सीनेट की आपत्ति का एक कारण तो यह था कि एक शर्त

द्वारा अमरीका को वेस्ट इंडीज की रूई सहित कतिपय सामग्रियों के निर्यात के लिए मनाही कर दी गयी; किंतु रूई के महत्व की वास्तव में पहले से कल्पना नहीं की गयी थी। दो वर्ष पूर्व तत्कालीन विदेश-मंत्री जेफर्सन ने एली ह्विटने से रुई से बिनौला निकालने के यंत्र के बारे में विस्तृत विवरण मांगा था, क्योंकि उसे वे प्रोत्साहन देना चाहते थे।

पुष्टि से सन्धि-विषयक विवाद का अन्त नहीं हुआ, क्योंकि रिपब्लिकन जेफर्सन के इस विचार के समर्थक थे कि सिनेट की कार्रवाई से प्रतिनिधि-सभा आबद्ध नहीं है। प्रतिनिधि-सभा में संयुक्त आयोगों के लिए आवश्यक धन-विनियोग को ठुकराने के प्रश्न पर रिपब्लिकन केवल तीन मत से पराजित हुए।

जे की सन्धि के प्रति जेफर्सन के रुख में दलगत भावना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं परिलक्षित होता; अंग्रेज भक्तों के दल के प्रति उनका सन्देह पूर्ववत् कायम रहा। मई, १७९७ में, जबकि वे उप-राष्ट्रपति थे, उन्होंने लिखा, "अंग्रेज समानता से सन्तुष्ट नहीं होंगे, वे व्यापार पर एकाधिकार चाहते हैं और अमरीकियों पर प्रभाव जमाना चाहते हैं और इसमें वे वास्तव में सफल भी हुए हैं।

"उनका एक ऐसा कारखाना है, जहां हम अपनी सारी आवश्यकताओं के लिए जाते हैं; उन्हीं के साथ हमारे सभी मजदूर किसी न किसी प्रकार आबद्ध हैं; हमारे अधिकांश नौकानयन का उनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है, उनके कारबारों का शुल्क भी कृत्रिम नागरिकता द्वारा उन्हीं के पास रह जाता है; हमारे कथित व्यापारियों में अधिकतर ये ही विदेशी और कल्पित नागरिक हैं, जो हमारे बन्दरगाहों में भरे पड़े हैं और देश के प्रत्येक छोटे-छोटे कस्बे और जिले में बसे हुए हैं तथा अपने और अपने आश्रितों के मतों द्वारा उन स्थानों की सभी चीजों पर और छलकपट एवं अपने राजदूतों के प्रभाव से देश पर अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं; वे बड़ी तेजी से हमारे बैंकों और सार्वजनिक निधियों के एकाधिकार की ओर बढ़ते जा रहे हैं और इस प्रकार हमारे सार्वजनिक अर्थतंत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर रहे हैं; उन्होंने सरकारी दफ्तरों के भीतर और बाहर अधिकांश प्रभावशाली व्यक्तियों को मिला रखा है; उन्होंने दिखा दिया है कि सरकार के विभिन्न विभागों पर अपने इन प्रभावों से वे उसे एक निर्दिष्ट दिशा में जाने के लिए विवश कर रहे हैं और इस देश के हितों को पूर्णतः किसी दूसरे की इच्छा के अनुकूल मोड़ रहे हैं; जब हम इन तमाम बातों की ओर ध्यान देते हैं तब हमारे लिए यह कहना असम्भव हो जाता है कि हम

किसी स्वतंत्र आधार पर खड़े हैं और कोई भी स्वतंत्र विचार का व्यक्ति पराधीनता के इस बन्धन को देख सकता है तथा उसके अन्तर्गत असह्य पीड़ा का अनुभव कर सकता है।"

सम्भव है कि ब्रिटिश प्रभाव और उसके समर्थकों के प्रति इस दृढ और दीर्घकालिक आशंका के कारण ही जेफर्सन ने अमरीका के लिए एक विशुद्ध कृषक अर्थतन्त्र की प्रारम्भिक नीति का परित्याग कर दिया और धीरे-धीरे सभी आवश्यक वस्तुओं में आत्मनिर्भरता की नीति अपनाने का निर्णय किया।

१७९६ में जेफर्सन की बढ़ती हुई राजनीतिक चिन्ता के बावजूद, इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उन्होने राष्ट्रीय रंगमंच पर पुनः लौटने के लिए कोई सक्रिय प्रयास किया और न उनके इस कथन पर ही सन्देह करने का कोई कारण है कि वे कोई पद नहीं चाहते, अथवा एक बार वाशिंगटन का हटना निश्चित हो जाने पर वे अपनी अपेक्षा जान एडम्स के चुनाव का स्वागत करते। हेमिल्टन के प्रति दोनों के विरोध के कारण उनका पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ठ हो गया था; वास्तव में जेफर्सन ने एडम्स को ही हेमिल्टन का एकमात्र विकल्प मान लिया था। हेमिल्टन के सहयोगियों ने दक्षिणी कारोलिना के थामस पिंकने को दूसरे संघवादी उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया। (तत्कालीन संविधान के अनुसार राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति, दोनों ही के लिए एक ही मतपत्र था।) रिपब्लिकन पार्टी में अभी भी विभिन्न भौगोलिक और सामाजिक तत्व सम्मिलित थे और वह वर्जीनिया-न्यूयार्क-गठबन्धन पर आधारित थे। इसका उदाहरण १७४३ में मिला, जब वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना ने अपने मत एडम्स के बजाय क्लिण्टन को दिये थे। जेफर्सन के साथ न्यूयार्क के आरोन बट के मनोनयन द्वारा इसे अब और भी सुदृढ़ बना दिया था।

वाशिंगटन ने १७ सितम्बर, १७९६ के अपने विदाई भाषण में दलगत संघर्ष को कम करने की अपील की और यह निश्चित था कि किसी कम सम्माननीय और कम प्रभावशाली व्यक्ति के प्रेसिडेण्ट-पद पर आने पर यह संघर्ष कई गुना जोश से उमड़ जाता। वर्गीय गठबन्धनों के आधार पर दलगत विभाजन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति वास्तव में एक संघराज्य के लिए खतरनाक चीज थी और वाशिंगटन ने संघराज्य का एक ऐसा रूप चित्रित करने का प्रयास किया, जिसके विभिन्न क्षेत्र प्राकृतिक रूप से अन्योन्याश्रित हों। यह एक ऐसी कल्पना थी, जो जेफर्सन की विचारधारा के अधिक प्रतिकूल नही थी और जिसे अन्ततोगत्वा हेनरी क्ले की 'अमरीकी प्रणाली' में स्थान प्राप्त हुआ।

वाशिंगटन ने इस बात पर जोर दिया कि विशिष्ट राष्ट्रों के विरुद्ध स्थायी और दुराग्रहपूर्ण शत्रुता तथा अन्य राष्ट्रों के प्रति विशेष अनुरक्ति पर आधारित विदेश-नीति सम्बन्धी विवादों का कितना हानिकारक आन्तरिक प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने शान्ति के सर्वोत्तम आश्वासन के रूप में तथा अमरीकी मामलों में विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध सर्वोत्कृष्ट संरक्षण के रूप में "सभी राष्ट्रों के प्रति निष्ठा और न्याय" की नीति की सिफारिश की।

वाशिंगटन ने जिन शब्दों में अमरीकी तटस्थवाद के आवश्यक तत्वों की व्याख्या की, वे ही आगे चलकर उनके देशवासियों के विदेशी मामलों के संचालन में स्थायी मार्गदर्शक सिद्ध हुए।

"विदेशी राष्ट्रों के बारे में हमारे लिए आचरण का महान नियम यह है कि हम उनके साथ अपना व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ायें और उनके साथ यथासम्भव कम राजनीतिक सम्बन्ध रखें....

"यूरोप के कुछ निश्चित प्राथमिक स्वार्थ हैं, जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है और है भी तो बहुत ही कम। इसलिए वह प्रायः ऐसे मतभेदों में उलझता रहेगा, जिनके कारणों से वस्तुतः हमारा कोई सम्ब्रन्ध नहीं होगा। इसलिए उसकी राजनीति के साधारण उतार-चढ़ाव में अथवा उसकी मित्रता या शत्रुता के साधारण संयोग-वियोग में कृत्रिम बन्धनों द्वारा अपने को उलझाना हमारे लिए बुद्धिमानी की बात नही होगी।"

जबकि मौजूदा सन्धियों का बड़ी सावधानी से सम्मान करना चाहिए था "अमरीका की सच्ची नीति विदेशी जगत के किसी भी भाग के साथ स्थायी गठबन्धन से स्पष्टतः निकल जाने की है और अपनी तटस्थता से लाभ प्राप्त करने के लिए अपनी बढ़ती हुई शक्ति और एकता पर अवलम्बित रहने की है।"

किन्तु विदाई के प्राथमिक सन्देश के प्रति समकालीनों ने जो उदासीनता प्रदर्शित की, उससे यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता था कि भविष्य में उसका समर्थन होगा। १७९६ के चुनावों में दलगत भावना का जैसा विषाक्त प्रभाव देखने को मिला, वैसा कभी नहीं देखा गया था। यद्यपि एडम्स और जेफर्सन में से किसी ने भी इस संघर्ष में भाग नहीं लिया, फिर भी दोनों पक्षों ने एक दूसरे की कुत्सित निन्दाओं से समाचारपत्रों को रंग दिया। क्रान्ति के वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ एवं निःस्वार्थ जनसेवा के सर्वोत्तम प्रतिनिधि की निन्दा उसे राजतंत्र और कुलीनतंत्र का पोषक बताकर की गयी। वर्जीनिया के सम्भ्रान्त और सर्वोपरि मानव-दशा के यथार्थ सुधार में रुचि रखनेवाले जेफर्सन को ढोंगी,

कोरा सिद्धान्तवादी, नास्तिक और कायर बताया गया। राजनीति में क्रान्ति-वाद, धर्म में नास्तिकता और व्यक्तिगत आचरण में अनैतिकता को एक साथ लिया गया। दोनों ही पक्षों ने विदेशी मामलों में एक दूसरे के दृष्टिकोण का दुरुपयोग किया, यद्यपि जे की सन्धि विषयक जेफर्सन के विचारों से इस आरोप का खण्डन करना कठिन हो जाता है।

अब संघराज्य के संस्थापकों की यह मूल कल्पना नष्ट हो रही थी कि प्रेसिडेण्ट के निर्वाचकों को विवेक से काम लेना चाहिए और अब पार्टी के आधार पर और वस्तुतः विभागीय आधार पर मतदान आरम्भ हो गया। दक्षिण और पेन्सीलवानिया ने जेफर्सन का साथ दिया और उत्तर तथा मेरीलैण्ड ने एडम्स का। किन्तु दोनों ही पार्टियों में इतनी गुटबन्दी थी कि केवल ३८ मत अन्य चार उम्मीदवारों में विभाजित हो गये थे। अन्त में तीन रिपब्लिकन राज्यों का एक-एक मत एडम्स के पक्ष में चला गया और इतने ही मतों से वे जेफर्सन से आगे उठे। हेमिल्टन पक्ष के उम्मीदवार पिंकने ६ मतों से पीछे रहे।

इस प्रकार जब एडम्स ने पदग्रहण किया तो उन्हें इस बात का ज्ञान था कि देश में उनका बहुत ही कम मतों से बहुमत है और उनका प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी फिर प्रेसिडेण्ट है। सर्वप्रथम ऐसा प्रतीत हुआ कि एडम्स और जेफर्सन मिलकर काम करेंगे और कोई मध्यम मार्ग निकालने का प्रयास करेंगे, यद्यपि जेफर्सन का कहना था कि उनका सरकारी कार्य सांविधानिक रूप से सिनेट की अध्यक्षता तक ही सीमित है। वास्तव में मंत्रिमंडल इस प्रकार के सहयोग में बाधक सिद्ध हुआ, क्योंकि उसमें वही लोग थे जो वाशिंगटन के मंत्रिमंडल में थे और उनका नेतृत्व हेमिल्टन कर रहे थे। प्रशासन संघवादी नीति के परम्परागत आधार पर कार्य करता रहा।

फ्रांसीसी प्रजातंत्री सरकार के व्यवहार ने और कुछ भी करना कठिन बना दिया। मनरो ने, जिन्हें उसी समय पेरिस भेजा गया, जिस समय जे को लन्दन भेजा गया था, इन निजी आश्वासनों द्वारा फ्रांसीसी क्षोभ को शान्त करने का प्रयास किया कि वाशिंगटन के अवकाश-ग्रहण के पश्चात् सब कुछ बदल दिया जायेगा और क्रुद्ध राष्ट्रपति ने उन्हें वापस बुला लिया। चूंकि मनरो ने जे की सन्धि के प्रावधानों के प्रकाशित होने के पूर्व फ्रांसीसी नौकानयन-विभाग से कतिपय सुविधाएं प्राप्त कर ली थीं, इसलिए फ्रांसीसियों ने महसूस किया कि अमरीकी दूत ने, जिसने उनके हितों के प्रति बड़ा उत्साह प्रदर्शित किया था, उनके साथ विश्वासघात किया। अब फ्रांसीसी सरकार ने अपनी नीति को पूरी

शक्ति से कार्यान्वित करने का निश्चय किया और घोषणा की कि जे की सन्धि का बदला अमरीकी जहाजरानी के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करके लिया जायगा, जिस प्रकार इंगलैण्ड ने किया था। वाशिंगटन के द्वारा भेजे गये नये दूत से मुलाकात भी नहीं की गयी और अमरीका तथा फ्रांस के बीच सारे कूटनीतिक सम्बन्ध स्थगित कर दिये गये।

एडम्स ने एक विशेष मिशन भेजने का निर्णय किया—ऐसा मिशन, जिसने ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के साथ सन्धि करायी थी। किन्तु नये फ्रांसीसी विदेश-मंत्री टैलीरेण्ड ने उसके तीन सदस्यों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया और अपने दलालों द्वारा उन्हें सूचित किया कि किसी भी बातचीत के पूर्व टैलीरेण्ड और उनके घूसखोर साथियों को घूस देना पड़ेगा और फ्रांस को ऐसी शर्त पर ऋण देना होगा, जिसका वास्तविक अर्थ होगा उपहार। टैलीरैण्ड एक बार फिर यह अनुमान लगा रहे थे कि अमरीका युद्ध करना नहीं चाहता और उनका विश्वास था कि यदि एडम्स कोई कार्यवाई करना भी चाहेंगे तो संघवादियों के विरुद्ध आन्तरिक विरोध से वह विफल हो जायेगी। इस कार्य में उन्हें मिशन के रिपब्लिकन सदस्य और न्यू इंग्लैण्ड में जेफर्सन के प्रमुख विश्वासपात्र एलब्रिज गेरी के व्यवहार से प्रोत्साहन मिला।

फ्रांसीसियों का अनुमान गलत सिद्ध हुआ। एडम्स ने घोषणा कर दी कि वे फ्रांस को तब तक कोई दूसरा राजदूत नहीं भेजेंगे जब तक यह आश्वासन न मिल जाय कि एक महान, स्वतंत्र, शक्तिशाली और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में उसका स्वागत किया जायेगा। युद्ध के आधार पर देश को तैयार करने के प्रस्ताव का रिपब्लिकनों ने तीव्र विरोध किया, किन्तु फ्रांस से प्राप्त खरीतों से एडम्स का मामला ठोस सिद्ध हो जाने पर सारा विरोध हवा हो गया और कांग्रेस ने शीघ्र ही आवश्यक विधेयक पारित किये। फ्रांस और उसके साम्राज्य के साथ व्यापार स्थगित कर दिया गया और समुद्र में एक सीमित किन्तु अघोषित युद्ध आरम्भ हो गया, यद्यपि औपचारिक युद्ध की कार्यवाइयों से बचने का प्रयास किया गया। इस बीच वाशिंगटन ने आवश्यक होने पर अमरीकी सेना का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया, बशर्ते हेमिल्टन को सेना में द्वितीय स्थान दिया जाय। हेमिल्टन के पुनरागमन से ऐसा लगा कि युद्ध होगा और स्थिति से लाभ उठाकर ग्रेट ब्रिटेन के साथ और भी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जायेगा। ग्रेट ब्रिटेन भी अमरीकी व्यापार में अपने प्रतिबन्धों को धीरे-धीरे ढीला कर रहा था। स्वातंत्र्य-युद्ध के समय चार्ल्सटन बन्दरगाह में जो तोपें छीनी गयी

थीं और हेलिफाक्स भेज दी गयी थीं, उन्हें अंग्रेजों ने ऋण के रूप में वापस किया और यह ऋण अन्त में उपहार के रूप में परिणत हो गया।

यह विश्वास करने का कारण था कि हेमिल्टन नयी दुनिया में फ्रांसीसी और स्पेनिश उपनिवेशों के विरुद्ध व्यापक आंग्ल-अमरीकी आक्रमण की योजना बना रहे थे और मिरण्डा के द्वारा स्पेनिश उपनिवेशों से विद्रोह का आवाहन कर रहे थे, क्योंकि स्पेन फिर फ्रांस का मित्र बन गया था; दूसरी ओर, वरमोण्ट के पृथकतावादियों से मिल कर फ्रासीसी कनाडा पर आक्रमण करने की योजना बना रहे थे और अमरीका में नये उत्तरी और पश्चिमी उपनिवेश के लिए कुचक्र रच रहे थे।

स्वयं जेफर्सन पर इस अभियान का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, यद्यपि सामान्य देशवासी इस तनाव से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। १७९७ की ग्रीष्म ऋतु में उन्होंने सभी प्रकार की तैयारियों का विरोध किया और विचार व्यक्त किया कि केवल फ्रासीसी सफलताओं और ब्रिटिश आपदाओं के समाचारों ने देश को युद्ध में झोंकने से प्रशासन को रोका। उन्होने सोचा कि अमरीकी महाद्वीप में युद्ध के प्रसार के परिणामस्वरूप लुइसियाना में फ्रांसीसियों का पुनः प्रभुत्व स्थापित हो जायगा। तदनन्तर, यूरोपीय युद्धों के पश्चात् लुइसियाना भूमि-अनुदानों का उपयोग प्रजातंत्र की सेनाओं का खर्च चुकता करने में किया जायेगा और पश्चिम अमरीका का एक नया बलशाली और विशाल जनसंख्या वाला पड़ोसी राष्ट्र बन जायेगा।

यद्यपि जेफर्सन ने खुले आम दलगत भावना की उग्रता पर तथा इस बात पर खेद प्रकट किया कि उनके अनुमत में पहले पहल यह उग्रता उनके व्यक्तिगत सम्बन्धों को प्रभावित कर रही है, तथापि उनके पत्रों से प्रकट होता है कि वे पार्टियों की शक्ति के बारे में बराबर चिन्तित रहते थे। उनकी सारी आशाएं पार्टी द्वारा समस्त शासन-तंत्र पर अधिकार करने के लिए पूर्णतया केन्द्रित थीं और विशेष-कर दक्षिण के बाहर उसकी प्रगति के प्रत्येक लक्षण की ओर वे उत्सुकतापूर्वक देख रहे थे। जबकि उत्तेजना चरमसीमा पर पहुँच चुकी थी, एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण की उपेक्षा नही की जा सकती थी। समय रहते जेफर्सन ने सान डोमिनगो में निग्रो-विद्रोह के महत्व की ओर बार-बार ध्यान आकृष्ट किया और यह विचार व्यक्त किया कि अमरीका में गुलामों की मुक्ति के लिए एक ऐसा तर्क है, जिसका कोई उत्तर नहीं है। यदि निग्रो अन्य वेस्ट इंडियन द्वीपों में विजयी हुए तो इनका उपयोग मुख्य भूमि के मुक्त दासों के बसाने के लिए

किया जा सकता है। इस बीच एडम्स द्वारा निग्रो विद्रोहियों का समर्थन और फ्रांसीसी उपनिवेशों के व्यापारिक निषेध से सान डोमिनगो को मुक्त रखना दक्षिणी राज्यों के लिए खतरनाक था।

राजनीतिक समस्याओं में युद्ध और शान्ति के प्रश्न का सबसे अधिक महत्व था। १७६८ की वसन्त ऋतु में, जब तक कि इंगलैण्ड को आयोजित आक्रमण का परिणाम प्रकट नही हो गया, जेफर्सन ने फ्रांस के साथ घातक सन्धि-भंग में विलम्ब करने का प्रयास किया। उनका यह मत था कि इस प्रयास की सफलता के परिणामस्वरूप अन्त में युद्ध का खतरा समाप्त हो सकेगा।

उन्होने लिखा, "इंगलैण्ड की पराधीनता वास्तव में एक साधारण विपत्ति होगी, किन्तु सौभाग्य से यह असम्भव है। यदि इसका अन्त केवल उसके प्रजातंत्रीकरण में हो तो मैं नहीं समझता कि हमारे देश का कोई सच्चा प्रजातंत्रवादी किस सिद्धान्त के आधार पर उस पर खेद प्रकट करेगा, चाहे वह यह समझे कि यह मानव-समाज के अन्य भागों के लिए एक विशुद्धतर शासन का वरदान है अथवा यह समझे कि उस आदर्श के प्रभाव से स्वयं हमारे देश की स्वतंत्रता को बल मिलेगा। सचमुच, मै यह नहीं चाहता कि किसी राष्ट्र पर कोई शासन-प्रणाली लादी जाय, किन्तु यदि ऐसा होता ही है तो एक अधिक स्वतंत्र प्रणाली पर मुझे प्रसन्नता होगी।"

अप्रैल, १७६८ के अन्त में उन्होंने लिखा कि युद्ध की कार्रवाइयों में विलम्ब महत्वपूर्ण है ताकि गर्मी का मौसम आ जाये।

"जनता स्वयं अनुभव करे और यह देखे कि फ्रांस की कार्रवाइयों का इंगलैण्ड में तथा यहाँ भी क्या प्रभाव पडता है, इसके लिए समय दिया जाना चाहिए। इसके विपरीत, यदि युद्ध को जबर्दस्ती लादा ही जाता है और अनुदारवादियों के स्वार्थों का प्रभुत्व कायम रहता है तो यह उन्ही पर छोड देना चाहिए, क्योकि वे ही युद्ध में कूदकर उसका संचालन करने के लिए उत्सुक हैं। इसलिए, दो या तीन सप्ताहों की वर्तमान अवधि १७७५ के बाद सबसे महत्वपूर्ण अवधि है, और इसीमें यह निर्णय होगा कि उस संघर्ष से स्थापित सिद्धांत कायम रहेंगे अथवा उन्ही सिद्धांतों को पुनः स्थान दिया जायेगा, जिन्हें वे नष्ट कर चुके हैं।"

जब प्रशासन ने फ्रांस के साथ अपने दूतो के पत्र-व्यवहार को प्रकाशित किया तो जेफर्सन ने महसूस किया कि जनता पर और विशेषकर कांग्रेस पर इसका प्रबल प्रभाव पड़ेगा। टैलीरेण्ड के दूतों के नामों के बजाय यह पत्रव्यवहार 'एक्स. वाइ. जेड-पत्रव्यवहार' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जैसा कि उन्होने अर्थ

लगाया, पत्रव्यवहार से युद्ध के लिए कोई नया उद्देश्य नहीं मिल सका। यह सारा मामला उनमें से एक दूत मार्शल का गढ़ा हुआ था। जेफर्सन ने इस बात पर जोर दिया कि वास्तव में फ्रांसीसी इतना ही चाहते थे कि गत अप्रैल में कांग्रेस के नाम कड़ शब्दों में दिये गये एडम्स के सन्देश में उनके विरुद्ध जो शत्रुतापूर्ण बातें कही गयी थीं, उन्हें सार्वजनिक रूप से वापस लिया जाय। अन्य माँगें आपत्तिजनक बातों को वापस न लिये जाने पर की गयी थीं। घूसखोरी की माँगों में टैलीरेण्ड का भी हाथ था, इसका कोई प्रमाण नहीं था। जेफर्सन ने स्वीकार किया कि उस समय सर्वत्र रोष उबल रहा था और जिसने अपने को इस 'संक्रामक रोग' से दूर रखने का प्रयास किया, वह हर समाज में घृणा की दृष्टि से देखा गया। इसीलिए शान्ति-दल ने आन्तरिक तैयारी की कूटनीति अपनायी और बाहरी कार्रवाई की ऐसी कोई नीति नहीं अपनायी, जिससे खुले युद्ध को प्रोत्साहन मिलता। इस बीच सैनिक प्रस्तावों में भारी कर की जो व्यवस्था की गयी थी, उससे युद्ध की सरगरमी कुछ शान्त होने की अपेक्षा की गयी।

जेफर्सन ने अमरीकियों के प्रति नरम नीति अपनाने के उद्देश्य से फ्रांसीसियों को प्रभावित करने का निष्फल प्रयास किया और 'क्वेकर' समुदाय के शान्तिवादी तथा दूसरों के मामलों में मध्यस्थता करनेवाले जार्ज लोगान को परिचय-पत्र के साथ पेरिस भेजने की भूल की। जार्ज लोगान फ्रांस की प्रजातन्त्रवादी सरकार के शान्तिपूर्ण इरादों के अश्वासनों के साथ वापस आये। इस व्यवहार के कारण कांग्रेस ने एक विशेष कानून बनाकर इस प्रकार के अनाधिकृत मिशनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जेफर्सन ने विक्टर डू पोण्ट के साथ भी बातचीत की, जिससे एक राजदूत के रूप में मिलने से एडम्स ने इन्कार कर दिया।

किन्तु ऐसे समय में, जबकि घटनाचक्र जेफर्सन जौर उनकी पार्टी के विरुद्ध प्रतीत हो रहा था, एडम्स ने राजनीतिक धारा को पलटने के लिए उन्हें अप्रत्याशित अवसर प्रदान किया। प्रशासन ने युद्ध और ऐसी स्थिति में फ्रांस-समर्थक प्रचार के आन्तरिक प्रभावों से भयभीत होकर कांग्रेस से कुछ ऐसे कानून पास कराये, जिनसे लोकतांत्रिक स्वाधीनताओं में काफी हस्तक्षेप होने लगा। जेफर्सन के विचार से ये कानून उन कानूनों से भी कठोर थे, जिन्हें ग्रेट ब्रिटेन में पिट ने बनाना आवश्यक समझा था।

१७९८ के जून और जुलाई में इस प्रकार के चार कानून पारित हुए। प्रथम कानून द्वारा नागरिकता के लिए आवश्यक निवास की अवधि बढ़ाकर

पाँच वर्ष से १४ वर्ष कर दी गयी। द्वितीय कानून ने राष्ट्रपति को किसी भी विदेशी को, जिसे वे खतरनाक समझें, निष्कासित करने का अधिकार दिया। तृतीय कानून द्वारा किसी भी ऐसे राज्य के निवासियों को निष्कासित करने अथवा उन पर आवश्यक प्रतिबन्ध लगाने का उन्हें अधिकार दिया गया, जिसके माथ अमरीका युद्धरत होगा। चौथे कानून के अन्तर्गत अमरीकी नागरिकों पर कुछ निश्चित अभिव्यक्तियों के लिए राजद्रोह का मुकदमा चलाया जा सकता था।

संघीय सरकार ने संघीय न्यायालय से राजद्रोह कानून के अन्तर्गत बहुतों को सजाएँ दिलायीं और मुख्य न्यायाधीश ओलिवर एल्सवर्थ ने फ्रांसीसी प्रणाली के समर्थकों की, जिनमें उप-राष्ट्रपति और कांग्रेस के अल्पसंख्यक भी थे, तीव्र भर्त्सना की और उन्हें नास्तिकता तथा अराजकता, रक्तपात और लूट का उपदेशक घोषित किया।

विदेशियों के निष्कासन और राजद्रोह कानूनों की देश में और विशेषकर रिपब्लिकन दक्षिण में तत्काल प्रतिक्रिया हुई। उसका कारण इतना ही नहीं था कि उनमें अनेक आन्तरिक दोष थे, बल्कि इनके द्वारा संघीय सरकार को ऐसे अधिकार प्रदान किये गये, जिन्हें स्वयं राज्य ने अपने लिए हानिकारक समझा, क्योंकि संघीय संविधान की पुष्टि के बाद प्रायः पहले-पहल संघ के सम्बन्ध में राज्यों के अधिकार और सत्ता का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। जेफर्सन के फ्रांस-समर्थक होने की बात काफी फैल चुकी थी और उनके लिए बाधक सिद्ध हो रही थी। उन्होंने घरेलू राजनीति की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने का यह मौका हाथ से नहीं जाने दिया।

उन्होंने बैंक-विधेयक के समय ही यह आशंका व्यक्त की थी कि संघीय सरकार को नये अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से ही संविधान को और व्यापक बनाया जा रहा है और १७९६ में, जब मेडिसन ने सुझाव दिया कि कांग्रेस को डाक-विभाग की बचत को डाक-सड़कों के निर्माण में लगाने की अनुमति देनी चाहिए, तो जेफर्सन ने पुनः वही आशंका व्यक्त की। १७९३ से ही संघीय न्यायाधीश इस सिद्धान्त के आधार पर राजद्रोह के लिए दण्ड दे रहे थे कि उन्हें अमरीका के सामान्य कानून से अधिकार प्राप्त हुए हैं, किन्तु संघवादी दल के बाहर के लोग इसे मानने को बिल्कुल तैयार नहीं थे। अब न्यायाधीशों को वैधानिक अधिकार प्राप्त था, किन्तु इतना होने पर भी उन्होंने राजद्रोह के मामलों में कांग्रेस के विचारों से भी आगे जाने के अपने अधिकार पर बल दिया और संविधान तथा कानूनों के निर्माण में अपने को अन्तिम अधिकारी माना।

यह बताना कठिन है कि जेफर्सन के सन्देह कितने गम्भीर थे, जब उन्होंने कहा कि विदेशी निष्कासन और राजद्रोह कानून यह परीक्षा करने की कसौटी मात्र है कि अमरीकी विचारधारा इस दृढ़ उल्लंघन को कहाँ तक सहन कर सकती है और यदि उन्हे सफलतापूर्वक लागू कर दिया गया तो राष्ट्रपति-पद का अधिकारी जीवनपर्यंत के लिए हो जायेगा और अन्त में यह पद वंश-परम्परागत बन जायेगा। उन्होंने कहा, "कम से कम 'ओलिवरवादियो' का यह उद्देश्य हो सकता है, जब कि धर्मवादी और राजतत्रवादी (जो सम्भवतः सर्वाधिक प्रबल हैं) अपने बादशाह जार्ज तृतीय को पुनः सिंहासनारूढ़ कराने का राजनीतिक खेल खेल सकते है।" गम्भीर हो या नही, इस प्रकार के विचार के प्रचारात्मक मूल्य से कभी इन्कार नही किया जा सकता था।

जन-भावना को उभाड़ने में जेफर्सन को उतनी कठिनाई नहीं हुई जितनी उसे नियंत्रित करने मे। दक्षिण में जान टेलर जैसे उग्रवादी भी थे, जिन्होंने समझ रखा था कि प्रभुताशाली संघवादी पूर्व से उद्धार होना असम्भव है और उसका एकमात्र उपचार दक्षिणी राज्यों का अलग हो जाना ही है, जिसका आरम्भ वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना से होना चाहिए। जेफर्सन ने संकेत किया कि यदि प्रत्येक अल्पसंख्यक वर्ग उपचार के रूप में पृथकता के नियम को ही अपनाये तो कोई संघ कायम नही रह सकता। अल्पसंख्यकों का प्रयास बहु-संख्यक बन जाने का होना चाहिए और उप-राष्ट्रपति ने यही प्रयास आरम्भ कर दिया।

राज्यों के अधिकार सम्बन्धी मंच पर रिपब्लिकन पार्टी को भी लाने के लिए एक सिद्धान्त-वक्तव्य की आवश्यकता थी और जेफर्सन ने केण्टकी-विधान-सभा के लिए तथा मेडिसन ने वर्जीनिया-विधानसभा के लिए प्रस्ताव तैयार किये, जिनमें उक्त वक्तव्य को स्थान दिया गया। १७९८ के नवम्बर और दिसम्बर में ये प्रस्ताव पारित हुए।

केण्टकी के प्रस्ताव में इस बात का खण्डन किया गया था कि जिन कानूनों पर आपत्ति की गयी है, वे सांविधानिक है और घोषणा की गयी कि 'बहुमत तथा कांग्रेस की आकांक्षाओं एवं अधिकारों के विरुद्ध वे संविधान की मर्यादा को भंग करते है, किन्तु उनका सबसे महत्वपूर्ण अंश था संविधान का सिद्धान्त-सम्बन्धी वक्तव्य, जो बिल्कुल नयी चीज थी। प्रस्तावों में, अपेक्षाकृत सरल शब्दों में, इस भावना को व्यक्त किया गया कि संघीय सरकार, एक ही सत्ता को अपने कुछ अधिकारों को सौंप देने के उद्देश्य से कतिपय राज्यों के बीच हुए

समझौते का प्रतिफल है। इस बात पर बल दिया गया कि इन अधिकारों की मर्यादा के बारे में संघीय सरकार को कोई अधिकार नही है, यही एक नयी बात थी; किन्तु जैसे पार्टियों के बीच समझौते के सभी मामलो में कोई एक निर्णायक नही होता, उसी प्रकार, "प्रत्येक पार्टी को अपने लिए निर्णय करने और सुधार के साधन एवं कार्रवाई के रूप में कानून का उल्लघन करने का भी समान अधिकार है।" सम्प्रति एकमात्र निश्चित सुझाव यही था कि कानून को रद्द करने के लिए कांग्रेस से आवेदन करने में अन्य राज्यों को भी केण्टकी का साथ देना चाहिए।

अन्य राज्यों से जो उत्तर प्राप्त हुए, उनसे यह झलक मिलती है कि भौगोलिक सीमाएं भी पार्टियों के प्रभाव से संकुचित रही। पोटामाक के उत्तर में स्थित सभी राज्यों की विधानसभाओं ने प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया और अधिकांश राज्यो ने इस मत की पुष्टि की कि कानून की वैधानिकता के बारे में निर्णय करने का अधिकार संघीय न्यायालय को सौप दिया गया है। रिपब्लिकन राज्यों ने विरोधों का समर्थन किया और न्यायालयों के इस विशेष दावे का खण्डन किया कि कांग्रेस के कानूनों की वैधता पर निर्णय करने का उन्हींको अधिकार है और वे इस विचार को सर्वथा स्वीकार नही कर सकते कि उन्हें अवैध घोषित करने का राज्य-विधानसभाओं को अधिकार नही है।

सैद्धान्तिक प्रचार का यह मंच इतना अच्छा था कि इसका आसानी से परित्याग नही किया जा सकता था। मेडिसन और जेफर्सन ने अपनी पार्टी के सांविधानिक सिद्धान्तों को मूर्त रूप देने का प्रयास जारी रखा। अन्य राज्यों से जो उत्तर प्राप्त हुए थे, उन पर रिपोर्ट के रूप में इसे मेडिसन ने वर्जीनिया विधानसभा में प्रस्तुत किया और स्वयं जेफर्सन ने फिलाडेल्फिया मे इसके व्यापक प्रचार का प्रयास किया। केण्टकी विधानसभा ने नवम्बर, १७९९ में एक दूसरा प्रस्ताव पारित किया। इसमें संघ से अलग होने के केण्टकी के इरादे का खंडन किया गया, किन्तु घोषणा की गयी कि कांग्रेस को अपने अधिकारों की व्याख्या का अधिकार देना किसी तरह की निरकुशता से कम नही है। साहसपूर्ण भाषा में इस प्रस्ताव में, जो स्वयं रचयिताओं के इरादे से भी सम्भवतः आगे बढ़ गया था घोषणा की गयी—

"जिन राज्यो ने मिलकर उस संविधान को बनाया, उन्हें सार्वभौमिक और स्वतंत्र राज्य होने के नाते, कानून उल्लघन के निर्णय का असंदिग्ध अधिकार है; और उस संविधान के नाम पर किये गये सभी अनाधिकृत कार्यों को

उन सार्वभौमिक राज्यों द्वारा रद्द कर देना उचित ही है।" फिर भी राज्यों की घोषणाओं अथवा कार्यों से इस बात का आभास नहीं मिला कि प्रतिवाद से अधिक और कुछ करने का इरादा था। बाद की घटनाओं ने, जिनसे अवैधता के सिद्धान्तों को प्रमुखता प्राप्त हुई, केण्टकी-प्रस्ताव को ऐसा कल्याणकारी रूप प्रदान किया, जिसे समकालीन लोग समझ नहीं सके। उनके सिद्धान्तों की नवीनता यह थी कि संघवादियों के सिद्धान्तों को स्थान ग्रहण करने में काफी समय लग गया। जेफर्सन के जीवन में अनेक अवसर आये जबकि उन्होंने अवसर से भी अधिक महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान की और पार्टी के इस घोषणा-पत्र को अमरीकी सांविधानिक इतिहास के अद्‌भुत प्रमाणपत्र में स्थान दिया गया।

विदेशी और राजद्रोह कानूनों की अपेक्षा घरेलू समस्या का अधिक स्वागत किया गया। एडम्स ने युद्ध के तट पर पहुँचने के बाद अपने सहयोगियों के बिना कार्य करने का अचानक निर्णय किया और शान्ति प्राप्त करने के लिए एक दूसरा प्रयास करने का निश्चय किया। उन्हें भय था कि युद्ध के फलस्वरूप अमरीका ग्रेट ब्रिटेन के अत्यधिक निकट आ जायेगा। साथ ही साथ वे इस खतरे से भी सजग थे कि फ्रांस कहीं किसी प्रकार फ्लोरिडा और लुइसियाना को अपनी ओर न मिला ले और इसका पश्चिमी प्रवासियों की राजभक्ति पर कहीं बुरा प्रभाव न पड़े। दूसरी ओर, फ्रांसीसियों को भी डर था कि युद्ध होने पर कहीं अमरीकी लुइसियाना पर अधिकार करके नये विश्व-साम्राज्य के उनके स्वप्न का सर्वदा के लिए अन्त न कर दें।

फरवरी, १७९९ में, एडम्स ने विलियम वान्स मुरे को फ्रांस में राजदूत मनोनीत किया। उनकी इस कार्रवाई का उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों ने तीव्र विरोध किया, जिसके फलस्वरूप दूसरे वर्ष के आरम्भ में उन्हें अपने विदेश-मंत्री और युद्ध-मंत्री को खो देना पड़ा और कांग्रेस में संघवादियों के सहयोग से हाथ धोना पड़ा। विरोधी अधिक से अधिक इतना कर सके कि कमीशन पर मुरे के साथ दो अन्य व्यक्तियों को नियुक्त करवा पाये। मार्च, १८०० में जब कमीशन पहुँचा तब तक "अठारहवाँ ब्रूमेयर" आकर चला गया था (फ्रांसीसी क्रान्तिकारी कलेण्डर का दूसरा महीना, जो २० अक्तूबर से २० नवम्बर तक चलता है, ब्रूमेयर कहलाता है।) और फ्रांस की राजसत्ता नेपोलियन बोनापार्ट के हाथ में आ चुकी थी। ३० सितम्बर, १८०० को फ्रांस के साथ एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। 'अत्यंत प्रिय राष्ट्र' के आधार पर व्यापारिक सम्बन्ध पुनः स्थापित किये गये और प्रतिषिद्ध वस्तुओं तथा प्रतिबन्ध सम्बन्धी अपने पुराने

सिद्धान्त की दोनों देशों पुनः पुष्टि की, यद्यपि अमरीका पर ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध उसके सशस्त्र संरक्षण का दायित्व नहीं डाला गया। अब अमरीका के लिए युद्ध का कोई खतरा नहीं रह गया और बोनापार्ट ने देखने में अपने पूर्वाधिकारियों की नीतियों को बिलकुल उलट दिया; किन्तु फ्रांसीसी नीति में इस नये परिवर्तन का भी कारण था। सन्धि पर हस्ताक्षर के बाद १ अक्तूबर, १८०० को फ्रांस और स्पेन ने सान आइडेल फोन्सो की गुप्त सन्धि की, जिसके परिणामस्वरूप स्पेन ने लुइसियाना को फ्रांस के लिए छोड़ दिया। इस प्रकार १७९३ में अमरीका में जेनेट मिशन के समय से चिरवांछित फ्रांसीसी कूटनीति का उद्देश्य पूरा हुआ।

वास्तव में, अमरीका में यह भेद खुला नहीं था, किन्तु संघवादियों को इस सन्धि की आलोचना के लिए आधार पाने में कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि इस सन्धि से न तो प्राचीन सन्धियों की वैधता के प्रश्न का समाधान हुआ और न अपने समुद्री व्यापार की हानि के लिए क्षतिपूर्ति के अमरीकी दावों को ही पूरा किया गया। दिसम्बर, १८०० में सन्धि के प्रथम समाचार की जेफर्सन पर भी अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं हुई, क्योंकि इससे अमरीका ब्रिटेन के साथ उलझ सकता था। काफी विचार-विमर्श और जानकारी के बाद सिनेट ने दिसम्बर, १८०१ में सन्धि की अन्तिम रूप से पुष्टि कर दी। इससे, सचमुच समुद्र में ब्रिटेन के साथ विवाद खड़ा हो सकता था, किन्तु सम्प्रति इसकी कोई आशा नही थी, क्योंकि दीर्घकालीन आंग्ल-फ्रान्सीसी संघर्ष का अन्त निकट प्रतीत हो रहा था। मार्च १८०१ में शान्ति के लिए वार्ता आरम्भ हो गयी थी और अक्तूबर में उसकी प्रारम्भिक शर्तों पर हस्ताक्षर हो गये। २७ मार्च, १८०२ को एमीन्स में एक निश्चित सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये, जिसमें स्पेन और हालैण्ड भी सम्मिलित थे।

उप-राष्ट्रपति-पद की अपनी अन्तिम अवधि में जेफर्सन ने संघवादियों की फूट से लाभ उठाने का प्रयास किया और एडम्स के शान्ति-प्रस्ताव से अन्त में यह फूट खुले आम सामने आ गयी थी। पार्टी में उनके विरोधियों ने उनको हटा देने का जो मनसूबा कर रखा था, उस पर १४ दिसम्बर, १७९९ को वाशिंगटन की मृत्यु से तुषार हो गया। फूट कायम रही और १७९८ के चुनावों में जबकि युद्ध-संकट चरमसीमा पर पहुँच चुका था, फेडरलिस्टों की सफलताओं के बावजूद, एडम्स का दुबारा चुना जाना सन्दिग्ध ही था। फिर भी, जेफर्सन ने अवसर पर कुछ भी न छोड़ने का निर्णय किया। इसका अर्थ था सभी राज्यों द्वारा रिपब्लिकनों के भाग्य की ओर अधिक ध्यान देना, क्योंकि राज्यों के विधान-

मण्डल ही राष्ट्रपति के निर्वाचकों का चुनाव करते थे। एक बार फिर, दलीय शक्तियों को संगठित करने का कार्य जोरों मे शुरू हो गया और जेफर्सन ने अपने को सदा पृष्ठभूमि में रखने का प्रयास किया। अब चूँकि फ्रान्स में पासा पलट चुका था, इसलिए जेफर्सन को भय था कि फ्रांस की ओर सदा आशाभरी निगाहों से देखते रहने की आदत कही स्वदेश में प्रजातत्रवाद के लिए हितकर होने के बजाय अहितकर न हो जाय। बोनापार्ट के आकस्मिक विद्रोह और उनकी आजीवन सत्ता की सम्भावना पर आलोचना करते हुए जेफर्सन ने इस बात पर बल दिया कि फ्रांसीसियों में बहुमत-शासन के अनुभव और क्षमता का अभाव है, जबकि अमरीकियों में ऐसा नही है।

सन् १८०० का चुनाव अनेक अर्थो में १७९६ के चुनाव से मिलता-जुलता था। जेफर्सन की तीव्र भर्त्सना की गयी और पूर्वी राज्यों में पादरियों ने जेफर्सन के विरुद्ध विशेष रूप मे प्रचार आरम्भ किया और उन्हे नास्तिक घोषित कर दिया। स्वय जेफर्सन को अन्य कुचक्रों का सन्देह था। उनके विचार से, राजद्रोह-कानून ने अधिकार-विधेयक की प्रथम धारा की शक्ति को ही नष्ट कर दिया, जिसमें भाषण और प्रेस की स्वतत्रता का आश्वासन दिया गया था। उन्होंने लिखा कि अब पादरी को भी आशा हो गयी कि धार्मिक स्वतत्रता के आश्वासन के मामले में धोखा दिया जा सकता है। पादरियो ने, विशेषकर 'एपिस्कोपलियन' और 'काग्रीगेशनल' पादरियों ने आशा की कि अमरीका में चर्च की स्थापना की जायगी। "उनका विश्वास है कि मुझे जो कुछ भी अधिकार दिया जायेगा, उसका उपयोग उनकी योजनाओं के विरोध में किया जायेगा और उनका विश्वास ठीक ही है; क्योकि मैंने मानव समाज में किसी भी प्रकार के अत्याचार का सर्वदा विरोध करने की ईश्वर की शपथ ली है।"

एडम्स की उम्मीदवारी का हेमिल्टन ने खुलकर विरोध किया। इससे रिपब्लिकन-विजय की आशा बलवती हो गयी। उस समय तक पार्टियों का विभाजन काफी स्पष्ट हो चुका था। जेफर्सन और बर में से प्रत्येक को ७३ मत और एडम्स को ६५ तथा सी. सी. पिंकने को ६४ मत मिले। परिणाम से यह सिद्ध हो गया कि 'फेडरलिस्ट' अब एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में नहीं रह गये है, बल्कि वे उत्तर-पूर्व के राज्यों की पार्टी रह गये हैं और बाद के चुनावों ने भी इसी बात की पुष्टि की। अब यह देश बहुमत की भावना की दृष्टि से स्पष्टतः रिपब्लिकन बन गया था, किन्तु उसने राष्ट्रपति का चुनाव नही किया। जेफर्सन और बर के बीच चुनाव प्रतिनिधि-सभा पर निर्भर था, जहाँ प्रत्येक

राज्य को एक मत देने का अधिकार था। चूंकि रिपब्लिकन राज्य समान रूप से विभाजित थे, इसलिए वास्तविक निर्णय अल्पसंख्यक दल के हाथ मे था। गतिरोध कायम रहा और जेफर्सन को यह आशंका होने लगी कि फेडरलिस्ट चुनाव को निष्फल बनाने का कुचक्र रच रहे है। वे सिनेट मे उस सदन के किसी व्यक्ति को अस्थायी राष्ट्रपति मनोनीत करायेगे और उसीको अधिकार सौंप देगे अथवा एक विधेयक पारित करा कर शासन-सत्ता जान को दे देंगे, जो अभी हाल ही मे पुनः मुख्य न्यायाधीश मनोनीत हुए हैं अथवा जान मार्शल को देगे, जो जून से विदेश-मत्री के पद पर कार्य कर रहे थे। किन्तु फेडरलिस्ट इतने प्रबल नही थे कि वे सविधान की भावना के इस खुले उल्लघन को सहन कर सकते; उनके लिए प्रतिद्वन्द्वी रिपब्लिकनो मे से किसी एक दल के साथ सौदा-बाजी करने का अच्छा मौका था। ४ जनवरी, १८०१ को जेफर्सन ने रिपोर्ट दी कि विश्वास किया जाता है कि बर ने फेडरलिस्टो के प्रस्ताव को ठुकरा दिया है। अब १७ फरवरी को, मतदान के छठे दिन जेफर्सन के पक्ष मे मत पड़े। स्वय जेफर्सन ने दो दिन पूर्व मनरो को सूचित किया था कि मुझसे वायदे कराने के अनेक प्रयास किये गये, किन्तु मैंने स्पष्ट रूप मे घोषित कर दिया कि पूर्व वादों से अपने हाथ बाँध कर मैं पद ग्रहण करना नहीं चाहता। दूसरी ओर, यह भी सम्भव था कि जेफर्सन के कतिपय राजनीतिक मित्र उनकी इस ईमानदारी से सहमत नही थे। जो भी हो, यह तो स्पष्ट है कि फेडरलिस्ट इस बातचीत से घबरा गये कि उनकी योजनाओं के कार्यान्वित हो जाने पर बहुत से राज्य सघ से अलग हो सकते है अथवा एक नये सांविधानिक सम्मेलन का आयोजन हो सकता है। इसलिए उन्होंने हेमिल्टन की यह सलाह मान ली कि जेफर्सन को ही निर्वाचित हो जाने दिया जाय। हेमिल्टन के इस विचार के कई कारण थे। उनका विश्वास था कि जेफर्सन अपने विचारों में उतने उग्र नही हैं, जितना कि समझा जाता है; उनमे कार्यपालिका-शक्ति को संभालने की अधिक क्षमता है तथा अपनी लोकप्रियता का उन्हे इतना अधिक ध्यान है कि वे अपनी कारंवाइयों से अधिकाश जनमत को अपना विरोधी बनाने का खतरा मोल नही लेगे; इसके अतिरिक्त उनके मन में बर के प्रति गम्भीर और उचित सन्देह थे।

स्वय जेफर्सन का विश्वास था कि उनके निर्वाचन के ढंग से उनकी पार्टी को लाभ हुआ है, क्योकि अधिकाश फेडरलिस्टों ने इस विचार का समर्थन किया था कि उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए और फेडरलिस्ट पार्टी के कांग्रेसी

नेताओं ने उनके विरुद्ध कुचक्र रचकर के अपने अनुयायियों को स्थायी रूप से अपने से अलग कर दिया है। प्रजातन्त्रवाद एक राष्ट्रीय सिद्धांत बन गया था। जेफर्सन के विचार से चुनाव नये प्रजातन्त्र के इतिहास में एक नये मोड़ का द्योतक था। उसके संविधान को एक अभिजातीय अथवा राजतन्त्री ढाँचे में मोड़ने का प्रयास सर्वदा के लिए विफल हो गया था। जिन नेताओं ने "वैज्ञानिक प्रगतियों को खतरनाक परिवर्तन बताया था, दर्शन और प्रजातन्त्र की निन्दा करने का प्रयास किया और हमें यह समझाने का प्रयत्न किया कि दण्ड के बल पर ही मानव पर शासन किया जा सकता है आदि," उनके लिए अब स्थान नहीं रह गया था। प्रगति और उन्नति का युग आरम्भ हो गया था। अब अमरीका फिर शेष विश्व को क्रांति का सन्देश पहुँचाने की स्थिति में पहुँच गया। अपने उद्घाटन के दो दिनों के बाद जेफर्सन ने वयोवृद्ध क्रांतिकारी राजनीतिज्ञ जान डिकिन्सन को लिखा—

"यहाँ स्थापित एक न्यायोचित और सुदृढ़ प्रजातांत्रिक सरकार एक स्थायी स्मारक होगी और अन्य देशों की जनता के लिए अनुकरणीय आदर्श होगी और आप ही की तरह मुझे भी आशा और विश्वास है कि हमारे आदर्श को देखकर वे समझेंगे कि एक स्वतन्त्र सरकार अन्य सभी सरकारों से शक्तिशाली होती है और हमारी क्रान्ति और उसके परिणामों से मानव-समाज में जो जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, उससे विश्व के अधिकांश भागों में मानव की स्थिति में सुधार के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।"

एक आधुनिक इतिहासकार स. इ. मोरिसन ने उक्त अभिव्यक्तियों की इस प्रकार आलोचना की, "थोड़ी सी सरलता को न्यूनाधिक क्रांति नहीं समझा जा सकता।" इस आलोचना की विजित अथवा विजेता, किसी ने भी सराहना नहीं की। विजेताओं को तो वैसा ही अनुभव हुआ, जैसा कि मेस्साचुसेट्स के एक डाक्टर ने १ जनवरी, १८०१ को अपनी डायरी में लिखा था—

"१९वीं शताब्दि का आरम्भ दक्षिण पश्चिम में सुप्रभात के समीर के साथ हुआ। जेफर्सन के प्रशासन के अन्तर्गत राजनीतिक भविष्य उज्ज्वल है और फ्रांस के साथ पुनः सुसम्बन्ध स्थापित होने की सम्भावना है। मानव के अधिकारों के प्रवल प्रचार के साथ, मुद्रणालय के द्वारा, जो आत्म-सुधार और हमारे सभी प्रकार के बौद्धिक आनन्दों का साधन है, विश्व में पुरोहिती सत्ता, निरंकुशता, अन्धविश्वास और अत्याचार का अन्त होगा। मुद्रणालय की महत्ता से मूर्ख दास तो अपरिचित हैं ही, वे लोग भा उसे समझने में असमर्थ हैं, जो ईश्वरीय प्रतिमा को अर्थात् धर्मवादिता को परिसीमित करने से घृणा करते हैं।"

अध्याय–८

राष्ट्रपति : लुइसियाना का खरीद

(१८०१—१८०५)

उत्कर्षशील अमरीकी लोकतंत्र के प्रतिनिधि के रूप में जेफर्सन के किसी अध्ययन में उनके राष्ट्रपति काल का इतिहास विशेष महत्व रखता है। चुनाव-अभियान के समय उभय पक्ष ने जो राजनीतिक सरगर्मी दिखायी उसको व्यावहारिक रूप देने में कितनी सफलता मिल पायी ? यह तो स्वीकार ही करना पड़ेगा कि इस दिशा में बहुत कम सफलता मिली। यद्यपि एक महान रचनात्मक कार्य पड़ा रह गया था और वह था लुइसियाना को हस्तगत कर अमरीका में मिलाने का। जेफर्सन का यह वास्तविक कार्य उनके राष्ट्रपति होने पर पूरा हुआ। उनके राष्ट्रपति-काल का इतिहास कूटनीतिज्ञता का इतिहास रहा है और इसी अवधि में अमरीकी लोकतंत्र तथा सर्वोच्च न्यायालय के बीच दीर्घकालिक संघर्ष का सूत्रपात हुआ।

यह समझना कठिन नहीं है कि ऐसा क्यों हुआ। जेफर्सन के सांविधानिक सिद्धान्तों का मूल तत्व यह था कि संघीय सरकार का राज्यों के अन्तरिक मामलों से यथासम्भव कम सम्बन्ध होना चाहिए। अगस्त, १८०० में उन्होंने लिखा, "हमारे संविधान का यह सच्चा सिद्धांन्त निश्चय ही अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण और सर्वोत्तम है कि राज्य अपने हर आन्तरिक मामले में स्वतंत्र हैं और विदेशी राष्ट्रों से सम्बन्धित प्रत्येक मामले में संयुक्त हैं। सामान्य शासन विदेशी मामलों तक सीमित हो और व्यापार के अतिरिक्त हमें अन्य राष्ट्रों के सभी मामलों से अपने को अलग कर लेना चाहिए। व्यापार को व्यापारियों पर ही छोड़ देना चाहिए, क्योंकि स्वतंत्र रह कर ये अपेक्षाकृत अच्छी व्यवस्था कर सकते हैं। हमारा सामान्य शासन एक बहुत ही सरल और कम खर्चीली संस्था का रूप धारण कर सकता है, जहाँ थोड़े से छोटे-मोटे कार्य होंगे, जिन्हें इने-गिने कर्मचारी पूरा कर दिया करेंगे। इस दृष्टिकोण को रखने वाले राजनीतिज्ञ के मतानुसार अमरीकी राष्ट्रपति की स्थिति इतनी संकुचित हो जायेगी कि वह अपने देश के नागरिकों को बहुत कम प्रभावित कर सकेगा—केवल कुछ नकारात्मक कार्यवाहियों का अधिकार इस दिशा में उसे प्राप्त होगा।"

४ मार्च, १८०१ को उद्घाटन-समारोह में नये प्रजातांत्रिक शासन की

सरलता पर विशेष बल दिया गया। अमरीका की नयी राजधानी वाशिंगटन में, जहाँ अभी गत ग्रीष्मकाल में सरकारी कार्यालय स्थानान्तरित हुए थे, ठाट-बाट और तड़क-भड़क के लिए कौन कहे सार्वजनिक जीवन की साधारण सुविधाओं के लिए भी व्यवस्था नहीं की जा सकी। राजधानी और सरकारी भवनों का जो नक्शा तैयार किया गया था, उसका कार्य भी मुश्किल से आरंभ हुआ और साठ वर्ष बाद लिंकन के उद्घाटन-भाषण के समय भी वह अधूरा ही पड़ा रहा।

जेफर्सन-काल के अमरीका के भव्य पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में हेनरी एडम्स ने जो कुछ लिखा है, उसमें १८०० में सघीय राजधानी सम्बन्धी वर्णन अधिक उल्लेखनीय है। उन्होंने लिखा है—"अर्ध-निर्मित ह्वाइट हाउस एक खुले मैदान में खड़ा था और पोटोमाक में दिखाई पड़ रहा था, उसके पास ही बेढंगे-से बने दो विभागीय भवन थे, एक ही पंक्ति में ईंटों के कुछ मकान थे और यत्रतत्र कुछ खाली निवासस्थान दिखायी पड़ते थे, इससे अधिक और कुछ नहीं था। दलदल के पार लगभग डेढ़ मील पर आकारहीन अधूरा 'कैपिटल' (कांग्रेस का अधिवेशन-स्थल) दिखाई पड रहा था, जो मानवकंकाल की दो भुजाओं के जैसा था और उसके इस बाह्यरूप से ऐसा लगता था कि उसको भव्य और शानदार बनाने की विशाल योजना कार्यान्वित की जायेगी। इस निर्माणकारी स्वरूप से यह सिद्ध होता था कि अमरीका अपने कार्य की व्यापकता को समझता था और उसमें अपने विश्वास के आधार पर कुछ बाजी लगाने को उत्सुक था। कांग्रेस और शासन-परिषद ने जानबूझ कर सरकार को फिलाडेल्फिया से वाशिंगटन को स्थानान्तरित करने का निर्णय किया, शायद साधु और सन्त भी इतनी दृढ़ता के साथ एकान्तवास का निर्णय नहीं करते। असन्तुष्ट-से लोग कैपिटल के पास ही आठ-दस बोर्डिङ्ग-हाउसों में आश्रम के वैरागियों की भाँति रहते और वहाँ से कैपिटल तक आने-जाने के अलावा उनका कोई दूसरा काम नहीं था और न वहाँ मनोरंजन के ही साधन थे। निजी सम्पत्ति से भी स्थिति को सुधारने के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता था क्योंकि वहाँ धन से खरीदी जाने वाली कोई चीज नहीं थी; वाशिंगटन में न दूकानें थीं और न बाजार, न कुशल श्रमिक थे और न व्यापार। आबादी भी नहीं थी। सार्वजनिक प्रयासों और सार्वजनिक धन के अत्यधिक उपयोग से ही वह स्थान सन्तोषजनक बन सकता था; किन्तु कांग्रेस ने इस राष्ट्रीय और उसके अपने निजी कार्य के लिए धन खर्च करने में इतनी कंजूसी दिखायी कि भवन-निर्माण के बहुत पहले ही

कैपिटल के गिर जाने तथा सिनेट और प्रतिनिधिसभा-भवन के खंडहर हो जाने का खतरा पैदा हो गया।"

उच्च आशाओं के प्रतीक स्वरूप सीमित साधन-स्रोतों से निर्मित नये सिनेट-भवन में थामस जेफर्सन ने अपने चचेरे भाई और विरोधी जान मार्शल के समक्ष, जिन्हें अभी ६ सप्ताह पूर्व एडम्स ने मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया था, शपथ ग्रहण की। उसके बाद उन्होंने मुट्ठी भर लोगों के समक्ष बहुत धीमी आवाज में उदघाटन-भाषण किया। समय बीत जाने पर भी जेफर्सन में वक्तृत्व की क्षमता नही आयी। उन्होंने कांग्रेस को लिखित सन्देश भेजे, जिसका एक कारण तो वक्तृत्व की अक्षमता थी और दूसरा कारण था प्रजातंत्री और राजतंत्री प्रथा के बीच भेद प्रदर्शित करना। कांग्रेस में स्वयं उपस्थित होकर भाषण करने की वाशिंगटन-एडम्स की प्रथा वुडरो विल्सन के समय के पहले पुनः जारी नहीं हो सकी।

इस प्रकार प्रथम उद्घाटन-भाषण को भाषण की अपेक्षा साहित्यिक रचना समझना अधिक उचित होगा। 'नोट्स आन वर्जीनिया' के साथ स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र और केण्टकी-प्रस्तावों मे ही जेफर्सन-सिद्धान्त की अधिकतर अभि-व्यक्ति हो जाती है और जेफर्सन की सभी राजनीतिक रचनाओ की भांति उसमें कुछ तो दैनिक घटनाओं का और कुछ शासन की सामान्य समस्याओं का विवरण है। घोषणा-पत्र और केण्टकी-प्रस्तावों से यह इस बात में भिन्न है कि उनमें सत्ताधारियों की कार्रवाइयों का विरोध किया गया था और उन कार्रवाइयो के विरोध का कारण भी बताया गया था। प्रथम उद्घाटन-भाषण एक ऐसे पुरुष का कार्य था, जिसको एक प्रबल जन-भावना ने पदासीन कर दिया था और जिसे अपने सरकारी कार्य में अपने राजनीतिक शिष्यों का सहयोग प्राप्त था, नये विदेश-मंत्री जेम्स मेडिसन थे और भावी वित्त-मंत्री अल्बर्ट गलाटिन थे, जिनका जन्म जनेवा में हुआ था और जिन पर जेफर्सन का भरोसा था कि वे हेमिल्टन की उन वित्तीय गुत्थियों को सुलझायेंगे, जिन्हे वे स्वय सुलझाने में अब तक असमर्थ रहे।

जेफर्सन का उद्देश्य प्रजातंत्रवादी नेताओं के पीछे देश को संगठित करने के लिए इस अवसर से लाभ उठाना था और उन्होंने अपने राजनीतिक मित्रों को भी अपने इस उद्देश्य से परिचित करा दिया था। उनके विचार से साधारण जनता ने सदा उन दृष्टिकोणों से सहानुभूति व्यक्त की, जिन्हें उन्होंने विशेष रूप से प्रतिपादित किया था। "संघवादियों ने फ्रांस के विरुद्ध क्षणिक क्षोभ का उप-

योग अनेक प्रजातंत्रवादियों को अपनी ओर फोड़ने के लिए किया था; अब वे पुनः रिपब्लिकन दल में आ गये हैं और उन्हें दल में ही बनाये रखना चाहिए।" अब संघवादी शूरमागण बिना सेना के अकेले रह गये थे।

अपने उद्घाटन-भाषण में उन्होंने यह दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि अब समस्या हल हो चुकी है, इसलिए अल्पमत गौरव और इस विश्वास के साथ इसे स्वीकार करेंगे कि बहुमत देश में दमन के लिए अधिकारों का प्रयोग नहीं करेगा।

"प्रत्येक मतभेद सैद्धान्तिक मतभेद नहीं होता। एक ही सिद्धांत को हमने विभिन्न संज्ञाएं दी है। हम सभी रिपब्लिकन हैं और हम सभी फेडरलिस्ट हैं। यह सोचना गलत होगा कि प्रजातंत्रवादी सरकार अपने को बनाये रखने में पर्याप्त प्रबल नहीं होगी। कभी कभी यह कहा जाता है कि मनुष्य को स्वयं उसका शासन सौंपा नहीं जा सकता।" जेफर्सन ने शायद उप-राष्ट्रपति जान एडम्स को ध्यान में रखते हुए यह घोषणा की; क्योंकि कड़े विरोधी उम्मीदवार के रूप में पराजित हो जाने पर उनके पूर्वाधिकारी अपने उत्तराधिकारी के उद्घाटन के अवसर पर स्वयं उपस्थित रहने के बजाय वाशिंगटन छोड़कर चले गये थे और उनके पुत्र जान क्विन्सी एडम्स ने भी १८२८ में एण्ड्रू जैक्सन द्वारा राष्ट्रपति के चुनाव में पराजित कर देने पर इसी प्रथा की पुनरावृत्ति की थी। "तो फिर क्या उसे दूसरों के लिए सरकार सौंपी जा सकती है? अथवा मनुष्य पर शासन करने के लिए राजाओं के रूप में हमें देवदूत मिल गये हैं? इतिहास ही इसका उत्तर देगा।"

और उसके बाद एक दूसरा अनुच्छेद आरम्भ होता है, जिसे जेफर्सनवादी सिद्धान्त का सार कहा जा सकता है।

"हम साहस और विश्वास के साथ अपने संघीय एवं प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों का अनुसरण करें और संघ तथा प्रतिनिधिमूलक सरकार के प्रति अपनी अनुरक्ति कायम रखें। प्रकृति और विशाल महासागर की कृपा से हम विश्व के चतुर्थ भाग की विनाशकारी उथलपुथल से पृथक और दूर हैं; हमारे विचार इतने उच्च हैं कि दूसरों का भी अपमान हम सहन नहीं कर सकते; हमने अपने लिए एक देश चुना है, जहाँ हजारों पीढ़ियों के लिए पर्याप्त स्थान है; स्वयं अपनी शक्तियों के उपयोग तथा अपने ही उद्योग की प्राप्ति के लिए हमारे सामने समान अधिकार की उचित भावना है और साथ ही अपने सह-नागरिकों से सम्मान और विश्वास प्राप्त करने की भी भावना है और यह भावना जन्मजात नहीं, कर्मजात हैं; यह एक उदार धर्म की ज्योति के रूप में उपलब्ध है, जो विभिन्न

रूपों में व्यवहृत होता तथा अपने सभी रूपों में ईमानदारी, सच्चाई, संयम, कृतज्ञता और मानवप्रेम का उपदेश देता है और जो एक ऐसी सर्वोच्च ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करता और उसकी आराधना करता है, जो अपनी सारी वृत्तियों से यह सिद्ध करती है कि उसे इहलोक में मानव सुख में आनन्द तथा परलोक में और भी अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इन वरदानों के होते हुए हमें सुखी और समृद्ध बनाने के लिए और क्या चाहिए? फिर भी सह-नागरिकों के लिए एक चीज और आवश्यक है और वह है एक कुशल और मितव्ययी सरकार, जो मनुष्यों को आपस में एक-दूसरे को हानि पहुंचाने से रोकेगी; उन्हें अपने औद्योगिक प्रयासों को नियमित करने और सुधार करने के लिए स्वतंत्र रखेगी, और मजदूरों के मुँह से उनकी कमाई की रोटी नहीं छीनेगी। सुराज का यही सार है।"

जेफर्सन के विरुद्ध उनके कतिपय समकालीनों ने उन पर ढोंग का जो आरोप लगाया है, वह ईश्वर और परलोक सम्बन्धी उनकी धारणाओं के कारण ही है। जैसा कि डा० कोच ने उनकी रचनाओं के एक दूसरे अनुच्छेद का उल्लेख करते हुए कहा है, "यह निर्णय करना कठिन है कि जेफर्सन ने अमरत्व के तर्क को नैतिक व्यवहार के लिए असाधारण प्रोत्साहन के रूप में ही स्वीकार किया है; यह एक प्रकार की बेनथामवादी 'धार्मिक स्वीकृति' है, जिसमें वास्तविक अर्थ में सत्यता का मूल्य नहीं है, अथवा यह भी निर्णय करना कठिन है कि उन्होंने सचमुच उसके वचनों में विश्वास किया। फिर भी, उनके उद्घाटन-भाषण में ऐसी कोई चीज नहीं थी जो उनके निजी वक्तव्यों से असंगत प्रतीत होती हो और जिस ईश्वर का यहाँ उल्लेख है, वह जेफर्सन के पुरोहितवाद-विरोधी निश्चित विचारधारा में बाधक नहीं था।"

इस 'कुशल और मितव्ययी' सरकार के मूल सिद्धांतों की एक दूसरे अनुच्छेद में कुछ विस्तार के साथ व्याख्या की गयी है, जिसे रिपब्लिकन पार्टी की वर्जीनिया-शाखा का घोषणा-पत्र समझा जा सकता है, यद्यपि, जैसाकि हेनरी एडम्स ने कहा था, "वर्जीनिया-सिद्धान्त की पूर्णतया निषेधात्मक प्रवृत्ति जेफर्सन के कल्पनाशील और उद्योगशील मन के बिलकुल अनुकूल नहीं थी, और न वह उत्तरी डेमोक्रेटों के लिए ही बहुत आकर्षक थी, जो पार्टी के अनिवार्य अंग थे। जेफर्सन विज्ञान संबंधी आशावादिता के साथ साथ वर्जीनिया की पूर्व-धारणाओं का भी प्रतिनिधित्व करते थे।"

"सभी लोगों के प्रति समान और उचित न्याय, चाहे वे किसी भी धार्मिक अथवा राजनीतिक विचारो के हों; सभी राष्ट्रों के साथ शान्ति-व्यापार और सच्ची मित्रता और किसी के साथ भी उलझनपूर्ण गठबन्धन नही (यह प्राय: वाशिंगटन की शब्दावली बतायी जाती है); अपने घरेलू मामलों के लिए और प्रजातंत्र-विरोधी प्रवृत्तियों के विरुद्ध निश्चित संरक्षण के लिए अत्यन्त सुयोग्य प्रशासन के रूप मे राज्य-सरकारो के सभी अधिकारो का समर्थन; स्वदेश में शान्ति की रक्षा और विदेश में सुरक्षा के साधन के रूप में सामान्य शासन का उसकी सारी सांविधानिक शक्ति के साथ समर्थन (संघवादियों को एक पुनराश्वासन); जनता द्वारा चुनाव के अधिकार की सतर्कतापूर्वक रक्षा, यह अधिकार ही उन दुरुपयोगों के सुधार का एक उदार और सुरक्षित साधन है, जिन्हें शान्तिपूर्ण उपचार की व्यवस्था न होने की स्थिति में, क्रान्ति की तलवार से खंड-खंड उड़ा दिया जाता है; बहुमत के निर्णयों की पूर्ण मान्यता, जो जनतन्त्र का मूल सिद्धांत है, जहा से फिर अपील नही होती, बल्कि मूल सिद्धान्तों को और निरंकुशता की तात्कालिक स्रोत-शक्ति को लागू कर दिया जाता है; एक अनुशासित अनियमित सेना, जिस पर शान्ति-काल में और युद्ध के प्रारम्भ में, जब तक कि नियमित सेनाएं न आ जायं, सबसे अधिक भरोसा किया जाय; सैनिक सत्ता पर नागरिक प्रभुत्व; सार्वजनिक व्यय में मितव्ययिता, जिससे श्रमिकों पर कर का भार कम पड़े; ऋणों का ईमानदारी से भुगतान और पवित्र सार्वजनिक विश्वास की रक्षा; कृषि और व्यापार को प्रोत्साहन; सूचना का प्रसार और सभी प्रकार के दुरुपयोगों को जनमत के समक्ष प्रस्तुत करना; धर्म की स्वतन्त्रता; बन्दी उपस्थापन के संरक्षण मे व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा प्रेस की स्वतन्त्रता और निष्पक्ष रूप से निर्वाचित जूरियों द्वारा मुकदमों की सुनवाई।"

जब जेफर्सन ने इन सामान्य विचारो पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने और उनके कार्यान्वय के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया तो यह स्पष्ट था कि जहाँ तक संघीय सरकार का सम्बन्ध था, उस समय एक मात्र आवश्यकता व्यय कम करने और कर का भार हल्का करने की थी। नौसेना में कमी करके तथा महासागर में चलनेवाले युद्धपोतों के स्थान पर तटवर्ती तोप-सज्जित नौकाओ को रखकर उसे अधिकतर पूरा करने का प्रयास किया गया। यद्यपि उन दिनों महाशक्तियो में मेल था और अमरीकी व्यापार के संरक्षण का प्रश्न इतना आवश्यक नहीं था, फिर भी, इस समय तक अमरीकी एक युद्ध में फंस गये थे और ट्रिपोली के शासक ने उनके विरुद्ध युद्ध की घोषणा भी कर दी

थी। यह युद्ध अनियमित ढंग मे १८०५ तक चलता रहा और अन्त में जेफर्सन ने, जो पहले बारबरी समुद्री डाकुओं के विरुद्ध बलप्रयोग के प्रबल समर्थक थे, कुछ शर्तों के साथ, जिन्हे बहुत सम्मानजनक नही कहा जा सकता, सन्धि कर ली और भूमध सागर से अमरीकी जहाजों को वापस बुला लिया।

जेफर्सन के राष्ट्रपति-काल के प्रथम दो वर्ष वैधानिक गतिविधि की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण नही रहे; केवल दो ऐसे कानून बनाये गये, जिनसे सरकार और पार्टी दोनो को बल मिला; ओहियो को एक राज्य के रूप में स्वीकार किया गया और सघ-सरकार ने जार्जिया से वह भूखण्ड प्राप्त किया, जो बाद में १८१७ में मिस्सीसिपी और १८१९ में अलबामा में विभक्त हो गया। उत्तर पश्चिम मे देशान्तरवास की लहर ओहियो से इडियाना की ओर जा रही थी। दक्षिण-पश्चिम मे रुई की मांग शीघ्र ही प्राचीन दक्षिण के तटवर्ती राज्यों की सीमाओ के पार सुदूर बगान-प्रणाली वाले क्षेत्रो में फैलने वाली थी। वर्ग सघर्ष का—जिसने 'गृह-युद्ध' का रूप धारण कर लिया—धुंधला सा रूप पहले ही से प्रकट हो रहा था; किन्तु सम्प्रति पश्चिम एक ही शक्ति के रूप मे था और अमरीकी लोकतन्त्र का भाग्यसूत्र अधिकाधिक उसी के हाथ में था।

सक्रिय राजनीति की दृष्टि से निर्णायक समस्या सर्वदा पदाधिकार की थी—जेफर्सन किसे पदाधिकारी नियुक्त करेगे? शीघ्र ही स्पष्ट हो गया 'हम सब रिपब्लिकन हैं, हम सभी फेडरलिस्ट हैं।" शब्दावली के अर्थ का उपयोग यहाँ नहीं होने वाला है। एडम्स ने अपनी पराजय और जेफर्सन के पद-ग्रहण के बीच को अवधि में अपने समर्थकों के साथ यथासम्भव अनेक पदो पर कार्य किया। जेफर्सन के लिए इस स्थिति को स्वीकार करना मानवीय दृष्टिकोण से कठिन था और उनके अनुयायियो ने भी इसकी अनुमति न दी होती। हेनरी एडम्स ने लिखा—"जेफर्सन एक विशिष्ट दृष्टिकोण से सभी शासकों के समान थे। बोनापार्ट ने भी सोचा था कि एक सम्मानीय अल्पमत 'आलोचक' के रूप में उपयोगी हो सकता है; किन्तु न तो बोनापार्ट और न जेफर्सन यह स्वीकार करने को तैयार थे कि कोई विशिष्ट अल्पमत सम्मानीय है।" जहाँ से कानूनी तौर पर हटाया जा सकता है, सघवादियो को अपने पदो से हट जाना पड़ेगा और उनके पदों को सुयोग्य रिपब्लिकनो को दिया जायगा अथवा उनका उपयोग उन क्षेत्रों में पार्टी के निर्माण के लिए किया जायेगा, जहाँ पार्टी सबसे कमजोर थी। जेफर्सन नही चाहते थे कि सघवादी चुपचाप न्यू इंग्लैण्ड के किसी स्थान मे बिना

कष्ट के ही चले जायं। "लूट का माल विजेता का होता है"—जसा कि प्रायः राजनीति में होता रहा है, इस सिद्धान्त का अमरीकी राजनीति में पहले ही व्यवहार आरम्भ हो गया।

राष्ट्रीय जीवन का एक विभाग ऐसा था, जहाँ शासनाधिकारी अभी भी अपने विवेक से काम कर सकते थे। संघीय न्यायाधिकारी-वर्ग का संगठन कानून के अन्तर्गत किया गया था, और उसकी नियुक्तियाँ आजीवन होती थीं। १८०१ के न्यायाधिकारी कानून ने, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के अतिरिक्त, गश्ती न्यायाधीशों के एक नये वर्ग का निर्माण करके १७८९ के मूल कानून के अन्तर्गत स्थापित ढाँचे को और व्यापक बना दिया और जेफर्सन के विचार से, यथासम्भव अधिक से अधिक पदों पर संघवादियों को नियुक्त करने के उद्देश्य से ही ऐसा किया गया था। उनका विश्वास था कि जब तक संघवादियों से समर्थित न्यायाधिकारी वर्ग सुदृढ़ रहेगा और सांविधानिक मामलों में उनका अन्तिम निर्णय मान्य रहेगा, तब तक केन्द्रीकरण का और राज्यीय न्यायालयों तथा सरकारों को उनकी समुचित सत्ता से वंचित हो जाने का खतरा सर्वदा बना रहेगा। यह बड़ी ही खतरनाक समस्या थी, क्योंकि वर्जीनियावासी यद्यपि राज्यों के अधिकारों के प्रश्न पर संगठित हो जाने के लिए तैयार थे, तथापि उत्तर के रिपब्लिकन न्यायाधिकारियों पर प्रत्यक्ष प्रहार के लिए उतने तैयार न थे। उप-राष्ट्रपति आरोन बर शीघ्र ही पार्टी के नेतृत्व से असन्तुष्ट हो गये, जिसका कारण, इसके अतिरिक्त, कुछ और भी था। तब जेफर्सन न्यूयार्क की अन्धकारपूर्ण आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप करने के लिए विवश हुए। एक राजनीतिक दार्शनिक के लिए सर्वदा विरोध में रहना ही उचित होता है और जेफर्सन सर्वोच्च न्यायालय और जान मार्शल के साथ इस संघर्ष में अपने को ठीक ढंग से संभाल नहीं सके।

राजनीतिक, व्यक्तिगत और दलगत गुप्त प्रभावों के अतिरिक्त, न्यायाधिकारी-वर्ग के प्रश्न का अमरीकी लोकतंत्र के भविष्य पर गम्भीर प्रभाव पड़नेवाला था। जेफर्सन और उनके सहयोगियों की विचारधारा की एक प्रबल प्रवृत्ति वैधानिक अथवा प्रशासनिक दमन से व्यक्तियों और अल्पमतों की रक्षा करने की थी। इस उद्देश्य के लिए, एक स्वतंत्र न्यायपालिका से बढ़कर कोई दूसरा संरक्षण नहीं हो सकता। दूसरी ओर, सर्वोच्च न्यायालय ने एडम्स के हानिकारक राजद्रोह-कानून के पक्ष में निर्णय दिया और संघीय सामान्य कानून को मान्यता देने की अपनी प्रवत्ति से वह स्वयं एकीकरण का साधन बन गया

था। जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्त की एक दूसरी प्रबल प्रवृत्ति बहुमत के शासन के प्रति सम्मान की थी; यहाँ सर्वोच्च न्यायालय राज्यीय न्यायालयों से पुनरावेदन की अनुमति दे कर तथा राज्य-कानूनों की वैधानिकता पर सन्देह व्यक्त करके लोकप्रिय बहुमत को चुनौती दे रहा था। विचित्र धर्मसंकट था; राज्यीय न्यायालयों के व्याख्यात्मक कार्य को स्वीकार करना और संघीय न्यायालयों को उससे वंचित करने का समाधान न तो तर्कसंगत था और न विश्वासोत्पादक।

१८०२ में तात्कालिक समस्या यह निर्णय करने की थी कि एडम्स के न्यायाधिकारी-कानून के बारे में क्या किया जाय और यह तर्क माना जाय या नहीं, कि न्यायाधिकारी-वर्ग के नये पदों को समाप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि ऐसा किया जाता है तो न्यायाधीशों का आजीवन-पद अवैधानिक रूप से समाप्त हो जायगा।

नये पदों की समाप्ति पर जो वादविवाद आरम्भ हुआ, उसके अन्तर्गत न्यायाधिकारी-वर्ग की पूरी समस्या आ गयी और संघवादियों ने राज्य और कांग्रेस, दोनों के कानूनों पर पुनर्विचार करने के उसके अधिकारों का समर्थन किया। रिपब्लिकनों ने यह विचार व्यक्त किया कि जन-प्रतिनिधियों द्वारा व्यक्त जनमत को ही सर्वोपरि माना जाय। वास्तव में दोनों ही दलों के बीच मतभेद इतना तीव्र हो गया था कि संघवादी, जो एक क्षेत्रीय अल्पमत गुट के रूप में थे, अब वर्जीनिया के पृथक्तावादियों की धमकियों तथा केण्टकी-प्रस्तावों के सिद्धांतों का उपयोग कर रहे थे।

यद्यपि विजयी रिपब्लिकनों ने १८०१ के कानून को रद्द कर दिया, फिर भी उन्होंने इतना ही किया कि न्यायालय के संगठन को उसी रूप में पुनः स्थापित किया, जिस रूप में वह १७८९ में था, उसका अधिकार-क्षेत्र अप्रभावित रहा और उसके अधिकारों की सीमा के बारे में कोई निर्णय नहीं किया गया।

वास्तविक संकट १८०३ में उत्पन्न हुआ। किसी हद तक न्यायालय, अर्थात् रिपब्लिकन पार्टी की अपेक्षा जान मार्शल इसके लिए अधिक जिम्मेदार थे। मार्शल के कतिपय सहयोगी वृद्ध और निर्बल हो चुके थे और उन्हें भय था कि उनका देहान्त हो जाने पर अथवा उनके इस्तीफा दे देने पर जफर्सन रिक्त स्थानों की पूर्ति उन रिपब्लिकनों से करेंगे, जो न्यायालय के अधिकारों का बलिदान कर देंगे। यह स्थिति उत्पन्न होने के पहले ही मारबरी बनाम मेडिसन के मुकदमे में न्यायालय के अधिकारों पर बल देने का एक अवसर

आया। मेडिमन ने कुछ ऐमे पदों के लिए आदेश-पत्र जारी करने से इन्कार कर दिया, जिन पर एडम्स ने अपने राष्ट्रपति-काल के अन्तिम दिनों में हस्ताक्षर किए थे। मारबरी ने, जो कोलम्बिया के जिला-न्यायाधीश होने वाले थे, न्यायालय मे विदेश-मत्री के नाम समादेश पत्र जारी करने की माग की, ताकि उन्हें आदेश पत्र जारी करने के लिए विवश किया जा सके। यह तो निश्चित था कि यदि मारबरी के पक्ष मे निर्णय किया गया तो रिपब्लिकन कांग्रेस में मार्शल पर अभियोग लगायेंगे और मार्शल के हटाये जाने मे जेफर्सन को वर्जीनिया के मुख्य न्यायाधीश स्पेन्सर रोन को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने का अवसर मिल जायगा। स्पेन्सर रोन राज्यो के अधिकार के सिद्धान्त के कट्टर समर्थक थे। दूसरी ओर, यदि मार्शल ने आत्मसमर्पण कर दिया तो इसका अर्थ होगा कार्यपालिका पर सभी कानूनी अवरोधों का परित्याग।

मार्शल ने इस धर्मसकट का जो समाधान निकाला, उसे उनके प्रशंसक जीवनी-लेखक सिनेटर ए. जे बिवरिज ने प्रशासनिक दृष्टि से साहस और वीरता का कार्य बताया है और कहा है कि यह वैसा ही साहस था, जैसा कि सविधान बनाने में दिखाया गया था। संक्षेप मे, मार्शल न मारबरी के इस दावे को स्वीकार किया कि मेडिमन ने आदेश-पत्र को रोक कर गलती की है, किन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने कार्रवाई करने के अधिकार को इस आधार पर अस्वीकार किया कि १७८९ के न्यायाधिकारी-कानून की जिस धारा ने उसे समादेश-पत्र जारी करने का अधिकार दिया है वह सर्वोच्च न्यायालय के मूल अधिकार-क्षेत्र से सम्बन्धित सविधान के प्रावधानो द्वारा अवैध बन जाती है। इस प्रकार पहले पहल कांग्रेस के कानून को अवैध बन कर मार्शल ने प्रायः उसी तर्क का परिचय दिया, जिसका उपयोग हेमिल्टन ने 'फेडरलिस्ट' मे किया था।

उनके विचार से, वैधानिक कानूनो को अवैध बनाने का अधिकार लिखित संविधान के अस्तित्व मे ही उत्पन्न हुआ, जिसमे शासन के विभिन्न अंगो के लिए निश्चित अधिकार और कर्त्तव्य निर्धारित किये गये है। यदि न्यायालयों को संविधान का सम्मान करना है, और सविधान विधानमण्डल के किसी भी साधारण कानून से ऊँचा है तो किसी भी मामले मे, जहाँ दोनों का प्रश्न खड़ा होगा, संविधान को ही प्रमुखता दी जायगी। कांग्रेस के कानून का अवैध किया जाना वास्तव में राजनीतिक दृष्टि से उतना महत्वपूर्ण नहीं था, क्योंकि फिर ५४ वर्ष बीत जाने पर सर्वोच्च न्यायालय ने एक दूसरे कानून को अवैध घोषित किया। किंतु, जैसा कि रिपब्लिकनों ने देखा, यह तर्क उन राज्य-कानूनों पर

समान रूप से लागू होना, जो अपील करने पर सर्वोच्च न्यायालय के सामने आ सकते है। किसी चीज की वैधानिकता अथवा अवैधानिकता पर एक मनोनीत संस्था को न केवल सहयुक्त, अपितु अन्तिम निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए, यह एक ऐसा दावा था, जिसे जेफर्सन के अनुयायी पसन्द नही कर सकते थे—कम से कम उस समय तक जब तक कि शासन की वैधानिक तथा कार्यपालिका-शाखाएं उनके हाथ मे थीं।

यदि मार्शल ने 'मारबरी बनाम मेडिसन' के मुकदमे में १८०२ के मन्सूखी कानून की परवाह न करके अपना निर्णय किया होता, तो चुनौती स्वीकार कर ली गयी होती। रिपब्लिकनों को संघीय न्यायालय में अपेक्षाकृत कम महत्व के दो अभियोगों में उलझा दिया गया और १८०५ के आरम्भ में इनमें से दूसरे अभियोग के विफल हो जाने से न्यायाधिकारी-वर्ग पर प्रहार का अन्त हो गया। अभियोग की कार्रवाइयों मे सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय बात रिपब्लिकनों का यह तर्क था कि अभियोग पदच्युत करने की एक प्रणाली है न कि दण्ड-विधि-सहिता के अनुसार कार्रवाई। यह तो स्पष्ट था कि वे इस बात के लिए प्रयत्नशील थे कि न्यायाधीशों के पद स्थायित्व को किसी प्रकार समाप्त किया जाय। तत्कालीन तर्कों में उस महान संघर्ष के बीज परिलक्षित थे, जो १९३६-३७ में जेफर्सनवादी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट और सर्वोच्च न्यायालय के बीच हुआ।

जेफर्सन राष्ट्रपति के रूप में सर्वोच्च न्यायालय-सम्बन्धी दलगत संघर्ष में प्रत्यक्षरूप से सम्मिलित नही थे। ह्वाइट हाउस में तैयार की गयी वैधानिक योजनाओं के युग का प्रभात अभी नही हो पाया था, यद्यपि जेफर्सन इस बात के लिए सक्रिय रूप से प्रयत्नशील थे कि कांग्रेस का नेतृत्व सुयोग्य हाथो मे रहे। वित्त और प्रशासन-विभाग को प्रतिभाशाली गलाटीन के हाथ में छोडा जा सकता था; जेफर्सन संघीय कार्यपालिका के प्रमुख कार्य विदेशी मामलों की देखभाल कर सकते थे।

लुइसियाना (Luisiana) की खरीद की जटिल कूटनीति स्वयं एक कहानी है, जिसका श्रेय जेफर्सन को है। यहाँ इतना ही कहा जा सकता है कि इस श्रेय का कारण उनकी दूरदर्शितापूर्ण योजना उतनी नही थी, जितनी समयानुकूल कार्य करने की उनकी क्षमता। सर्वप्रथम लक्षण अनुकूल नही प्रतीत होते थे। यह तो विदित था कि फ्रास की आँखें लुइसियाना और फ्लोरिडा पर लगी हुई थीं, यह भी सन्देह था कि पूरा प्रदेश नही तो कम से कम उसका

कुछ भाग स्पेन ने उसे दे दिया था और यह भी निश्चित नहीं था कि अमरीका इस घटना को रोक सकता था। दो शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वियों के युद्ध में, चाहे यह युद्ध जल पर हो या स्थल पर, एक निर्बल तटस्थ राष्ट्र का कार्य सराहनीय नहीं होता। जब वे युद्धरत होते हैं तो भावी तटस्थ राष्ट्र के हितों की निश्चय ही उपेक्षा की जाती है और जब वे सन्धि करते हैं, तब वह तटस्थ राष्ट्र के खर्च पर हो सकती है। फ्रांस के विरुद्ध समुद्री अधिकारों के लिए दीर्घकालिक युद्ध के बाद पहले तो ऐसा मालूम हुआ कि अमरीका एमीन्स-सन्धि के लिए मूल्य चुकता करेगा, क्योंकि अंग्रेज बोनापार्ट को यह मौका देने के लिए तैयार जान पड़ते थे कि वह स्वदेश के निकटवर्ती मामलों की अपेक्षा अटलांटिक पार के मामलों में ही उलझा रहे और यदि वह सान डोमनिगो अपने अधीन कर सका तो उसे पश्चिम में एक नये सन्तुलित व्यापारिक साम्राज्य के निर्माण के लिए मुख्यभूमि के सम्भरण-स्रोत की आवश्यकता होगी। यदि ऐसा हुआ तो अमरीकी उस दीर्घकालिक लाभ से वंचित हो जाते—जो उन्हें उनके पश्चिमी उपनिवेशों के द्रुत विकास से प्राप्त हो रहा था। यह सही था कि फ्रांसीसियों के बहुत आगे बढ़ने पर स्वयं अंग्रेज हस्तक्षेप कर सकते थे, किन्तु अंग्रेज फ्रांसीसियों की अपेक्षा कहीं कम अनुकूल पड़ौसी सिद्ध होते। अन्त में, महान शक्तियों के अतिरिक्त, स्वदेश में ही विरोध खड़ा हो गया, क्योंकि संघवादी यद्यपि संघराज्य की पश्चिमी दिशा में विस्तार को सर्वदा नापसंद करते थे और उससे भयभीत भी थे, फिर भी वे इस ताक में थे कि यदि जेफर्सन पश्चिमी उपनिवेशों के हितों की उपेक्षा करें और मिस्सीसिपी की नौकानयन-प्रणाली को सुरक्षित रखने में असमर्थ हों, तो रिपब्लिकन अनुयायियों को अपनी ओर फोड़ने का मौका न चूका जाय। जेफर्सन जानते थे कि यूरोप में अमरीका के इस दृष्टिकोण को तत्काल स्वीकार नही किया गया था कि लुइसियाना पूर्णतया मिस्सीसिपी के पश्चिम था; १७८२–८३ में सभी महान शक्तियों के व्यवहार से यह सिद्ध हो गया था कि वे यही चाहते थे कि अमरीकियों को अप्पालांशियन्स में रुक जाना चाहिए। यह कल्पना अभी भी सजीव बनी हुई थी।

जिस देश की कोई सैनिक या नौसैनिक शक्ति न हो और जिसके पास जो कुछ शक्ति हो उसे भी कम करने में जो लगा हुआ हो, उसके लिए स्थिति सुदृढ़ नहीं थी, यद्यपि जेफर्सन को कुछ आशा थी कि अमरीकी मित्रता के व्यापारिक मूल्य का कुछ प्रभाव पड़ेगा। इसका एकमात्र समाधान समयानुकूल कार्य करना था और यह भी डर था इसका अन्त भी बुरा हो सकता था। कोई

भी निश्चित नीति अपनाना कठिन था, क्योंकि फ्रांसीसी-स्पेनिश समझौते के स्वरूप के बारे में अमरीकियों को निश्चित ज्ञान नहीं था और उन्हें लन्दन तथा पेरिस में अलग-अलग बातचीत करनी थी, जिसे इतनी दूर वाशिंगटन से संयोजित करना कठिन था। जेफर्सन को धीरे-धीरे पता चला कि वस्तुत: कौन-सी चीज खतरे में थी। उनका मन मिस्सीसिपी से पूर्व की भूमि को बसाने और वहाँ की इंडियन आबादी को साधारण प्रवासियों के साथ मिलाने में लगा हुआ था, जबकि लुई और क्लार्क अभियान द्वारा उन्होंने १८०३ के आरम्भ में कांग्रेस में पहले पहल प्रस्ताव रखा कि मिस्सूरी प्रदेश को एक नये फर-व्यापार क्षेत्र के रूप में खोल दिया जाय।

किन्तु वास्तविकता पर कल्पना का पर्दा नहीं पड़ सकता था। बोनापार्ट के कुचक्रों से अमरीका के हितों की रक्षा करनी थी। इस उद्देश्य के लिए, जेफर्सन फ्रांस के कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के समर्थन पर भरोसा रख सकते थे, जो इस विचार से सहानुभूति रखते थे कि समूचा उत्तरी अमरीकी महाद्वीप अमरीका के प्रजातन्त्री शासन के अन्तर्गत आ जाना चाहिए। इन्हीं व्यक्तियों में डु पोंट डिनेमूर थे, जो तीन वर्षों से अमरीका में ही रहते थे। उन्हीं के द्वारा जेफर्सन ने आगामी प्रहार को रोकने के लिए अपनी प्रथम प्रत्यक्ष कार्रवाई की। अप्रैल, १८०२ में, जब डु पोण्ट फ्रांस के लिए रवाना हुए तो जेफर्सन ने उन्हें एक पत्र दिया और साथ ही साथ उन्होंने पेरिस स्थित अपने प्रतिनिधि राबर्ट लिविंगस्टन के लिए भी एक खुला पत्र उन्हें दिया।

डु पोण्ट डिनेमूर के नाम अपने पत्र में जेफर्सन ने लिखा—

"मैं चाहता हूँ कि आपको विषय का ज्ञान रहे ताकि आप लुइसियाना पर अधिकार करने के अनिवार्य परिणामों से फ्रांसीसी सरकार को परिचित करा सकें। यद्यपि न्यू आर्लियन्स और फ्लोरिडा की प्राप्ति से हमें कुछ शान्ति अवश्य मिलेगी, फिर भी मेरा विश्वास है कि इससे अधिक और कुछ लाभ नहीं होगा और इस कार्रवाई के फलस्वरूप फ्रांस सम्भवत: शीघ्र ही एक ऐसे युद्ध में फँस जायगा, जो उसे महासागरीय प्रभुत्व से वंचित कर देगा और उस तत्व को दो राष्ट्रों की निरंकुशता के अधीन कर देगा, जिससे मैं और अधिक संबंध नहीं स्थापित कर सकता, क्योंकि स्वयं मेरा राष्ट्र भी उनमें से एक होगा।"

जेफर्सन ने लिविंगस्टन को और भी स्पष्ट शब्दों में लिखा है—"दुनिया में एक ही ऐसा स्थान है, जिसके मालिक प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से हमारे शत्रु हैं। यह न्यू आर्लियन्स है, जिससे होकर हमारे प्रदेश का ३७ प्रतिशत

उत्पादन बाजारों में जाता है और जिसकी उर्वरता से शीघ्र ही हमारे कुल उत्पादन का आधे से अधिक पैदा होने लगेगा। फ्रांस उस द्वार पर खड़ा होकर हमें एक प्रकार से चुनौती दे रहा है। स्पेन ने उसे वर्षों तक अपने अधिकार में रखा होता...जिस दिन फ्रांस न्यू आर्लियन्स पर कब्जा करेगा, उसी दिन उसे एक सीमा के अंतर्गत रखने का मत निश्चित हो जायगा। इस तरह उन दो प्रदेशों के लिए सदा का मार्ग बन्द हो जायगा, जो आपस में मिलकर महासागर पर एकाधिकार स्थापित कर सकते हैं। उसी क्षण से हमें ब्रिटिश बेड़े और इन राष्ट्रों से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा।"

डु पोण्ट ने, जो एक फ्रांसीसी थे और अमरीका के मित्र भी थे, अमरीकी समाधान के खतरों को समझा और उन्होंने ब्रिटिश सन्धि में निहित और भी बड़े खतरों को फ्रांस के समक्ष रखने का प्रयास किया। यदि अमरीकी मिस्सिसिपी में नौकानयन की स्वतन्त्रता के आश्वासनों से सन्तुष्ट नहीं हो सकते तो अमरीका के लिए सर्वोत्तम मार्ग यही होगा कि वह उसके लिए फ्रांस के दावों को खरीदने का प्रस्ताव रखे। वास्तव में मेडिसन ने भी इस समाधान का खंडन नहीं किया, किन्तु जेफर्सन ने और भी साहसिक प्रवृत्ति का परिचय दिया और वे उस चीज के लिए मूल्य देना नहीं चाहते थे, जिसे वे पहले ही से अपना प्राकृतिक अधिकार मानते थे।

१८०२ के प्रारम्भिक महीनों में फ्रांस के साथ अत्यन्त सतर्कतापूर्ण प्रयासों ने एक नया रूप धारण कर लिया, जबकि लुइसियाना को फ्रांस को हस्तान्तरित करने सम्बन्धी स्पेन के सम्राट का अन्तिम आदेश जारी होने के पांच दिनों बाद, २० अक्तूबर को यह प्रकट हो गया कि न्यू आर्लियन्स स्थित स्पेनिश अधिकारी ने १७९५ की सन्धि के अनुसार बन्दरगाह में मिले अमरीकी अधिकार का अन्त कर दिया। क्या फ्रांस पुनः उस अधिकार को वापस करेगा, जिसे स्पेन ने समाप्त कर दिया था और सम्भवतः उसकी सहमति से समाप्त किया था; साथ ही साथ यह भी काफी स्पष्ट हो चुका था कि फ्रांस अमरीकी प्रदेश के विरुद्ध यूरोपियनों के आदान-प्रदान के लिए कुछ ऐसी योजनाओं पर बल दे रहा था, जिनके परिणामस्वरूप अन्त में फ्लोरिडा अथवा कम से कम उसका वह भाग भी उसके हाथ में आ जायेगा, जो लुइसियाना के हस्तान्तरण में सम्मिलित नहीं था। इसका अर्थ होगा खाड़ी-तट से अमरीका का पूर्ण निष्कासन। कांग्रेस में क्षोभ बढ़ने लगा और ऐसा प्रतीत होने लगा कि पश्चिम की युद्ध-नीति को स्वीकार कर संघवादी अपने अनुयायियों

की संख्या बढ़ा रहे थे।

एक ओर फ्रास में लिविंग्स्टन यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे कि अमरीका को ब्रिटिश गुट में जाने के लिए विवश करने से फ्रांस को लाभ नहीं होगा और उसके उद्देश्यो की पूर्ति के लिए पूरे लुइसियाना और फ्लोरिडा पर अधिकार करना आवश्यक नही है, दूसरी ओर जेफर्सन को कार्रवाई करनी पड़ी। इसी अवसर पर डु पाण्ट का एक दूसरा पत्र आ गया, जिसमें न्यू आर्लियन्स और फ्लोरिडा, दोनो प्रदेशों की खरीद के लिए सुझाव दिया गया था। कांग्रेस ने फ्रांस को एक विशेष प्रतिनिधिमण्डल भेजने के लिए बीस लाख डालर की रकम निश्चित की और इस उद्देश्य के लिए लिविंग्स्टन का साथ देने के लिए जेम्स मनरो को भेजा। प्रतिनिधिमण्डल को यह निर्देश दिया गया कि यदि वह खाड़ी पर उचित निकासी के लिए आवश्यक न्यूनतम व्यवस्था करने में असमर्थ हो तो वह वहाँ से लन्दन जाकर ब्रिटेन से सन्धि करने का प्रयास करे।

८ मार्च, १८०३ को जब मनरो ने अमरीका से फ्रांस के लिए प्रस्थान किया, तब यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि सफलता सरल होगी, किन्तु जब वे १३ अप्रैल को पेरिस पहुँचे तो सारी स्थिति बदल चुकी थी। बोनापार्ट की अमरीकी योजना-संबंधी कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयी थी; सान डोमिंगो मे पीत ज्वर फैल गया था, डच बन्दरगाहों में, जहाँ से फ्रांसीसी सेना का आगमन होता था, बर्फ जम गयी थी, और १८०३ की वसन्त ऋतु में यह आम तौर पर महसूस किया गया कि एमीन्स की सन्धि विराम सन्धि मात्र थी और युद्ध छिड़ने ही वाला है। यह तो स्पष्ट था कि युद्ध छिड जाने पर अंग्रेज न्यू आर्लियन्स पर कब्जा कर लेते और इसके मूल्य-स्वरूप अमरीका के साथ सम्भवत: एक सुदृढ़ सन्धि कर लेते।

इन तथ्यों के कारण बोनापार्ट की योजना में शीघ्र परिवर्तन हुआ। अब प्रश्न यह था कि फ्रास द्वारा अमरीकी साम्राज्य का परित्याग कर देने पर अमरीकी सम्पूर्ण लुइसियाना के लिए क्या देंगे? इस समय तक मनरो पहुँच गये थे और बातचीत आरम्भ हो गयी थी। ३० अप्रैल, १८०३ को सन्धियाँ हुईं, जिनके अनुसार अमरीकी नागरिकों ने फ्रास से ८ करोड फ्रैंक क्षतिपूर्ति के दावे का परित्याग कर दिया और उसके बदले में फ्रांस ने लुइसियाना के प्रति अपना दावा छोड़ दिया। १५ मई को ब्रिटेन ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी; किन्तु बैंकर अलेक्जेण्डर बेरिंग को पेरिस और अमरीका की यात्रा करने की अनुमति दी गयी ताकि वे इस असाधारण कार्य के लिए कोई आर्थिक व्य-

वस्था कर सकें। ग्रेट ब्रिटेन नहीं चाहता था कि कोई गलत कदम उठाया जाय।

यद्यपि जेफर्सन के राजदूतों ने इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली थी, जितनी सम्भावना नहीं थी, फिर भी इसका अर्थ यह नहीं था कि न्यू आर्लियन्स पर अधिकार और मिस्सिसीपी में नौकानयन के आश्वासन से समस्या का अन्तिम समाधान हो जाता। अमरीकी अपना विस्तार करने वाले थे और अपनी जन-शक्ति बढ़ाने वाले थे। अब केवल समय का प्रश्न था।

नवम्बर, १८६१ में जेफर्सन ने मनरो को लिखा—"हमारे वर्तमान हित हमें अपनी ही सीमाओं के अन्तर्गत रहने के लिए कितना ही बाध्य क्यों न करें, सुदूर भविष्य की ओर न देखना असम्भव है, क्योंकि तेजी से बढ़ती हुई हमारी जनसंख्या उन सीमाओं को पार करती जायेगी और दक्षिण नहीं तो कम से कम समस्त उत्तरी महाद्वीप में फैल जायगी; इस जन-संख्या की एक ही भाषा, एक ही शासन-प्रणाली और एक ही प्रकार के कानून होंगे।"

सम्प्रति उन्होंने राजदूतों से जो कुछ प्राप्त किया, उसी पर सन्तोष किया। नवम्बर, १८०३ में उन्होंने डु पोण्ट को लिखा—

"हमारी नीति न्यू आर्लियन्स और मेक्सिको खाड़ी स्थित उसके दोनों ओर के क्षेत्र को मिलाकर एक राज्य बनाने की होगी; इन सबके अतिरिक्त, इसमें अपने इंडियनों को बुलाकर बसाना होगा, जो नदी पार करके आनेवाले देशान्तरवासियों को रोकने का कार्य करेंगे और तब तक इस ओर का यह सारा खाली क्षेत्र बस जायगा। इससे मेक्सिको की खानें आधी शताब्दि के लिए स्पेन और हमारे, दोनों के हाथ में आ जायेंगी और उस समय तक के लिए उसके आवास-सम्बन्धी प्रावधानों पर हम निस्सन्देह भरोसा रख सकते हैं।"

चूँकि फ्रांस और ब्रिटेन यूरोप में ही आपसी युद्ध में फँसे हुए थे, इसलिए जेफर्सन की महत्वाकांक्षाओं को प्रोत्साहन मिला। जेफर्सन ने अब मन ही मन सोचा कि लुइसियाना के साथ-साथ टेक्सास, पश्चिमी फ्लोरिडा तथा उत्तर-पश्चिम के एक विशाल अनधिकृत क्षेत्र को भी मिला लिया जाय। दोनों फ्लोरिडा से स्पेनिश अधिकार-क्षेत्र और ब्रिटिश प्रभाव को हटाने की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी और १८१९ की एडम्स-ओनिस-सन्धि द्वारा इस प्रक्रिया की पुष्टि हुई। लुई और क्लार्क ने अपना अभियान आरम्भ कर दिया और १८०५ में वे कोलम्बिया नदी के मुहाने पर पहुंच गये। ब्रिटेन अमरीकी दावों का प्रतिरोध करने की स्थिति में नहीं था। मई, १८०३ में रुफुस किंग ने लन्दन में एक सन्धि की, जिसमें जे की सन्धि के समय से पड़ी हुई प्रमुख समस्याओं का

समाधान किया गया और जिसमें एक ऐसी सीमा-रेखा निर्धारित कर दी गयी जिससे ग्रेट ब्रिटेन को मिस्सिसीपी तक पहुंचने की सुविधा मिल गयी। अब चूंकि निचले तटों पर अमरीका का कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं रह गया था, इसलिए उसके नौकानयन में भागीदारी का ब्रिटिश दावा अब उपयोगी नहीं समझा गया और जब सीनेट में यह मामला पेश हुआ तो रिपब्लिकनों ने यह कोशिश की कि यह धारा ही समाप्त कर दी जाय। १८१८ की सन्धि में जब अमरीकी-कनाडियन सीमा निश्चित की गयी तो वह मिस्सिसीपी के उद्गम के उत्तर की ओर निर्धारित की गयी।

जेफर्सन की विस्तारवादी योजना के विकास के साथ साथ नयी भूमियों पर धीरे-धीरे लोगों को बसाने की कल्पना का परित्याग कर दिया गया। यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वियों के सामने इंडियनों के हितों की उपेक्षा की गयी। पश्चिम में लोगों को बसाने और जेफर्सनवादी लोकतंत्र को अपनाने की जोरदार कोशिश की गयी। इन घटनाओं के इतिहासकार आर्थर बर डार्लिंग ने लिखा है—"यह बड़ा कठिन और नृशंसतापूर्ण कार्य था; किन्तु यह इस प्रकार के लोगों के चरित्र के अनुकूल ही था।"

महाद्वीप के सम्पूर्ण भीतरी भाग में अमरीकी पहुँच के लिए सुविधा प्राप्त करने का प्रयास करके जेफर्सन अमरीका की प्रबल आकांक्षा का ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे, किन्तु इसकी पूर्ति में कुछ बाधाएं थीं जिन पर विचार करना था। स्वयं जेफर्सन अपनी इस कार्रवाई के वैधानिक औचित्य के बारे मे उद्विग्न से थे। संघीय सरकार द्वारा प्राप्त भूमि पर अधिकार किया जा सकता था, किन्तु सन्धि.में विशेष रूप से वादा किया गया था कि अमरीकी संघ में सम्मिलित हो जाने पर नयी भूमियों और उनके निवासियों को संघ के पूर्ण अधिकार मिलेंगे। क्या संघीय सरकार को ऐसा करने का अधिकार था? क्या इससे एक उदारवादी संविधान-निर्माण के लिए एक नया दृष्टांत प्रस्तुत नहीं होगा, जिसका परिणाम उससे भी अधिक दूरगामी होता, जिसके लिए वर्जीनिया-वासियों ने हेमिल्टन की तीव्र आलोचना की? यदि १८०३ की ग्रीष्म ऋतु में अंतरराष्ट्रीय स्थिति कुछ कम अनिश्चित रही होती तो जेफर्सन ने इन सन्देहों की ओर ध्यान दिया होता; किन्तु समय महत्वपूर्ण था, बोनापार्ट अपने निर्णय पर खेद प्रकट कर सकता था, इसलिए साधारण तौर पर जल्दबाजी में उसकी पुष्टि ही की गयी।

पूर्वी राज्यों के संघवादियों के लिए वस्तुतः यह एक प्रहार ही था। भले

ही वे चाहते रहे हों कि पश्चिम के असन्तोष का उपयोग फ्रांस के विरुद्ध अमरीका और ब्रिटेन के बीच गठबन्धन को सुदृढ़ बनाने में किया जाय, किन्तु पश्चिम की ओर और अधिक विस्तार उन्हें कदापि पसन्द नही था। १७८३ की सन्धि के लिए जब से बातचीत आरम्भ हुई थी, तभी से वे इस बात के लिए प्रयत्नशील थे कि पूर्वी तट पश्चिम के अनियन्त्रित लोकतंत्र के अधीन न आने पाये। संघवादियों की संख्या इतनी कम थी कि वे मतदान द्वारा योजना को ठुकरा नहीं सकते थे, इसलिए वे अलग हो जाने की और पहाड़ों के किनारे किनारे के साथ संघ से अनिवार्य रूप से अलग हो जाने की बात करते थे। जेफर्सन ने उनके इस रोष की उपेक्षा की। जनवरी, १८०४ में उन्होंने जोसेफ प्रीस्टली को एक पत्र लिखा। "मैं स्वीकार करता हूँ कि इस क्षेत्र के दूसरे भाग में हमारी तरह स्वतंत्र प्रशासनिक एवं आर्थिक प्रणाली हो, जिसमें साधारण जनता को सुख-समृद्धि प्राप्त हो। चाहे हम एक संघ के अतर्गत रहें, अथवा अटलांटिक और मिस्सिसीपी, दो संघो के अन्तर्गत, मैं किसी भी भाग की सुख समृद्धि के लिए इसे बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझता। पश्चिमी संघ के लोग वैसे ही हमारी सन्तानें है जिस प्रकार पूर्वी संघ के लोग, और मैं भविष्य में अपने को दोनों ही क्षेत्रों के साथ समानरूप से सम्बद्ध मानूंगा। मैं देखता हूँ कि भविष्य में कभी न कभी अलगाव होकर रहेगा, फिर भी मैं अपना यह कर्तव्य समझता हूँ और मेरी शुभकामना भी यही है कि पूर्व और पश्चिम के हितों की समानरूप से रक्षा और अभिवृद्धि हो और अपने अधिकारों के रहते मैं अपने भावी परिवार के दोनों भागो का समानरूप से हित करने का यथाशक्ति प्रयास करूँगा।"

वास्तव में तात्कालिक राजनीतिक भविष्य को देखते हुए आत्मतुष्ट रहना अकारण नहीं था। लुइसियाना-सन्धि की पुष्टि के बाद उग्रवादी-संघवादियों ने न्यूयार्क के गवर्नर-पद के लिए बर को चुनने की योजना बनायी। बर और जेफर्सन में बिल्कुल पटती नहीं थी। तदनन्तर उनकी सहायता से एक स्वतंत्र संघ की स्थापना में न्यूयार्क और न्यू इंगलैण्ड के साथ हो सकते थे। किन्तु संघवादियों और असन्तुष्ट रिपब्लिकनों के गठबन्धन की योजना का रूफुस किंग और अलेक्जेण्डर हेमिल्टन जैसे जिम्मेदार संघवादी नेताओं ने समर्थन नहीं किया और सम्प्रति उसका कोई परिणाम भी नही दिखायी पडता था।

२५ फरवरी, १८०४ को कांग्रेस के प्रमुख नेताओं की एक गुप्त बैठक में जेफर्सन को प्रेसिडेण्ट पद के लिए दूसरी बार मनोनीत किया गया। इस समय

तक १२ वां संशोधन कानून बन चुका था और वापस प्रेसीडेण्ट-पद एक पृथक विषय रह गया था। बर के लिए कोई सम्भावना नही रह गयी और उनके स्थान पर उनके प्रतिद्वन्द्वी जार्ज विलण्टन को मनोनीत किया गया। अप्रैल में जेफर्सन की छोटी लडकी का देहान्त हो गया और इस घटना से उनकी सफलता पर शोक का वातावरण छा गया। जुलाई में एक और भी सार्वजनिक दुर्घटना घटी, जबकि एक घातक द्वन्द्व युद्ध मे बर ने हेमिल्टन से बदला लिया, जो उसकी महत्वाकाक्षा के मार्ग में दीर्घकाल से काटा बना हुआ था। इस मृत्यु से अतीत के सम्बन्ध की कडी टूट रही थी और जेफर्सन पुन: ऐसी बात करने लगे जिससे मालूम होता था कि वे सार्वजनिक जीवन से अलग हो जायेगे। किन्तु उनका पुनर्निर्वाचन अनिवार्य था। १७९६ और १८०० के कटु सघर्षो की तुलना में यह अभियान शान्तिपूर्ण रहा। १७ राज्यों में से केवल दो राज्यों—कनेक्टिकट और डेलावरे – ने सघवादियों के पक्ष में मत दिये—वे थे सी. सी. पिंकने और रुफुस किंग। अब पूर्णतया सिद्ध हो गया कि जेफर्सन सही मार्ग पर थे।

अध्याय ६

प्रेसिडेण्ट : प्रतिबन्ध

(१८०५–१८०९)

१८०५ में, अपनी द्वितीय पदावधि के आरम्भ में, जेफर्सन अपनी सत्ता और लोकप्रियता की चरमसीमा पर पहुच चुके थे। यद्यपि पोशाक और व्यवहार के सम्बन्ध में उनकी अनौपचारिकता विदेशी कूटनीतिज्ञों को पसन्द नही हो सकती थी और थामस पेन के साथ उनकी मित्रता तथा क्रान्तिकारी विचारधारा के अन्य प्रमाण न्यू इंगलैण्ड के समाज के उच्चतर वर्ग के लिए असह्य हो सकते थे, फिर भी उनकी व्यापक लोकप्रियता पर सन्देह नही किया जा सकता था। जिस व्यक्ति ने बिना एक गोली चलाये ही अपने राष्ट्रीय क्षेत्र के आकार को दूना कर दिया था, वह एक ऐसे देश से सराहना की अपेक्षा कर ही सकता था, जिसमें विस्तारवाद और शान्तिवाद का प्राय: अनपेक्षित सयोग हुआ करता था।

विगत दिसम्बर में, उन्होने एक पत्र में स्पष्ट शब्दों में आत्मसंतोष व्यक्त किया था—

"प्रचंड समुद्री युद्ध में हमारे उलझ जाने के साथ ही नयी शताब्दी का श्री गणेश हुआ ; किन्तु अब सब कुछ धीरे धीरे शांत हो रहा है; देश और विदेश में शांति हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है और यदि हमने न्याय और नम्रता के मार्ग का अवलंबन किया तो हमारी शांति और समृद्धि कायम रहेगी और अंत में हमारी संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि हमें विदेशों से भयभीत होने का कारण नही रह जायेगा। इंगलैंड के साथ हमारी हार्दिक मित्रता है; फ़ांस के साथ पूर्ण समझौता है; स्पेन के साथ हमारा सदा विवाद होता रहेगा, किंतु कभी युद्ध नहीं होगा, जब तक कि हम स्वयं नहीं चाहेंगे। अन्य राष्ट्र हमारी नीति को सम्मान और आदर की दृष्टि से देखते हैं।"

अपनी द्वितीय पदावधि में जेफर्सन का रेकार्ड देश और विदेश दोनों में, प्राय: विफल और निराशाजनक रहा। स्वदेश में नयी साम्प्रदायिक और दलगत प्रतिद्वन्द्विओं के कारण एकता भंग हो गयी। जेफर्सन ने प्रारम्भ में ही प्रकट कर दिया कि वे तृतीय अवधि में प्रैसीडेण्ट-पद के लिए खड़े न होकर वाशिंगटन का आदर्श प्रस्तुत करेंगे। इससे कटुता और भी बढ़ गयी, क्योंकि उत्तराधिकार के लिए मेडिसन और मनरो के बीच संघर्ष को उत्तेजना मिली।

किन्तु इस संघर्ष को केवल व्यक्तित्व के संघर्ष के रूप में देखना भी गलती होगी। जेफर्सन ने अपनी ही पार्टी के अन्तर्गत एकता के प्रतीक और अनुशासन को कायम रखने के उद्देश्य से इस संघर्ष का मार्ग अपनाया था। राष्ट्रीय नेतृत्व का दावा करनेवाली प्रत्येक उत्तराधिकारिणी अमरीकी पार्टी की तरह जेफर्सन-वादी रिपब्लिकनों का भी वस्तुत: एक संयुक्त गठबन्धन था। वे जितना ही पूर्ण विजय के निकट होते—और संघदियों का पूर्ण उन्मूलन ही जेफर्सन का उद्देश्य था—उतना ही संयुक्त गठबन्धन को संगठित रूप से कायम रखना कठिन होता।

संघीय सरकार के प्रति बिल्कुल निषेधात्मक रुख एक ऐसे देश के लिए अनुपयुक्त ही था, जिसके पास एक विशाल प्रादेशिक साम्राज्य था और जो सुरक्षा की दृष्टि से किसी भी समस्या के तत्काल समाधान के लिए अत्यन्त आवश्यक था। संघीय सरकार एक राजनीतिक सिद्धान्त के लिए दक्षिण में काफी सबल थी और काँग्रेस में उसका प्रतिनिधित्व जान रण्डोल्फ करते थे, जो जेफर्सन और मेडिसन के प्रमुख आलोचक थे। अमरीकी 'सीमा' के प्रमुख इतिहासकार एफ. जे टर्नर ने संकेत किया है कि लुइसियाना का क्रय प्रजातंत्र के इतिहास में 'कदाचित् एक संवैधानिक मोड़ था।' उसने राष्ट्रीय विधान के लिए एक नया क्षेत्र प्रदान किया और संघीय सरकार को व्यापक उत्तरदायित्व ग्रहण

करने के लिए विवश किया ।

अमरीका के बढ़ते हुए व्यापार ने भी नयी समस्याओं को जन्म दिया । एक प्रबल समुद्री शक्ति की अधीनता स्वीकार न करने पर नौसैनिक संरक्षण की आवश्यकता होती और नौसेना पर व्यय संघवादी राजनीति का द्योतक था । ट्राफलगार के बाद ग्रेट ब्रिटेन ही वह प्रबल समुद्री शक्ति हो सकता था । रिपब्लिकन पार्टी का नारा था 'मितव्ययिता ।' एक दूसरा तथ्य और भी था । व्यापारिक समृद्धि का अर्थ था राजस्व में वृद्धि । जब कि अभी भी ऋण का भुगतान करना बाकी था, इस राजस्व का उपयोग ऋण मुक्ति के लिए हो सकता था । किन्तु गलाटिन की सतर्कतापूर्ण देखरेख में ऋण बड़ी तेजी से घटता जा रहा था और बचत की सम्भावना बढ़ती जा रही थी । जेफर्सन के लिए तथा मध्य राज्यों और पश्चिम में उनके अनेक समर्थकों के लिए राजस्व की बचत भय का अपेक्षा प्रसन्नता का कारण थी और जेफर्सन के द्वितीय उद्घाटन-भाषण (४ मार्च, १८०५) से उनकी रचनात्मक आशावादिता की प्रवृत्ति की ही झलक मिलती है ।

जेफर्सन ने घोषणा की कि एक बार ऋण मुक्त हो जाने पर इस प्रकार राजस्व की जो बचत होगी, उसे विभिन्न राज्यों में समुचित ढंग से वितरित करके तथा संविधान में अनुकूल संशोधन करके, उसका उपयोग शान्तिकाल में प्रत्येक राज्य के अन्तर्गत नदियों को बाँधने, नहरों, सड़कों, कला, उद्योगों, शिक्षा तथा अन्य महान कार्यों में किया जा सकता है । स्वयं हमारे और दूसरों के अन्याय से कभी-कभी युद्ध हो जाता है और युद्ध-काल में वही राजस्व आबादी और खपत की वृद्धि से और बढ़ जायगा तथा उस संकट के लिए सुरक्षित अन्य स्रोतों की सहायता से वह भावी सन्तानों पर अतीत के ऋण का भारी बोझ लाद कर उनके अधिकारों का अपहरण न करके वर्ष के अन्दर ही वर्ष के सभी खर्चों को पूरा कर सकता है । उस स्थिति में युद्ध उपयोगी कार्यों का स्थगन मात्र होगा और पुनः शान्ति की ओर लौटने का अर्थ होगा सुधार की प्रगति की दिशा में लौटना ।

आन्तरिक सुधार और युद्ध की स्थिति ! यह मान लेने पर भी कि आन्तरिक सुधारों को वैध बनाने के लिए सांविधानिक संशोधन की आवश्यकता होगी, उग्र रिपब्लिकनों को इससे संतोष नहीं हो सकता था । किन्तु एकान्तप्रिय और गम्भीर जेफर्सन, जो अपने घनिष्ठ साथियों के क्षेत्र के बाहर कभी खुलकर बात नहीं करते थे, सम्भाव्य विरोध से विचलित नहीं होने वाले थे । वास्तव में देश

की मनःस्थिति की परीक्षा के लिए कोई अवसर नहीं था, क्योंकि घरेलू सुधार की सभी सम्भावनाओं पर शीघ्र ही विदेशी मामलों का प्रभुत्व छा गया; किंतु बाद में इसी प्रकार के प्रस्तावो के आने पर यह स्पष्ट हो गया कि विचारधारा की अभिव्यक्तिकरण में जेफर्सन अल्प मत का ही प्रतिनिधित्व करते थे।

यदि राष्ट्रीय सरकार के अधिकार का प्रश्न तथा सम्बद्ध विषय पूर्व और और पश्चिम के बीच मतभेद के कारण बन सकते थे तो यह भी स्पष्ट था कि गुलामी की प्रथा, दास-प्रथा वाले राज्यों के रिपब्लिकनो तथा अन्य भागो के लोगो के बीच मतभेद का कारण थी। दास-प्रथा को दक्षिणी अर्थ तन्त्र में, जहाँ रूई की खेती का महत्व बढ़ता जा रहा था, इतने धूर्तता पूर्ण ढग से सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जा रहा था कि समकालीन इतिहासकार उसकी गहराई का इतनी सरलता से पता नही लगा सकते थे, जितना बाद के इतिहासकार। किन्तु यह छिपा हुआ नही था कि दासता का प्रश्न दक्षिण के लोगों के मन और मस्तिष्क में घर कर चुका था। १८०८ में दास व्यापार के अन्त के लिए प्रस्तुत विधेयक यद्यपि सिद्धान्तः सबको स्वीकार्य था, फिर भी उसके विवरणात्मक रूपों पर लोगों में तीव्र मतभेद था। १८०८ के पूर्व गुलामी प्रथा के अन्त के लिए प्रयास करना सावैधानिक रूप से व्यवहारिक नहीं था। १८०६ में जब नेपोलियन के साथ एक समझौते द्वारा सान डोमिनगो के विद्रोहियों के साथ व्यापार निषिद्ध करार दे दिया गया तो दक्षिणी रिपब्लिकनों ने इस कारवाई का समर्थन किया, अन्यथा वे फ़ास के प्रति मेडिसन के कथित अधीनतापूर्ण रुख के विरोधी थे। उनको भय था कि यदि कैरिबियन में एक स्वतंत्र निग्रो प्रजातत्र कायम रहा तो दक्षिण की स्थिरता सर्वदा खतरे में रहेगी।

पार्टी के अन्तर्गत भद्दे संघर्ष और १८०० में न्यू इगलैंड में संघवाद की स्पष्ट समाप्ति के बाद उसके पुनरुज्जीवन के अतिरिक्त, अभी जान मार्शल और सर्वोच्च न्यायालय के साथ सघर्ष कायम रहा। बर-षडयंत्र और मुकदमेबाजी, जिसमे मार्शल को प्रेसिडेण्ट को चुनौती देने का दूसरा अवसर मिला, अधिक कटु सिद्ध हुए, और स्वयं जेफर्सन किसी न किसी रूप में इसके लिए कुछ जिम्मेदार थे।

कतिपय इतिहासकारों ने कहा है कि जेफर्सन ने उन आकस्मिक अनुकूल परिस्थितियों को नही समझा, जिनके कारण लुइसियाना की खरीद सम्भव हुई। वास्तव में अपने द्वितीय प्रशासन के प्रारम्भिक महीनों में फ्लोरिडा सम्बन्ध में उन्होंने जो व्यवहार किया, उससे वे विदेशी शक्तियों की दृष्टि में ऊंचे नहीं

उठ सकते थे। एक लाभप्रद प्रान्त के परित्याग के लिए स्पेन को घूस देने अथवा घुड़की-धमकी देने के प्रयास और पारस्परिक सहायता की कल्पना के बिना ब्रिटिश सन्धि के अनिश्चित प्रस्तावों पर युद्धरत विश्व गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं कर सकता था। इस प्रकार की नीति का एकमात्र औचित्य उनकी मांगें स्वीकृत न होने पर युद्ध के लिए संकल्प करना था, किन्तु कांग्रेस की छंटनी-नीति को देखते हुए, जेफर्सन न तो युद्ध करना चाहते थे और न युद्ध के लिए उनके पास कोई साधन-स्रोत ही थे। इसलिए दिसम्बर, १८०५ में उन्होंने अचानक अपनी नीति बदल दी और टैलीरैण्ड को मध्यस्थ बना कर फ्लोरिडा को स्पेन से खरीदने का प्रयास किया, यद्यपि उन्होंने इसके पूर्व ऐसी बात की थी, मानो युद्ध होना ही चाहता है। इसके पीछे नेपोलियन का क्या उद्देश्य था यह स्पष्ट नहीं है, किन्तु इसमें फ्रांसीसियों का हाथ था इसमें सन्देह नहीं और चूँकि अन्य घटनाओं से ब्रिटेन के साथ सहयोग का प्रश्न उठता ही नहीं था, इसलिए जेफर्सन को मिलाने में नेपोलियन का कोई विशेष उद्देश्य न रहा होगा। वेनेजुला के उग्रवादी विद्रोही मिरण्डा को स्पेनिश उपनिवेशों के विरुद्ध अवैध युद्ध-अभियान की अनुमति दे दी गयी थी, इसलिए स्पेन के साथ अमरीकी बातचीत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। १८०६ के मध्य तक नेपोलियन ने स्पेन और उसके उपनिवेशों के लिए अन्य योजनाएं तैयार कर ली थीं और अमरीका के लिए फ्लोरिडा और टेक्सास को निकट भविष्य में प्राप्त करना सम्भव नहीं रहा।

अमरीकी-स्पेनिश सम्बन्धों की इस असमंजसपूर्ण अवधि में, जबकि युद्ध की स्थिति में न्यू आर्लियन्स पर अधिकार मानों मूल से भी ब्याज भारी हो सकता था, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पश्चिम का भविष्य ऐसा प्रतीत होता था, जो किसी भी क्षण दृढ़प्रतिज्ञ अथवा निःसंकोची और सिद्धान्तहीन व्यक्तियों द्वारा बदला जा सकता था। बर ने अपने को दृढ़प्रतिज्ञ की अपेक्षा निःसंकोची और सिद्धान्तहीन सिद्ध कर दिया। अपने उद्देश्यों की व्याख्या करने के अतिरिक्त इसके लिए और कोई संतोषजनक कारण नहीं बताया जा सकता। सच पूछा जाय तो बर को जेफर्सन के बारे में कोई शिकायत नहीं थी। हेमिल्टन के मारे जाने के बाद जेफर्सन की उसके प्रति कोई शत्रुता नहीं रह गयी थी और उन्होंने उसके कुछ मित्रों को प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों पर भी नियुक्त किया था। यदि न्यायाधीश चेस के विरुद्ध अभियोग की सुनवाई में अध्यक्ष-पद के लिए जेफर्सन को बर की आवश्यकता थी तो इससे उसकी मित्रता असंदिग्ध रूप से

सिद्ध हो जाती है। फिर भी, यह पर्याप्त नहीं था। १८०५ म बर ने षड़यंत्र का जाल इतनी जटिलता से बुनना शुरू कर दिया कि आज तक उसकी गुत्थियों को सुलझाया नही जा सका।

जैसा कि राजभक्त अमरीकियों को प्रकट हुआ, बर का उद्देश्य टेक्सास और मेक्सिको पर विजय प्राप्त करना था। यदि एक ओर यह उसकी निजी योजना थी ऐसा सोचना विचित्र-सा प्रतीत होता था तो दूसरी ओर वस्तुस्थिति को देखते हुए स्पेन के साथ युद्ध ने इसे एक राष्ट्रीय नीति का रूप प्रदान करने में सहायता की और इस तरह की घटना पहले भी पश्चिम में घट चुकी थी। ब्रिटेन के सम्पर्क में बर के षडयंत्र ने प्रतिकूल रूप धारण किया, क्योंकि उसने सुझाव दिया कि पश्चिमी राज्यो को संघ से अलग कर दिया जाय और इनको तथा स्पेन से जो कुछ मिल जाय उनको मिला कर, ब्रिटेन के घनिष्ठ सहयोग से एक नया संघ या साम्राज्य स्थापित किया जाय। जब ब्रिटेन के समर्थन की आशा क्षीण हो गयी तब बर ने कुछ उपयुक्त संशोधनों के साथ इसी प्रकार की एक योजना स्पेन के सम्मुख रखी। इन्हीं निराधार काल्पनिक उड़ानों को देखते हुए यह कदाचित् आश्चर्य की बात नहीं है कि जेफर्सन ने बर के कुचक्रों के बारे में दी गयी चेतावनियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। इस सारी कहानी का एक अंश यह भी है कि जिस व्यक्ति ने प्रान्त में बर को अपमानित किया और गिरफ्तार कराया, वही उसका सहषड्यंत्रकारी था और वह था वरिष्ठ अमरीकी जनरल जेम्स विल्किन्सन, जो बीस वर्ष से स्पेन के सम्राट के गुप्तचर के रूप में वेतन-भोगी था।

एक बार षड्यंत्र का भंडाफोड़ हो जाने पर यह स्पष्ट हो गया कि वास्तविक खतरा नही था। इसके अतिरिक्त, न्यूआर्लियन्स के यूरोपियनों में अमरीकी शासन के प्रति घोर असन्तोष था। बर के साथ क्या किया जाय, यह एक विकट समस्या थी। इस समय तक जेफर्सन की यह धारणा दृढ़ हो गयी थी कि मामला वस्तुत: बड़ा ही गम्भीर है। बर के पलायन के पूर्व दिसम्बर, १८०६ में ही जेफर्सन ने लिखा—"हमारा दुस्साहसी षड्यंत्रकारी एक सशस्त्र गिरोह का सरदार है। उसका उद्देश्य है न्यूआर्लियन्स पर कब्जा करना, उसके बाद मेक्सिको पर आक्रमण करना, मोण्टिज़ुयार के राजसिंहासन पर आसीन होना तथा हो सके तो लुइसियाना को अपने साम्राज्य और पश्चिमी राज्यों में मिलाना।" बर के गिरफ्तार कर लिये जाने के बाद प्रशासन की सारी शक्ति उसे दण्ड दिलाने के प्रयास में जुट गयी।

मुकदमे की सुनवाई दौरा जज के रूप में मार्शल ने की और जान रण्डोल्फ उसमें प्रमुख जूरी थे। इस मुकदमे का उपयोग मुख्य गवाह विल्किन्सन के द्वारा राष्ट्रपति की निन्दा करने मे किया गया, यहाँ तक कि मार्शल ने स्वयं जेफर्सन को गवाही देने के लिए अदालत में हाजिर होने का आदेश जारी किया। जेफर्सन ने इस आदेश का पालन नहीं किया, किन्तु इससे प्रशासन का मामला मज़बूत नहीं हुआ। अन्त में मार्शल ने सबूत पक्ष को यह कह कर मामला समाप्त करने के लिए विवश किया कि राजद्रोह के मामलों में संविधान द्वारा स्वीकृत आवश्यक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया। मार्शल की यह एक दूसरी विजय थी।

मामला समाप्त होने के पूर्व संघवादियों ने बर के मामले को अपना मामला बनाने का जिस प्रकार प्रयास किया, उससे जेफर्सन क्षुब्ध हो उठे थे।

२० अप्रैल, १८०७ को उन्होंने लिखा—"इस प्रशासन में अथवा इसके पूर्व प्रशासन में एक भी ऐसा दृष्टान्त होता, जिसमें संघीय न्यायाधीशों ने कानून के सिद्धान्तों का प्रयोग करते समय किसी संघवादी अपराधी को दण्ड दिया हो और किसी रिपब्लिकन अपराधी को मुक्त कर दिया हो तो इस मामले में और उदारता से निर्णय करने की बात सोचता। फिर भी इन सबका परिणाम अच्छा ही होगा। स्वयं राष्ट्र अपराधी और न्यायाधीशों के बारे में निर्णय करेगा। यदि कार्यपालिका अथवा विधानमण्डल का कोई सदस्य गलती करता है तो वह दिन दूर नहीं जब जनता उसे अपदस्थ कर देगी। तभी वह हमारे संविधान की उस गलती में सुधार करेगी, जो किसी प्रशासनिक शाखा को शेष जनता से अलग करती है।"

जेफर्सन को न्यायपालिका की स्वतंत्रता और सत्ता-विघटन का पर्याप्त अधिकार था। उन्होंने कांग्रेस से संविधान में एक संशोधन स्वीकार करने के लिए अनुरोध किया, जिसमें इस बात की व्याख्या थी कि कांग्रेस के दोनों सदनों के इच्छा व्यक्त करने पर संघीय न्यायाधीश राष्ट्रपति द्वारा हटाये जा सकते हैं। इन्हीं आधारों पर १८०७ और १८०८ में संशोधन प्रस्तुत किये गये और फिर मेडिसन के प्रेसीडेण्ट काल मे पेश किये गये। फिर भी, इन तमाम प्रहारों के बावजूद, न्यायाधिकारी-वर्ग की आजीवन पदावधि कायम रही।

दिसम्बर, १८०६ तक जेफर्सन की यह आशा बनी रही कि बर-घटना के बावजूद उनकी राष्ट्रपति-अवधि का अन्त शान्ति और सौमनस्य के साथ होगा और वे मेडिसन को रिपब्लिकन प्रभुत्व का शान्तिपूर्ण उत्तराधिकार समर्पित

करेंगे। कांग्रेस के नाम अपने वार्षिक सन्देश में उन्होंने पुनः बजट में बचत की सम्भावनाओं का उल्लेख किया और उन्होंने आयात-शुल्क की समाप्ति द्वारा उसमें कटौती करने से इन्कार कर दिया। "आयात-शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योगपतियों के विरुद्ध विदेशी उद्योगपतियों को ही लाभ होता। आयात-शुल्क का अधिकांश भार धनियों पर ही पड़ता और उसकी आय का उपयोग सार्वजनिक शिक्षा, सड़कें, नदी-नहरें और ऐसे सार्वजनिक सुधार के कार्यों में किया जायेगा, जिनसे संघ की सांविधानिक शक्ति को बल मिलेगा। इन कार्यवाइयों से राज्यों के बीच संचार के नये मार्ग खुलेंगे, पृथकता की रेखाएँ विलीन हो जायेंगी, उनके हितों में एकात्मता आयेगी और उनकी एकता नये तथा अविच्छेद्य बन्धनों द्वारा सुदृढ़ बनेगी।" किन्तु अभी तक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की योजना को प्रोत्साहन देने के लिए उपयुक्त समय नहीं आया था। जेफर्सन के अभिभाषण के अन्तिम भाग में इस ओर अधिक रुचि प्रदर्शित की गयी। उसमें उन्होंने युद्ध के खतरों की चेतावनी दी थी और कहा हमारे बन्दरगाहों और नौकानयन-साधनों की सुरक्षा के लिए संगठित रूप से शीघ्र तैयारी करने, हमारे देश के उन भागों को जो आक्रमण के लिए खुले और भेद्य हैं, शीघ्र बसाने और एक ऐसी सेना संगठित करने की आवश्यकता है, जिसके प्रभावशाली और प्रबल दस्तों को संघ के किसी भी स्थान में भेजा जा सके अथवा उनके बजाय ऐसे स्वयंसेवकों की आवश्यकता है जो पर्याप्त समय तक सेवा कर सकें।"

वास्तव में स्थिति काफी खतरनाक थी। मई, १८०३ में, ग्रेट ब्रिटेन और नैपोलियन के साम्राज्य के बीच युद्ध छिड़ जाने पर अनिवार्य भर्ती और तटस्थ व्यापार में हस्तक्षेप सम्बन्धी अनेक समस्याएं पुनः खड़ी हो गयीं। जब युद्ध ने गम्भीर रूप धारण कर लिया और ब्रिटेन के लिए जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित हो गया तब तटस्थता के प्रश्न पर अधिक विचार करने का अवसर क्षीण हो गया। युद्ध के प्रथम दो वर्षों में, जबकि दोनों युद्धरत राष्ट्रों के पास अभी भी जहाजी बेड़े रह गये थे, अमरीकियों के लिए कोई शिकायत की बात नहीं रही और जे-सन्धि की शर्तों के अनुसार उनका व्यापार और विशेषकर निर्यात-व्यापार बड़ी तेजी से बढ़ा।

किन्तु १८०५ तक, ब्रिटेन के सामरिक हितों तथा ब्रिटिश समुद्री व्यापार के स्थायी हितों, दोनों ही को इस नरमी से हानि होती प्रतीत हुई। जुलाई, १८०५ में इसेक्स-मामले के निर्णय से अमरीकी व्यापार पर १७५६ का नियम पुनः बड़ी कठोरता से लागू कर दिया गया और 'छद्म-युद्ध' या अक्तूबर में जेम्स

स्टीफेन द्वारा प्रकाशित 'दी फ्राड्स आफ दी न्यूट्रल फ्लैग्स' (तटस्थ राष्ट्रों की धोखाधड़ी) नामक पत्रों ने ऐसी योजना का समर्थन किया, जिसके द्वारा सभी तटस्थ जहाजरानी को ब्रिटिश नौकानयन और ब्रिटिश युद्ध-प्रयास के लाभार्थ नियमित करने तथा उस पर कर लगाने की व्यवस्था की गयी थी; उसी महीने में ट्राफलगार के युद्ध ने इस प्रकार की अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना का कार्यान्वय सम्भव बना दिया। एक ही नौसैनिक शक्ति के रह जाने पर अमरीका के लिए दोनों सैनिक शक्तियों के बीच सन्तुलन स्थापित करने की सम्भावना जाती रही। दूसरी ओर, इंगलैण्ड के साथ प्रत्यक्ष संघर्ष का विचार करना भी सम्भव नहीं था, वह भी ऐसी हालत में, जब कि कुछ लोग इस बात के लिए तैयार बठे थे कि समुद्रतट और उसके बन्दरगाहों पर आक्रमण हो। दक्षिणी रिपब्लि-कनों ने इस सुझाव का मजाक उड़ाया कि ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा अन्य व्यापारिक दमन की कार्रवाइयों से ब्रिटेन अनिवार्य नौसैनिक भर्ती तथा अमरीकी जहाजों पर अधिकार की नीति का परित्याग कर देगा। मूल संकट अमरीकी समुद्री व्यापार के अस्तित्व तथा व्यापारिक तत्वों के इस संकल्प में निहित था कि युद्ध के अवसर का उपयोग व्यापार के अस्वाभाविक विस्तार में किया जाय।

जान रण्डाल्फ ने जोर देकर कहा, "क्या अमरीकी जंगल का यह विशाल हाथी अपने मूल लक्ष्य को छोड़कर शार्क (एक प्रकार की समुद्री मछली) के साथ विकट संघर्ष के लिए समुद्र में कूद पड़ेगा ? अच्छा हो कि वह तट पर ही खड़ा रहे और तटवर्ती घुघची जलकुम्भी से उत्तेजित न हो।"

कांग्रेस के आगामी अधिवेशन में न्यूयार्क की किलेबन्दी के प्रस्ताव का वर्जीनिया के पुराने रिपब्लिकन नेताओं ने जोरदार विरोध किया। न्यूयार्क का अरक्षित रहना ही इस बात का सर्वोत्तम आश्वासन था कि युद्ध नहीं होगा। जेफर्सन के दामाद जान एप्स ने घोषणा की, "यदि रिपब्लिकन शासन में ऐसा कोई सिद्धान्त है, जिसका खुला विरोध होना चाहिए, तो वह यह है कि शान्ति के रक्षार्थ हमें युद्ध के लिए तैयार होना चाहिए।"

यद्यपि कांग्रेस में जेफर्सन को बहुमत प्राप्त हो सकता था, फिर भी उनकी पार्टी के प्रमुख नेताओं के रुख का उन पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य था।

व्यापारिक दबाव के लिए जेफर्सन का प्रयास अन्त में सफल नहीं हुआ। अप्रैल, १८०६ में कतिपय ब्रिटिश वस्तुओं के आयात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक अधिनियम पारित हुआ, किन्तु उसका क्रियान्वय स्थगित कर दिया गया और मनरो तथा विलियम पिंकने के एक विशेष शिष्टमण्डल ने लन्दन में

समझौता करने का प्रयास किया। दिसम्बर, १८०६ में राजदूतों ने एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये, जो बिल्कुल जे-सधि के आधार पर तैयार की गयी थी। उसकी शर्तें अमरीकी दावों के इतनी प्रतिकूल थीं कि जेफर्सन ने उसे सीनेट में रखने से ही इन्कार कर दिया। १६ मई, १८०६ को एक आदेश द्वारा, जो 'फाक्स-बनाकेड' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, ब्रिटेन की नीति में संशोधन किया गया, किन्तु उसका अमरीकियों पर इतना पर्याप्त प्रभाव नहीं पड़ा कि वे आयात-निरोधक कानून को रद्द कर दें।"

यूरोप में युद्ध की प्रगति के साथ दोनों युद्धरत राष्ट्रों ने अपने आर्थिक युद्ध को उग्रतर बनाने के लिए और कार्रवाइयाँ कीं। नैपोलियन ने नवम्बर, १८०६ में बर्लिन से एक आदेश जारी किया, जो उसकी 'महाद्वीपीय प्रणाली' के आरम्भ का सूचक था और जिसका उद्देश्य समस्त यूरोप से ब्रिटिश माल का बहिष्कार करना था। जनवरी और नवम्बर, १८०७ के ब्रिटिश शाही हुक्मनामों ने नेपोलियन के साम्राज्य के देशों के साथ व्यापार का निषेध करके उसका बदला लिया, केवल उन्हीं देशों के साथ व्यापार कायम रखा गया, जिन्होंने लाइसेन्स, नियंत्रण और चुंगी की ब्रिटिश प्रणाली अपनायी थी। दिसम्बर, १८०७ में नेपोलियन ने मिलान से आदेश जारी किया कि ब्रिटिश प्रणाली अपनाने वाले तटस्थ देशों के जहाज जब्त कर लिये जायेंगे।

अब अमरीकी धर्म संकट में पड़ गये; किन्तु यह संकट इतना विकट नहीं था, जितना कि सोचा गया था। क्योंकि ब्रिटिश प्रणाली से तटस्थ व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिलता था और अमरीकी व्यापारियों ने सहर्ष उससे लाभ उठाया होता और उसके नियंत्रणों को स्वीकार किया होता। किन्तु अनिवार्य नौसैनिक भर्ती की समस्या ने इस बात से और भी उग्र रूप धारण कर लिया कि जे-संधि के अनुसार ब्रिटिश जहाज अमरीकी बन्दरगाहों में रसद-सामग्री लाद सकते थे। जून, १८०७ में यह मामला और भी आगे बढ़ गया, जबकि ब्रिटिश युद्धपोत 'लियोपार्ड' ने अमरीकी युद्धपोत 'चेसापीक' पर आक्रमण कर दिया। यदि जेफर्सन ने युद्ध चाहा होता तो इस जन-क्षोभ का उपयोग किया जा सकता था, किन्तु उनका विश्वास था कि आर्थिक दबाव ही पर्याप्त होगा और दिसम्बर, १८०७ में व्यापारिक प्रतिबन्ध अधिनियम पारित हुआ।

इस अभूतपूर्व कार्रवाई से अमरीकी बन्दरगाहों से किसी भी जलपोत का विदेशों के लिए प्रस्थान निषिद्ध हो गया। सच पूछा जाय तो यह अत्यन्त कठोर ढंग की अपनी ही घेरेबन्दी थी, केवल इतना ही था कि कनाडा और नोवास्का-

शिया से तस्कर व्यापार चालू था और तटवर्ती जहाजरानी से इसमें सहायता मिलती थी। ऐसी परिस्थिति में ब्रिटेन को इससे हानि हुई और उससे भी अधिक वेस्ट इंडियन उपनिवेशों की हानि हुई; किन्तु इसकी प्रभावशीलता के बारे में यद्यपि मतभेद हो सकते हैं, तथापि यह ऐसा अस्त्र नही था, जिसके सामने ब्रिटेन घुटने टेक देता और अगस्त, १८०८ में प्रायद्वीप में ही युद्ध छिड़ जाने के बाद स्पेनिश अमरीका का मार्ग, जो उसके व्यापार के लिए खुल गया, इससे उसकी कुछ क्षतिपूर्ति हुई।

जेफर्सन ने अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में शक्ति-प्रयोग के अन्तिम योग को स्वीकार करने से सर्वथा इन्कार कर दिया और न उन्होंने यही स्वीकार किया कि इस प्रकार की नीतियों से अमरीका अभी भी एक महत्वहीन राष्ट्र बना हुआ था। उनकी इस विचारधारा से और भी बहुत से लोग सहमत थे। मई, १८०६ में इंगलैंड में अपनायी जाने वाली नीति के सम्बन्ध में मनरो को निर्देश देते समय उन्होंने अमरीका की प्रबल नौसैनिक शक्ति के बारे में (यदि फ्रांस उसे सहायता देना चाहे तो) लिखा था और जोरदार शब्दों में घोषणा की थी—

"हमारी यह धारणा बनने लगी है कि समस्त गल्फ स्ट्रीम हमारे अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत है और सम्प्रति उसमें युद्ध और युद्धपोतों के आवागमन का विरोध होना चाहिए तथा जनमत अथवा जनबल के अनुकूल होते ही हम उनका निषेध करेंगे। हम कभी भी उसमें निजी सशस्त्र जलपोतों के यातायात के लिए अनुमति नहीं देंगे और अपने बन्दरगाहों को राष्ट्रीय युद्धपोतों के लिए निषिद्ध बना देंगे। हमारी शान्ति और व्यापार के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।"

अटलांटिक महासागर में एक प्रभावशाली सुरक्षा-क्षेत्र के निर्माण में १३५ वर्ष लग गये।

निर्भीक जेफर्सन ने एक नवीन नौसैनिक महासंघ की योजना बनानी आरम्भ कर दी थी, जिसका उद्देश्य था ब्रिटेन द्वारा १८०० की सशस्त्र तटस्थता-सन्धि के शीघ्र अन्त की परवाह न करके नेपोलियन पर समुद्री स्वतंत्रता के बारे में अमरीकी विचारों को लादना। उनकी महान आशा सम्राट अलेक्जेण्डर थे, जिनके प्रति, वाशिंगटनस्थित फ्रांसीसी मंत्री के अनुसार, अमरीकी सरकार की और विशेषकर जेफर्सन की अगाध श्रद्धा थी। निस्सन्देह जेफर्सन प्रायः आत्म-प्रवंचना के भी शिकार हो जाया करते थे और इसका एक ज्वलन्त दृष्टान्त यह है कि उनकी ज़ार के प्रति भी श्रद्धा थी, यद्यपि इस मामले में वे अकेले ही आत्मप्रवंचना के शिकार न थे। १९ अप्रैल,, १८०६ को उन्होंने अलेक्जेण्डर को

जिस भाव में पत्र लिखा था, वह निश्चय ही एक अमरीकी देशभक्त और प्रजातंत्रवादी के लिए विचित्र था। उसमें उन्होंने ज़ार से कहा था कि यूरोप की आगामी शान्ति-सन्धि में समुद्र में तटस्थ राष्ट्रों के अधिकारों को पूर्ण मान्यता प्रदान की जाय।

जेफर्सन ने लिखा, "मेरे जीवन की यह एक नवीन और अत्यन्त आनन्ददायक घटना है कि मैं एक सम्राट को इतनी कम अवस्था में इतने विशाल साम्राज्य पर शासन करते देखता हूँ, जिसकी शासकीय महत्वाकांक्षा यही है कि उसकी जनता सुखी और सम्पन्न हो, इतना ही नहीं, जो बिना किसी दुष्प्रवृत्ति और महत्वाकांक्षा के, एक दूरवर्ती और नये राष्ट्र की ओर सद्भावना की दृष्टि से देखता है।"

अब जेफर्सन का व्यापारिक प्रतिबन्ध की उपयोगिता में विश्वास पैदा हो गया। विदेश-नीति की आवश्यकताओं के कारण ही यह कार्रवाई नहीं की गयी, बल्कि व्यापार के नवीन प्रयासों का भी यही आधार होने वाली थी। फरवरी, १८०८ में, जेफर्सन ने न्यूयार्क की टाम्मनी सोसायटी को लिखा,

"हवा की तरह महासागर पर भी मानव-जाति का जन्मसिद्ध अधिकार है। उसे आज जबर्दस्ती हमसे छीना जा रहा है और सर्वोच्च शक्ति द्वारा युगों के परम्परागत सिद्धान्तों का हनन किया जा रहा है। आज अनैतिकता की एक दूषित और प्रचण्ड लहर चल रही है, जिसके कुत्सित प्रभाव से अपने प्रिय देश को बचाने का एक ही मार्ग है और वह यह है कि अपने सहनागरिकों की सुबुद्धि को इस बात के लिए अनुप्रेरित किया जाय कि युद्धरत राष्ट्रों के साथ तब तक के लिए सभी प्रकार का सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाय जब तक राष्ट्रों और व्यक्तियों के लिए एक कानून द्वारा नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के पुनर्निर्माण के अन्तर्गत उनके बीच पुन: सम्बन्ध स्थापित न हो जाय। किसी सच्चे अमरीकी के मन में यह प्रश्न नही उठ सकता कि यह बात अच्छी होगी या नहीं, कि अपने नागरिकों और सम्पत्ति को एक प्रकार की श्रृङ्खला में आबद्ध किया जाय, फिर उनके उद्धार के लिए अथवा उन्हें स्वदेश में ही रखने के लिए युद्ध किया जाय और तब एक ऐसी नीति पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय, जो उद्योगपति और कृषक को समान स्तर पर स्थापित करे और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पारस्परिक श्रम और आनन्द के आदान-प्रदान की उस प्रणाली की स्थापना की जाय, जिसके लिए हमने अभी तक दूरवर्ती क्षेत्रों में और वहाँ के लोगों के साथ झगड़ों का निरन्तर खतरा उठा कर प्रयास किया है।"

किन्तु विदेशी व्यापार पर आधारित अर्थतंत्र को निजी एवं वर्गीय हितों को अत्यन्त प्रभावित किये बिना एक आत्मनिर्भर तंत्र के रूप में कभी बदला नहीं जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि व्यापारिक प्रतिबंध के संरक्षण में उद्योग को खूब फलने-फूलने का मौका मिला, किन्तु इससे व्यापारिक वर्ग को हुई हानि की क्षतिपूर्ति नहीं की जा सकती थी। अपने उत्पादन के लिए बाजारों को खोलने पर भी दक्षिण राजभक्त बना रहा, इस हानि से वर्जीनिया का और भी पतन हुआ—और मध्य राज्यों में हानि और लाभ का सन्तुलन कायम रहा। किन्तु न्यू इंगलैण्ड ने विद्रोह कर दिया, संघवादी पृथक्तावाद ने पुनः सिर उठाया और जेफर्सन ने अपनी पार्टी के राजनीतिक सिद्धान्त 'राज्यों के अधिकार' के समूचे आधार को चुनौती देते हुए संघीय कार्रवाई द्वारा पृथकता को साकार रूप प्रदान किया।

जेफर्सन कुछ समय तक इस भ्रम में रहे कि सब कुछ ठीक ही होगा। अगस्त, १८०८ तक वे प्रकट करते रहे कि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के बीच समझौता सम्भव है और तब यदि नेपोलियन और स्पेन के बीच युद्ध जारी रहा तो अमरीका टेक्सास और फ्लोरिडा पर अधिकार कर लेगा। किन्तु पुनः यह आवाज बुलन्द हुई कि वे अमरीकी हितों को फ्रांस के प्रति अपने पूर्वस्नेह की वेदी पर बलिदान कर रहे हैं। पार्टी के अन्दर रण्डाल्फ के नेतृत्व मे असन्तुष्ट तत्वों ने मेडिसन के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर दिया था, जिसे जेफर्सन अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। वे मनरो के समर्थक थे। न्यूयार्क मे एक दूसरे गुट ने उप-राष्ट्रपति क्लिण्टन का समर्थन किया। राज्यीय चुनावों में सघवादियों की विजय से मालूम होता था कि हवा का रुख रिपब्लिकनों के विरुद्ध है, किन्तु असन्तुष्ट रिपब्लिकनों का संघवादियों से समझौता न होने के कारण मेडिसन की इज्जत रह गयी। वह भी, यदि वरमोण्ट और न्यूयार्क ने जनमत द्वारा राष्ट्रपति के निर्वाचकों को चुना होता तो मेडिसन इन राज्यों में तो हार ही जाते, पेनसील्वानिया में भी हार जाते और अन्त में चुनाव में भी हार जाते। निर्वाचनमण्डल में फेडरलिस्टों की संख्या १८०४ में १४ थी और १८०८ में वह ४७ तक पहुंच गयी, किन्तु इससे भी उनकी पूरी शक्ति का पता नहीं लग सकता था। न्यू इंगलैण्ड में प्रजातन्त्रवाद के निर्माण के लिए जेफर्सन का प्रयास विफल हो चुका था और यह स्पष्ट हो गया था कि व्यापारिक प्रति- बन्ध को जारी रखने से संघ सर्वनाश के निकट पहुंच जायेगा।

जेफर्सन ने अन्तिम क्षण तक व्यापारिक प्रतिबन्ध को जारी रखने का

प्रयास किया और उसके संरक्षणात्मक प्रभावों के प्रत्येक लक्षण की ओर काफी ध्यान देते हुए उसकी कूटनीतिक प्रभावहीनता की उपेक्षा की। उन्होंने लफायत को लिखा, "इसका एक अत्यन्त सुखद और स्थायी परिणाम निकला है। इसने हम सब को घरेलू उद्योग-धंधों में लगा दिया है और मेरा निश्चित विश्वास है कि इससे भविष्य में इंगलैण्ड से पूरी होने वाली हमारी मांगें आधी ही रह जायेंगी।" किन्तु यह स्पष्ट था कि कोई कारवाई करने के पूर्व कांग्रेस जेफर्सन की अवधि के अन्त के लिए प्रतीक्षा नहीं करेगी। १ मार्च को व्यापारिक प्रतिबन्ध रद्द कर दिया गया किन्तु आर्थिक दबाव के सिद्धान्त का परित्याग नहीं किया गया, क्योंकि उसके स्थान पर कांग्रेस ने साथ ही साथ इंगलैण्ड और फ्रांस के साथ व्यावहारिक लेनदेन विषयक सम्बन्ध-विच्छेद के लिए एक कानून बना दिया और यह निर्णय किया कि तटस्थ व्यापार के विरुद्ध जो भी पहले अपनी कारवाई वापस ले लेगा, उसके विरुद्ध यह कानून लागू नहीं होगा। तीन दिन बाद जेफर्सन मेडिसन की बगल में खड़े हुए, जबकि कठोर जान मार्शल ने उन्हें पदग्रहण की शपथ दिलायी। जेफर्सन की यह अन्तिम सार्वजनिक उपस्थिति थी। लगभग ६६ वर्ष की अवस्था में वे पुनः सर्वदा के लिए नागरिक बन गये।

राष्ट्रपति-पद की अपनी द्वितीय अवधि में जेफर्सन ने बहुत से ऐसे कार्य किये, जिनमे उनकी लोकप्रियता और प्रभाव नष्ट हो गया और उनकी आकांक्षाओं के प्रति कांग्रेस की उदासीनता उनके अपने राज्य के अलावा देश के अधिकांश लोगों की भावना की द्योतक थी। वास्तव में वे एक चिन्ताजनक उलझन में फँस गये थे। हेनरी एडम्स ने उनकी इस स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है—

"उन्होंने एक ऐसी सरकार के निर्माण का उत्तरदायित्व ग्रहण किया था, जो किसी भी प्रकार निजी कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करे, किन्तु उन्होंने एक ऐसी सरकार बनायी, जिसने देश के प्रत्येक नागरिक के निजी कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप किया। राज्यों के अधिकारों का प्रबल समर्थन करके उन्होंने सत्ता ग्रहण की थी और उन्होंने राज्यों को सशस्त्र प्रतिरोध की सीमा तक पहुंचा दिया। उन्होंने कठोर मितव्ययिता का दावा करते हुए कार्य आरम्भ किया और अन्त में खर्च में अपने पूर्वाधिकारियों को भी मात कर दिया। उन्होंने शान्ति की नीति को जन्म दिया था और उनकी इस नीति के अन्तिम

परिणामस्वरूप विश्व के दो महानतम राष्ट्रों के साथ युद्ध की नौबत आ गयी।"

जेफर्सन के देशवासी दीर्घकाल के बाद उनकी सफलताओं को समझे और वास्तविक अर्थ में उस महापुरुष की महत्ता की सराहना की।

अध्याय–१०

वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ

(१८०६–१८२६)

राष्ट्रपति-पद से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् जेफर्सन १७ वर्ष तक और जीवित रहे। इस बीच उनकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होता गया, किन्तु मानसिक शक्ति अक्षुण्ण बनी रही। वे माण्टिसिलो में रहते थे और पड़ोसी काउण्टियों के बाहर कभी नहीं जाते थे। फिर भी, अपने मित्रों के साथ उनका सम्पर्क बना रहा; ये मित्र उनके यहाँ आते जाते-रहते और उनसे पत्र-व्यवहार करते रहते। इतना ही नहीं, उन्होंने अमरीका में और उसके बाहर भी, नयी अभीरुचियां पैदा कीं और नये सम्पर्क स्थापित किये। गम्भीर आर्थिक उलझनों के कारण इन वर्षों में विशेष कठिनाइयों का समना करना पड़ा। यद्यपि ये कठिनाइयाँ जेफर्सन के वर्ग के अधिकांश लोगों के लिए समान रूप से थीं, फिर भी दीर्घकाल तक सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण उनकी कठिनाई और भी बढ़ गयी थी। इसके कारण वे पहले से ही चिंतित थे। फिर भी, राजनीतिक अथवा बौद्धिक कार्यो में उनकी रुचि किसी प्रकार कम नहीं हुई। उनका अथक अध्ययन जारी रहा, फिर भी वे इतने व्यस्त नहीं थे कि अन्य कार्यों की ओर ध्यान न दे पाते। उन्होंने फ्रान्स की नयी कृतियों के अनुवाद या प्रकाशन की ओर भी ध्यान दिया और अपने 'युग के इतिहास' तथा और भी महत्वपूर्ण विषयों पर पत्रव्यवहार जारी रखा। जेफर्सन और जान एडम्स के बीच दीर्घकाल तक मनोमालिन्य के बाद वृद्धावस्था में पुनः इसी प्रकार का पत्रव्यवहार आरम्भ हो गया। अपने पौत्र-पौत्रियों तथा अन्य सम्बन्धियों के बच्चों के अध्ययन में जेफर्सन की रुचि के कारण उन्हें अपनी युवावस्था के विषयों, गणित और कानून, का पुनः अध्ययन करना पड़ा और अन्त में उनके मन में धर्म और नीति के महान प्रश्न भी उठ खड़े हुए।

इस बीच अमरीकी लोकतंत्र का भाग्य अधर में लटक रहा था। राष्ट्रपति

मेडिसन के नेतृत्व में युद्धरत यूरोपीय राष्ट्रों के विरुद्ध आर्थिक दबाव की विभिन्न कार्रवाइयाँ निष्फल सिद्ध हुई और अनिवार्य नौसैनिक भर्ती तथा तटस्थ व्यापार की समस्याएं पूर्ववत कायम रही। बढ़ते हुए पश्चिमी राज्य और प्रदेश ऊपरी कनाडा की उर्वर भूमि की ओर लालच भरी दृष्टि से देख रहे थे और उसके निवासियों के प्रति उनकी शत्रुता की भावना बढ़ती जा रही थी। उनका आरोप था कि कनाडियन अमरीकी प्रवास की प्रगति का प्रतिरोध करने के लिए इंडियनों को उभाड़ रहे हैं। १८१२ में, पश्चिमी विस्तारवादियों ने ब्रिटेन की नौकानयन-नीति से उत्पन्न क्षोभ से लाभ उठाकर अनिच्छुक मेडिसन को ब्रिटेन के साथ युद्ध के लिए विवश कर दिया। युद्ध तथा उसके परिणामस्वरूप आर्थिक तथा सैनिक कार्रवाइयों से न्यू इंगलैण्ड का संघवाद पुनः उत्तेजित हो उठा। पश्चिम के प्रति पूर्वी राज्यों के वैमनस्य का रूप उन वादविवादों में परिलक्षित हुआ, जो लुइसियाना राज्य की मान्यता के पूर्व हुए थे। जेफर्सन ने अपने राष्ट्र के लिए जो प्रदेश प्राप्त किये थे, उन्हीं में से पहले पहल लुइसियाना का निर्माण हुआ। अब संघ को पश्चिम के 'युद्धप्रिय लोगों' और उनके दक्षिणी सहयोगियों ने, जिन्हें कनाडा के संतुलन में फ्लोरिडा को देने का वादा किया था, एक अनावश्यक युद्ध में झोंक दिया था। संघवादी गवर्नरों ने यथासम्भव बाधा डालने का प्रयास किया। समुद्र में कुछ व्यक्तिगत सफलताओं और न्यूआर्लियन्स में एण्ड्रू जैक्सन की विजय के बावजूद युद्ध से कोई गौरव प्राप्त नहीं हुआ। एण्ड्रू जैक्सन एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन पर जेफर्सन ने कभी विश्वास नहीं किया और बर-काण्ड में जिनका आचरण बड़ा ही सन्देहपूर्ण रहा। विजय भी दूरवर्ती घेण्ट में सन्धि पर हस्ताक्षर के बाद प्राप्त हुई थी। राष्ट्रपति की हैसियत से मेडिसन को उसी तरह के अपमान का सामना करना पड़ा, जिस तरह का जेफर्सन को वर्जीनिया के गवर्नर की हैसियत से राजधानी से पलायन करते समय सहन करना पड़ा था। वाशिंगटन यार्क (आधुनिक टोरण्टो) के अमरीकी व्यवहार का बदला लेने के लिए क्षुब्ध हो उठा था। घेण्ट की सन्धि से किसी भी समस्या का हल नहीं हुआ, जिसके लिए नाम मात्र का युद्ध हुआ था; किन्तु बाद की सन्धियों से जटिल कनाडियन सीमा का प्रश्न अधिकतर हल हो गया और दो महान उत्तरी अमरीकी राष्ट्रों के भावी शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त हो गया। शीघ्र ही एण्ड्रू जैक्सन की उद्दण्डतापूर्ण कार्रवाइयों ने फ्लोरिडा के पृथक हो जाने में सहायता की और इंडियनों तथा यूरोपीय शक्तियों के साथ संघर्ष के अन्य प्रमुख स्रोत का अन्त कर दिया।

१८१६ में निर्वाचित राष्ट्रपति जेम्स मनरो 'वर्जीनिया वंश' के अन्तिम राष्ट्राध्यक्ष थे और अपने पूर्वाधिकारियों की अपेक्षा कम प्रख्यात थे। सौभाग्य से अध्यक्ष-पद ग्रहण करते समय परिस्थिति उनके अनुकूल थी। सन्धि से रिपब्लिकन पार्टी के अन्तर्गत एक नयी राष्ट्रीय एकता का जन्म हुआ। संघवाद समाप्तप्राय था और मनरो-काल 'सद्भावना के युग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यह सत्य है कि १८२० के प्रारम्भ का अमरीका अनेक अर्थों में वाशिगटन-काल के अमरीका से भिन्न था। आकर्षण का केन्द्र पश्चिम बनता जा रहा था, जिसे रोका नहीं जा सकता था। नये राज्यों को मिलाया गया; १८१२ में लुइसियाना, १८१६ में इंडियाना, १८१७ में मिस्सिसिपी, १८१८ में इल्लिनोस, १८१९ में अल्बामा और १८२१ में मिसूरी। प्रत्येक का अर्थ था कांग्रेस में और निर्वाचन-मण्डल में शक्ति-परिवर्तन—मेन को पूर्वी राज्यों की सूची में रखने से शक्ति-सन्तुलन में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा, किन्तु राष्ट्रीय परिषदों में न्यू इंगलैण्ड के संघवादियों का ही महत्व कम नहीं हुआ, बल्कि 'राज्यों के अधिकारों' के पुराने रक्षक वर्जीनिया के रिपब्लिकनों को भी मात खानी पड़ी।

१८११ में अमरीका का पहला बैंक अपने चार्टर के साथ समाप्त हो गया, किन्तु युद्धोत्तर आर्थिक व्यवस्था की गड़बड़ी से एक नये सेण्ट्रल बैंक के समर्थकों को अपना मार्ग प्रशस्त करने में सहायता मिली और अमरीका के दूसरे बैंक की स्थापना की गयी। युद्ध और व्यापारिक प्रतिबन्ध की छाया में स्थापित नये उद्योगों को संरक्षण की आवश्यकता थी और हेमिल्टन की राष्ट्रीय तटकर-योजना का औचित्य उसके मरने के बाद समझा गया। मनरो ने जब पदग्रहण किया तो वे एक सांविधानिक स्वीकृति के बिना, जैसा कि जेफर्सन अथवा मेडिसन ने कहा था, आन्तरिक सुधारों के लिए संघीय समर्थन के कट्टर विरोधी थे, किन्तु पश्चिमी हितों के दबाव में पड़कर वे कमजोर पड़ गये, किन्तु अपनी अवधि के अन्तिम वर्षों में और उससे भी अधिक उनके उत्तराधिकारी जान क्विन्सी एडम्स के समय संघीय निधि का द्वार खुल गया। जेफर्सन के जीवन के अन्तिम वर्षों का अमरीकी लोकतन्त्र विभिन्न समुदायों के साथ बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा था और अपनी सांविधानिक कट्टरताओं की अपेक्षा अपनी परम्परा के विकास में अधिक रुचि ले रहा था। संस्थापकों का युग समाप्त हो रहा था।

यदि जेफर्सन ने अपने ग्रामीण एकान्त जीवन में इन विकासों की ओर उतना ही ध्यान दिया होता तो यह एक आश्चर्यजनक बात होती, यद्यपि उनमें

से अधिकांश के मूल कारण पश्चिम की ओर विस्तार के भी थे। कुछ मामलों में जेफर्सन के विचार पूर्ववत् कायम रहे। वे अभी भी कागजी मुद्रा को घृणा की दृष्टि से देखते थे और यह घोषित करने को तैयार थे कि इसी के आधार पर ब्रिटेन का पतन होगा। राजनीतिक तौर पर अमरीका के दूसरे बैंक की स्थापना ने एक बार फिर उसकी वैधानिक नीति सम्बन्धी प्रश्न खड़ा कर दिया और पश्चिमी तथा दक्षिणी राज्यों और सर्वोच्च न्यायालय के बीच संघर्ष का महत्वपूर्ण कारण बन गया।

मेडिसन के राष्ट्रपति काल में अनेक ऐसे निर्णय किये गये, जिनमें सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यीय कानून को संविधान के विपरीत घोषित करने के अपने अधिकार का उपयोग किया और सिद्ध कर दिया कि वह इकरारनामों के सांविधानिक संरक्षण के अन्तर्गत निजी और संयुक्त सम्पत्ति-अधिकारों की रक्षा में इस अधिकार का उपयोग कर सकता है।

युद्धोत्तर मन्दी-काल में अनेक राज्यों ने कर्जदारों की रक्षा करने तथा अमरीकी बैंक के कार्य-संचालन को दबाने के लिए कानून बनाने का प्रयास किया। संकट के लिए बैंक की दुर्व्यवस्था को ही दोषी ठहराया गया। इस प्रकार के कानून आर विशेषकर बैंक की शाखाओं पर दबाव डालने वाले कानूनों के सम्बन्ध में न्यायालय को उस कानून की सांविधानिकता के बारे में निर्णय करने के लिए कहा गया, जिसके कारण बैंक का चार्टर बना। मार्शल ने मैकुलोक बनाम मेरीलेण्ड (१८१९) के मामले में बैंक के पक्ष में जो निर्णय दिया और ओस्बोर्न बनाम बैंक आफ यूनाइटेड स्टेट्स (१८२४) के मामले में अपने उक्त निर्णय की जो पुष्टि की, उससे संघीय सत्ता के न्यायिक विस्तार में एक महत्वपूर्ण स्थिति का श्रीगणेश हुआ, क्योंकि इसने स्पष्टतः न्यायालय को अधिकारों के स्वरूप और मर्यादा सम्बन्धी हेमिल्टन के सिद्धान्त के पीछे छोड़ दिया।

मैकुलोक बनाम मेरीलैंड के मामले में निर्णय की विशेषकर वर्जीनिया में तीव्र प्रतिक्रिया हुई, जहां राज्य-न्यायाधिकारी वर्ग के प्रधान स्पेन्सरेने ने तीव्र आलोचना की और उसका समर्थन मेडिसन, रिचमोण्ड के 'इन्क्लोर' के सम्पादक थामस रिची और स्वयं जेफर्सन ने किया। जेफर्सन के विचार से '१८०० की क्रांति' ने स्पष्ट रूप से 'संघीय पद्धति' का जो समर्थन किया था, उसके बाद न्यायाधिकारी वर्ग ने 'सुदृढ़ीकरण' का पक्ष ग्रहण करके राष्ट्र की वास्तविक इच्छा के मार्ग में पुनः एक बार रोड़ा अटका दिया। उन्होंने रेने से भी आगे बढ़ कर उनके इस विचार का खण्डन किया कि अन्ततोगत्वा न्यायाधिकारी-

वर्ग ही संघीय सरकार के तीन सम्बद्ध भागों के बीच के सम्बन्धों के बारे में निर्णय करेगा। न्यायाधिकारी-वर्ग का अनिर्वाचित और स्वतन्त्र होना ही इस दृष्टिकोण का खण्डन करने के लिए पर्याप्त था।

"इस मान्यता के आधार पर संविधान न्यायाधिकारियों के हाथ में एक मोम की चीज है, जिसे वे तोड़-मरोड़कर किसी भी रूप में बदल सकते हैं। राजनीति के इस शाश्वत स्वयंसिद्ध सिद्धान्त को कदापि नहीं भूलना चाहिए कि सिद्धांत में ही किसी शासन में जो सत्ता स्वतंत्र होती है, वह पूर्ण भी होती है; किन्तु जब जनता की भावना उग्र होती है, व्यवहार में वह उतनी ही शिथिल होती है। जन-साधारण के अतिरिक्त और कहीं भी स्वतन्त्रता में विश्वास नहीं किया जा सकता। वह स्वभावत: नैतिक विधान के अतिरिक्त सब चीजों से स्वतन्त्र होता है।"

दूसरी ओर, इस बात की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि जेफर्सन के सामने एक नया धर्मसंकट था, क्योंकि मारबरी बनाम मेडिसन के मामले में जहाँ मार्शल का मूल अपराध यह था कि उन्होंने कांग्रेस के एक कानून को अवैधानिक घोषित कर दिया था, वहां जेफर्सन इस बात का विरोध कर रहे थे कि उन्होंने बैंक चार्टर कानून को अवैधानिक घोषित नही किया।

किन्तु इस स्पष्ट असंगति की जेफर्सन को चिन्ता नही थी, उन्होंने हर मौके पर इस खतरनाक सिद्धान्त की निन्दा की कि संविधान ने सभी सांविधानिक समस्याओं पर न्यायाधीशों को अन्तिम पंच बना दिया है।

उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा, "एक साधारण सरकार, जिसके वे स्वयं प्रमुख अंग हैं और एक निजी राज्य—जिससे आशा या भय का उन्हें कोई कारण नहीं है—के बीच एक निष्पक्ष निर्णय की हम आशा कैसे कर सकते हैं? हमने यह भी देखा है कि सभी उचित आदर्शों के विपरीत, उनकी आदत-सी बन गयी है कि वे अपने सम्मुख उपस्थित समस्या से परे चले जाते हैं, भावी प्रगति को और भी रोकने का प्रयास करते हैं। वे तब 'सफर मैनों' के दल का काम करते हैं और धीरे धीरे राज्यों के स्वतंत्र अधिकारों का दमन करने तथा उस सरकार के हाथ में सारी सत्ता को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करते हैं, जिसमें उनकी महत्वपूर्ण करमुक्त सम्पत्ति होती है।"

वर्जीनिया में फेयरफैक्स परिवार की भूसम्पत्ति के सम्बन्ध में जो मुकदमे चले, उनमें मार्शल के साथियों ने स्वयं राज्यों के न्यायालयों पर सर्वोच्च अधिकारों की ही पुष्टि की; और केरोलाइन के जान टेलर ने अपनी तीन पुस्तकों

में, जो १८२० और १८२३ के बीच प्रकाशित हुई, राज्यों के दृष्टिकोण को स्पष्टरूप से प्रकट किया। कोहेन्स बनाम वर्जीनिया के मामले में, जिसका फैसला १८२१ में हुआ, मार्शल ने संघीय दावे के पक्ष में अपने व्यक्तिगत अधिकार का उपयोग किया। जेफर्सन ने राज्यों के अधिकार के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया और टेलर को एक पत्र भेजा, जो उसकी अन्तिम पुस्तक में विज्ञापन के रूप में प्रकाशित हुआ।

१८२१ में जेफर्सन ने दोनों को लिखा, "मुझे संघीय न्यायाधिकारियों से अधिक भय है। गुरुत्वाकर्षण की भाँति अधिकारियों का यह वर्ग सर्वदा धीरे और चुपके से एक-एक कदम बढाता जा रहा है और जो कुछ मिल जाता है, उस पर दृढता से अपना पंजा जमाते हुए बड़ी मक्कारी से विशिष्ट सरकारों को उस सरकार के जबड़ों की ओर खींचता जा रहा है, जो उनका पालन-पोषण करती है।

न्यायालय के विरुद्ध संघर्ष बढ़ जाने पर यह स्पष्ट हो गया कि उसके दावों के विरोध में जेफर्सन यद्यपि मेडिसन से अधिक उग्र थे, फिर भी वे स्वयं वास्तविक उग्रवादियों के लिए उतने उग्र नहीं थे। मार्शल का दृढ़ विश्वास था कि संविधान तथा स्वयं संघ के विरुद्ध संचालित अभियान के पीछे जेफर्सन का प्रमुख हाथ था, किन्तु यह विश्वास बिल्कुल निराधार था और दोनों महान वर्जीनियन नेता एक-दूसरे के सामने आने पर सर्वदा सन्तुलन का जो असाधारण अभाव प्रदर्शित करते थे, उसका यह प्रमाणपत्र है।

वास्तविक प्रश्न यह नहीं था कि दक्षिण और पश्चिम के राज्यों को इन समस्याओं पर न्यायालय से सहमत होना चाहिए या नहीं, बल्कि असहमति होने पर उन्हें क्या करना चाहिए। वर्जीनिया और केण्टकी के प्रस्तावों से आविर्भूत समस्या पुन: सजीव हो उठी। संघीय न्यायाधीशों की कार्यावधि को मर्यादित करने के उद्देश्य से संविधान में संशोधन करने सम्बंधी पुराने प्रस्ताव के पारित होने की अभी सम्भावना नहीं थी और जेफर्सन के इस प्रस्ताव का कोई परिणाम नहीं निकला कि कांग्रेत को 'कोहेन्स बनाम वर्जीनिया' के निर्णीत सिद्धान्तों का विशेषरूप से खण्डन करना चाहिए।

अब प्रश्न यह था कि विरोधी के रूप में दक्षिण को—१८१२ के युद्ध में न्यू इंग्लैण्ड के राज्यों द्वारा अपनायी गयी कूटनीतियों को अपना कर—संघीय संविधान को, उसके कार्यान्वय में सहयोग से इन्कार कर 'रद्द' कर देना चाहिए या नहीं। इस प्रकार की कार्रवाई के सफल परीक्षण के लिए बैंक का प्रश्न

अनुकूल नहीं था। जेफर्सन के जीवन के अन्तिम दो वर्षों में, दक्षिण और पश्चिम में, संघीय नीति में दो नये परिवर्तनों का सक्रिय विरोध किया गया—'आन्तरिक सुधारों' के लिए संघीय समर्थन का और संरक्षणात्मक तट-कर का। जेफर्सन ने राज्यों की सीमाओं के अन्तर्गत नहरों और सड़कों पर संघीय राजस्व के व्यय का औचित्य सिद्ध करने के लिए सांविधानिक निर्माण की प्रणाली का प्रबल विरोध किया और सुझाव रखा कि वर्जीनिया में नये प्रस्ताव पारित कर राज्यीय सार्वभौमिकता के सिद्धान्त की पुष्टि की जाय, किन्तु वे संघ के साथ सम्बन्ध-विच्छेद की सीमा तक जाने को तैयार नहीं थे और चाहते थे कि जब असीम अधिकारसम्पन्न शासन के सम्मुख झुकने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न रह जाये तभी जबर्दस्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

राज्य-सरकारों के लिए पूर्ण अधिकार की आवश्यकता पर बल देते समय जेफर्सन सांविधानिक व्याख्या के किसी आंतरिक सिद्धान्त का सहारा नहीं ले रहे थे। उनके लोकतांत्रिक सिद्धांत का मूल अंश यह था कि छोटी-छोटी इकाइयां, जिनमें व्यक्तिगत नागरिक के उत्तरदायित्व अधिक स्पष्ट हों, एक विशाल संघ की अपेक्षा अधिक सन्तोषजनक होती हैं। वे राज्य-सरकारों को ही बलशाली नहीं बनाना चाहते थे, बल्कि उन काउण्टियों को भी सुदृढ़ बनाना चाहते थे, जिनमें दक्षिणी राज्य विभाजित थे और इन काउण्टियों को भी कथित वार्डों में विभाजित करना चाहते थे, जो इंगलैंड के बराबर थे। इन वार्डों की अर्थात् लगभग ६ वर्ग मील की इकाइयों की तुलना सैकड़ों एंग्लो-सैक्सन प्रदेशों से करते थे, किन्तु उन्हें केवल पुलिस-अधिकार ही नहीं मिलने वाले थे, बल्कि उन्हें गरीबों की तथा प्रारम्भिक शिक्षा की भी व्यवस्था करनी थी।

२ फरवरी, १८१६ के एक पत्र में उन्होंने लिखा, "एक अच्छी और सुरक्षित सरकार की स्थापना का एकमात्र मार्ग यही है कि उसे किसी एक को न सौंपा जाय, बल्कि उसे बहुतों में विभाजित कर दिया जाय और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार इसमें भूमिका अदा करने दी जाय; राष्ट्रीय सरकार को राष्ट्र की प्रतिरक्षा और विदेश तथा संघीय सम्बन्ध सुपुर्द किये जाँय, राज्यीय सरकारों को नागरिक अधिकार, कानून, पुलिस और राज्य का सामान्य शासन सौंपा जाय; काउण्टियों को उनके स्थानीय मामले दिये जाँय और प्रत्येक वार्ड अपने ही हितों की देखभाल करे। राष्ट्र से लेकर उसकी अधीनस्थ इकाइयों तक इन प्रजातन्त्रों को इस प्रकार विभाजित और उप-विभाजित करते जाँय

ताकि अन्त में प्रत्येक व्यक्ति की खेतीबाड़ी और अन्य मामलों का प्रशासन स्वयं उसी के हाथ में चला जाय और प्रत्येक चीज की देखभाल वह स्वयं कर सके। ऐसा करने से सब कुछ श्रेयस्कर होगा।"

पांच वर्ष बाद लिखी गयी अपनी आत्मकथा में उन्होंने एक ही वाक्य में उस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसकी प्रतिध्वनि पूर्वापेक्षा आज अधिक जोर से सुनाई पड़ती है और वह है, "यदि हमें वाशिंगटन से निर्देश मिले कि कब बोना चाहिए और कब काटना चाहिए तो हमें जल्दी ही रोटी के लाले पड़ सकते हैं।"

संघीय सरकार के विरुद्ध मामले को बहुत आगे बढ़ाने में जेफर्सन की हिचकिचाहट का कारण निस्सन्देह एक दूसरी साम्प्रदायिक समस्या का उठ खड़ा होना था, जो पुरानी समस्याओं से भी अधिक महत्वपूर्ण थी और वह थी दासता की समस्या। संघ के नये प्रदेशों को गुलाम राज्य बनाना और इस प्रकार प्राचीन दक्षिण के नेतृत्व को सुदृढ़ बनाना था, जिसका अर्थ होता भूस्वामी-अर्थतंत्र और उस पर आधारित समाज के और अधिक विस्तार को रोकना ? यदि संघ में स्वतंत्र राज्यों की संख्या बढ़ायी जाती तो दास रखनेवाले राज्यों के सिनेट में एक-तिहाई से भी कम सदस्य रह जाते, जबकि उन्हें अपने हितों के प्रतिकूल कानूनों पर निषेधाधिकार के उपयोग के लिए इतने मतों की तो आवश्यकता थी ही।

यह समस्या पहलेपहल उस समय खड़ी हुई, जब मिसूरी ने राज्य के रूप में संघ में प्रवेश के लिए आवेदन किया। कांग्रेस में उत्तरी राज्यों के सदस्यों ने प्रवेश के लिए शर्त के रूप में अपनी सीमाओं के अन्तर्गत गुलामी को निषिद्ध बनाने का प्रयास किया।

दिसम्बर, १८१९ में जेफर्सन ने जान एडम्स को एक पत्र लिखकर घोषणा की कि इस प्रश्न के सामने अन्य सभी राजनीतिक प्रश्न महत्वहीन पड़ गये हैं। "मिसूरी की समस्या उस सीमा तक पहुँच गयी है, जहाँ हम मिसूरी को खो देंगे और देश में विद्रोह हो जायगा, और क्या होगा, यह ईश्वर ही जाने।" उसके बाद फरवरी में एक पत्र में उन्होने घोषणा की, "क्रान्तिकारी युद्ध के भयंकरतम क्षण में भी मैं इतना भयभीत कभी नहीं हुआ था।" अप्रैल में उन्होंने लिखा कि मिसूरी की समस्या ने सार्वजनिक मामलों में मेरी सुसुप्त रुचि को जागृत कर दी है। "इस महत्वपूर्ण प्रश्न ने रात में बजनेवाली खतरे की घण्टी की तरह मुझे जागृत और आतंकित कर दिया है।" जेफर्सन ने सोचा था कि

इसके पीछे संघवादियों का हाथ है और वे रिपब्लिकनों में फूट पैदा करना चाहते हैं, किन्तु अब वे अपने लेख में ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे, जिससे यह सिद्ध होता था कि उन्हें मालूम था कि पार्टी के साथ साथ और भी कुछ खतरे में था। यह सच है कि मिसूरी के सन्तुलन के लिए एक पृथक स्वतंत्र राज्य के रूप में मेन को मान्यता प्रदान करके सम्प्रति समस्या का समाधान निकाल लिया गया था और इसके साथ ही साथ यह भी आदेश जारी कर दिया गया था कि मिसूरी की दक्षिणी सीमा के उत्तरी अक्षांश में अब और किसी गुलाम राज्य को मान्यता नहीं प्रदान की जायगी, किन्तु उन्होंने महसूस किया कि समझौता स्थायी नहीं हो सकता। "किसी भी समय जनता के क्रोधावश को रोकने के उद्देश्य से सुविचारित नैतिक एवं राजनीतिक सिद्धान्त के साथ साथ निर्धारित भौगोलिक रेखा कभी विलीन नहीं होगी।" किन्तु जब उन्होंने यह स्वीकार किया, वास्तविक समाधान में विकट बाधाएं थीं। "गुलामी को समाप्त कर देना चाहिए, किन्तु यह तभी होना चाहिए जब कि स्वतन्त्र नीग्रो लोगों को अन्यत्र भेज दिया जाय और अभी तक इसकी पूर्ति के लिए कोई व्यावहारिक सुझाव नहीं आया था। हम लोगों ने एक भेड़िया पाल रखा है, जिसे न तो हम पकड़ सकते हैं और न उसे सुरक्षित जाने दे सकते हैं।" यद्यपि जेफर्सन स्वयं उस उत्तर-पश्चिम अध्यादेश की धारा के रचयिता थे, जिसने पहले पहल गुलामी के प्रसार पर प्रादेशिक प्रतिबन्ध लगा दिये थे, फिर भी अब वे उसकी भौगोलिक सीमा को और अधिक परिसीमित करने के पक्ष में नहीं थे। गुलामों को व्यापक क्षेत्र में फैलाकर उनकी आबादी को बिखेर देने से उनकी दशा सुधर सकती है और अन्त में शीघ्र ही उनको मुक्त भी किया जा सकता है; क्योंकि मुक्ति का भार व्यापक क्षेत्र पर पड़ेगा।

अमरीकी राष्ट्र के जन्म-काल से ही उत्पन्न सभी महत्वपूर्ण विदेश-सम्बन्धी समस्याओं से जेफर्सन का घनिष्ठ सम्बन्ध होने से यह स्वाभाविक ही था कि उनके सेवा-निवृत्ति-काल में भी इस बारे में उनसे परामर्श किया गया। १८१५ के बाद इनमें सबसे महत्वपूर्ण समस्या थी मध्य और दक्षिणी अमरीका में उन स्पेनिश उपनिवेशों के निबटारे का प्रश्न, जिन्होंने नेपोलियन की अधीनता स्वीकार करने के बाद स्पेन से विद्रोह कर दिया था और जिन्हें 'पवित्र गठबंधन' द्वारा अब फिर झुकाने की धमकी दी जा रही थी।

इस प्रश्न के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति के निर्धारण में अमरीका ने कुछ समय अधिक ले लिया। राष्ट्पति की हैसियत से जेफर्सन ने क्यूबा, मेक्सिको और

फ्लोरिडा की ओर भी व्यापारिक लाभ की दृष्टि से देखा था, किन्तु अन्य देशों के बारे में उन्होंने जल्दबाजी न करना ही उचित समझा, ताकि ऐसा न हो जाये कि स्पेन से भी बढ़ कर उसका दूसरा कोई प्रबल उत्तराधिकारी आ जाय। मेडिसन शासन-काल में मुख्यतः स्पेन में ही रुचि रखते थे (जहाँ अमरीका वेलिंगटन की सेनाओं के लिए रसद पहुँचा रहा था)। उनका विरोध फ्रांस-समर्थक तत्वों ने किया, जिनकी नीति दक्षिणी अमरीका के विद्रोहियों के साथ जबर्दस्त सहयोग करने की थी और यह ऐसी नीति थी, जिसका अनेक रिपब्लिकन सैद्धान्तिक आधार पर समर्थन कर रहे थे। १८१२ के युद्ध के परिणामस्वरूप उत्तरी अमरीकी महाद्वीप तक ही अमरीका के हित संकुचित हो गये और ग्रेट ब्रिटेन ने दक्षिणी अमरीकी व्यापार में अपनी स्थिति सुदृढ़ बना ली।

स्पेनिश बोरबन्स की पुनस्संस्थापना के बाद के वर्षों में दक्षिणी अमरीका में काफी राजनीतिक गड़बड़ी रही और एक बार तो ऐसा लगा कि उन पर स्पेन पुनः कब्जा कर लेगा। किन्तु १८१७ के बाद विद्रोहियों को निरन्तर विजय पर विजय मिलती गयी और अन्त में जनवरी, १८२६ में स्पेनिश सत्ता के अन्तिम अधिकारियों को भी सदा के लिए निष्कासित कर दिया गया। चार वर्ष पूर्व ब्राजील पुर्तगाल से अलग हो गया था और स्वतंत्र साम्राज्य बन गया था। इन्ही वर्षों में संयुक्त राज्य अमरीका का दक्षिणी अमरीका के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो रहा था और इससे सम्बन्धित लोग अपने सह-नागरिकों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास कर रहे थे कि दक्षिणी अमरीका निश्चय ही संयुक्त राज्य अमरीका के शान्तिपूर्ण लोकतांत्रिक मार्ग का अनुसरण करेगा।

जेफर्सन को इस प्रकार की आशाओं के परिणाम के बारे में थोड़ा-बहुत सन्देह था। उनका विश्वास था कि इन देशों के निवासी स्पेनिश सत्ता को उलट फेंकने में सफल हो सकते हैं, किन्तु उन्हें अभी शासन-संचालन की अपनी क्षमता सिद्ध करनी थी, "स्वयं उनके देश में खतरनाक शत्रु सक्रिय है, जो अज्ञान और अन्धविश्वास, धार्मिक एवं सैनिक निरंकुशता के अन्तर्गत उनके मन और मस्तिष्क को बांध रखेगा।"

दिसम्बर, १८२० तक वे स्पेनिश उपनिवेशों की स्वतंत्रता की औपचारिक मान्यता के विरुद्ध थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि इसके फलस्वरूप स्पेन के साथ युद्ध हो सकता है और यदि इंगलैण्ड ने सोचा कि युद्ध से उसके

अन्तरिक संकटों का निवारण हो सकता है तो शायद उसके साथ भी युद्ध हो जायगा।

इसी बीच नये विश्व में रूसी रुचि के बढ़ते हुए लक्षणों से स्थिति में एक नयी जटिलता उत्पन्न हो गयी थी। सम्राट अलेक्जेण्डर का, जिसकी उदार भावनाओं में जेफर्सन ने इतना अधिक विश्वास व्यक्त किया था, पवित्र गठबन्धन के पीछे प्रमुख हाथ था। प्रशान्त-तट, जहाँ जेकब एस्टर के ऊन व्यापार के जहाजों और लुई तथा क्लार्क के अभियान ने सार्वभौमिकता के लिए अमरीकी दावों के लिए आधार स्थापित कर दिया था, अब जबर्दस्त रूसी गतिविधि का केन्द्र बन गया था। दूसरी ओर, यह स्पष्ट हो गया कि दक्षिणी अमरीका में विद्रोह को दबाने के लिए फ्रांसीसी-रूसी सहयोग की किसी भी योजना का ब्रिटेन विरोध करेगा। मनरो ने १८१८ और १८१९ में इस समस्या पर ब्रिटिश सरकार से सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया। किन्तु कैसिलरी इन योजनाओं का इतना जल्द स्वागत नहीं करना चाहते थे। उनकी नीति अभी भी यही थी कि स्पेन का उसके साम्राज्य में कम से कम नाममात्र का प्रभुत्व कायम रहे। इसीलिए मनरो की प्रबल व्यक्तिगत सहानुभूति के बावजूद एक निश्चित दिशा में अमरीकी आन्दोलन की गति धीमी पड़ गयी। मनरो के विदेश-सचिव जान क्विन्सी एडम्स मनरो की नीति तथा हेनरी क्ले की वैकल्पिक नीति के भी विरोधी थे। हेनरी क्ले की नीति यह थी कि युद्ध के अतिरिक्त उपनिवेशों की हर तरह से मदद की जाय और 'पवित्र गठबन्धन' के प्रतिकार में दोनों अमरीका का एक प्रकार का संघ स्थापित किया जाय। एडम्स का विश्वास था कि अन्त में अत्याचार और औपनिवेशिक शासन का सर्वत्र अन्त हो जायगा और अमरीका को तब तक के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए।

१८२२ की वसन्त ऋतु तक अमरीकी सरकार विद्रोही सरकारों को मान्यता प्रदान करने के लिए करीब-करीब तैयार हो गयी, ताकि वे किसी यूरोपीय शक्ति के प्रभाव में न आ जाँय। इस समाचार से भी काफी भय फैल गया था कि ब्रिटेन क्यूबा पर अधिकार जमाने का विचार कर रहा है। इस सम्भावना को देखते हुए अमरीकियों ने अपनी मूल नीति पर दृढ़ रहते हुए यही अच्छा समझा कि स्पेनिश शासन कायम रहे।

आशाओं और आशंकाओं के इस मिश्रित वातावरण में अमरीका को १८२३ में अपनी नीति को स्पष्ट करने की आवश्यकता पड़ी, जबकि स्पेन में फ्रांसीसी हस्तक्षेप की सफलता से मामले का अन्त होता दिखाई पड़ा और जब कि लन्दन

स्थित अमरीकी दूत रश के सम्मुख केनिंग ने कूटनीतिक सुझाव रखा कि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के बीच अब सहयोग हो सकता है।

मनरो ने केनिंग के साथ रश की जो बातचीत हुई, उसकी रिपोर्ट जेफर्सन को भेजी और साथ ही साथ दोनों सरकारों द्वारा संयुक्त घोषणा के लिए केनिंग का वह प्रस्ताव भी भेजा, जिसमें स्पेनिश अमरीका की पुर्नविजय के प्रयास के विरुद्ध अथवा किसी भी उपनिवेश पर स्पेनिश प्रभुत्व को किसी अन्य शक्ति को हस्तान्तरित करने के विरुद्ध अन्य यूरोपीय शक्तियों को चेतावनी दी गयी थी। राष्ट्रपति ने केनिंग के प्रस्ताव को स्वीकार करने के साथ उसमें यह भी जोड़ने का सुझाव दिया कि स्पेनिश अमरीका पर आक्रमण अमरीका पर आक्रमण समझा जायगा; क्योंकि यह माना जाता था कि यदि दक्षिणी महाद्वीप में प्रजातंत्रवाद के विरुद्ध अभियान सफल हुआ तो वह उत्तर की ओर भी बढ़ सकता है।

२४ अक्तूबर, १८२३ को जेफर्सन ने उत्तर दिया, जिसमें प्रस्तावित घोषणा के फलस्वरूप युद्ध होने पर भी, जो उनके विचार से ब्रिटेन की समुद्री शक्ति देखते हुए असम्भव था, उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया गया था। उन्होने क्यूबा को अमरीका में सम्मिलित किये जाने की अपेक्षा उसे स्वतंत्र देखने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि ग्रेट ब्रिटेन से युद्ध के बिना उसे अमरीका में मिलाया नहीं जा सकता था। चूंकि जेफर्सन ने इस प्रकार उठाये गये प्रश्न को स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद का सब से महत्वपूर्ण प्रश्न समझा, इसलिए उन्होंने और अधिक सामान्य भाषा में इसे अमरीकी नीति का आधार बनाने की जिम्मेदारी ली :—

"हमारा प्रथम और मूलभूत सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम यूरोप के विवादों में कभी न उलझें। हमारा दूसरा सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम यूरोप को अटलांटिक पार के मामलों में कभी हस्तक्षेप न करने दें। उत्तरी और दक्षिणी दोनों अमरीका का अपना पृथक हित यूरोप के देशों से भिन्न है। इसलिए उसकी अपनी अलग और यूरोप से भिन्न प्रणाली होनी चाहिए।"

जेफर्सन का पत्र उनके प्रारम्भिक पृथकतावादी सिद्धान्त को मनरो-सिद्धान्त की रचना के साथ संयोजित करता है। वास्तव में कांग्रेस में (२ दिसम्बर, १८२३) राष्ट्रपति के अभिभाषण के पूर्व मनरो ने ग्रेट ब्रिटेन के साथ सहयोग के बजाय, जैसा कि अक्तूबर में सोचा गया था, अमरीका द्वारा एक पृथक नीति के पक्ष में निर्णय कर लिया था। एक ओर ग्रेट ब्रिटेन और दूसरी ओर फ्रांस और रूस के बीच मतभेदों के बावजूद, यह महसूस किया गया कि ग्रेट ब्रिटेन सामान्य यूरोपीय प्रणाली में इतना अधिक उलझा हुआ है कि उसके साथ

सहयोग सरल नहीं है और उसके शासकवर्ग के राजनीतिक आदर्श अमरीकी लोकतंत्र के आदर्शों से बहुत दूर हैं। 'न तो बाह्य शक्तियों द्वारा अमरीकी महाद्वीप का और अधिक उपनिवेशीकरण और न विद्यमान उपनिवेशों के प्रभुत्व का हस्तान्तरण' ये ही मनरो-सिद्धान्त के दोहरे रूप थे और यही जेफर्सन की प्रमुख विचारधारा थी।

यह समझना भूल होगी कि जेफर्सन अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में, पूर्ण रूप से अथवा मुख्य रूप से भी राष्ट्रीय राजनीति की महान समस्याओं में व्यस्त थे। इस अवधि में उनकी रुचि राजनीति के बजाय शिक्षा में थी; वे वर्जीनिया-विश्वविद्यालय के निर्माण में व्यस्त थे। शिक्षा-प्रसार के लिए उनके उत्साह में कभी कमी नहीं आयी। जनवरी, १८०० में, जबकि संघवादियों और प्रजातंत्रवादियों के बीच संघर्ष चरमसीमा पर था, उन्होंने अंग्रेज वैज्ञानिक जोजेफ प्रीस्टली को, जो क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर १७९४ में अमरीका में बसने के लिए चले आये थे, वर्जीनिया में एक विश्वविद्यालय की योजना के बारे में लिखा था। यह इतनी विशाल, उदार और आधुनिक योजना थी कि साधारण जनता ने उसका समर्थन किया और अन्य राज्यों के युवक भी ज्ञानार्जन और वहाँ के लोगों के साथ भाईचारे के सम्बन्ध के लिए आकृष्ट हुए। उसी वर्ष जेफर्सन ने डुपोण्ट डे नेमूर्स को अपनी योजना के बारे में लिखा, जिन्होंने क्रान्तिकारी युग के फ्रांसीसी विधान पर आधारित सार्वजनिक शिक्षा के बारे में एक विशेष निबन्ध लिख भेजा।

अपनी राष्ट्रपति-काल की समाप्ति के बाद जब वे वर्जीनिया लौटे तो अपने साथ सामान्य शिक्षा के लिए व्यापक योजना भी ले आये। यह ठीक वैसी ही योजना थी, जैसी कि उन्होंने ३० वर्ष पूर्व राज्य-विधानसभा के एक सदस्य की हैसियत से प्रस्तुत की थी, किन्तु प्रीस्टली, डू पोण्ट, डे नेमूर्स तथा डेस्डर डे ट्रेसी के साथ पत्रव्यवहार के फलस्वरूप उन्होंने इसे काफी विस्तृत और व्यापक बना दिया था।

प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा का प्रस्तावित स्वरूप एक विधेयक में समाविष्ट था, जो १८१७ में वर्जीनिया-धारासभा में प्रस्तुत किया गया था, किन्तु उसे समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। जेफर्सनवादी लोकतन्त्र में प्रगतिशीलता की अपेक्षा मितव्ययिता को अधिक स्थान प्राप्त था। फिर भी, दूसरे वर्ष वर्जीनिया-विधानमण्डल द्वारा प्राथमिक शिक्षा के लिए तथा एक विश्वविद्यालय के लिए एक योजना तैयार करने के लिए २४ कमिश्नर नियुक्त किये गये,

जिनमें जेफर्सन, मेडिसन और मनरो भी थे।

जेफर्सन ने ही चार्ली टेसविले में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए स्वीकृति प्राप्त की, उसके भवन का नक्शा तैयार किया, विधानमण्डल को और अधिक व्यय के लिए प्रभावित किया, पाठ्यक्रम की रचना की और कर्मचारियों की भर्ती की। पुरानी दुनिया के अपने मित्रों से उन्होंने उपयुक्त प्राध्यापकों की भर्ती में सहायता करने के लिए कहा, क्योंकि अमरीका में अभी प्राध्यापकों का पूर्ण अभाव था। सर्वप्रथम ७ प्राध्यापक नियुक्त किये गये, जिनमें से केवल एक ही अमरीकी था। यद्यपि जेफर्सन ने कार्रवाई में ढिलाई की शिकायत की और अपने ही जीवन-काल में इस कार्य की पूर्ति में सन्देह व्यक्त किया, फिर भी वर्जीनिया-विश्वविद्यालय अन्ततः मार्च, १८२५ में खुल गया; जेफर्सन ने इंगलैण्ड के पांच प्राध्यापकों के बारे में उत्साहपूर्वक लिखा और घोषणा की कि शिक्षा के लिए 'युवकों का इतना अच्छा जत्था' एकत्र होते मैंने कभी देखा नहीं। जेफर्सन का विश्वास था कि वर्जीनिया में किसी विशिष्ट धार्मिक संस्था से मुक्त उच्चतर शिक्षा की संस्था के इस आदर्श की पूर्ति उनके जीवन की महान सफलता थी। मार्च, १८२६ में, अपने प्रथम पुस्तकालय को, धनसंग्रह के लिए, कांग्रेस को बेचने के बाद, जब जेफर्सन ने अपने द्वितीय पुस्तकालय का अधिकांश भाग विश्वविद्यालय को वसीयतनामा के तौर पर लिख दिया, तो उन्होंने निर्देश दिया कि मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरे मकबरे पर मेरा वर्णन इन शब्दों में अंकित किया जाय, "अमरीकी स्वतन्त्रता के घोषणापत्र तथा धार्मिक स्वतंत्रता सम्बन्धी वर्जीनिया विधान के रचयिता तथा वर्जीनिया विश्वविद्यालय के जनक।" मूल्यों के जिस मापदंड ने इन विशिष्टताओं को राष्ट्रपति और विदेश-मंत्री की विशेषताओं से ऊपर रखा, वह उस महापुरुष के लिए विचित्र है, जिसने १५ वर्ष पूर्व लिखा था, "मैं यह कभी समझ नहीं पाया कि किस प्रकार एक बौद्धिक प्राणी दूसरों पर प्रभुत्व जमा कर अपने सुख की कल्पना करता है।"

थामस जेफर्सन के जीवन का अन्त, उनके पुराने मित्र और प्रतिद्वन्द्वी जान एडम्स की भांति, स्वतन्त्रता की घोषणा के ५० वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ४ जुलाई, १८२६ को हुआ। जिस अमरीकी लोकतंत्र के भाग्यसूत्र का उन्होंने संचालन किया और जिसकी महत्वाकांक्षाओं का उन्होंने प्रतिनिधित्व किया, उसके अन्त के न तो कभी लक्षण थे ही और न आज भी हैं।

अध्याय–११

जेफर्सनवादी परम्परा

बाद के अमरीकी इतिहास में जेफर्सन की गणना महापुरुषों में हुई है। उनके नाम का उपयोग तात्कालिक सीमित स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया गया है और उनके कार्यों या उपदेशों को, जिन्हें उस समय उपयोगी नहीं पाया गया, संकट के समय सहर्ष स्वीकार किया गया। जैसा कि देखा गया है, जेफर्सन के दीर्घ जीवन तथा उनके अस्थिर और उत्सुक मन ने एक पूर्णतया स्थिर और निश्चित सिद्धान्त के सृजन में बाधा उपस्थित की। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्हें एक ही विवाद के दोनों पक्ष में उद्धृत किया जाता है। इस प्रकार १६३५ में, अपनी पुस्तक 'अमरीकी लोकतंत्र में जेफर्सनवादी परम्परा' में प्रोफेसर सी. एम. विल्ट्से ने घोषणा की कि फ्रैंकलिन रूज्वेल्ट के 'नये व्यवहार' का दर्शन वस्तुतः जेफर्सन का ही दर्शन है; जब कि जेम्स ट्रस्लो एडम्स ने एक वर्ष बाद अपनी पुस्तक 'दी लिविंग जेफर्सन' में 'नये व्यवहार' की अधिनायकवाद की दिशा में एक प्रवृत्ति के रूप में निन्दा की और उसके अन्तर्गत क्रियाशील हेमिल्टनवादी प्रवृत्तियों पर खेद प्रकट किया तथा अमरीकियों से अपील की कि वे थामस जेफर्सन के नाम पर इसके विरुद्ध संगठित हो जाँय।

दूसरी ओर, जेफर्सन के कथनों और लेखों से एक पूर्ण सम्बद्ध शास्त्रीय दर्शन का निर्माण करने के प्रयास से तथा उनकी व्यावहारिक और प्रयोगसिद्ध प्रवृत्ति की उपेक्षा से वैसा ही विकृतरूप उत्पन्न हो सकता है। उन्होंने १८१६ में जान एडम्स को लिखा, "मैं ऐसी चीज को पढ़ने का शौकीन नहीं हूँ, जो केवल आदर्श हो और जो किसी उपयोगी विज्ञान के लिए तत्काल अव्यवहार्य हो।" अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में एक पत्र में उन्होंने घोषणा की, "मैं सभी आध्यात्मिक अध्ययनों का विरोधी हूँ। दिवा स्वप्न भी रात्रि के स्वप्नों की भाँति विलीन हो जाते हैं, उनका कोई भी चिन्ह शेष नहीं रह जाता। जीवन का सम्बन्ध वस्तुतः पदार्थ से है। वही हमें ठोस परिणाम प्रदान करता है। उससे सम्बन्ध स्थापित कर हमें कुल्हाड़ी, हल, वाष्प-नौका और जीवन की प्रत्येक उपयोगी वस्तु का ज्ञान होता है; किन्तु आध्यात्मिक मनन का मुझे कभी भी उपयोगी परिणाम नहीं दिखाई पड़ा।" सामान्य दर्शन के इन विचारों का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक दर्शन पर भी होता है। जेफर्सन का कार्य और कारण में विश्वास था, न कि मत के प्रतिपादन में।

भावी अमरीकी राजनीति पर जेफर्सन के वास्तविक प्रभाव को अन्य दिशाओं में देखा जा सकता है। सर्वप्रथम उनके राजनीतिक दृष्टिकोण में सामान्य मान्यताएं निहित हैं, जिन्हें उनकी भाषा की भावप्रवणता के द्वारा स्थायी महत्व प्रदान किया गया है। दूसरा, एक पार्टी के नेता की हैसियत से, जेफर्सन ने कतिपय राजनीतिक कार्य-प्रणालियों का एक आदर्श प्रस्तुत किया, जो अमरीकी जनतंत्र के ढाँचे का एक अंग बन गया है।

जेफर्सन के युग के बाद अमरीकी राजनीतिक पार्टियों के इतिहास ने इस प्रकार की स्थिति को प्राय: अनिवार्य सा बना दिया। मनरो के राष्ट्रपति-काल तक जेफर्सनवादी रिपब्लिकन-डिमोक्रेटिक पार्टी अपनी अभिजातवर्ग-विरोधी विचारधारा की स्वीकृति को किसी निर्वाचित पद के लिए लालायित व्यक्ति के लिए कसौटी बनाने में इतनी अधिक सफल हो गयी थी कि वह देश में सर्वथा एकमात्र राजनीतिक पार्टी बन गयी थी। जान क्विन्सी एडम्स जैसा लोकतंत्र-विरोधी व्यक्ति भी उसी की परिधि के अन्तर्गत कार्य कर सकता था। जेफर्सन की ही विचारधारा में जिस प्रक्रिया का अनुसरण किया जा सकता था, वही साधारण अमरीकी समाज में क्रियाशील थी। व्यक्तिगत और अल्पसंख्यक अधिकारों पर प्रारम्भ में दिया गया जोर कमजोर पड़ गया और जन-सत्ता के प्रति आस्था बढ़ गयी। जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों का कर्त्तव्य जनता की इच्छाओं को पूरा करना था। इस प्रणाली का आधार प्रतिनिधित्व नहीं, प्रव्यायुक्ति थी। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में समानरूप से इसका इतना जबर्दस्त प्रभाव पड़ा कि तोकविल भी इससे विशेष प्रभावित हुए। उन्होंने जेफर्सन की मृत्यु के बाद ६ वर्ष के अन्दर ही अमरीका की यात्रा की थी।

किन्तु राजनीतिक दृष्टिकोण की सामान्य एकरूपता के नीचे ही नीचे देश के तीव्र आर्थिक विकास के कारण नये मतभेद उत्पन्न हो गये। हेमिल्टन के संघवाद के अनेक रूप उस पार्टी के एक पक्ष में पुन: प्रकट हो उठे और पार्टी में फूट पड़ गयी। हेनरी क्ले के नेतृत्व में नेशनल-रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना हुई, जो बाद में 'विग' पार्टी के नाम से प्रसिद्ध हुई। क्ले के नेतृत्व में संगठित अधिकतर बड़े बड़े व्यापारिक स्वार्थों तथा उन्हीं के द्वारा प्रतिपादित संघीय तौर पर नियन्त्रित संरक्षणात्मक 'अमरीकी प्रणाली' के विरुद्ध एण्ड्रू जेक्सन के नेतृत्व में एक नया संयुक्त दल प्रकट हुआ, जिसकी शक्ति जेफर्सन के मूल अनुयायियों की शक्ति की भाँति दक्षिण के किसानों तथा पूर्वी तटवर्ती नगरों की शोषित जनता में निहित थी। किन्तु जैक्सन का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण उस पार्टी के

दृष्टिकोण से मिलता जुलता नहीं था, जिसे जेफर्सन ने विजयी बनाया था। व्यक्ति, सुख और उच्च अधिकारों पर बल अवश्य दिया गया था, किन्तु यह एक भिन्न प्रकार का व्यक्तिवाद था। नये तत्व के स्वरूप का सर्वोत्तम प्रतिपादन 'साहसिक कार्य' शब्द से होता है—जेक्सन के अनुयायी, सर्वोपरि, आर्थिक क्षेत्र में अवसर की समानता के लिए प्रयत्नशील थे। जेफर्सन ने जिस स्थिरता को प्राप्त करने और उसे सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया था, वह नये युग के असन्तोष और लोभ के कारण विलीन हो गयी थी। जेफर्सन ने सर्वदा यही प्रयास किया था कि चुने-चुनाये लोगों को ही काम पर लिया जाय, किन्तु जब पद का अधिकार पार्टी के सिद्धान्त का अंग बन गया और जब यह माना जाने लगा कि प्रत्येक नागरिक में सरकारी काम करने की क्षमता हो सकती है, तब उस प्रयास का परित्याग कर दिया गया।

फिर भी, जेफर्सन के इस आग्रह का अभी भी अमरीकी राजनीतिक जीवन में प्रमुख स्थान था कि सरकार पर नियंत्रण जनता का होना चाहिए, अपने हितों का ज्ञान होना चाहिए और जनता पर विश्वास किया जाना चाहिए। इसकी प्रभावशीलता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि स्वयं अनुदारवादी विग भी अधिकतर जेफर्सनवादी दृष्टिकोण को अपना करके ही सत्ता प्राप्त करने की आशा कर सकते थे और इसी प्रकार उन्होने उत्तरी मिसीसिपी घाटी के राज्यों में, जो अभी भी कृषिप्रधान थे, अपने लिए एक दूसरा गढ़ बना लिया। वास्तव में दोनों ही दल जेफर्सनवादी थे, यहां तक कि विगों के औद्योगिक संरक्षणवादी पक्ष ने भी अपने देश के हितों और भाग्य के सम्बन्ध में जेफर्सन के बाद के कुछ विचारों के आधार पर ही अपने सिद्धांतों के औचित्य को सिद्ध करने का प्रयास किया।

अमरीकी इतिहास के आगामी युग में गृह-युद्ध के दो दशक पूर्व जेफर्सनवादी आदर्श को और भी प्रबल चुनौती दी गयी। जैसाकि जेफर्सन ने आशा की थी, नीग्रो-गुलामी की समस्या ने सबसे विकट रूप धारण कर लिया और इसके प्रभाव से दोनों प्रमुख पार्टियों में फूट पैदा हो गयी। अब डेमोक्रेटों के सामने कुछ समय के लिए जेफर्सनवादी विचारधारा के पुनर्निर्माण का कार्य रह गया, जिसे कल्होन ने पूरा किया।

स्वातन्त्र्य-घोषणा के प्राकृतिक अधिकार-सिद्धान्त तथा उसके स्वाभाविक परिणाम-स्वरूप मानव-दासता की समाप्ति को दक्षिणी समाज के जीवन-मरण की आवश्यकताओं पर बलिदान कर दिया गया। दूसरी ओर, केन्द्रीय सत्ता के स्पष्ट

होने पर राज्यों के अधिकारों का सहारा लेने की प्रविधि अपनायी गयी और उसका पुनर्विकास किया गया। जेफर्सन ने इसी अस्त्र का प्रायः उपयोग किया था। संघ के साथ सार्वभौमिक राज्यों की समानता की दुहाई देकर मानव की समानता को मानने से इनकार करने का प्रयास किया गया।

दूसरी ओर, पुरानी डेमोक्रेटिक पार्टी के अनेक तत्वों ने उस रिपब्लिकन पार्टी में स्थान ग्रहण किया, जिसका जन्म विगों के अवशेष से हुआ था। उन्हें वहां नेता के रूप में लिंकन मिल गये, किन्तु एक ही पार्टी में जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्त और हेमिल्टन के आर्थिक एवं सांविधानिक सिद्धान्त, दोनों एक साथ मिल कर उस संकट का अधिक समय तक सामना नहीं कर सकते थे, जो इनके संयोग से ही उत्पन्न हुआ था। गृह-युद्ध के परिणाम और पुनर्निर्माण ने रिपब्लिकनों और डेमोक्रेटों को फिर राष्ट्रीय पार्टियों के रूप में अलग-अलग कर दिया; किन्तु यदि डेमोक्रेट औपचारिक वंश परम्परा के नाते जेफर्सन के उत्तराधिकारी के रूप में अधिक सबल थे तो रिपब्लिकन पार्टी के किसान-तत्व नये युग की माँगों के अनुकूल मूलतः जेफर्सनवाद-विरोधी प्रवृत्ति के विकास को रोकने की गारण्टी के रूप में थे।

हाल के अमरीकी इतिहास में पार्टी के इतिहास और जेफर्सनवादी सिद्धान्तों के परिवर्तन का पता लगाने के लिए हमें बहुत दूर तक जाना होगा, किन्तु बाहरी प्रेक्षक औद्योगिक युग की नवीन समस्याओं के लिए प्रतिपादित समाधानों में नवीनता के अभाव से सर्वदा स्तम्भित हो उठेंगे। एक कृषक समाज में गहराई से जमा हुआ व्यक्तिवादी दृष्टिकोण बाद के सुधार-आन्दोलनों में भी विशेषरूप से कायम रहा। जबकि यूरोप ने आर्थिक जीवन में 'बड़प्पन' के तथ्य को स्वीकार किया और सार्वजनिक नियंत्रण को विस्तृत करने के लिए सरकार की क्षमता पर अपनी आशाओं को केन्द्रित किया, अमरीकियों ने स्वतंत्र प्रतियोगितात्मक व्यक्तिवाद के लिए कृत्रिम स्थिति पैदा करने का प्रयास किया, और वित्तीय एवं औद्योगिक पूंजी के विशाल संग्रह की उसी भाषा में निन्दा की, जिसमें कि औपनिवेशिक वर्जीनिया में स्थिर सम्पत्ति की की थी।

ब्रायन, विल्सन और रूजवेल्ट के नेतृत्व में समय-समय पर लोकतांत्रिक भावनाएँ जेफर्सन और जेक्सन जैसे क्रान्तिकारियों द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर उभड़ती रहीं। जेफर्सन ने वर्जीनिया और न्यूयार्क के बीच—दक्षिण के किसानों और पूर्व की नगरीय जनता के बीच मित्रता का जो सम्बन्ध स्थापित किया और जेक्सन ने भी जिसे पुनरुज्जीवित किया, वही फ्रेंकलिन रूजवेल्ट की डिमो-

क्रेटिक पार्टी का भी मूल सिद्धान्त रहा ।

महान औद्योगिक राष्ट्रों में अमरीका ही ऐसा राष्ट्र था, जो इस विश्वास पर अटल रहा कि उद्योगवाद की समस्याएं प्रतियोगितात्मक और व्यक्तिवादी समाज के ढांचे के अन्तर्गत हल हो सकती हैं और सार्वजनिक स्वामित्व के बिना भी सामाजिक न्याय सुलभ है । इसके लिए अनेक कारण दिये जा सकते हैं । किन्तु अन्त में जहाँ तक स्वतंत्रता और समानता का, अथवा इनमें से किसी एक का सम्बन्ध है, उसने इन्हें स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, जो विरोधाभास का ही परिचायक है और जिसका जेफर्सनवादी दृष्टिकोण से कोई स्थायी समाधान नहीं निकल पाया ।

प्रोफेसर विल्टसे ने इस समस्या को इस प्रकार समझने का प्रयास किया है कि जेफर्सनवादी द्वैध परम्परा में व्यक्तिवादी और समाजवादी, दोनों ही प्रवृत्तियां कार्य कर रही हैं और उनकी विशेषता यह है कि वे व्यक्तिवाद की अपेक्षा, जिसके साथ उनका नाम जोड़ा जा सकता है, 'सामाजिक उपयोगितावाद' के अधिक निकट हैं, क्योंकि "सर्वोत्तम शासन वही है, जो न्यूनतम शासन करता है," इस सिद्धान्त पर बल देकर जेफर्सन ने अपने को व्यक्तिवादी घोषित किया है और मुक्त आर्थिक व्यवस्था के सिद्धान्त का समर्थन किया है, किन्तु उन्होंने यह भी घोषणा की है कि समष्टि का कल्याण ही राज्य का वास्तविक उद्देश्य है और सबके हित के लिए व्यक्ति की गतिविधियों को सीमित करने के लिए सरकार को अधिकार होना चाहिए । राजनीतिक समस्या के इस द्वैध समाधान के दोनों पहलुओं को सिद्ध करने के लिए जेफर्सन के उद्धरणों का विशाल संग्रह तैयार करना कठिन नहीं है । जेफर्सन के लिए यह कोई अश्रेयस्कर नहीं है कि वे कुछ उद्देश्यों को दूसरों से सम्बन्धित करने के लिए एक बुद्धिसंगत प्रणाली ढूंढ निकालने में विफल रहे । वास्तव में लोकतांत्रिक राजनीति के इतिहास से तो यही प्रतीत होगा कि इस समस्या का कोई समाधान नहीं है । व्यक्ति के अधिकारों से ही बहुमत का शासन होता है । बहुमत का शासन अनिवार्य रूप से अल्पमतों के अधिकारों और हितों की अपेक्षा करता है और फिर व्यक्तिगत आश्वासनों के लिए उपाय ढूंढ़ता है । १८ वीं शताब्दी में जेफर्सन ने इस बात पर जोर देते हुए कि शिक्षा द्वारा लोगों का 'मानसिक विकास' होने पर लोकतंत्र को पूर्ण अधिकार दिया जाना चाहिए, अन्तिम उत्तर देने की आवश्यकता से बचने का विचित्र प्रयास किया है, जिसका अमरीकी प्रजातंत्रवादियों की भावी पीढ़ी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

फिर भी, अमरीकियों को, लोकतांत्रिक समाज और सार्वजनिक शिक्षा के बीच पूर्ण रूप से सम्बन्ध ढूंढ़ने के लिए विवश होना पड़ा। विचित्रता तो यह है कि 'अविवेकपूर्ण देशान्तरवास की हानि' सम्बन्धी जेफर्सन की मान्यता को उनके द्वारा ठुकरा दिये जाने से यह स्थिति उत्पन्न हुई। यूरोप के विभिन्न भागों से देशान्तर-गमन की जो लहर चल पड़ी और जो उनके देहावसान के बाद पूरी शताब्दि भर जारी रही, उसका अर्थ यही था कि अमरीकी एक राष्ट्र के रूप में अपने जीवन के लिए अपने समाज को आत्मसात् करने की क्षमता पर और नवागन्तुको तथा उनके उत्तराधिकारियों द्वारा अमरीकी दृष्टिकोण के मूल तत्वों के अपनाये जाने की गति पर अवलम्बित थे। इससे अवसर की समानता पर निरन्तर बल के साथ शिक्षा की सम्पूर्ण समस्या को जो महत्व प्राप्त हुआ, उससे शिक्षा-प्रणाली का अपूर्व विस्तार हुआ और यह अमरीका की अत्यन्त महत्व-पूर्ण घटना है। अब तो भविष्य में अमरीकी समाज से की जानेवाली अधिकाधिक जटिल माँगें सामान्यतः स्पष्ट होती जा रही हैं और इस प्रकार की प्रणाली में चुने-चुनाये तत्वों को स्थान देने की जेफर्सनवादी विचारधारा पर पुनः विचार किया जा रहा है।

जेफर्सन ने विरोधी के रूप में जिन सांविधानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया और अपने शासन-काल में जिन्हें कार्यान्वित किया, उनके बीच विरोधाभास अमरीकी शासन की हाल की अवधि में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है। अभी भी सरकारी उद्देश्यों को सरकारी कार्यप्रणाली के समान ही महत्व प्रदान किया जाता है। फ्रेंकलिन रूजवेल्ट के अंतर्गत सत्ताधारी जेफर्सनवादियों ने संघीय अधिकारों को उसी तरह विस्तृत किया, जिस तरह कि जेफर्सन ने लुइसियाना और व्यापारिक प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में किया था और अब फिर पीछे हट कर वही लोकतांत्रिक आन्दोलन राज्यों के सांविधानिक अधिकारों को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में जेफर्सनवादी परम्परा में निर्णायक द्वैतवाद स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। दूसरी ओर, प्रबल और निरन्तर शांतिवादी तथा सैनिकवाद-विरोधी परम्परा है (जेफर्सन ने सशस्त्र नागरिकों के सर्वोच्च गुणों की लोकतांत्रिक क्रांति का पूर्ण समर्थन किया)। "युद्धों का जन्म प्राचीन विश्व के अन्यायी और अलोकतांत्रिक साम्राज्यवादों से हुआ हैं और अमरीका स्वतः उनसे दूर रह सकता है।" जेफर्सन के व्यापारिक प्रतिबन्ध से लेकर अमरीका द्वारा 'लीग आफ नेशन्स' की अस्वीकृति तथा १६३० के तटस्थता कानून तक

प्रत्यक्षत: एक ही विचारधारा कार्य कर रही थी। दूसरी ओर, अमरीकी प्रणाली तथा उसके विस्तार के लिए आवश्यक प्रादेशिक भूमि के हेतु उसके उस अधिकार की पवित्रता में विश्वास है, जिसके कारण जेफर्सन ने लुइसियाना को खरीदा और कनाडा पर अधिकार करने सम्बन्धी आन्दोलन का प्रबल समर्थन किया, फ्लोरिडा पर अधिकार किया गया और प्रशान्त सागर की ओर विस्तार किया गया तथा एक अच्छे जेफर्सनवादी डेमोक्रेट राष्ट्रपति पोल्क के अन्तर्गत मेक्सिको का युद्ध हुआ। इससे स्वयं जेफर्सन को उन नदियों के सम्बन्ध में अमरीकी अधिकारों के बारे में आश्चर्यजनक सिद्धांत प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिली, जहाँ उनकी प्रादेशिक सीमाएँ थीं। १७९५ के मिस्सीसिपी-संकट के पहले ही उन्होंने लिखा, "भौतिक विज्ञान में ही हम अन्य गोलार्द्ध से भिन्न नहीं पाये जायेंगे। मुझे प्रबल आशंका है कि अपनी भौगोलिक विशिष्टताओं के कारण हमें अन्य राष्ट्रों के साथ अपने सम्बन्धों के बारे में उससे भिन्न प्राकृतिक कानून संहिता बनाने की आवश्यकता पड़ेगी, जो यूरोप की परिस्थितियों के कारण वहां बनायी गयी है।"

स्वदेश-रक्षा के अमरीकी अधिकार और उनकी प्रणाली अन्य राष्ट्रों के अधिकारों तथा स्वशासन के उन सामान्य सिद्धांतों से भी अधिक महत्वपूर्ण है, जिनके वे स्वयं समर्थक हैं। इस प्रकार इस आशंका से कि लुइसियाना के निवासी अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपयोग कहीं संयुक्त राज्य अमरीका से अपने को पृथक करने में न करें, जेफर्सन ने १८०३ में उन्हें इस आधार पर एकतंत्र शासन प्रदान करने का समर्थन किया कि वे "बच्चों की भाँति स्वशासन के अभी अयोग्य हैं।"

अपने आबादी के क्षेत्र को बढ़ाने का अमरीकी अधिकार स्वत: सिद्ध था, चाहे इंडियनों के लिए उसका परिणाम कुछ भी हो और यदि जेफर्सन के स्वाभाविक मानवतावाद ने समस्या का शांतिपूर्ण समाधान पसन्द किया होता, तो अधिकारों के वास्तविक संघर्ष का कभी कोई प्रश्न ही नहीं उठता। किंतु सुरक्षा की मांग बहुत दूर तक ले जा सकती थी, विशेषकर उस स्थिति में जबकि जितने जेफर्सनवादी थे, उतनी ही तरह के भौगोलिक तर्क प्रस्तुत किये जाते थे। जेफर्सन ने महासागर में गल्फ स्ट्रीम तक अमरीकी प्रभुत्व की कल्पना की थी और वहां तक उन्होंने सम्भवत: मिस्सीसिपी का विस्तार भी समझ रखा था। इसी प्रकार १८२३ में मनरो ने उन्हें लिखा, " मैं समझता हूँ कि फ्लोरिडा अन्तरीप और क्यूबा मिस्सीसिपी के मुहाने पर हैं।"

विचित्र बात यह है कि क्यूबा प्रत्यक्ष रूप से अमरीका में मिलने से बचना चाहता था, किन्तु कैरिबियन द्वीप समूह और समस्त मध्य और दक्षिणी अमरीका को अमरीकी सुरक्षा-क्षेत्र के अन्तर्गत लाने के लिए राष्ट्रीय नीति बन गयी, जिसकी मनरो-सिद्धांत में व्याख्या की गयी और अमरीकी शक्ति के बढ़ते ही यह एक राजनीतिक तथ्य बन गया। जैसा कि अभी हाल ही में देखा गया है, इस सिद्धांत ने कम से कम एक ओर आइसलैंड तक और दूसरी ओर जापानियों द्वारा समाविष्ट द्वीपसमूहों तक विस्तार की क्षमता प्रदर्शित की है।

यह समझना भूल होगी कि जेफर्सनवादी लोकतंत्र साम्राज्यवाद का एक उच्च आकर्षक रूप मात्र है। जेफर्सन ने सर्वदा यही कहा कि स्वतंत्रता के प्रति अमरीकियों की वास्तविक सेवा यही होगी कि वे अन्य राष्ट्रों को अपने में मिलाने की अपेक्षा उनके लिए आदर्श बनें और एक राष्ट्र पर दूसरे राष्ट्र का शासन अमरीकी प्रथा के सर्वथा प्रतिकूल बना रहे। इस क्षेत्र में जेफर्सनवादी विचारधारा का सबसे स्थायी प्रभाव इस रूप में पड़ा है कि अमरीकी कि शक्ति से संघर्ष नहीं करना चाहते, उनका विश्वास है कि सही सिद्धान्तों का वक्तव्य ही स्वयं एक नीति है और उन सिद्धांतों को स्वीकार करने के लिए तैयार न होना समय और अवसर पर निर्भर करता है।

अमरीकी लोकतंत्र के मूल राजनीतिक सिद्धांत का श्रेय वास्तव में जेफर्सन को ही नहीं प्रदान किया जा सकता। यह तो उस इतिहास के निर्माणकारी युग का अनिवार्य परिणाम है, जो ऐसे समय में आता है जबकि एक अज्ञात मानव शक्ति अचानक आविर्भूत हो राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के लिए उन निश्चित सिद्धान्तों को ढूंढ़ने का अपूर्व प्रयास करती है, जो न्यूटनवादी जगत के भौतिक विधानों से कम स्पष्ट न हो। स्वयं जेफर्सन ने सर्वदा व्यावहारिकता पर विशेष बल दिया और कोरे सिद्धान्तवादियों की मूर्खताओं से वे सर्वथा दूर थे। फ्रांसीसी क्रांति से लेकर पुनः स्थापित बोरबोनों (Bourbons—फ्रांसीसी राजवंश) के अन्तर्गत चरम प्रतिक्रिया तक फ्रांसीसी राजनीति की आलोचना करते समय वे अपने इस मूल विचार पर दृढ़ रहे कि जो लोग स्वयं स्वशासन के पूर्णतया अभ्यस्त नहीं होते हैं, उनके लिए पूर्ण लोकतंत्र निश्चय ही खतरनाक होगा। सर्वप्रथम मौलिक स्वाधीनताएँ समय पर अपने आप विकसित हो जायेंगी। इसके अतिरिक्त, उनकी लोकतांत्रिक विचारधारा का यह मूल अंग था कि सरकारों को उनके विचारों से आगे नहीं जाना चाहिए, जिनका वे प्रतिनिधित्व करती हैं। अधिभूतवादियों के साथ जेफर्सन के मतभेद

का यही कारण था, अन्यथा उनके प्रति जेफर्सन की विशेष सहानुभूति थी। १८१६ में उन्होंने डु पोण्ट नेमूर्स को लिखा, "हम दोनों ही जनता को अपने बच्चों के समान मानते हैं और माता-पिता की भांति उससे प्रेम करते हैं। उस पर आप बिना परिचारिका के विश्वास करने से डरते हैं और मैं उससे उस प्रौढ़ की भांति प्रेम करता हूँ, जिसे मैं स्वशासन के लिए स्वतंत्र छोड़ देता हूँ।" किन्तु सम्भव है कि प्रचलित प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करने की जेफर्सन की तत्परता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया जाय। अमरीकी भाग्य के पूर्णतया कृषिक दृष्टिकोण के परित्याग का कारण केवल इतना ही नहीं था कि उन्होंने गृह-उद्योग को अपनाने की जन-इच्छा के समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया था।

यह बहुत कुछ सत्य है कि 'डेलिगेट' के रूप में प्रतिनिधित्व की कल्पना सभी युगों में अमरीकी लोकतंत्र के गम्भीरतम दोषों में रही है और प्रतिनिधि-मूलक शासन के इस विचार का औचित्य जेफर्सन के लेखों से यत्र तत्र सिद्ध किया जा सकता है। किन्तु अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही जेफर्सन ने सार्वजनिक सेवा और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के जिस रूप की कल्पना की थी, वह राजनीतिज्ञों के कार्य के इस प्रकार के संकीर्ण दृष्टिकोण के विरुद्ध संरक्षण का कार्य करता था।

अन्ततोगत्वा जेफर्सन मानव समाज और उसके भविष्य के प्रति आशावादी थे, किन्तु फ्रांसीसी क्रान्ति ने जन-आन्दोलनों, सार्वजनिक अत्याचारों और राष्ट्र-वादिता के जिस युग का सूत्रपात किया, वह जेफर्सन के लिए किसी भी प्रकार पूर्व युग की अपेक्षा अच्छा नहीं था। १५१३ में लिखे अपने एक पत्र में जेफर्सन ने इस बात की पुष्टि की कि वे राजनीति से ऊब गये थे और आधुनिक इतिहास की अपेक्षा प्राचीन इतिहास का अध्ययन अधिक पसन्द करते थे।

"अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों की विधि-संहिता से नैतिक सिद्धान्तों का पूर्णतया लोप देखते हुए मेरा मन इस दुःख की कल्पना से बैठ सा जाता है कि मेकियावेली युग के मन्त्रिमण्डलों की संकीर्णता, दुष्टता, भीरुता और धूर्तता का स्थान यद्यपि चैथम और टरगाट के युगों को यशस्वी तथा गौरवशाली बनाने वाली ईमानदारी और सदभावना ने ले लिया, फिर भी, कारटच और ब्लैकबियर्ड के युग की दुस्साहसपूर्ण लम्पटता और घोर अनैतिकता ने उन्हें पुनः नष्ट कर दिया। मैं घृणा के साथ इस कल्पना से मुह मोड़ कर अन्य युगों के इतिहासों

की शरण लेता हूँ, जहाँ यदि हमें टारक्विन, कैटिलाइन और कालियुला जैसे लोग मिलते भी हैं तो उनकी गाथाएँ हमें लिवी, सैलुस्ट और टेसिटस के नामों के साथ मिलती है और हमें यह सोच कर सन्तोष होता है कि सभी भावी पीढ़ियों द्वारा की गयी आलोचनाओं ने इतिहासकार द्वारा की गयी निन्दाओं की पुष्टि की है और उनके स्मृति-पट पर स्थायी अपयश को ही अंकित किया है—यह सन्तोष हमें जार्जों और नेपोलियनों से नहीं मिल सकता, बल्कि पूर्वज्ञान से मिल सकता है।"

यह १८वीं शताब्दी की आवाज है—थामस जैफर्सन की आवाज !

———

पर्ल पुस्तकमाला

योगी और अधिकारी—आर्थर कोएस्लर द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निबंध ।
मूल्य : ५० नये पैसे

थामस पेन के राजनैतिक निबंध— मूल्य : ५० नये पैसे

नववधू का ग्राम-प्रवेश—स्टिफन क्रेन की नौ सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ ।
मूल्य : ७५ नये पैसे

भारत-मेरा घर—सिंथिया बोल्स के भारत-संबंधी संस्मरण । मूल्य : ७५ नये पैमे

स्वातंत्र्य-सेतु—जेम्स ए. मिचनर द्वारा ंगेरी के स्वातंत्र्य-संग्राम का अति सजीव चित्रण । मूल्य : ७५ नये पैसे

शस्त्र-विदाई—अर्नेस्ट हेमिंग्वे का विश्व-विख्यात उपन्यास । मूल्य : १ रुपया

डा. आइन्स्टीन और ब्रह्माण्ड—लिंकन बारनेट । आइन्स्टीन के सिद्धान्तों को इसमें सरल रूप से समझाया गया है । मूल्य : ७५ नये पैसे

अमरीकी शासन-प्रणाली—अर्नेस्ट एस. ग्रिफिथ मूल्य : ५० नये पैसे

अध्यक्ष कौन हो ?—केमेरोन हावले का सुप्रसिद्ध उपन्यास । मूल्य : १ रुपया

अनमोल मोती—जान स्टेनबेक द्वारा लिखित एक मर्मस्पर्शी कथा ।
मूल्य : ७५ नये पैसे

अमेरिका में प्रजातंत्र—अलेक्सिस डि. टोकवील की अमर राजनीतिक कृति ।
मूल्य : ७५ नये पैसे

फिलिपाइन में कृषि-सुधार—एल्विन एच. स्काफ । मूल्य : ५० नये पैसे

मनुष्य का भाग्य—लकॉम्ते द नॉय । जगत के मूलभूत प्रश्नों का वैज्ञानिक विश्लेषण । मूल्य : ७५ नये पैसे

शांति के नूतन क्षितिज—चेस्टर बोल्स की प्रख्यात पुस्तक । मूल्य : १ रुपया

जीवट के शिखर—अर्नेस्ट के. गैन । एक अत्यंत लोकप्रिय उपन्यास ।
मूल्य : १ रुपया

डनबार की घाटी—बोर्डन डील । टेनेसी घाटी योजना की पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया एक अति रोचक उपन्यास । मूल्य : १ रुपया

रूस की पुनर्यात्रा—लुई फिशर द्वारा लिखित स्तालिन के बाद के रूस का वर्णन ।
मूल्य : ७५ नये पैसे

रोम से उत्तर में—हेलेन मेक् ईन्स । एक रहस्यपूर्ण रोचक उपन्यास ।
मूल्य : १ रुपया

मुक्त द्वार—हेलेन केलर । भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित हेलेन केलर की विचारपूर्ण कृतियों का संकलन । मूल्य : ५० नये पैसे

हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर । दो विशेषज्ञों द्वारा लिखित परमाणु शक्ति के तथ्य, खतरों तथा संभावनाओं की चर्चा । मूल्य : १ रुपया

नवयुग का प्रभात—थामस ए. डूली, एम. डी. । भयंकर रोगों से ग्रसित जनता की सेवा के लिए दूर देश में गये एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी । मूल्य : ७५ नये पैसे

रूजवेल्ट का युग (१९३२–४५)—डेक्स्टर पर्किन्स । मूल्य : ५० नये पैसे

अब्राहम लिंकन—लार्ड चार्नवुड द्वारा लिखित एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ। मूल्य : १ रुपया

१९६० के नये प्रकाशन

शिशु-परिचर्या और बच्चों की देखभाल—डा. बेंजामिन स्पोक, एम. डी. । अपने ढंग की अनोखी, सचित्र पुस्तक । अंगरेजी में इसकी ८० लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। नव-दम्पत्ति व भावी माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी। मूल्य : १ रुपया

परिवार में परमाणु—लारा फरमी । परमाणु युग के निर्माता एनरिको फरमी की जीवनी उनकी पत्नी द्वारा लिखित । मूल्य : ७५ नये पैसे

संयुक्त राज्य अमरीका का संक्षिप्त इतिहास—एलन नेव्हिन्स और हेनरी स्टील कोमेगर । विश्व-विख्यात इतिहासकारों द्वारा लिखित अमरीकी राष्ट्र के विकास का रोचक वर्णन । मूल्य : १ रुपया

न पाँच न तीन—हेलेन मेकिन्स द्वारा लिखित एक सनसनीखेज आधुनिक उपन्यास। मूल्य : ७५ नये पैसे

गोल सीढ़ी—मेरी राबर्ट्स राइनहार्ट द्वारा लिखित एक विचित्र रहस्यपूर्ण कथा। मूल्य : ५० नये पैसे

ओ. हेनरी की कहानियाँ—हैरी हान्सन द्वारा मूल रूप में संपादित प्रख्यात रचनाएँ । मूल्य : ७५ नये पैसे

चन्द्र-विजय—डब्ल्यू. वान ब्रान व अन्य विशेषज्ञों द्वारा लिखित चंद्रलोक तक जाने की संपूर्ण तैयारियों का वैज्ञानिक वर्णन, रंगीन चित्रों व नक्शों सहित। मूल्य : ७५ नये पैसे